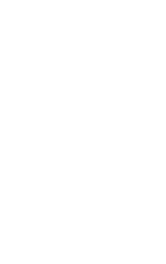
PERCE S पञ्चाक सम्प्रीकृते गूज्य संस्थान पञ्चीकर मकानाम सरेएपंड पांची

पंचाली कारतार

ern Biller fre

रीका वाली । कामराया

सुधारेकी पंचम बावृत्ति । वि सं २०१५ मृश्य ५-६५





स्व मातुशी जीतमनाई

संतानो तरफ्ती बेमनी निम्मीब कर्तम्मनिश्चनो बरखे कोई पण रीते बाळी न ब शकाय यूर्वी पूरुप तीर्यकृप स्य मालुध्नीने

-- सेवक वेचरवास



## प्रस्तावना प्रास्त्रमार्गोवनेविकानी बाम हो था गांवमी भावति गणाय

परंतु बीबी कम श्रीजी भावतिमाँ पुनर्सुदण सिवाम बीबी कोई विशयता न हती तनी भा सत्करणने पोधी माहत्तिरूप गणते समुस्ति केनान करबार सुपीतां संस्करणी करतां का सरकरणमां एक का विरापता है भागी प्राकृतभाषाने सगता भे भ नियमा बतावेद्य से ते नियमी बाबार्य देमचंत्रना प्राइन्तम्याकरणना आठमा अन्यायना क्या पादना क्या सत्र साथे सर्वत्र राखे छ ए इक्केट सर्वत्र मधारवान टिप्पणमां सर्वाद्धे आपीने बणावेडी छ आ धवनो भन्मासी का भगे च कोइ बिनाय बायबा इच्छ ठैन माने य सूचन उपयोगी यो. य दक्षिए ए अंको आपेखा छ। आ संस्करणना वे विमाग पाइचा छ व्याकरणविमान क्रमे पाठमाखाविमाग व्याकरणविमानमां वर्णनिशान. कम्दनिमाग कम्दरपना ए प्रण मुख्य विभाग छ कम्दरपन्यमाँ १ स्वरना सामान्य फेरफार २ स्वरमा विशेष फरफार ३ भीयस्पत्रम शसपक्त व्यवन श्रवंश व स्थरोनी बच्च शावेसा व्यवनना सामान्य केरधार ४ संयुक्तम्बनन्ता सामान्य फरफार ५ संयुक्तम्बनन्ता निश्च परफार बतावेसा छ। भाम कम रासीन शम्बरबनाने सरस्रताबी समजाबनानी माजना फोरही छ। भा पठी शन्त्रोमां विराय परस्कार न्यास मास राजीना संपुक्तम्बंबनामां बन्द-बंद -स्वरनी बदि राज्योजी वातिमंत्रेची फेरफार सर्वेचे पण समत्र व्यापनी छ। वा कने आहे बीजी पा शन्दरबनाना पेटामां व बगावेल हे

बा पद्मी सबि कींगे समजुदी मापेस से मने बा विज्ञानने की

चा पद्मी सभि क्षेत्र समजुती चापेस से का सन्तामन कर समास को समित्तर समबण चापत्ती समासतुं प्रयोजन सवा बेरक समासनी व्यवस्थां काफेसी के

भारता पुस्तकार्ग द्वाबनार्ग एटिए स्सङ्क्त क्यो एवँक भायेक्ष छ ब सामान्य क्षेत्र भारेक हे ते पण स्थितप्रमाणे भारिक छ पटके यांक्षा मरवारिता सम्बो पक्षी भारीकारिता सम्बो भारे हिन्के नाम्यवर बादिता सम्बो भार योजवार्थी सम्बोनी बादि वर्ण बाणवार्ती दिवार्थी-लोने सुगमता रहे

भा उपरांत विशेषण कांश, संस्थावाची शस्त्रांना क्रेश अस्मय कींग चतुक्त्रीय तथा बाति प्रमान देस्य शस्त्रांनी क्रोस यण मानेस ध. क्यी बांक्शम्यों संगे एक सक्त्र स्थानमां सस्त्यांते क्रे के बे

निर्णय ते ते निषमी उपराग मयाद्याओषी व मई करा तेवी आंकडा कोनी गुवरणमां पडवानी जरूर नदी. प्राप्टकमायाना सामान्य के विशेष नियमी स्वां न्यां काएंका छे

क्यो नियम सामान्य के अने कया नियम विराप छे हैनो

र्क्षा व्यां साचे व पान्त्र, शीरसेनी, गरागी, पैशाबी करे क्याबीशमाणामा तैवा व प्रकारना निवमो उदाहरणो साचे कापेका छ से क्यो विचार्वी-कोर्नु व्यान बोरीए छीए.

माशा छ के ब्राक्तभाषाना सम्यासी भाइबहेनोन भा पस्तक

मद्दगार नीवडे कने कम्यासी माइवहेनीना कम्यास कीना उत्साहमी वचारो श्राय १९/म व्यक्ती निवच कोडम्बी अमदाबाइ-६ सेबरहास

12-4-41

सा का 1-हरनारे में होन को सुरुक्ति सामग्रा किली के जारत्या महिनों महिना कार्य कार्य कार्य होता क्यों होती बदावर बक्तायों हती सामग्रा करि कार्यों कार्योंने कार्यों कोर्यों केंद्र

याच्या नवी अवी शुरुष्यरोड वराजी पूरिपूरी संजय छ योग्या नवी अवी शुरुष्यरोड वराजी पूरिपूरी संजय छ

## सनुकास व्याद्धस्य विभाग

बारेवांद्र व विषय with mire शस्त्रविमाग to the second ९ स्वरता सामल्य फेल्फार १५ स्वरमा विशेष फेरफार २९ म्लेबनस फेरफार ३९ व्यंत्रातमा विशेष पेरच्यार रंखुळ ब्येक्नमा सामान्य फेरफार . ६६ संपुक्त ध्यंत्रालमा विशेष फेरफार ७२ दिर्माच क्ष बास्त्रीमा विशास केल्क्स प्रकार वालीम विकास प्रकार

> ७५ स्थुक व्यवनोती बच्चे स्वरती बृद्धि ७६ अनुस्तारमा अधारो ७७ स्टाप्तरमो स्थारो



तवा उक्तारांत नामो	
प्रेरकभेद-वर्तमान भूत भने भवि	म्य वर्गीर

₹. नारीकाति-जाकारांत ककारांत केंकारांत उकारांत

**२२७** माबे प्रयोग बन क्रमीण प्रयोग 218

214

216

प्रेरक मारे को कर्मणिययोग-वर्तमानकाळ. भाहार्व ₹ 8 विधार्व, मतकाळ जन मविध्यकाळ वर्गेर

क्रीसिंगी सर्वादि 588 २४९ स्प्रेजनांन बचनो

केटबाक तबित प्रथमीनी समय 248 ₹\$0 नाम बाद्धमां

देलके इनंत-मेरफ देलके इनंत अनिवर्मित 388

₹.

सैववक मृतकृत्य-बेरक संवेषक्रमृत कृत्येत व्यक्तिय-

बने प्रेरक मार्च तवा कर्मण वर्तमान कृतंत वर्गेर

मित संबंधक्षमत क्रतंत

वर्तमानकाळ आकार्य, विष्यव मृतकाळ भने अविचाद्यास्त्र स्टीर

वर्तमान कृषेत-मेरक वतमान कृषेत तथा सार्व

विष्यर्थ क्रार्टन-अनियमित विष्यर्थ क्रारत

देखर्व पूर्वत

२८२ स्तक्तत-किममित म्हाक्ति २८४ मिम्पक्तत २८५ क्रीवर्णक करत-किममित क्रीवर्शक क्रवत २८६ केटबांक अपन्यो खक्तकोड ए० १ बी ४९ १ नाम-महबाति

१६ ,, नारीकाति १७ <sub>तः</sub> सम्बत्सकाति २६ विशेषण

२९ संस्थाबानक शम्दो ११ सम्बय

१६ मह

१५ देस्य शम्बो-नरणावि

४५ दस्य शम्या—तरबाता ४७ <sub>११</sub> गारीबाति

४८ <sub>ज</sub>्यान्यतस्याति ५० समैनागनी प्रा**हत**नुं साहित्य



### । वितरी करो ।

# प्राकृतमार्गीपदेशिका

# ( अक्षरपरिवर्तन-ज्याकरणविभाग )

## वर्णेविद्यान

१आइट मानामां वपराचा ११रोगी अने ज्याननीनी शाहिती जा प्रमान्त क्रेन रक्षामध्य स्थान

दूस	व्हिमे			
िंच	भा		4G-18	
Ę	ŧ		वास-सम्बद्	
₹	₩.		व्योष्ठ-दोक	
ए१ जो			कर तथा तम्ह	
ना	मो		षठ तथा ओच्छ	
प्राप्त्य माराम्यो सारीत् प्रका बण्यारण कारान् क्यी.				
<b>257</b> (	चा ६ सरका	प्रमीय नवी		
-201	41 0 (1(1)	4-111		

मार

१ प्रस्तुत प्रस्तकर्म अञ्चल, पाक्षि औरसेओं सामग्री वैद्याची तका भूकिया-पैदाली जन जाश्रस मातामा व्यावस्थाने समावस सरेको तथी प्रकृत माना एउक 'उनत नथी मानाकी' एम सम्बन्धार' क्ष

२ एक रोच्य नगेरे शन्दोंनी 'ए' इस्त के अने धोता होता बगरे सन्दोगी जो बूल के

३ भरतंत्र प्राक्रकां 'क' स्वरंगे उपनीय बाय छ तुम श्रक्त शोरे.

प्रश्तिक औं इक्टनों पन प्रनीय नजी.

व्यक्तो क्ष्मुप्रम् (कल्पै)

प्रवश्यु (पत्रप) इइरम् ज

(ट वर्ष)

त्युद्वर (कथ्य) 9 5 4 5 4 ( प वप )

ष्क्र १९९२

 प्राप्तः नामानां कोई क्या अन्नान्तरः वनारकी-कृष्यः ए इ रीते इक्स बारात्वे नवी, के ब्यूक्तो इंड सरमा वर्यना है

बाद्य, बाल्याचे, शक बाद्य, राजुः, बारायी वारी शरना भाषात्माः अप्यन् शन्तान्द्रः शब्दः निक्ता नगरे.

९ बच्छ आहे आधारते स्वाते क है। वस्ताव छे है राज्ये कमाचना नवारा बोलक गरीका है जा न्या बाउराइदरा

सन्तराती प्रचलित है।

जरपारमं स्थान etz. 133 वर्ष-वर्ष

रंत-रोत थोत

> वत-सोप्र te

42 बाद्दिका-माह

बयरा एक नग्ना बाधारमा के देशी स्वर पमरमा पत्र संप्रपत रीते बसाव छ शरभा बक्ताः बक्तः, बच्छ बददर- करा- इस्ट-

र धरानी अंबर स्थानी प्रतीय चारिद्र शानवी अने पेदापी

इ. सम्प (मान) राष्ट्र वेशप वीरवीतीयां क्ष्मे शायपीमां क्ष्मान है।

 भेर्ष एक प्रशेवमां एडका सस्बर क सबया विश्वो टक बगराखी क नवी

 गायां-करित चयत्र पर नव रा आ नात्मा विकारीय रंतुचर क्लंकने प्राइत सावायां करतरण नवी अपनाव तरिके केटकाफ विकारीय रंतुचर क्लंकने प्रधान करवेल पानित अने सावधी नावायां करतर के ते अंग तराहरण वावेगो निर्मेण व्यक्तविकारमा प्रकरणमां अपनेत.
 स त्या व मी कले विवर्षमी प्रमेश प्राइत मावायां सुरूप मधी.

८ छ अनेजननी अनोच पासि साख्यमं तका पद्धानी साक्ष्मां प्रवस्तित छ

 उच्छल्य क्या छनुक्य अखर्न वर्षके प्रकृतमां क्या अस्त छात्रारक रिते क्यान क तेती बदाहरका साथेशी वाची क्या अमान ए :
 १९) १६. एउ थन स. के स्थ. क्या अन वस में परके छन्छा अस्त क्या

क्षा वरराव के कान १ करानी आविमां 'क्ष' वरराव का काकरा-वररात सुनत-सुक वावन-वेक 'चक-वाद 'शकं-श्रेस काला-वाद रिकाम विकाद प्रवर-विद् वर्षाच्या-कवित कालाति कालाति (१) ता कम काला क्षा वेष प्रव, एक स्ता प्रान-वरावर सास्त्रा

(१) त्य क्य छ त्य १२ व्य. स्थ त्य जन-वरावर रा तथा वय जरपनियत-क्यमियता कामकान-वरवानः छव-नाव छन-याम क्रमिय अभिया उत्तिया-उपित्रया शरूर-वर्षाम् आरम्पर्यत् अन्यवद् ११४४-वर्षेष् १९४४-वर्षिक स्टायन-

५ अर्थी व्यालनायां जानती वा गयी वारीमां क वत स्थ स्य स्तेरे वे नेपडा अवद वापस्वाती क्रदेखों के देनो उपमीग वास्ताती अपूर करनानी के अर्थ के एकपडी अवद वापसानी क्रदेख छ देनो प्रभाव सरपारी आर्थमां करवानी के. राजन १७वरी-छत्य द्वारा-द्वेतकः

- (३) प्रस्तुब्युश सम्बद्ध प्रदेशका <del>वर्षाच्या वर्षाच्या</del> सप्र-सार्य क्रम कार. श्रवता क्रांत. शृष्य-सार्थ, त्रान-वार्थ, नुक्रन-कुरन, बोरन-कुरण, मार-काल, मारा-बास अवारो गराठी, वर्ष REAL PROPERTY.
- (v) इच्. स स च-वरावर स्व तदा का वक्तादित-काकवित-विन-दित्त. श्रीक्रम्-दित्तः प्राच-यान. श्रच-प्राय.
- (५) क्य, म, थ ता अस्तर व तवा वः बन्युत-अरचुक स्तुतं-पुत्र, क्षयाँ-जया निकक-निषक, क्षय-वृष्य, त्यान-पान स्वति-चनः (t) के कु क नक्क स्था सा स्था स्था स्था सा अर करावर पा
  - त्या वा मूर्वा-तुरकाः कृतक-किरक क्षेत्र-वत वादा-मर्दिक-बरिक्य-वर्षकतः व्ययी-क्षयमे, श्या-क्या अद-वर्षकः मिम्ना-विष्याः, प्राप्ता अच्याः क्रिप्ता-क्रिच्याः आध्यम-क्राप्येर () क्षाप्र प्रत्य ज्याचन क्षाप्र प्रवास का प्रत्य-लार, <del>साई-एमान्य, यह-वरह, वस्य-पार, वहरि-मन्दर</del>

प्राथित-परविता जातिन-व्यक्तित, विद्या-विश्वा काव-काव.

- बया-बेक म भ प्रभावता का धाव-मञ्ज शाक्ष-मञ्ज व्याप-शाय व्यादनि-तायः नाव्यय-सम्बद्धः वाद्य-वातः नद्धः सम्बद्धः
- (६) त परायर इ. माँग्रे-अडी (१ ) इ. इ. स्प. स्प. नराबर हु तथा का रहि-दिहि बोड़ी बोड़ी
  - व्यक्ति-अर्दे विकत-दिश लाज-देश
- (११) ॥ तथा व वराज्य ३ वन-वह सर्वय-वह

(१२) व स, श्रद वत शता क्षय बरावर वृद्धः व्यय-शहर. इस-ब्रुटर एरक्-एड्ड. एतथ्य उद्दर आह्य-अक्ट. (१३) इ. इस उस ब्याब्य में, व्याल्य बरावरण वस अथवान,

रतः <del>तरह-</del>सम्बन्तु, सम्बन्धु, यह-बन्त वस्त, हात-बाथ नामः, विश्वान-विकास विज्ञानः, प्रपुरन-पञ्चुरम पञ्चुरम प्रयास-पश्चन्त, प्रयास, पुत्रव-पुत्रव पुरुष स्वाय-नाव, मार् श्रम्योज्य-श्रम्ब्येश्य अशोन्त सम्पत्-यम्बर्ए समर्, स्थ-क्षक क्षम्य, अञ्च-कृष्ण **कार्यक्षमा-अञ्चे**गया अञ्चेमचा अर्त्वेप्-बरि<del>-अन्ते</del>चेद्धः क्रमेवेद (१ ) इन्य १६६ इन का एन के के नरावर व्यद्ध अवदानदा धीइनः-तिबद्, तिश्व प्रान-पत्त्व पन्द सुस्म-सम्बद्ध विन्तु-निग्द्व विन्दू, श्नान-व्हाम न्हान, ऋतुत-पंग्रुम पन्हम, प्रस्तन-पन्हर

पन्दव पूर्वाहण-पुष्तम्स, पुश्तम्स, वद्ध-वर्षिष्ट, वन्दि (१५) क्ट व्ट, रूप रूप मा रह के बराबर क अथवा १८: सुक्त-मुत्तः, मुच्च-मुत्तः, *पत्नी-पत्नी बाह्या-भवा बाय-खय श्रम्-*नमु (सम्-१), नस्य-भगः सुदूरा-शुदूरा, (१६) वर्ष प्र प्य व रत स्व बरावर व अथवा त्व निक्यक-

नित्रम स्म-ताम परग-पत्र पाथ-पत्र शतरम-पंश स्तुति-पुर स्थिति-विक्री. (१) व्य इ. व इ. बरावर व. अथवा हा अवद अद. मह-मट् मात्र-भए वि-दि इत-दश्म, अहत-अहरम श्री-दो.

तम्, अप-महः, चनति-चनः

(१४) स्थ स्थ व व वरावर व अववा कः विनम्ब-निक्, सन्ध-(१९) स्त बरावर न्द्र (धीरबैनी माधामां) निध्यन-निविचम्द अस्तपुर्-श्रानेहरू महत्र्-महत्त्व-महत्र्व, पचत्-रचन्त्व-चचन्द्र प्रमानस्त्-

प्रवासन्त-पहासम् विश्व-विश्व

रणक सामा-स्था जायते-गायाः निक्रय-सिकाम तिर्मान सामा-सामा स्वासी-सामेद स्वस-सामा त्या-सा नियम-सिका सामा-तिर्मा क्या-तुम्य कीमानी-तिर्माते क्रमान-त्या-त्या (११) तः, स. स. १६, १६ वरावर ४ स्वया स्था क्या-त्या-त्या-पुत्र-तुम्य-तिर्मात त्या-त्या स्वस्ति-तरिर्मा त्या-पुत्र-तुम्य-तुम्य-तुम्य तुम्य-कृत्य-(१९) ॾ ६ में म म म वरावर म स्वया स्व त्या व स्वया का सुरुष्ट-जासीहर है-वे स्वया में क्यान में किल-निर्मा वे

(१) ल स्थ च ह, वें ल फ का क्य करावर व अवका भा करता-

कर्षन्त्रक्ष वर्ष-तक्ष जातः वर्ताक्ष-वर्ष तर-वर.

(१) प्रा वर्ष त्र त त्र प्र. इ स्तार स करवा जा अस्तार-क्ष्मार, वर्ताक-तक्ष्मा स्वत-वच्च वर्ष-तक्ष्मा व्यव-व्य विद्या सिक्षा सिक्ष-तिक्षा (१) अ का व्य व्य वे व स्य परस्य ॥ क्ष्मान्तक्ष्मा कुष-कुम्म सिक्ष्मा-तिक्षा त्राक्ष्म क्षमा क्षमान्तक्षात्र वर्ष-तक्ष्मा प्राप्त-तक्षमा व्यव-व्यास वीक्षा-

सम्बद्ध निर्मेण वेदिन नवर-नवस्य आहरत-बाह्यम, सम्बद्धम-

स्य - कर, सामा- - साम- नाम हीका-होता कर्म-मान कर-कर स्वीर - देविक, साम- नाम कुम-पुत्र्य (१९) सर कर की द्वा सामा- मा क्या-प्र्य द्वीधा-तेत्व, त्रिस्य-तिम्ब, महरू-पाइट साम्बुविधारा काम असानी महत्व समामीन कर्माची वे क्या के। स्वस्थान के रेस. के सामी तीराय रोक्स मान सामे क्या माने के रेस. के सामी तीराय रोक्स मान साम क्या माने के रेस. कर सामी तीराय संस्थान क्या माने के रेस. कर सामी तीराय संस्थान क्या क्या माने ग्रामा एका ल होस है। हेरन सक्ती श्रमान आ देशन ग्राम्दी चना

क्य है न वर्ष है । वर्गरे प्राचीन हालोगों तथा तरका माराना कैयोधों कर्म वादिष्यमा मारोकार व्यवस्थित है देख पार्थीमा केटमार काराव पांची है उस प्रविकाशकार एवं वर्षों है आपार्थ देशमार आहा प्राचीन्द्रे एक एवं करेगों है जह तर तरे देशीयनपूर्णव्य देशीयार्थ्यय एतुं नाम बार्पीने एने एक स्तान्त थीए करेगों है जा कीवार्ग टींच वन देशकाने प्रतुत्व काली है एंस्ट्रानाम प्राप्तुत व्यवस्थित है जात है केटमार हहन सरका औं देशमार बीहा हहना

संहुल सरका लामकर पाण्डी।

प्रकृत सरहुल

सलार सहार

बाद पाप् बार पार्थ

बारामण बागमण गीर गीर गीम प्रकृत क्षाहित्स स्थाप पूर्ण प्रकृत

सहन मरता त्रियापदी

संदर्भ भरतकः । स्वर्थपद्

पाति चर्तत

गाइत कृत्य हुनम्म } द्वाम } Rest वनिवा कर स्वी मानारसी वारानधी चौडा सरका कियापकीः उपरि क्रमीरी (एडीव उस्त एकास्त) करवि क्यशि <u>प्र</u>कति चपि नगरे र्वतिस्य वीन्त्रवा (धंकाबक मूलक्का ) करावे ] काने (हैसर्च प्रदम्) करिप्पर् J वेदय संस्कृत ग्रम्पती कराई बस्य महा 40 नावी र्भा गरारी होन्ह कवाति वकाडे (१) एकी-हैनी-बरवापनी स्नी

कास हाती सोवारी क्रवार देश्य सन्दोर्गा सामिक-त्रस्य जने अरबी-चारबी गोरे अनेक सावाबीला चन्नो पत्र प्रकार ह जण्डरचमा

मम्परी

यह वहार

चास

धक्त धन्त्रोवे समयका सद क्या अबीन बमानायी सस्त्रत शास्त्रीते भाष्यम् तर्राके बायरवानी परंपरा चावी आवे हे त्यातनार प्रस्तुनार्य से व पर्यशान बनुपरवामां जावैक क

खामा समान्य केरफार

पश्चारी

ग्यवरी

(शामान्य निवसी ग्रमांकी अस्त्रे साचे वार्यका क वर्ग विसेच निवसी अंद्रेजी अंद्रो शक्षे, ए विमान व्यानको रहे. त्या केन्यारना व निवसी काल कास सरवाओं नो नामी नामें अपने अवावेका कर निवासे स त सबकेन्द्रे बाल शांध मानाओं ताबे तबन बरावे छ अने ज एवा निवधी कार्ड आवाल नाम कीचा किना भवना आफ्ना मावाल नाम

कर्डन क्यादेता क त शावारण रीते क्यां क्यावेची तमाम मादामीमाँ मागु बाब कं परमु को निवमा सानु करता पहेलां अपराहना निवसी रुरच पार्त माल आपन महे,)

बस्य मी शीर्घमाय१ गराज MIST.

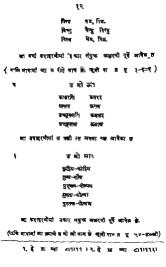
प्रास्तव

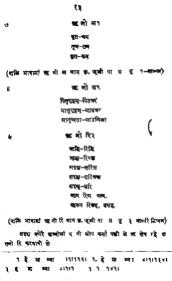
९ देमकह-प्राक्त व्याकरण ४।३। ३। परिवालना क्रिवाननं बसन्ता ताद वन सूत्रमा क्षेत्रं आपेता 🕏 एउके श्रुप्रमानी क क्यां कराहरणी आहीं नवी आप्यां स क्यां स से

सप्तो ओर्डन समग्री क्याचा

ঘার पत्रव বাৰাতৰ जान हमक three धौस **पोतास PININI** चेरका संचार सम 41 €श्वास नियाव PERM श्रापम 54 189 महूच मच्छ वत्स नव पर्ध पापा whe कारण ते**न्य** बीई निमान बोधान Pull-193 ৰ্যনিত करन क्रम छस्य बास Present पंतास **BRI** 1848 Per नीस **PIVER** विकासर Pers Out ( शामि गानावां कर आवा केरकार थान के व्यवसर्थ-कराधान भूमी गाँक प्रशंस ए ११ दिलम )







चंद्राची कारामां शरिश (नश्य)ने नर्थे सरिल क्ष्य चान झे. ए म जनाचे मान्य (बारक)ने वरते नातिन कम्नारिस (कम्बारक) मे नरके अस्तरिय कोरे क्यों को अप है जा क्या टा (१९ ) लुलो इस्टि

ones fallen

रेशम देशम

ŧ٧

क्सा दिवित्स ने को छ। 11 MATERIAL BATTLE

(शक्ति अल्यायो ये जो ए यात इस क्यांच अ प्र १-९-२) 12 விரை வி धीमार्गा बोसपी

रीका नीका धीरतम भीतव (पार्ति याच्यता की माओं बान के बक्को ना व प्र ५० मील्मों)

एक मरामंखा प्राक्रपमां स्वरोगी फैरकार मानिनत रीश नाम हे-एउके क्लीन का नी का नाम के नमांग है तो ए नाम के का मी मी देवा मा नार है आह मी का इंतवाड कात के अने उर बमार्ड है

वाद हे

का भी द पन मान के चनी द तथा है शान के अपन भी नी भी

१ हे माम्बा ८१९१९ । ९ हे ब्राच्या १९१९४८। ३ दे प्र∗ण्णा । । । हे अर व्या । शहरपुरु ।

शा हो स-साथ करनु, सरन्यु कारा कारण. है मो ए-बीका केव, बीज वीचा ह मो क तथा आ-बाहु गह, पहा पाहु का नो का इ. ट-इडी पछि, पिडु, प्रटि-एक एक रिन्स, पुत्र सक्त प्रक्रित प्रक्रित सक्तु स मो इ इकि-बद्धान किन्नत किसीस्थत

स शाह राष्ट्र-चेदान स्थानक स्थानक स्थानक ए तो ह, है-चेवा रेचा } स्थित और केर औं तो ओ-चीरी ग्वेरि गवरि

जा ना बाल-स्थाप पार प्यार द्वा नामने कोई पन निमर्थि कामना पत्री होनी काम त्यर दूरत द्वीन क्षेत्र काम के कमे और होन को दूरत बाव का सरक-योजका (ज नी बा) प्रवसा निमर्थि

ह्मासल-पात्रका धैर्म थैद्या (जानी का) जीशी पित्रका रैका थेद्य (जानी का) प्रकास विश्वपित प्रकार प्रकास (जानी का) मु

स्वरता विशेष—आपवाविक-फेरफारो 1 न मा फेरफार

क्ष हों आर् कविश्वादि आदिवाद, बहिपाद, पहिल दाहिय दक्षिकार. प्रोक स्थापन स्थापन

प्रशेष्ट पोरीष्ट परीक्ष. प्रमुख्य पायवण, प्रश्नेयण. १ के प्रमुख्य स्थापन ४५ छना १५॥ রণ রুফ, রুক शपकि गामिकि गतिक पारे.

(शक्ति माधार्मी अस्थों भागान क प्रभो वा त्र प्र ५६ – म≭मा) मणी हैं

बच्च बच्चिम

क्रमा काम सरिच विशिष

बच्चम बीजिध

হল হৈছা

कहार दुवार अवार. क्का कि फ. समार निवास, बहात्र,

(राफ्रि शासाब्द्री अ मो इ मान क्र नुभो पा छ छ ५१-मध्य)

जनो है। हर हींग इस संबंधि

ज्ली स्वी क्रिका अनेका

(फक्रिमलमां भागेट माय कं नुद्रों पा प्रापु ५५⊷ल≪उँ)

म नो पर

41 1174 4 5,5 1

बारमा है। वा पातिक-बैरिका

र है अर मीर नार्श ६ ४० ४४ ४५। १.३ आ मार भग रहेल भार १५० ६४५,६१४ हेला

न पुनः न देखाः न पुनः क्ष का सीपर

मुलसब न्ह्याओ असे मारा बुना दुगा दुगी.

म नो भार विचयर विश्वपद्य

नमस्यार नयोदार बरहार बरोपार रघ शेम्ब कार्यन ओपेर व्यपेर स्व<sup>क्ष</sup>न कोरह गुरह सर्वतः भौतित्र भवित्र

(बाह्रि सच्यां अनी ए बाय छ पुत्रों वा प्रवृत्र ५९-नाव्य) ब मो भो।

बची वैसी क्रमुक नेहुम

ŧø.

सामम

धर बद

काम, परमम

श्रमर, श्रमार

शक्षित हास्ति

प्रकार पानव

भवर चापर

व वा

च्या, चरा

आह. स्वा

नहर, शहरा

2

**ध्यामा**क

भद्वाराध्य THE R जमार

R7 Ger 2020

MINIS W क्रमा

> तमा क्रमा

(शक्ति बालामां जा गी व मान के क्रजो क्रकि २० ४ ५९-नाम्ब्री) मा भो इर

> मानार्व निमाक्त

नाहरिय, बानरिय

निशिषर निवासर मा को है। कामार पार्कप

१ हेरू अर्था अपाद १६९७ ७५। २. हे अर्थ आर्थ र्वोडोक्ट,क्ट्रा के के आप ज्ञा द|डोक्ट|

RT 81 71 41 =1 X #1 #1 41 ging 3 mil نهاي اي جنبو ٣ were with with 4.4 £ 41 414× 1 . -. . 17 7 R 4

<b>R</b> sft	Æ	श्चित					
वृद्धिः	τ.	425					
sf0	Œ	EFE:					
-		भेगम.	दंतुम				
Bu Fi		सुबिक	विक्रिम				
(पाठिक महत्त्वामी इ. मी	-		को चक्रिक	. go 43			
EN )				•			
<del></del> /							
	इ नो	•					
	(■	क्ता नाव	म्यं दिना	}			
Fix vit							
मिसारति वीसर्	Pic	sol.					
इ. मी थः।							
<b>a</b> r	₹						
98	रक्		644				
Pe	E 5						
	व्य	π,	वदिश्विक				
विस्तेन	शुहरू		निर्म				
प्रिपुण	हुत्य		विजय				
(स्थित मानानो इ.सी.स साम के श्रुवी स्थित है है। "रेरे							
—र≃र) सराप्र ३ <b>९</b> डि	देपान.						
६ स्रो था							
	-	मेरा					
1 \$ 75 46				173 0			
2 6 7 7 7 6 1 3 B :				H			
14 14 241 4		111	41				

₹≎



रे भाषा धीय श्रुष्य शिल् है भा कर शीप तुरु क्रिप हुन हैन विद्वीय विद्वार विद्वीय र्कनो पर विगीत्रक बहेवञ ਅਰਿਫ ਹੋਵ ਚੀਟ 5 ब ना फेरलार उनो व शहरी <u>व</u>शिक्तिर ETSET. क्परि न्तरि 244 वर्ष (राजि मानायां व नी भ नाव के शुक्रो पानि अं हर ५३-रेज्य सुरुव-स्तुत) य को इप पुरन पुरिश श्रश्रक्षे विश्व १ हे अर मा । १११ दो १८ हे अर मत *स*र्ग १३ इ रेदेश भा । ११६५ ६ १४ देश मा ८१५ र पर ४३ ६ । ५८ है अर मार । ।।।ऽ५ ।।।।।

98

13

(पत्रि नापायो क्ष यो ज नाम के पानि इस्य ५५,-२०००) के मो इस मुद्रा निजर बुकर के भो ईस उक्रक बच्चेद, कच्चूस के मो तक्ष मुख्य सुर्वेद

१ है सा च्या त्यापार है है सा च्या क्या है। १९५१ है सा च्या क्या क्या है सा च्या क्या १९४१ १२ है सा च्या व्याप्तरहा हुई सा च्या द्या १२। ४ है सा च्या व्याप्तरहा १९१।

र्वञ्च
धोज्युक धोज्युत
शहून पहून
र पा
मैक्स सूक्षर
भो।
क्षेप्पर (पाक्रि-क्ष्पर )
क्कोर्स (शांक-चेकोनी)
तीन, दूर
बीचा पूर्वा
चीला पूर्ण केद्वनीशविश्वद्वप्र <del>प्रचन्द्र</del>
के इसी शस्त्रिय ह ५५ <del>-दान्ते</del>
के इस्तो शक्तित है ५५ <del>-६० वे</del> किरफार
के द्वारो शक्ति हैं १५ <del>-४० में</del> फेरफाए हे मार्
के इस्तो नामित्र इ. ५५-कन्न्टे किरफार हे मार् साम्य किसा
के ब्रुजो शक्षिय है ५५-कन्टे फिरफार कार बाह्य क्या शक्क, यहक्त
हे बहुतो शाकिय व ५५-काली किरणप्रद । कार् पास्य किया भारतक, प्रशास । इप क्रिकेड इसि
हे बुधी शांकित व ५५-कन्में किरणप्रद   कार् कास क्षित शांक्क, सरक्ष   हथ क्षित
हे बहुजो शाकिय व ५५-कान्ये किरणप्रद   कार् पास्य किया भारतक, सरक्तन   प्रप क्रमिक्क इस्मि
हे बहुयो शाबित है ५५-कम्ब्री किरणप्रद हे स्रोड् बाद्य किया शब्दक, यश्चन प्रमेड इस इस इस
हे बुधो पाकित व ५५-कन्ने किरणतर   कार् सम्बद्ध किया मार्क्ड, परस्क   हर परिद्व हरि हरि हरि

[quen धुराम रिजय ET4 fer er 17 RE TE Yı विश्वा वश्या बुरसरी सन्वर् क्षार्थिका बाउनिका विरय, वर्षय मृत्या ह बटाची अन्तर्भा हुएथ ने बरंद हिन्द रच को के हरफter tree free. क्रा केर का ५ 478 477 श 42 42 Ťa hz fry न्तर 6,44 57 Ser. पूर्व देगा diaz, z नुस्का धरका (राजि भारता व्यागे व यात्र म मुध्ये गाँउ छ । प्राथ्य) 电射压力 طر والم श्रः के। क

424 45

त्राताः च्या के द्राप्ता स्थापना स्थापना । स्थानिक च्या के द्राप्ता स्थापना च्या के र

(र्दाक्रमारी चा १ पाव संप्रतारी १ व पू

יו די ייר מוזוע

fer

1-50)

44

**१८८ लो भो**। ध्येषा सना द्रश्य पीट fit क्र को अरिश रश वरीक व नो हि।

बारत नाडिम ९ मा फरफार य जो इर विषया जिल्ला देशर शिक्षर

8

य मी का स्तेष क्यु 🗎 देव (शांस बाधवां की इं धवरवां व वो जो बाव व इस-रोव समी गानि प्रकृष ५५-एज्जो )

9 व मा केरफार चेत्री सम रंपना रचन रोक्स जीवास म शो इंध

धनेकर तनिगहर १ हे जा ला । । । १६९ १६ १६ १६ मा ला टा । ११४६ १ हे 🕸 च्या अंशिश्यक्त आरिय-मारिय-बारिय

(ब्बरा) बाब करूपे विकास होतो बोईए (१) ॥ है। आ न्या ० ८१९।११ (१ भादे मा मा शारांका ६ ह मा जा । । । १५४१ ० हे मा PE ASSISTSING I



OT. याण गार्र (नारी वाति) भी ना फेरफार 11 मी भी नडी यीर भीन गीरच पाप धश्रह यीर धाउस सीरश **WATER** की की कार कील यारच बहरव (ताक धानायों जी की का बान के सुबंदे पाकि श<sup>5</sup> ५-की<sup>-10</sup>) (पनि जापायां कोई कोई धन्त्रमां भी में। भ नम भाग के समी प्रति त पू ५ दिलम्.) बीबोरमि शीर्शमध रीशमिक ग्रीमर्वे हुपारिण नुन्देर प्रश्लेषर, दीरवेषर पीतनच (भाषि नावामी भी नी ३ वान के सुबी पार्ति प्रण 🕱 🤼 -क्षेत्र्य ) मी नो मापर र हे म मा बारहार है ज मा बारहार है का स्वा क्षेत्रीय बहुत है के का क्ष्मा क्ष्मा क्ष्मा

## **श्यंबनना** फेरफार

संस्य व्यंत्रम ससंयुक्त व्यंत्रम समझा वे स्वरोती शब्दे रहेका व्यंत्रममा सामान्य केरकारः

खोप

(६) सम्बन्ध अन्तर्भ वर्षमन्त्री क्षोप वर्ष व्यव है:

तमस् तम प्राप्तः प्राप अन्तर्भेतः बेतन्यम पुनम् द्वम बन्धः उपरि अन्तर्भरि

(पाकि जावामां पर्य शम्बा समय स्रांतनको कोर बाद के नियुद्ध विज्ञु, सुन्नो पाकि प्र प्र ६ निवस ७)

(क्र) देलरोबी कच्चे आयेको काच चत्र सुप्र

व अभी व क्रोप पाने के र क्रोस यदन e) e मदम रित्र ववर रिस नवर बची -स्रो नित्रप **PIEE** 63 विक्रीय विक्रोप रचारक रसावक न्डन्। एक वस्त्रपालक

रातालक रातालक। नववालक सक्यासक रुपा लोग बर्चा अवनी प्रम बनाली समय बसने त्यां कोर न करती: क्षक्रमुक प्रमाण, सुरास स्वाप स्थानन, सुरास विद्वर धनाव सम्मान देव दाला करोटे.

चारि, ग्रीरहेवी मानवी वैसावी वृक्तिक व्याची अने अपश्चेत्र अवाजीमां जा निवसना अभ्यादी है से इसे वही वजा ववालाल स्ववाहे.

श्री का व्याप्त व्यापा छ ते हुन प्रका वयात्वाल स्वयात. १ के का व्याप्त ८१९१९९१ २ के जा व्या ८१९१९५५१

(का) ना अपनायो -मा भोग्गी निवस थना मा अवस्थानी व्यापनारा मने पन्नी वर्षी स्पन व क्यु होन एवा बीजा बागान्य बने विवेष विवास नैवासी श्रामध्ये सम्बद्ध नवी १ पेकरण 3490 यक्तपेदा पनापेत

> स्पापुत्तवयन समापुत्तवम विकासित विकासिय m/Pri कविन

अगतह वयेरे -बारसेनीमां वे स्वरोधी वचने ग्रीका **व वी ४ वहन १** हे sfle.

**STOR** करिय 1004 ल्हो *महिना पश्चिमा प*र्मना

मेरिय परिच

-धीरपेनीयां य के से पेरणारी क्यावेस के से बचा क्यां करनाई में होत त्यां प्राप्ती वैकाणी अञ्चलकानीकानी क्षेत्र अपनेक्ष्यां एक समस्ताहरू (शक्ति माश्रमी रे शी इ बाव के बाबो शक्ति २० ए ५९-४:=१) -धापनी नावामी थ नो व बाव के ४

कारत वस्तर

१ हे 🗷 व्या ना शरेश ए. हे प्रा व्या नागरेंद्र । र हे बा लग बाजोर र प्रदेश प्रवास के बा बार

चानाति यात्रवि बान्दर पर्जित परिवर गरिवस (पाक्रि आचार्याचनी व बाव के इसको पासि प्र प्र ५५-------व) -पद्माची स्थापमां अने चृत्रिका-पद्माची आपामां त कायम रहे हे अभी द मो एवं त पावी क्रम चृपे 69 Πe **स्टा**ली भक्तती मध्यो ध्यम घटन स्यक क्रमा कत्त्व **बंद**प्य दामीवर टाचौतर **पायो मर** (प्रक्रियासमा द नो त बाव छ. जुलो प्रक्रिय प्र ६०-४०-४) - चरिका-पराची नावामी श नी क बाव छ अ शो च बाद छ **ब्लिट** के के कबार स g. 4 40 Ħ मिरिक **विशिक्तर** चिरिटर विशिद्य समर नगर PER गयर स्वर सास भाय नाक काय ताब थीनुर चीमन चीतृत चौसन WHIT HYNT चकर W117 रामा शामा राचा रावा दालक बाउ ६ THE शासक बचेर दरश प्रथार यदवर **31791**1 र्वजन बाहार करंग कर है या सा दीगारिया

	बेरमङ												
व्यक्तिम													
नारियां	वादेख	4	मो	4	चतो	नवी	œ	4	TH <sup>4</sup>	वातना	•	ये स	

18

જૂ વ

च बहो वनी १

यति वृद्धि भिति निरि Ruff.

बीक्त बीक्त बीक्त बीक्त बीक्त शास्त्र भागनः गासन Building (प्रभोदिक विकासिक विकासिक विकासिक विकासिक

(पाछ यान्त्रमा वं नो क तथा व नी व बाद के सुत्री सन्दित्र प्र ५(स≔क स्थाम∞भा)

-अप्रकार जानाओं चीन बीच प्रतीमकों का वी थ बावर के

निर्धानकर निष्कोदयर निष्कोदकर. (पाकि साधार्य क्र के व वान के सूची पाकि १० हा ५५-माना)

भंत्यमञ्जूषा श २/ वेज्ञाच समोदा सत्त्व मंत्राचे स वावर है-वारा वार्ज निवद विवन (वाकि-निवद)

**SEC 413194 1** 

भेवरमा स्वेत्रमधो स ३ केची पूर्वमां व्य के जा आवेगा के क्षेत्र क्षेत्रमां क्या वर के बा मानेका के एवा जा व गोरेवी प्रकीय कर्ता बढ़ी शरूबे रहेका था मी

य करवी अने पाकी रहेका का नी गांप करवी।

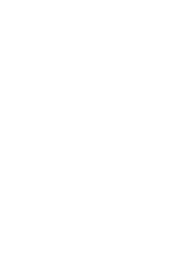
उ हैच्या ज्या । भा १९७४ में आप च्या । साहरहा रे देश च्या अभार ४ इस्तो औप (क्र) भू हे स

वृक्तिका-नेशाची मानाने

म हैसफल पू-वे

Pelit Pelit

नासम



निर्देश	निन्तर	ियार
प्रदेशा	परिमा	प्रक्रिमा
<b>स</b> राय	CELLE.	सुर्वार्थ
		ofene

f8

शियार

चस्रकृ

रमस्य रप क **4**04 पास 100 ŧέκ ₹6 14 रका चदा EK! गहर यप्र पशुर

वृक्ति पृक्षि भूके पंचय नवन वान्यव रमा एक्ट रयच रम्य ter रम्या क्यानी ध्यन्ती वक्रयो

(शांकि बास्त्रसंत नो पंजार के सुन्ने शांकित इ. ६२ वः<sup>त</sup>) ६ में लहेगी क्यों बारेच द में व बाना है: भर प्रका मही नक्ष्या बंद शदा बढ सदा

(बाजि माधानों देनी व बाल के खुओं। पाकि तर प्रश् ५८ दन्त्र)

रेक्सची बाधार्य ह नो ह क्य बावर है

w

Ψī.

要在 可 क्रुंद्रभ क्राम

444

4

ा है आर बहु । ११६९५। र है आर व्या ४।४(६१)

रंगा भक्क

भिना

पश्चिम तकार शंबक ভগৰুস

ग्युड

tex

400

बहुर

युक्ति

रहर

ML.

उद्ध व

ऋव

ч.

14

बद्ध बहुर भूदार भूतार १ पत्नीर पहुरू छ वे स्वरोगी वरच आवैता व नो छ वावर छे:

राया समाव । शवह थाना अधैवरि ग्रीसद् (बाफि अनुवासी द वो छ बाय छ खुओ वाकि प्र पु ४३ व≕अ)

(বাজি লাবানাখ লীৰ বাব ভ জুজী বালি স ডু ১८ কচন) वे स्वरोधी वरणे आयेला न नी ज बाद के अने राष्ट्रश्री

भारियां रहेकान मान निकल्पे बावक छै कारतः। तपन दरमः। पर्म स्थमः। नदी बद्दे नदें। नर चर पर। ननति येह बेदा

(पाकि बादायां न नी न वान कं खुओं पाकि प्र प्र ६९ न=न } पेडाकी मानायों न नी न भारत स

큣 273 ties.

९ अन्दी अवना शा भी नाडी माविता व नीप व व बाब ६ 🕸 ছবিদ বুলি। বুগাল গুলার । প্রেলি করে ।

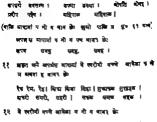
द्वाप व्यव । यात्र नाय । श्वाप द्वार ।

इंडर क्या दाराकार।

१० में स्ट्रॉमी वस्त्र आदेता व की ब बाक at: १ हे म स्था लाशांत्रा रहे म स्था लगार श के के का क्या शास्त्र १९९१ व है ब्राक क्या टालाक स

274

% दे प्रा मना ८६%। १० हं ६ औप (छ) मी शरताइ छ



33

ध्यम अन्त । लक्षक् लक्षत् (शक्ति लमापू) (वाकि सावामां व के व वात के का को पाकि प्र पू ६९ कला)

मर्पाकः माद्यमां व ने नवके में वस बीकावर के र

काक wife. -

अगर गर्नेर मचर समर 10.00 SPACE . Peer MK. MST

क्रमार करेंट MATE क्रमर, क्रमार THE 9.1 Bur

व्यक्त

र कि मा जा नागावता र हे मा जा नागावता

**90 (1903)** 1

क्या नामध्यम १ है जा व्याप नामध्यम र है जा

१३ गुम्दनी आदिना व नै वबके व बोकाना छ : यह करना व्यास करो । बाति प्राप्तः। वस वसा वदा वहा । (पाकि भाषामा व भी क यान हो- मनय सप्ता साओ पालिप्र पू (९) मायदी भाषामां व नी व व रहेर छ । सानि बारि बाद वचा नेवा ववा वान BOTH I श्राम स्तापनी सामार्थात से बरकेत साव ३ छे : कर WH कर विभार विचार विवास नर नर HERE. चुनिका पशाचीमां र नं बद्धे दिक्ती स वीसादश है 163 TT पैद्याची मानामां ल ने बहुते के बोमांबन छः EES. कसर SHIP 53 चुन चीन चीन बरिष माचमां स ने बरते के बोताब छ। " अनिनम"त पुरोहिन्म " शहरत्त्रनी आस

(पनि मारायो व ना क बाव छ सुत्रो वानि श्रा प्र ४३ कळ)
ा देशा च्या १११४५५ २ देशा च्या ०१४१५२।
देशा च्या ०१४१४०। ४ देशा च्या ०१४१३३।

% है झ च्या aivite ।

मार्था किमाननी प्रकृत भागामां सामि को व ने पर्छ । बीकाया के इस्य इत्थ । वक्ष दक्ष । निकारि-निकार । सम्ब सह । धोना लेस कतान करान । जीव भीता निक्रम निवस । याच र्यंत्र । वीव रोत्र ।

निकेष विदेश । केप देश । निज्लेष गीरोप । मानवी जानामाँ स्राये वली पाये तथा साथे वस्ते इसनो ह रीक्रावर केः

धीयन घोषन तीक्षण । युद्ध द्वार हत्य । यारत तालव बार<sup>त ।</sup> इंग्रंड इंक्रा होता प्रकृत प्रक्रिया प्रतिका

रेफ जो इकार अञ्चलकारणी पत्नी ब्यायेक्यो होन हो केने न**रके प** पत्र बोब्धवर के

निंद सिंध, सोद्दा बोहार बेचार सम्रार् (वे निवती राजान्य प्राप्तरम्यं क्याचेश्वर के वे बचा च निवयी

शीरवेगी माराही, देवाची चुनिया देवाची वसे वरासंग्र आगार्थ 👫 बाह्य पड़े के दिवान के बोर्ड अपनाय न श्रीन त्यां केंग्से, 19मी नियम बीरपेनीयां वेशानीयां शृक्षिका वेशानीयां क्षत्रे अपत्रमधी d ben us

ा है साम्या | शिर्दा क्या श्रंपा र के सा भा तरिक देश देश का बालरपुर

धेरफारो 1 अकसा चेरफार

क्तानी चर्च पर्यंत्र चायाः। धीक चीका धीकक चीकमः! पुत्रत्र चूनः। (चूत्रत्र एउके चूनको ) कालो रा स्थलक धालमः। धाषक अस्तमः। धाषक जामरिकः।

क ली रा अस्तुत्व शास्त्र । अस्तुत्व । शास्त्र आपरित्त । आस्त्रर आस्त्रर । क्याक्त क्षत्रस्य । एक एए । एक्स एमरा कमूक नेन्द्रस्य । रीक्स सिन्दरः । दृक्षम हुनुत्र । स्वत्रक स्वयन्त्रत । स्वत्रक सरस्य । सामक सामगा क्षेत्रक सीमा।

कामो च विराठ विकास (विकास दर्जे किस) कामो स चीकर छीमट, छीमर। कामो स चीकस चरिमा।

कारीत चल्ला चारणा कारीचे ल्लीड पद्युः प्रदूषः कारीद चिहर मिहरा लिख्न निहमा स्थाप्तिक प्रस्थित

धीनर शीहर सीमर। (पार्टिमाशामीक मी वास्त्रवाक नी व बान के सुझो पाडि प्र ५५ कल्या तथा कला)

नव्या विश्वय हैरदार नाव झंत्या समान्य हैरदार न व बाव एस नवी. कंपने; खेर्बकर-जिल्लार । बोच कोल नवेरे । कुली समान्य निस्सा ह (व) त्या र । १ हे जा न्या ४१११०० १८२, १ १,१८४ १०९ १८९

2 १का वा फेरफार ≅ मो क सङ्ख्या संक्रमा । सङ्ख्य संक्रमा 3 ग मा केरफार गनोस भाषिकी नामिकी। प्र'वाम देवार । ग नो छ काय बाक । भागती गमोक श्चनंत सहर, शहब । हयब सहर हहर । 4 १व ना फेरफार य मो अ विवाची विवासी Rest व मो ड महान्यम । भार उप च नो त रिवाच Prom. नियाम च नो स व्यक्ति परिवा पाइम 5 **पत्र ना फेरफार** य मो स परिष सरिष् 6 भावा केरफार द मो इ काम केवन । सक्ता समय । तथा समा । ट मो 🛥 श्वविद्य प्रतिकृत क्षेत्रः विकाः, विकाः -वाटवर्ति पानेव् चरेर १ हे अल्ला । १११ ९ १ स मा ४।११९९ १६९ १६६ । ३ हे आ व्या ।।।१६३| हे आ व्या दाप्राप्तक पश्चित क है जा क्या । गरावद । क्<sub>र</sub> है जा स्वान annet हैं। १९। × सुनी क ना केरफार । + नाही सद गर्द क्षमहरानों के एउके व बायुनां धमान करोगों का निका समाउची

(पाकिस्तवामी तत्रीक स्ववाळ पण वास के शुली वाकि g g 42 3=5 3=5) 7

१८ मा फेरफाए शहोड अस्टेस्स ठ नो छ

रिक्र क्षिक क्षित्र ड सो ड

रव मा केरकार 8 

(पाक्रिक माञ्चली वानी अक्षाय के खुजो गासि प्र प्र ५० च≃क्र) ।त मा फेरफार 9

त तो च 74

त नो छ 2 2.4 त को द समर टबर दवर तत्रर

चसर

उसर (पक्तिभाजमां त को टबाव के खुको पक्ति व पु ९८त≕ः, त नी क पराका खाना

प**ष** (पाकि-परि) प्रकेट 4-प्रतिसर पश्चिमा प्रतिपत पविषया

प्रतिकार पविद्यार १ हे का च्या ८/५।२ १ ९। खुओं वि ६ ८ओ सामान्य

फेरफार. २. हे बाब्बा टाशर हा हैहै बाब्बा टाश 🕝 वै सब्दर्ग प्रक्रि वालेको होय वे छनाम शब्दोमाँ जा निवस कराहको।

प्रतिनति परिवर्ति क्योरे ।

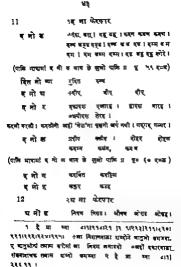
प्रसूति पश्चितः । प्र स्थाप्ता सारकः । द्याप्ताः स्थाप्ताः स्थाप्ताः स्थाप्ताः । द्वाप्ताः वृक्षः इति द्वापाः । द्वापाः । वृ	प्रतासक स्था असरक असर व प्रदेश । प्रश	ताः । १९रीतमये ॥ ताः भारत्यः अप	(स्त्री। सप्पा (दश्यादर।≣ा
त को य	वरिप्रकार	विजेता । पर्धि	तुद्धिकाः
स मो र	शति वक्त		
त नो 🛎	करती संस	ति । शास्त्रप्रदर्भ राजसङ्गी । प्रक्रिय	
त नो थ	नातेष गीठन	नावज्ञ चीरसः	शाहरत गीमक
च का इ	Profes An	(निय (धानि निय अ	स्य हमो याँ इ. ५९ सम्ब
	बाहर गरतं मानुनिक्र मानुनिक्र	काइस जया साहुसिय, वसीर.	धावर भरव शास्त्रीवन वास्त्रीवन वास्त्र
10	भ्य माध		
थ नो इ			inflow defect t

Pall's Palls Palls । पुल्लो पुरसे पुरसे

(चारित पानी श्रामी चालि अ ह ५५ बज्दे)

च नो ध RAK HA, ME I

त हे मा ना वागरतपरत्रात व



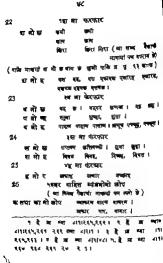
13	<b>भग मा</b> है	Kerlic	
म नो व्य		व्यक्तिम	नामिष विव
शकि माद्यमां व वी	छ पार के	सुओ चार्किः	go gr fig 1950
14	१प ना	<b>केर</b> कार	
प काफ	<b>416</b>	EASE	
	नक्ष परिश्वा	चारेद पार्वेळन प्रस्थ पश्चिम	
(शक्ति सावार्व्य व वो व	४ पान 🖻 🕯	(मी पश्चित्र <b>ः</b>	8 A d≈2)
प को स	भाषीय भीष	नायेब, नीय	व्यवेग श्रीम
य नो व चनो र	त्रम्हा पार्शीक्	बहुत गरदि	
15	३व ना	बेरफार	
थ नो श	RReft	(Infile)	t
(পাটি দাৰফৌ ৰ' গ	मि भाग छे	सुओं पासि ।	eo प्रदेश काला)
च नो स	क्षम्ब	uplu,	करेव
६ हे॰ अ॰ व रहर रहरुरक्षा ३			त्रमा समारहरू दश्हर

ter to the total 1 to me and

E 4 . 4 . 4 . 4 . 1 . 1

**(						
	य नो त	मुच्यक् मुच्यक् मुच्याक्रक	ग्रम्ब ग्रम्बन्द ग्रम्बादिक	r		
	यनोर	लासु	न्तार्			
(qr)	भारत्यं व ने	रशसके क	में पक्रिय प्रश्	v स्वा <del>युन्दीर</del> वे£)		
,	य वो क	वडि	wilk.			
(9	क्रिंगामध्ये व	ৰী ভ ৰাৰ	हे सुनी गाहि	20 E 65 2005		
	य सो व	धरीयम	पद्गान			
	(पाकि शाकाम	व नी व चा	<b>प के श्रुम्मो</b> पा	(Pept f) of or a		
	य नो इ			इसमी कारा-अंगी ते तथा क्रप्रेरमी संदित		
19		१६ सा	चेरफार			
	र नोड	िधीर विकर मेर	पिक्ष विद्या क्षेत्र	Rec		
	र नो डा	पर्नाम	पंडाबान,	प्रमाम		
	र वो घ	क्रकीट	क्रम्बीर			
	र नो छ	<b>PERSONAL</b>	र्श गांचा			
		ध्यम	4064			
		परम	-			
		वरिष	यमिष्			
_		वरिष	क्रीम्			
	1 देख	mile 4 4 4	12 212 24	\$ 844 844 F		





गनो स्रोप –	- इयत	pilal	नागन ।	1
क्ष मो सोप-	-स्तुव स्यु	रपुण । रनु	नवय चलुत्त्व,	बञ्जनह ।
	शाकन मान	भावच। राज्य	P# राउम	राक्टक
इ. इ. तथा	पात्रपीठ पानी।	गावदीसः। पा	(पंतन पावडन	पावच्या ।
दे मो छोप	सङ्गरमर	स्वर स	उपर ।	
	हुगवियी ह	म्बर्धा हुम्गाए	री अवदा हुम	यावेजी।
य नो स्रोप	<b>िक्टिमचन</b>	रिशमा	क्रिसक	र ।
	न्यकान्त्रस	<b>व्यक्ता</b> स	STEEP.	rer (
	<b>E</b> 94	विद्रम	धिवय	1
	सहस्य	र्शाहम	समिर	त्व १
चनो स्रोप	म्पा	we		1 /
	बार्क्सान	€रहमाच	नामसमाच (	
	एक्सेव	एमेष	एकमेक ।	
	टावच्	ব্য	स्तम् ।	
	gáiles	वेदक	चेत्रसम् ।	
	आशास्त्र	पार्थ	पाचार# 1	
		<b>अप</b>	वाव (	
विभो सोप	व्यक्ति	यीक्ष यीचि	<b>4</b> 1	
27	भावि	ष्यं <b>अ</b> सनी ।	बोप	
क्रामी:	पर्वता क्या नव	ीएवा अर्थात्	सक्तमी आर्थि	यो स्कार
		दमां बनारेख को		
		च अर		•
		चित्र इच ।		
		पुणः सम	सची ।	

१ हे मा भ्या दाशापुर ।

संयुक्त व्यंत्रमीना सामान्य फिरफारी १ (पूर्ववर्ती व्यंत्रनमे क्षोप)

प्तिनी के ब्राह्म वाहि रहें जो बातिसान होने का व्यक्त वर्ष पान के ब्रांस वाहक वरिको अनुकार रखा का हु है जो नाने पड़ होण हो हैने वर्षके अनुकार क्षण पड़, हु, त्य वर्षे क्षण रोजान के तथा ब्यास वरिको अन्तर्य का व्यक्त हु, क्षा तथा करें होने कि का ब्राह्म अनुकार कर का ब्रह्म, ब्राह्म तथा कर सोजान की

कः शुष्प शुरु-श्रुतः । शुष्प-श्रुत-श्रुतः । स्वयः-श्रुत-तत्तः । किन्न-किः विद्या-निवा ।

श इत्य-द्वय-तृत्य । शुल्य-श्वय-श्वया-श्वय । इ. वहरद-क्राम-क्षयम । कहरका-श्वयम ।

द बड्-तय-कम । वर्ग-तम-शम्ब । त स्पन्न-कमन-कपन । अपार्-त्याम-कपाम । वामी-वारी<sup>४</sup> ।

ब्र् सुर्ग्य-मुक्त-सुक्तः । सुर्ग-मुक्त-सुक्तः । पः प्रत-प्रतः । सुर्ग-सुक्त-शुक्तः । द्याः निक्त-निक्का-निकारः (शक्तिः निक्काः) । स्वयान-वस्तरः ।

क्ष्मित्र-विद्य-विद्युत्त । स्वाप-त्युत्त । स

(शर्कि समास्य चांचा, वच नी त्व द्याची चा, इत ची म्यात नी चान्छ नी च्छा छ नी छु, छ नी छु, त्व जी वच्छ, प्रती

ी हैं अर मेरा स्टाप्त के हैं उस बसा दासादी ने हैं अर मेरा दाशांका है इस बसा दारा ना ण स्त्रानो क्या रुक्ष नो क्या स्थानो स्था क्यास्म नीस्य वाय के इस्तीपार्किय पूर्श १४ (नि ३) २५ (मि ३१) ४९ ३ ४१ सम्बाधिस २६ (मि ३२) ३७ (A x4) 24 (A xc) 20 Em-Eda 24 20 24 (A

## परवर्ती व्यंज्ञममो छोप

४४) २८ ३६ एक-ए-बार राज)

म न अने य जा व्यवस्थ कोई पन समुख्य व्यवसमा परवर्ती होया दी तेना बोर १ थाव सं क्षयें कोप बना पठी के व्यवन बाधी रहे ते को कादियां **न दोव छ। ज दवछ य**ई का**न छ**।

म पुष्प-सुष-भुष्ण । स्मर-सर । रहिम-रमि-रस्सि । स्मेर-सेर । स कार-नय-नाम । बार-नय-बाम । वृष्टबंग्न-बर्डरम्सूब ( भर्ती थ

चयम बटी नवी ) थः कुत्रप-कुत्र-कुतुः। स्वाम-नाहः। द्वामा-सामा । चण्य-न्वरूतः चेर्द्रश्चः।

(पाकि मादार्शन नादवान नाकोप शाटे आह्मो पाकि प्र पू प व्याप्त ४८ (मि ६६) प्र २१ (मि २५)

पूर्वपूर्ती नथा परवर्गी व्यंक्षननो स्प्रेप

व द र क तका विसम साम्बन्दी कोई पत्र सनुष्ट स्वयनस्य पुरवर्धी द्वीय के परवर्धी द्वीय तुनी औषर थाय छ बाने सीप थवा पूछी भ व्यक्त वाची रहे स को कावियां न होन 🖹 व दवस वह बाद हो।

पुत्रवर्ती व भवन-अद-भद्दा शब्द-सद-सद । स्टब्स-सद-सद्य-सद्य । हरकर-सुपन सुध्यन-चोद्रश ।

९ हे प्राम्मा ।।। १ हे प्राम्मा *दा*ना**०**९।

परवर्ती स महान्यान । क्या-दिस । स्था-वस । स्वेहर-वेस्ता स्वेहर-व्याच्या । पूर्वपती र सके-वस-वस्ता । स्वेश-वस-वस्ता । श्रीके-दिस-विका-स्वा वर्षी-का-स्वा । सम्राज-सम्बद्ध-सम्बद्ध-वास्त्य-वास्त्य ।

परस्ती र विवा-विवा । स्वा-व्या । सक्त-व्या । राजि-रहि-रीति । वाजी-वर्गी क्यो । वाजी-वर्गी वर्गी ।

पूर्वेत्रती क जन्म-क्या-क्या । बल्क-व्यक्त-व्यक्त । परवर्ती क निकल विका-विक्रम । स्कूल-क्यम ।

विश्वा इत्येक-वृश्वित्र-पुनिवत-वृश्वित्रणः । इत्युर-दृश्य-दृश्यः ।

निवद-निवद-निरमदः । निवदः-निवदः-निरमदः ।

सक्य-वर्षा वर्षकर्ता अने कार्ली वर्षा कार्या कार्या संक्राचे स्थि

त्त्वा-जा पूर्वता को बरका एवं वाका कामने हैंने बचनों और बारते होन को अनेतीने व्यवसां राजीने सेन्हें तिया कर्यु वर्षिय है।

बडिम दिएल दिलीय कोरे सम्मोद्ध इ.सां व् एत्स्त्री है औ १ एरस्ती छ, ठेनी वृती और बतानो अर्डच आहे है औ व्यो रोग बताने पर अर्च आहे हे स्त्रीय की स्त्रीय है दिला से दिला राग दिला थे निर्देश स्त्रीय को छ तथी है सम्बोद्ध बता परिंद ६ ती व और बराने का पहली वृत्ती और ल बराने हिंदी दरायी दिला स्त्रीय वाद अर्थ निर्देश दरीत बारो और बसाय नारी सर्दे सामित बाद अर्थ निर्देश दरीत बारो और बसाय नारी सर्दे सामित बाद अर्थ निर्देश की सर्देश बरीच करें कर सरहे दरि

छ) वा रीते व का नीचे आवेता त्वा धारतेषां स्थानतुः
 पूर्ववर्ती सः वालव-वाल-वालतः
 पूर्ववर्ती सः वालव-वाल-वालतः
 पूर्ववर्ती सः सः वाल-वालाः

१ हे मा ना न्यना



परवर्ती व महा-थन । वक्त रिक्ष । भव-वन । स्टेस्प-वेरम। कोरप-सीरम । पूर्वपना र अक-सक-सह । सप-सप-सम । श्रीव-दिव-दिव-दिवा

वर्ष-वरा-वस्त । सामध्य-समय-नामध्य-सम्भा परवर्ती र क्रिया-दिया। स्य-सद् । बळ-बळ-बळ । साँच-र्या-र्या वाडी-वटी यसी । बाडी-वटी-वर्डी ।

प्रवेचनी स रामा-रचा-रच्छा । वध्यक-वच्छा-रच्छा । परवर्ती क्ष विकास विका-विकास स्थाप-तालु । विमाग इत्कित-तुषिश-तुक्तिश-तुक्तिश्च । दुन्तर् इतर-दे<sup>त्तर्</sup> ।

मिन्नह-निवह निव्नह । निज्ञरह-निव्नह-निव्नरह । सूचना-ज्यां प्रवर्ती अने शरकों एव शब्दे आत्मा मंत्राच्ये और

बरागी प्रमय आपने होत त्यां उसीयोने व्यालमां हत्यांने सीरमुं नि<sup>त्रम</sup> बायु बायम् क्रेप

बाँहम दिएक दिलीय वर्गरे बावरीमां इ.स. चू पुरवर्धी हे स्मे द परा<sup>त</sup> छ रागी दुन्में और बदानी अर्थन आहे के समें दुने मीर चराचे पर प्राप्त जाने छ *वदिव्य* नी बॉल्क्स, <u>दिया</u> नी दिस् डमा द्वित्य । विदेश अभीव वर्ष छ तथी है स्टब्टेमी बाज पूर्वी इ. मी म बन कावी कर कावती वू जी शार म करती, (कू मी मी

करवादी प्रदेश क्यांय बाध कर दिसारे क्रीडे आही क्रांच डे<sup>म्प्रक्र</sup> मेरी बारे चू में और व करना पूर्वरमें कू तो ज लोर करही वर्षी

 भ) वा रेत्र व का लेचे अपेता वंशा सम्बोधी नुस्कृतः पववर्तीसः वाजव-वज्ञप-कामनः । शुरूत-सूत्र-सूत्रः ।

प्रकृति ह ना-नर-नार। L R m un afel 31



क्रमदेख सर्वेज मधोश्य सम र्राकाः ਦੀਸ਼ समा देश समाम (साम्ब मापामां का को साथान के सूको पा प्र १४ दियाच प्रकार-रक्षाण) क्ष कान्य---केन, जाना। इहा इट, यह । बसुत्र समुद्र । सहस्र । सहस्र महाप्रदेश प्रशास का बहु बहु। प्रमाहन होती बराज्ञस मानामां समुख्य अक्षरमां परक्षी रहेता र्' मे बोरा मिक्सी बाज केर किस-दिश क्रमां किए । अलाव दिश । (पाकि साधार्था धर्मा अन्तर्भ पूर्वन्दी धाढे पहले पाकि प्र क का (शिवाका) क्रावेट वर्ष (शिवा वर्ष) क्र 14 (Pr 94) g 1 (Pr 14) g 12 (Pr 14, 16) g 12 (Pr 14) . का विकास ( भारी के के विकास करवानां के दे एमामध्ये एकरविका सक्तरार्थ

५¥ राजा

म्मा

शन्य

नियम व्यक्ति एटके छाराची बढकाराची ब्रद्धार्थ करे वेदतिय कदानां दिश्य सामियां ज्यों एटके छादाची अंदरायां करायाच्य ए करावर पानक्तां राच्छा ) छार तो ज्या शन-पन एटके स्थानशो नांचा श्रमा-च्यमा (ब्रमा एटके जायु-गहर करही )। छन-च्या : श्रीन-च्यांच । ब्रीर-प्यार : श्रीय-च्यांच । श्रीराज-जीवा ।

श्रा तो प्रश्नापुरुगण्डा श्रव-रिन्थ। यहिका शनिवाशाः व्याप करवणः । १ वे आ स्था ८० ११९८० १. वे आ स्था शराशः मागधी भाषामा क्ष ने बदले र्फ आम जिह्नामूलीय १ 'क' बोलाय छे यक्ष यर्फ प्रा० जक्स राक्षम ल क्य ,, रक्सस

रक्त नो ख निष्क-निक्ख । पुष्कर-पोक्खर । पुष्करिणी-पोक्खरिणी ।
गुष्क-सुक्त ।

स्क नो ख स्रन्द-ग्रद । स्कन्ध-प्रध । स्वन्धावार-प्रधानार । स्क नो क्षत्र अवस्कन्द-अवक्वद । प्रस्कन्देत्-पदर्गादे ।

उपस्कर उद्मयार । उपस्कृत उद्मयाड । अवरक्रर-अदम्खर एटले ओयर

(पालि भाषामा ध्व नो क्ल, स्क नो स तथा उत्स याय छ ज्ञो पालि प्र० प्र० ३६, ३७)

ज्या ज्या मयुक्त प अथवा स आवे त्या तमाम शब्दोमां मागधी भाषामा ३स योटाय छे

संगुक प उप्मा-उस्मा प्रा॰ उम्हा । घनुष्खण्ड-धनुस्मद प्रा॰ धणुक्खड । कष्ट-कस्ट ,, कट्ट । निष्फल-निस्फल ,, निष्फल । विष्णु-विस्तु प्रा॰ विष्हु । शप्प-सस्य प्रा॰ सप्फ । शुष्क-सुस्क प्रा॰ सुष्क ।

संयुक्त स प्रस्मलित-पस्तलिद प्रा० पन्ताल । बृहस्पति बुहस्पिद प्रा० बुहप्पड । सस्करी-मस्कली प्रा० सन्त्यरी। विस्तय-विस्तय प्रा० विम्हय । हस्ती-हस्ती प्रा० हत्यी ।

( पालि भाषामां आ विधान माटे जूओ पाठ प्र० पृ० ५१ नि॰ ६८ )

१ हे॰ प्रा॰ व्या॰ ८/४/२९६) २ हे॰ प्रा॰ व्या॰ ८/२/४/ ३ हे॰ प्रा॰ व्या॰ ८/४/२८९/

*	•	र विधाम	
स्पानां च	स्याय-चाम ।	स्वापो <b>~वार्ष</b> ः	स्ववति—चन३ ।
त्य मो दय	प्रस्थ-प्रथमः ।	प्रमुक-धरम् ।	सरव-सम्ब
त्वनोच	क्षमा-किया।	मार्था-चवा ।	क्ष्मा-स्था ।
	<del>पुनत्वा⊸योचा</del> ।	धुला-धोचा ।	चल्या-चन्नरः ।
( गक्रि	मामार्थात्य गीः	न चालकास्य संचालकास्य	नो च च मात है
	प्र २० छवा		
¥		विद्यार .	
असर को छ	-		क्षमा समा (प्रविनी)
41.41.6	4. 4. 400 1		- कार । क्षत्र-कोण ।
स नो प्रक	नक्रि⊸निका । इ		च्या । सम्-दिका
			कृषि-इतिः ।
(দাঈৰ	याचामां वाणी व	, वा वदासमा स	नो भ त्या क ज
			संस्था सम्माणस
<b>स</b> —स दिएक	ष्ट्र १६ चेमके,	यक्ष सम्बद्ध हर	कः । अरम्ब वदः ।
कीवा करवा	पात्र प्रा	41	
१ प्यानी प	<b>इ—पूर्ण्य-रिका</b> र	1	
श्यम नो क		ाप्श-१ <b>च्छा</b> । मिप	श-दिका । समर्ज-
	Sing-Sin	TE I	
स्र नो च्छ-	- बाधव-लच्छेर पृथिक-र्विक्रम		। चर्चम <del>-पण्डि</del> म र
			<b>१. हे</b> प्रा
A 12121 2 1	ber maner -	acces to the second	T # # 10 (1) 4 1

दाराहा है के क्या जा । १९१९ प्रा है जा क्या कराहर १३

स्स नो च्छ-उत्पव उन्छव | उत्पाह उच्छाइ । उत्पुक उन्युअ । चिकिमीन चिड्युड । मत्मर मन्छर । सक्सर सवन्छर ।

प्स नो च्छ—अप्मग अच्छम । जुगुप्पनि जुगुच्छः । लिप्पति लिच्छः । जुगुप्पा जुगुच्या । लिप्पा लिच्छा । ईप्पति इच्छः ।

मागदी भाषामां नठ ने बदले 'श्व' बोलाय१ हे गच्छ गश्च प्रा० गच्छ। पिच्छिल पिश्चिल प्रा० पिच्छिल। पृच्छति पुश्चीद प्रा० पुच्छड। बत्मल-बच्छल-बश्चल प्रा० बच्छल। सन्स्वलित इश्चलिह प्रा० सन्स्वलड। तिर्यक् निर्मिन्छ तिरिश्चि प्रा० तिरिन्छ।

(पालि भाषामा व्य नो न्छ, ध नो च्छ, सा नो च्छ तथा प्स नो च्छ घाय छे जुओ पा० प्र॰ प्र॰ २१, ३८, २९, ३८)

## ५ ज विधान

चर नो ज—युति लुड । यात जोश ।

च नो ज्ज—मय मज्ज । अय अज्ज । अवय अवज्ज । वृद्य वेज्ज ।

च्य नो ज्ज—श्रम्या सेज्जा । जम्म जज्ज ।

च नो ज्ज—आर्य अज्ज । नार्य क्ष्म । पर्याप्त प्रजन्त । भार्या भज्जा ।

मर्याटा मज्जाया आर्यपुत्र अज्जवस्त ।

गौरसेनी मापामा य ने बदछे य्यः पण बोलाय छे स्वार्यपुत्र अय्यटस, अज्जटस प्रा॰ अज्जटस । आये अय्य, अज्ज प्रा॰ अज्ज ।

कार्य करम करन प्रा० करन । सूर्य सुरम सुरन, प्रा० सुरन । मागधी मापामा य ने बदले विकल्पे स्मार बोलाम हे

<sup>ी</sup> है॰ प्रा॰ ब्या॰ ८।४।२९५। २ हे॰ प्रा॰ ब्या॰ ८।२।२४। ३ हे॰ प्रा॰ ब्या॰ ८।४।२६६। ४ हे॰ प्रा॰ ब्या॰ ८।४।२९२।

40

अस्य करन का अस्तरहा श्रेष्ट्र सर्थन का स्टब्स (स्पापन) विद्यास्त्र का निज्यास्य । (पार्कि सामार्थ य जो क यह तथा रज रण भाग है, सभी पार

प्रयुक्तिको १९ श दिख्ला (पाकि मानामां व और निर स्त्र के रिज बाव के बाओर पा ज

E 15-16)

٩ हा विश्वाम १ प्रा मी इस भाग शाम । मानदी बानद ।

प्रयुक्तो प्रसादशासाम् वसकातः । सम्बन्धे सकारः निम्म निर्मा साम्ब सर्वा । स्वाप्तान अवसान ।

द्धानो स व्यवति वज्यति । क्रज्ज क्रज्जाः सद्यम्, सङ्घः सद्यार भद्रामी कह छक छन्। छन्। छन छन्। का

**। सामी** साक्षीण शीण । श्रीनते जिल्ला । **ध्रा** को उत्तर क्रमीण पन्तीत ।

(पालि भागमां व्यानो श्रामान क्षेत्र बस्तो ना प्राप्त १९ व्याच्या व्यानाको (पाकि मानास्त्रं का को सह का**क क**ा आहमो पा न हा ११ का**ल्या**)

उ विकास

वर्त को इ—कर्य केन्द्र । नरानी बड्डी । वर्षी बढ़ी | बहुब बड्ड । बार्ख बड़र १ के व्या बना । पारदा र क्षेत्र व्या व्या शारापश

s के प्रदासना ⊲राधा के के बाम्या 1९।३ ।

(केटलाक शब्दोमा तं नो र् लोप पामी जाय छे आवर्तक आवत्तअ । मुहूर्त भुहुत्त । मूर्ति मुत्ति । घूर्त धुत्त । कीर्ति कि.स । कार्तिक कत्तिथ । कर्नरी कत्तरी । इत्यादि )

(पालि भाषामा त नो ट घाय छे जूओ पा० प्र॰ प्र॰ ५८) शौरसेनी भाषामा कोई कोई प्रयोगमा न्त नो न्द्रश घोलाय छे अन्त पुर अन्देडर प्रा॰ अन्तेडर । निश्चिन्त निश्चिन्द प्रा॰ निश्चिन्त ।

महान-महन्त महन्द प्रा० महन्त ।

८ उ विद्यान

पृ<sup>२</sup> नो ह—इए-इट्ठ । अनिए-अणिट्ठ । २ए-कट्ठ । दए-द्द्ठ । द्दि-विद्ठी । पुए-पुट्ठ । मुष्टि-सुट्टि । यिए-लिटिठ । सुराष्ट्र-सुरहठ । सुष्टि-सिद्ठि ।

( अपनाट टप्टा इद्या । टप्ट्र उद्य । संदष्ट सद्द ) मागबी भाषामा इतया ए ने वदट स्ट३ वोलाय छे

ह नो स्ट-पट पस्ट प्रा॰ पट । भट्टारिका भस्टालिया प्रा॰ भट्टारिया । भट्टिनी भस्टिणी प्रा॰ भट्टिणी ।

प्ट नो स्ट—कोष्टागार कोस्टागाल प्रा० कोट्यागार । सुग्दु-शुस्दु प्रा० सुद्रु। प्राची भाषामा ए ने बद्छ सट श्रीलाय हे

क्ष्ट-कमट प्रा॰ कर्छ। द्वष्ट-दिसट-प्रा॰ दिहु। (पालि भाषामा ए नो हु याग छे जुओ पा॰ प्र॰ पृ॰ २६ तथा ते पृष्ठतं टिप्पण)

९ ण विधान

५झ नो ण-आजा आणा। ज्ञान णाण।

१ है० प्रा॰ ध्या॰ ८१४।२६१। २ हे० प्रा॰ ध्या॰ ८१२।३४। ३ हे॰ प्रा॰ च्या॰ ८१४।३९०। ४ हे० प्रा॰ व्या॰ ८१४।३१४। ५ हे० प्रा॰ व्या॰ ८१२।४२।

में मी वज-रिकान विज्ञान । प्रका प्रणा । पेका रूपा । स्मानी वक्ष-पित्रम विज्ञा । प्रकृत्म प्रमुख्य ।

सामनी सामार्था म्य व्याह्म करे स्था ए जार अहरने धर्मे स्था पेतान के तथा पेतानी सामार्थ एवं स्था अने ह ए तथ अहरने वरके स्था पोतान छ

प्रसाधो है या हो का बांग्सन्स अभियन्त्र प्र अस्ति स्वाधित है स्वाधित स्वाधित

मागयी केन क्या-अन्यके श्राम्यके हा श्रेत्रीतः। क्यान्यस् क्यान्यस् त्राः वर्णस्य । त्राप्तसः प्रमासः ताः प्रसा

श्रा यात्रवया आरम्भ पण्यस्य ग्रा २००० (यानि नात्राची क्रमी च त्या रन नी श्राचाय के चूनी घ त्र पूरेप दिप्पण तथा ४८)

त्र पुरुष (उपल एका ४८) (शकि नाशामां श्राणी ज्या भागी श्या छवा भागी स्मापान

क्षाम्भीता ॥ ४९ २६ २४) १६न सी पद्र मत्न पन्द । क्षित्र क्षिन्द ।

रण जो पहरूल कद। विस्तु विद्यु । किन्तु किन्तु | कसीत क्योद।

९ देशांच्या व्याप्तर्थक्षेत्रे हेशांच्या व्याप्त द्राहे हैं अने १ १ हे का च्या ग्रीका स्न नो गह स्नान ग्हाअ। ज्योतस्ना जोण्हा। प्रस्तुत पण्हुअ। इ. नो ग्रह जहनु जण्हु। वृद्धि व्यण्हि। हण नो ग्रह अपराड अवरण्ह। पूर्वाह पुट्यण्ह। स्ण नो ग्रह तीक्ष्ण तिण्ह। श्लक्ष्ण मण्ह। स्म नो ग्रह सुक्ष्म सण्ह।

पैयाची भाषामा स्न ने वदछे छिन१ बोलाय छे स्नात सिनात प्राकृत ण्हाअ स्नुषा छिनुषा ,, ण्हुसा सुनुसा सुण्हा

(पालि भाषामा आ रूपातर माटे जुओ अनुक्रमे पा० प्र० पृ० १६ (नियम ६३) तथा पृ० १७ इन=ण्इ, व्ह तथा ष्ण=ण्इ तथा पृ० १८ टिप्पण तीक्ष्म तिण्इ निञ्चल, तिक्तिण तथा पृ० ४९, टिप्पण पूर्वाह पुट्चण्ड )

( पालि मायामा स्नान क्षिनान । स्तुपा सुणिसा, सुण्हा, हुसा स्राबा म्प्पी याय छे जूओ पा॰ प्र० प्र० ४६ टिप्पण ६१ )

१० थ विघान

२स्त नो थ स्तव थव, तव । स्तम्म थम । स्तव्य थद, ठद । स्तुति युद्ध । स्तोक योख । स्तोत्र योत्त । स्त्यान योण ।

स्त नो त्य अस्ति अस्य । पयस्त पह्नत्य पद्धरः । प्रशस्त पसत्य । प्रस्तर पत्यर । स्वस्ति सस्य । हस्त हत्य । (अपवाद समस्त समत्त, स्तम्ब तव)

१. हे॰ प्रा॰ व्या॰ ८। ११३ १४ । २ हे॰ प्रा॰ ब्या॰ ८। २।४५।

प्रायमी आधारों में ने बच्छे तथा वस में बच्छे स्ता में बच्छे भी को कर कार्यादे करतक्यों । आ अध्यक्तों । सार्ववाद करतबाद । ध्य स्थलपार । क्ष्मा को अन स्वक्षित प्रवस्तित प्राप्तिक । गरिवत सरिक प्राप्तिक । (पाकि भाजाओं क्लामां याल्याल्यालय वात के वाली पा प्राप्त ३ ) प विधान 11 श्बास सो प प्रकाल कात । बार्यको प्य काम कप । व्यवस्था विभागी । क्षमी क्ष्मी क्ष्मी : क्या को प्रयासकार विष्यात ।

किन्द्रसन निर्माका । तिश्वाम विपन्ना गिलाइ गिरियह

इप बोप्प करून कोप्पर महराति जहारत (पाकि मानामां कुम भो द्वार करने कम नो क्रम कान के आहतो

या म प्र ४९ अवस्था सदस्य या म प्र ४३ दिस्स्य) 18 क विश्वास

क्ष्य मो प्यः विधान निजान । विध्येय निजेत । प्रथ प्रणः । बाध प्रणः । क्य मो पा स्थलन पंत्रम । स्थल प्रव । सम्बते प्रवप । क्य मो प्या प्रक्रिक्नों परिष्यक्षा । प्रक्रिक्को परिष्यक्षा ।

a के जा ब्ला टारापका प के जा ब्ला टारापका

प्रतिराज्ये पशिलानस्य । बहरति सुब्राजन, विश्वासार । ment fines i

क्लराति वक्काइ । सार्वी प्रश्ना । सार्वते कन्यर । त हे प्रा ज्या ।शहरता र हे आ स्था ।रापश (पालि भाषामा प्य नो प्य तया हर नो पर अने प्य याय है. जुओ पा० प्र॰ प्र॰ ३९)

१३ म विधान

१द्ध नो म हान भाण । हयते भयए । इ. नो व्या आहान अव्भाण । आहयते अव्भयते ।

जिह्ना जिल्मा, जीहा । विह्नल विन्मल, भिल्मल, बिह्ल ।

(पालि भाषामा ह्व नो भ याय छ ज्ञो पा० प्र० पृ० ६४ तथा गह्नर=गटभर पृ० ३५, टिप्पण)

१४ म चिचान

२ म नो म्म युग्म जुम्म, जुग्म। तिग्म तिम्म, तिगा। सम नो म्म जन्म जम्म। मन्मय वम्मह। मन्मम भम्मण।

(पाल भाषामा गम नो गुम थाय छे ज्ओ पा० प्र० प्र० ४९ तपा नम नो मम थाय छे ज्ओ पा० प्र० प्र० ४६ नम=मम) स्म नो मह पहम पम्ह । पहमात्र पम्हल । स्म नो ,, कदमीर कम्हार। सुरमान कुम्हाण। प्म नो ,, स्पमा स्महा । प्रीप्म गिम्ह । स्म नो ,, अस्माद्य अम्हारिम । विस्मय विम्हय । स नो ,, ब्रह्म वम्हचेर, वभचेर । मुद्दा सुम्ह ।

सपञ्चरा भाषामा पूर्वदर्शित म्ह ने बदले म्भ३ पण वोलाय हे श्रीप्म गिम्ह, गिम्म प्रा० गिम्ह दलेप्म सिम्ह, गिम्म प्रा० सिम्ह पहम पम्ह पम्म प्रा० पम्ह

१ हे० प्रा० व्या॰ टाग५७,५८। २ हे० प्रा॰ व्या० टारा६२ ६१, ७४। ३ हे० प्रा० व्या० टारा४१२।

ध्यस्य परस्क परमाश्र का परम्क प्रक्राप्त सरम्भ स्थाप का सम्बद्ध (पाक्षि आस्त्राची सरम्बद्ध स्थान्यकृत्यक्ष के स्था स्थाप का से स्थापक से स्थापक के स्थापी पा क्र क्र भे)

१६ व्यक्त विभान

१६ मी सूद-न्यारं कारार । शहर प्रसाम ।

(पाक्रिक जान्यामां कृषि वर्षे हिस्स वोज्ञाय के दान-दिस्तार व्यक्ति वा प्र प्र १९)

ना प्र. १९) १६ केटबाक संयुक्त व्यवसोली बच्चे स्वरती वधारी २००१ के स्वरते विधा-स्वरता विकास । कारका विकास ।

२६छ में क्यांने किछ—ज्वागार्थी कियारा । कारान्य, निकार । निकार विकार । निकार विकार । गरेव विकेष । सामा प्रतिकार काल ।

ग्छ के स्थाने गिकं—मन्ति किया (कान किया । व्यक्त स्थाने गिकं—व्यक्त व्यक्त । कोन सिलोस ।

इक्क मंद्र्यापे मिस्स — संस्था मिस्स | स्थान प्रियाण । इक्स विकास | मुद्दे में स्वाही सिक्क — स्थेन सिक्स | स्थेनमा सिक्स सिक्स | स्थोन सिक्स सिक्स |

र्थ में स्थाने रिम अधारा रिय-काशान आवारत । कामीन वनीरिम

व न क्याव १८२० अध्यया १८५०-व्याचा जावारकः । आस्तान क्यारिकः गार्थाने क्योरिकः। चीतः चोरिकः । चैतः बीरिकः । व्याच्यने वस्त्वरिकः। गार्वो गारिका। यतः वरिकः योगः थीरिकः । चीतः वीरिकः। ग्रुतः वरिकः।

सीन्त्रणे प्रश्वास्त्र । बीर्णं सीर्रास्त्र । १ हे प्रस्तान्य स्थाप्ता स्थाप्त । स्थाप्ता । स्थाप्त । ३ हे प्रस्तान्य स्थाप्त । आ वर्षा उटाइरणोमां 'रिय' पण समजी देवानी तथा भा विवाध स्थापक नदी पण प्रयोगानुसारी छे जुओ ५ व विधान १०५७ पैशाची मापामा ये ने बदले रिय १ पण बोलाय छे मार्या मारिया, भज्जा प्रा० भज्जा।

र्झ ने स्थाने रिस-आदर्श आयग्सि, साय स । दर्शन दरिसण इसण । सुदर्शन सुदरिसण, सुदसण ।

पे ने स्थाने रिस्त-वर्ष वरिस, वाम । वर्ष शत वरिससय, बाससब । वर्षा वरिसा, वासा ।

र्ह ने स्थाने रिह-अईति अरिहड । अई अरिह । गहीं गरिहा । यह बरिह ।

श्र्मीलिही पदना संयुक्त न्यजनोनी वस्ये स्वरंती वधारो श्र स्वी ने स्थाने घुवी लग्नी अध्रमी अहुवी। स्वी ने स्थाने धुवी प्रस्मी धुवी पुहुवी। द्वी ने स्थाने दुवी मुद्धी मिद्रवी मिट्रवी। स्वी ने स्थाने णुत्री तन्त्री तनुवो तणुवी। ची ने स्थाने रुवी गुर्वी गुरुवी

(पालि मापामाँ पण केंद्रलाक संयुक्त व्याजनीनी वच्चे स्त्रर मी वचारो थाय छे ज्ञो पा॰ प्र० प्र० ४६ (नि० ६२) पृ० ३६, प्र• ११, प्र० २६२ की प्रत्यय )

१ हे॰ प्रा० स्था० टा४।३१४। २ हे॰ प्रा॰ स्था० ८)२।१०५, १०४। ३, हे॰ प्रा० स्था॰ टा२।११३।

क्ट को इस—शक्त सक्त । यक्त सक्त, सत्त ।

क्ता भी क्य-स्थ्य क्षेत्र स्थ्य ।

त्य सो क्य-प्रकृत बाउब, गाउधन । स की सा-वह वस प्रदेश

अपन:---अर्थ वर्श के कहा आपेकों के स्वर्ग त्यां निकारी दिवाप 御日本質

(भूमो पात्र हु ४१ शाचासका। ब्रस्टिंग्य परिसूधी

(रिप्पन) धन हराय का का दिव्यन)

क्या हो सक्त-- ग्रेशन रिजक हिन्द अपूरों व विचल रिजम ८ इन में **न्**री

(दोरंग दिवस दिवस दिवसान-गानी पारू प्रश्न प्र. १८ दिवन)

**स्त तो ख~-राम बग**, बंग।

स्य हो सा – स्थाल कल पत्ने ह्या धार बार बतके महारेत । एक की **क**्रम्होत्व बेरज । शोरक कारज ।

क्षेत्रिक व्यक्तिम । J.

क्टनोधा—रकसमारता **१ है अ**स्था शरार **है आर ज्या ∉हराहा** है

के का स्थाप ८२।व ६। ज हेल का समा वासामका /

१ड्स

इ. तो क्ल-ग्रुलक सुग, सुक्क । हिंदी भाषामां 'अकात'ना सर्य माटे 'सुगा' शब्द वपगय छे ते प्रस्तुन 'सुग' साथे सरक्षावी शकाय (ग्रुल्क सुक मूओ पा० प्र० प्र० ३० टिप्पण)

ર્≒

ų

त्त नो च कृति किन्दी। थ्यानो च तथ्य तच्य, तच्छ।

७ १छ तथा च्छ रथ नो छ स्पंगित छइअ, थइअ ४ रप नो छ स्प्रहा छिहा। स्प्रहानत् छिहानत । स्प नो च्छ निस्पृह निच्छिंहें, निष्पिह ।

८ ४ ज तथा ब्ज

न्य तो त्न, क्न अमिषन्यु अहिमक्तु अहिमक्तु, अहिमन्तु। भूमागधी—अभिमन्यु अहिमक्यु। (इभिमन्यु अभिमञ्च जुओ पा० प्र० पृ० २३)

९ ६न्झा

रय नो ज्झा इन्घ इज्झाइ (तृतीय पुरुप एकतचन वर्तमान काल) सम्4दन्य सीमज्झाइ वि+दन्य विज्झाइ

्री० ७५चु श्चि नो इच्च पृथ्विक विष्तुअ, विचुअ, विछित्र । (वृथ्विक विच्छिक जुमो पा० प्र० पृ० ३८)

१ हे० प्रा० ब्या० टारा१११ २ हे० प्रा० ब्या० टारा११,३६। १ हे० प्रा० ब्या० टारा१७१२१ ४ हे० प्रा० ब्या० टारा२५। ५ हे० प्रा० ब्या० टा४१२९३। ६ हे० प्रा० ब्या० टारा२८। ७, हे० प्रा० स्था० टारा१६।

u श्च मी प्र--परान गरेव । युक्तिस बरिमा । १९४-न्छ ।

य को ह—क्रावित क्रातिक । स्त दो ह—लंख का≀ा

(भाषो का अंध ५७ छ-उनर्दिशीः) 29 UE, E

स्त हो ह—कम्पन्ये संसद्ध चतिहीत । स्तन स्त्र स्टे निशन्द परिवर्तन । यनो रहेको अर्थको हिन्हें

बाचार्था 'ढावी' चन्द अधिव छे । "दाराच डारे अमे भाषा मिचाएँ स्ट्रास्ट्रं सम्म.

कारन केन क्षेत्र किनास्य । कारण उद्यासन्। स्वाम औष, बीन ।

क्य को ड--विक्तुप निर्वह्म । र्घेशो इ—वर्गश्रद्ध, अल्पः बहुएके ब्लोक्स अर्थः एको का । पहुर्व पहरू, पक्रम ।

स्य तो इड---श्रील गाँदः । (न्द्रों क म इ. ९. दिलम परिवल्डम परिवद्रम । नर्प

शह, मह बूबी पा अ ए १ दिप्पण, क्यान्त वसह, अस्ति निहि **ब्**को ना त ह २४ स्वल्थ्य स्वाप्ट २९ स्<del>वल्</del>ट)

13 Œ

र्दशोडु—कानाः कांगाः १ है अब स्था १९०५ ४०० ४ ही अब स्था टार्स्स કરકાર⊍ા દે ≋ ભા ⊲રાકપ્રફ્રાુઅ

र्द नो कु - कपर्द कलकु । छर्द छहर कियापद । छर्दि छहि । प्रदित महिला । वितर्दि विलक्षि । गर्दन गहर, गहर।

१४ १ढ, स्ट

र्घ नो इ-मूर्व मुद, मुद्र ।

र्ध तो इड-अर्ध अहत, अद ।

गध तो इद-दाव दह्ढ । विदाध विअव्ह ।

ख्र तो इंड-श्रिद इहिंड, इंडि। इद्ध सुह्ड, विद्ध । इद्धि सुह्डि। श्रदा सहडा, सदा ।

म्य नो इह-स्तम्ब टहत ।

( जूओ पा० प्र० प्र० ४२ युद्धि घुड्दि । वर्षमान वद्दमान । अपे -अब्दुद । दग्ध दह्द, भगेरे द्ध=ड्द, र्घ=ड्द )

् १५ २वट, वह, ववा

न्त नो ण्ड-धृन्त वेण्ट अथना वेंट । तालधुन्त तालवेण्ट । न्द्र नो ण्ड-फन्दरिका दण्डलिया । मिन्दिपाल मिण्डिवास । इस्त नो ण्या-प्रन्वदश पण्णरह । पञ्चाशत् पण्णासा । स नो ण्या-दत्त दिण्य । (ज्यां 'ण्यां न थाय स्या 'दत्त' प्रद समजबु )

इ नो पण-मध्याद्द मञ्झण्ण, मञ्झण्ह ।

(ज्ञो पा॰ प्र॰ प्र॰ ४८ वृन्त वण्ट नियम ८५)

**1**8

३तथ

त्स नो तथ — उत्साह अत्याह ।

१ हे॰ प्रा॰ ब्या॰ ८/२/४१,४०,३९/ २. हे॰ प्रा॰ ब्या॰ ८/२/११११२८, ४३, ८४ तथा ८/१/४६/ ३ हे॰ प्रा॰ ब्या॰ ८/२/४८/

१७ १न्त रत्र मो स्त---यम्बु सन्तु सथवा गद्ध, यन्तु ।

१८ २.स घटनो स∽न्यांच्या वास्ति ।

१९ २०म स मो र्रस--पित्र विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व

१० प्रयम् वस्त । वस्त । वस्ताना सवस्य । हर्म मी दर्-नामा भया, क्या । वस्ताना सवस्य ।

हम नो प्यू-सहस्र क्षण अस्त । स्म को प्यू-मोध्य किन्ह ।

भा नो पर्—शामा अन्य । भा नो पर—श्रेमान तेत्र, श्रितेसम् । (बरकाने क्षेत्रन क्षेत्रन) (क्षाचा क्या काट्रमा कृतो पा स कृ ५ हैनन

(कामा जान काट्रमा कुने या प्र हु ५ ईमार्च ५ स्टेम्पा सिटेन्ट्रमा सेन्द्र कुने या त्र श्र ४५) वर्षे वस उस्त उस

पत्र मीट्य — कर्जबस्य बद्धाः इस मीट्य — अस्त्र अस्य । सम्बद्धाः प्रत मीट्य — क्यारी प्रसार, अस्तरः ।

कत् ना क्या-क्यार कराद क्यार । ध्राप्ती क्या-बातान वनवावस्था । अक्षाको-वैश्वेर वस्त्वेर ।

(माप्त माना । शाम र्थम । जानी या प्रकृष्ट १५ मियन १८) १ है इस स्था ८२।७३१ ६ हे इस क्या ८१९/९५

ह है का बता नरांप व है का बता ट्रेडियो प्रेमें पीर्य

**५८ हे वर व्या** शिक्ष कर कर

२२

92

त्र नो र—धात्री धारी र्य नो र—आधर्य अन्तेर । त्य तूर । ध्ये धीर धिज्य । पयन्त पेरत, पज्जत । ब्रह्मचय यभवेर । छौण्डीर्य सोंदीर । सीन्द्यं सुंदेर ।

ई नो र-दशाई दसार ।

(जूओ पा॰ प्र० प्र० १४ घात्री घाती हिप्पण पा॰ प्र॰ प्र॰ ४ हिप्पण शस्छेर)

२३

२ल, ह

पड नो ल —क्पाण्ड कोहल, कोहड । क्पाण्डी कोहली, कोहडी । यं नो ल्ल —पयस्त पलग्ड, पल्लाथ । पर्याण पल्लाण । सीकुमाय सोगमहल, सोअमल्ल ।

( जूओ पा० प्र० प्र० १६ टिप्पण पर्यस्तिका परलियका इत्यादि)

રષ્ટ

३स्स

स्प नो स्स-गृहस्पति यहस्मइ, बहण्यद् । वनस्पति वणस्सइ, वणप्यद् । (जूओ पा० प्र० प्र० ३९ वनस्पति वनपति नियम ४८)

२५

오줌

स नो ह—टक्षिण दाहिण, दिक्ष्त्रण । स्न नो ह—दु ख हुह, दुक्ष्व । दु ग्रित दुह्थि, दुविराश । प्य नो ह—वाष्य वाह एटले आंसु अने बाष्य विष्कृ एटले बाफ्र वफ़ारो-गरधी ।

१ हे० प्रा० स्था० टागर१, ६६, ६४, ६१, ६५, ८५ हे इ. हे० प्रा० स्था० टारा ७३, ६८। ३ हे० प्रा० व्या० ८,२१६९१ ४ हे० प्रा० स्था॰ टारा ७३, ७०, ७३, ९१, ७१।

ध्य को इ—कुमाध्य बेहन्त । इसान्ती बेहेरी । में को ह---धेन ग्रेज, विश्व । चै जो इ--तेन वह तिन ।

र्थ मी इ-धार्थपन काश्चापन ।

(च्योधा प्रष्ट + इथ्या हुन्छ)

28 १क्रिमॉब

फैटकाफ धण्डोमां रहेको र अने ४ क्रियाक्टो एकरही जीवन बैसरी वर्ष कान के बेरतो बचायु बाज विर्वाप के आयो किसीर

रैटबाद बररोगां निरम कारची नाम के क्ये देखान घररोगां स्टर्मरह इत्हें बाब रथ जरों सबे न रच वार

कायमी जिस्ती क्षत्र बन्द्र । तेक देखा । त्रमा पहरा । तेम पेना शमात्र बोट्या । बीरत शस्त्रण । तिपन्तिय वैद्धा ।

क्रेंबा क्या वर्षेट वैक्षिणक विश्वीत-

क्त क्या क्ला, एन एप। व्यवसार व्यवसार, व्यवसार । प्रभाग प्रमुख, धेरहर । चित्र विश विकास ।

प्येत येत्र । स्थाप स्थिपत, हन्दित । रहण रहत । वक्त वड 1

निविच निविच्छ, निविध्य । मीच नेज र्थक ( 44 हुक्क सूत्र । वैता वेन्द्र, केंचा । रहा हुन्द वृत्त । रहातु SERVIC. Ec. En est

सामासिक शम्योगी वैका क्रियाँव---काकामरूपमा आमामपूर्वत, जानावत्त्रत्त क्रमुनगर क्रमुनगर, क्ष्मुनाबर् । देशस्त्रति देशस्त्रः देशस्य । नरीयस्य नरमनस्य वर्गमा ।

प्राप्तका प्राप्तकोच प्राप्तके प्रश्वापि

1 It m wil citicalanacawan citicat

त एकवटा व्यक्तननी पूर्वमां शीर्घस्तर होब अथवा अनुस्वार होड से स्थानन नेवडो थनो नधी अर्थाव तेनो द्विमांव थतो नधी:

> क्षिप्त सुद्ध न थाय स्पद्य फास नु फस्स ,, त्र्यस तस नु तस्स ,, सप्या सक्षा नु सज्झा ,, वगेरे

(पालि आपामां दिर्भावनी प्रक्रिया छे जुओ पा० प्र• प्र• १• विश्वम १२)

### ५७ श्राव्योमां विशेष फेरफार

विंदाति वीसा । सुकुमार सोमाल । स्यविर थेर ।

अयस्कार एकार । आश्चर्य अच्छायर, अच्छारिअ, अच्छारिज, अच्छारिअ ।

(पालि-अच्छारिय, अच्छायिर जूओ पा० प्र० प्र० ४४ टिप्पण )
छत्युल ओहल, उलहल । उल्प्रल ओम्सल, उल्ह्रल । करल केल,
क्यल । करली केली, क्यली । कार्णकार क्षणोर, काणिआर, काण्णार ।
चतुर्गुण चोग्गुण, चडगुण । चतुर्य चीत्य, चलय । चतुर्व्य चोह्स,
व्यटह्स । चतुर्वार चोग्वार, चलवार । प्रयक्षिशस् तेसीसा । प्रयोदस्य
तेरह । प्रयोविशति तेवीसा । प्रिशत् तीसा । नवनीत नोणीअ, लाणीअ ।
प्रवक्तिका नोहालिया । नवमालिका नोमालिका । निपण्म णुमण्म ।
प्रवक्तिका नोहालिया । नवमालिका नोमालिका । निपण्म णुमण्म ।
प्रवक्तिका पीप्तल । प्रतर पीर । प्रावरण प्रगुरण, पाउरण, पावरण । यदर
कार । प्रयुत्र मोह । कदित रूणा । रुवण लोण । विचिक्तिल चेहल्ला

(जूओ पा० प्र० पृ० ४४ नियम ५० त्रवण लोण तथा पृ० ६२ स्यन देन १ जूओ पा० प्र० पृ० २८ नि० ३४ स्थविर धेर )

१ हे॰ प्रा॰ ब्या॰ टाशावहह, १६५, १६७, १६८, १७०, १७०, १७४, १७४, वर्षा टाराहह,इडा

#### श्चानोमी सर्वधा केरफार "

जनस् देश्राः भग भो ः अप्यतस् अच्छारसः अच्छारा ! शवि दे वर् सन् भी अपनि शोदि। मानुष् आउदा । आहरून अव्यक्त आस्त्र। इरानीय शर्म एकाहे वार्षि प्रमानि (धीरहेशो वार्षि ) हैपर पट र्वित क्रि । बत थो । एवं ब. औ प्रशासात क्रमान मेंप्रकार स्थ नप्तान । क्यान अथवः, सन्दर्भ कक्यो । चन्नान् काला । विक्रा कुर्यः विका श्चर हुछ । दह वर, पहस्तानी करवायी पालबह रावकर, बहरति पदार । इत्य किल्ल इत्त । क्रिकेट सिरिका शिरिका । इस्त दिन्द **एक्, तम् । निम्न, निशाः प्रतिमा गुमा दृष्टिकाः। दश्रा र**माः। क्युन् क्युर् क्यु । इति विदि । क्यादि वाहन्द दवाह । प्रवृत् द्वाव । भित्तमता विश्वका विश्वक्षिण । पूर्व प्रतिम प्रकार (भीरतेनी प्रत्वे) शक्कि वार्टि वासिर । ब्रहरानी स्वरुक्त वहस्तर । अभिनी विक्री, ध्याची । धनिन बारू धनिम । याराणता बाङ्च्या नाउतिमा । धार्यार सक्त, नक्त, सरकार । वनिता निका विका । निवृत निराम । क्षम पान क्षम । वैद्वर्ग नैस्तिन नैद्वान । प्रांतर विशेष प्राप्ति । प्रोप्त केर नीम नोमक, नीम । जो शर्मा, व्हें । प्रदान बीमाण, संचान प्रशान ।

र, है जा ज्या तरिहास ताहिका तहि हाहिए। अहार के हिंदी काहित जहां के स्थापति अहार के हिंदी काहित जहां काहित काहित इस तहित्र काहित जहां काहित काहित काहित हाहित काहित काहित काहित काहित काहित काहित काहित हाहित काहित काहित काहित काहित काहित काहित हाहित काहित काहित काहित काहित काहित हाहित काहित काहित काहित काहित काहित काहित काहित काहित काहित हाहित काहित काहि

१अपभ्रश भाषामां अमुक अमुक गब्दोनी खास फेंग्फार **आ** प्रमाणे छे

स०	प्रा॰	अपभ्रश
अन्यादश	भगारिम	अन्नाइस
अपरादश	अवरारिस	अवराइस
ईटग	एरिस	भइस, एह्
भीदग	कैरिस	फइस, के <b>ट्</b>
ताहरा	तारिख	तरस, तेह
याहूरा	जारिस	जडस, जेह
बर्ग्म	वद्र	निच
विद्यणग	विसण्ण	घुन्न

(जूओ पालि प्र॰ पृ॰ ५६ नि॰ ७८ गृह घर । गृहिणो घरणों । प्र॰ १६ तिर्यक् तिरिय । पृ॰ ३४ टिप्पण पितृष्वमा पितृच्छा । पृ॰ २७ स्तोक थोक । पृ॰ ५१ स्मशान मसान, मुसान)

२८ अमुक ग्रास खास- शन्तोंना संयुक्त व्यजनोमां स्वरनो वधारो-अत स्वरवृद्धि अथवा स्वरमित

२ मी चधारो — अभि अगिण, अगि। अईन अरहत । ष्टण कसण; कण्ड एटेंं काळो रग। हमा छमा। प्लक्ष पल्यत । राज रतन, रयण। द्यार्श्व सारग। श्लाघा सलाहा। रिनम्घ सणिद । स्हम सहम। स्नेह सणेह, नेह। ३ मो घघारो — अईत् अरिहत। कृत्स्न कांसण, कण्ड। क्रिया किरिया,

१ हे० प्रा० व्या० टारा ११ त्राधा १०३। ८।४।४०२। २ हे० प्रा० व्या० टारा १०२। टारा १११। टारा १०३। टारा १०३। टारा १०३। टारा १०३। टारा १०३। टारा १०३। टारा १०४। टारा १०४।

किया। पैटन पैदन। एटा यहिला। दिश्रमा दिहिना। प्रका प्रतिमा अस्मा पत्र पद्रमा भी विदेशी वैश्वल विभिन्न प्रियाः व्याद्य विज्ञाः व्याद्वार्थे विज्ञासमा । व्यक्त विभिन्न, विश्वित, प्रतिमा । स्रा दिस्ती । वी विदेशे

ाई मो बपारा - व्या बीमा।

१व नो बबारो-जरूर कर्मत । क्य करन । हार हुनार हुनार शर

केर बार। क्या काम पोम्स । क्या शुक्क शुक्क । का सुकै। क्या समुग्ना शुक्का सुका। सुका सुक्का सुक्का क्या, स्वया (सम्ब्रह्मका) कर स्व

श्रुषा श्रूषा अच्छा श्रूषा व्यव श्रूष्ट्राच । सर श्र १९ श्रुषास श्राप्ट्रोमी अञ्चरवारमी वाचारी

स्वित्तंत्रक नामुंदन नामुद्रास । नामु क्षप्त । वर्गीर कर्यारे स्वारं । क्यों क्यां क्यों क्यां क्यों क्यां क्यों क्यां क्यों क्यां क्यों क्यां क्यां

१० श्यक्षारी तो स्थलन-कड्म सुबहं सम्बद्धाः सम्बद्धाः सामान सामानः वर्षेत्रः स्टेस १ वर्षे

ा है मा ज्या त्यात्रभा २० हे मा ज्या अध्य १९९१ अस्तरप्रश्च अस्तरप्र १ स्थाप्त १९९५ । त्याप्त अस्त अस्त त्यात्रभा स्थाप्त १९९५ । त्याप्त अस्त अस्तरप्रभाव १९९५ । स्थाप्त अस्तरप्रभाव अस्तरप्र १९९५ । महाराष्ट्र मरहट । स्युक्त इल्लंश लहुअ । ललाट गढाल, गलाड । बाराणसी वाणारसी । इंग्ताल इलिआर इरिआल । दूद द्रह हर ।

## १शीरसेनी भाषामा ण कारनो विक्रहपे सभारो

स	সা॰	ঘাঁ•
गुफाम् इदम्	जुत्त इण	जुत्त णिम जुत्त इण ।
सदशम् इदम्	सरिस इण	सिरस णिम, सिरस इण ।
किम् एतद्	कि एअ	किं णेद, किं एद ।
एवम् एतत्	एव एअ	एव णेद एव एद ।

#### ॰ अपभ्रद्यमां खास द्यान्दोमां कोई कोई प्रयोगमां स्वरनो अधवा इयंजननो घधारो

সা৹	अप ॰
उत्त	<b>ग्र</b> त
परोध्पर	भपरोप्पर
वा•	मास
	उत्त परोप्पर

#### २१ श्यमुक शब्दोनी जातिमां जे फेरफार थाय के ते या प्रमाणे छे

जे शब्दने छेढे स् होय अथवा न् होय एवा तमाम शब्दो मर कातिमां वपराय छे

यशस्	जसा ।	जन्मन्	जम्मो ।
पयस्	पयो ।	नर्मन्	नम्मो ।

१ हे॰ प्रा० व्या० टाशर७९। २ हे० प्रा० व्या० टाश४२९। टाश४०९। टाश३९९। ३ हे० प्रा० व्या० टाश३२। टा१३१। टा११३३। टा११३४। टा११३५।

शबस रायो । ययन सम्मी-1 केशर केश्रो । क्यम बस्यो । सरसं वरो। धासन वासी।

•

बनी बनेरे करेगां कड़े के बीकार है से संगत नरमातियाँ

सचरे है अपदाकः शामद् नामः । धमद् शम्यः । भक्तवः प्रमाः । क्रियः

ितर । सम्बन्धः समय । **बाहर्** धरब् अने उर्राथ चन्द्र नरवारियाँ श्वराम है।

मारू पारको । सरक् वरको । तरकि तरकी । वाचि अवस्थाता स्थान बान्ती गरमान्ति प्रिकारी अवस्था है।

πt धानका भागभी orffor 1 wite. orffer 1

• 975 चलके । कर्मा मक्त्रं 1 tilani) **स**ेचन क्रीक्षां १

भीचेता बच्छो वरव्यक्तियां विकासे सक्तान से s

444 440 99W 1 निका विभाग विम्मर (एडीय विश्वकि) £4 Walt I 84 1 BP4 on sy ofer 1 मामुप्रश नाइने । बाइच्ये

DЖ इंग्डो RPT I ALC: NO माननो पासके ।

			•
नीचे	ना घच्दी नान्य	तरजातिमा वियम्पे	
	पुण	गुण	गुणो ।
	देव	<b>डे</b> न	देवो ।
(	बिन्दु विन्यु	मिदु	विन्दू ।
:	खद्ग	राग	रत्रमो ।
	मडलाम	महत्रम	महरुगो ।
	कार्इ	在主企系	करहरी।
	<b>य</b> क्ष	<b>र</b> क्व	रुषयो ।
ने	शब्दोने छढे मा	विवाची 'इमा' प्रत्य	य ह'य ते शब्दी नारी-
व्यक्तिमां वि	वक्रपे वपराय हे		
		नर०	ना०
	गरिमन्	गरिमा	गरिमा ।
	महिमन्	पहिमा	महिमा ।
	निलर्जिजमन्	निरुजिमा	निल्ल जिजमा ।
	धूर्तिमन	ष्ट <sup>ि</sup> तमा	धुतिमा ।
अञ्जित वगेरे घन्दी नारीजानिमां विदल्पे वपराय छे			
٠			मारी॰
	<b>अ</b> म्जलि	अजली	अज <b>ी</b> ।
	प्रष्ठ	<del>থি</del> দ্র	पिद्धी ।
•	अध् <del>ति</del>	<b>ម</b> ែច	भन्छो ।
	সহ্ব	प्रहो =गरिक	filmen A
	चौर्य	चारिअ	चोरिआ ।
	कु व्हि	धुच्छो	<del>प्र</del> च्छी ।
	वाल	<b>ं</b> यली	बली ।
	निधि	विद्दी	विही 1
	रहिम	निही	निद्दी ।
	বিঘি - মৃতিয়	रस्सी	रस्सा ।
	- Mee	- गठी 😽 -	गठो ।

व्यक्तिः व्यक्ति १९३३ परस्य शेवारि वसु-एक वीकामा अकी व्यक्ते । एक पीकामा सुराहे कर्ष

जनम पर्ना हेथानी स्तर जने प्रक्रमा स्त्ये पहेले स्तर है को एक पीकारों कही को है देशकर एमें हैंसूं वहां स्तर्गारि, अभी कराये कोंक तेती safer school की है देशकर

हैत है चंद्र, बच्द्रः चंद्र, बच्द् बंद्रश्र बहुत्र संख सङ्घ गंपा सङ्घा संख

धने देत गाम मानवर्गन,

संख्य राष्ट्र गेया शङ्कार संख्या हैने सम्बद्धार्थीयां अस्तुनाती के खुरा खुरा आंक्रोकी बींच कडी सर्वी. १ इच परवां सिंच कडी स सर्वा:

1 एक परमां तीन नदी व नदी. वर्ष (वर्षी) पढ़ (पति) वहुू (व्यक्रि) श्रेन (स्रज) सडमा (मी-सार्थ) काल (क्राक्र) क्योन (स्रोक्र)

या (विति) देश (रहित) स्थेरे. सपवाद केतमान बन्तीयो एक पत्था पत्र स्तरविद याँ सम है वि + श्रीम = श्रीम

मि + इम = विद्वत े —बीर्श्व-विद्वतीय कादि + इ = कावी कादि - इ = कावी

काहिर (क-एयक्ट)

ष + इर = षेट वृद्ध−स्थविष्ट) च + उ + इस = बोइस (बोद्द−बनुर्व्छ)

क्नो-काण्डलं वसहरका ह १ वि ९०।

कुभ + आर = कुंभार (कुंभार-कुम्भकार) चक्क + आअ = चक्काअ (चक्रचाक) साल + आहण = सालाहण (शालिवादन राजा)

 क्रियापदना छेडाना स्वरनी कोई घीजा पदना स्वर साथे सिष यसी१ नथी जेमके,

होइ + इह = होइ इह

३ इं डे उ ऊ पछी कोई बिजातीय स्वर आवे तो सिंध भाती। नशी जेमके,

इ—जाइ + अंघ = जाइअघ (जातिअंघ-जात्यन्घ-जन्मांघ) ई—पुढवी + आउ = पुढवीआउ (पृथ्वी आप-पृथ्वी पाणी) उ—वहु + अट्टिय = वहुअट्टिय ( वहुअस्थिक-घणां हाडका-वाळु )

ऊ—बहु + अवगृढ = बहु अवगृढ ( वध् अवगृढ )

- ४ प के ओ पठी कोई पण स्वर धावे तो सिंघ धती नथी ३ प—महावीरे + आगच्छाई। एगे + आया । एगे + एवं। ओ—अहो + अच्छारियं । गोयमो + आग्रवेइ । आलम्खमो + इण्हि।
- ५ वे पदमा पण व्यजन लोपाया पछी ज्या जे स्वर बाकी रहेलो होय ल्या ते स्वरनी निध थती निशी

निज्ञाकर—निसा+अर=निसाअर । निसि+अर=निसिअर । रजनीकर—रयणी + अर = रयणीअर । रजनीचर—रयणी + अर = रयणीअर निज्ञाचर—निसा+अर=निसाअर । निसि+अर=निसिअर । गन्यपुटी—गध + उडी = गधउडी ।

१ हे॰ प्रा॰ ब्या॰ ८११९। २ हे॰ प्रा॰ ब्या॰ ८११६। ३. हे॰ प्रा॰ ब्या॰ ८११७। ४ हे॰ प्रा॰ ब्या॰ ८११८। ६ अर के बाजबीका के शामाने तो आर बोजान के 1

म---बीच + सजीव = वीवाजीय i विसम + मायब = विसमायब ( विपम धाठप )

ना-नेमा + महिनद् = येगादिवद् :

करका + साजयण = क्रब्याणयस (यमुना आवस्य)

 इ.से. हैं लड़ी हैं से हैं साथे ती हैं नहें बाप के ? मुचि + इयर = मुजीयर | पुढ्यी + ईस = पुढ्यीस। इदि + ईसर = इदीसर | पुढ्यी + इसि = पुद्र्यीसि।

८ ठ के रूपार्थ के के के नार्पे के का नई पान कारे

वह + क्वमा = बह्रवमा । बद्ध + संप्रत = बहुबंग खाडु + दश्य = सार्व्य बहु + ऊसास = बहुसास प्राप्त + कलाल = प्राप्ताल !

९ स्वर पत्नी स्वर आहे तो व्यापमा स्वरणी और रूप बड़े कर हैं। बर + हैसर --बद्र +हैसर = वरीसर, वरेसर। तिरुख + ईस-विवस् + इस = विरुत्तीस, विरुत्तेस। शीसास + उसास = बीसास + क्रशास = बीसायसास ! रमाभि + महं = रमामहं । तस्मि + असहर = तस्मसहर । ववसमामि + वर्ष = शबसमामदे । वेकिन + कार्राविका = वैक्विशिवेकित ।

बदानि + अद्रै = बदानदे । ज + यय = क्षेत्र । व्या के स्थार दांचे वाचे आणिका कीम तथा विद्रकेण स्थाने पासमा

**पर्नी पहुंच्ये एवर क्लेप पानी जान के भ** 

१ रे । हेस मा ११३११ ४ है अर मा

।१।६ । ५- हे सा स्था ६।२।२०० मा छक्को सक्को नामे दस्ते ना

```
फासे + अहियासप = फासे हियासप
वालो + अवरज्झ = वालो वरज्झ
पस्संति + अणतसो = पस्संति णंतसो
```

99 सर्व नामनो स्वर के अन्ययनो स्वर पासे पासे आवेला होय तो ते वेमाथी गमे ते एक्नो स्वर लोप पामे छे. १

तुन्मे + इत्थ = तुन्भित्थ | जे + पत्थ = जेत्थ | जे + पत्थ = जेत्थ | जह + अह = जहह । जे + हमे = जेमे | जह + हमा = जहमा ।

१२ कोई पण पदनी पछी अपि के अवि अव्यय आवेल होय तो तेनो

अ विकल्पे होप पामे हे २ कि + अपि = कि पि, किमवि केण + अवि = केण वि, केणावि

कह + अपि = कई पि, कहमवि

13 कोई पण पद पछी इति अन्यय आवेल होय तो तेनो आदिनो इ लोप पामे छे ३

जं + इति = जं ति दिट्ट + इति = दिट्ट ति गुत्तं + इति = जुत्तं ति।

१४ कोई पण पदना छेडाना स्वर पछी इति अन्यय आवेल होय तो तेना आदिना इ नो लोप करवो अने ति ने बदले त्ति करवो ४ तहा + इति = तहन्ति पुरिसो + इति = पुरिसो ति पिथो + इति = पिथो ति

१५ जुदा जुदा पदोमा अप के स्था पछी इ के ई आ वे तो ए धाय छे ६

न + इच्छति = नेच्छति वास + इसि = वासेसि

दिण + ईस = दिणेस

जाया + ईस = जायेस । खद्दा + इह = खट्टेह (खद्रवा + इह )

१६ जुदा जुदा पटोमा अ के आ पछी उ के ऊ आवे तो ओ थाय छे ७

१ हे० प्राच्या० ८।१।४०। २ हे० प्रा० व्या० ८।१।४१।

३ ४ हे० प्रा० व्या० ८।१।४२। ५ जूओ पानु ११ नियम २. ६ ७ हे० स० व्या० १।२।६।

सिहर+उपरि=सिहरोगरि ! एग + अच = पर्गाच पाम+ऊष=पाजीब (पोर्व) गंगा + सपरि = गंबोपरि बीसा + ऊज = बीसोच ।

१७ क्रम बेबाना मूची अनुसार बाव छे:1 श्रम्--इड फ्रम्-फर्ब

१. सर्ने केंद्रे आवेता स्ट्रूपको स्ट्रा आवे हो हैंनी निकाने अनुसार

विरिम्-विरि मान केरर

दसमम् + क्षीत्रभं □ इसमं वित्रमं, उसममित्रमं। नगरम् + सागच्छार् = नगरं जागच्छार्। भगरमायच्डाः ।

१९ केरनाम सन्दोगां केराना अञ्चली क्खरराट वर्ष जान केर सामाद-सक्ते यत - श्रं

प्रयक्त-विदे सम्बद्ध-सम क्षक-इड

ज्यबद्ध-स्ट्रपं

वस्—स विम्बक-बोर्ध १ इस्म को नुकड़ी बोई एक कोला आने हो हेनो कहलार वर्ष भार के **गर्थ -शक-शं**क

वस्तुक-छल्पुद्द-सम्बद्धः

कम्पुक-कम्बुध-केश्वस धन्यपा-संगा। २९ वेटकाफ सम्मोनां जनुरवारती क्षेत्र वर्दे बाव लेप

१ देश मा ।११९श ८ देश मा ८।११२४।

३ है स मा ार्शरेश कड़े ब्रालग द्रारिश ५-मा ।धरक्षर

विश्वति—वीसा विश्वत्—तीसा संस्कृत—सक्कय संस्कार—सक्कार मास—मांस, मंस मांसल—मासल, मंसल कांस्य—कास, कंस पाग्रु—पासु, पसु कथम्—कथं-कह, कह प्तम्—प्वं-प्त, प्तं
नृतम्—नृत-नृण, नृणं
इदानीम्—इवाणि—
इवाणि, इवाणि,
दाणि, दाणि,
किम्—कि—कि, कि
संमुख—समुद्द, संगुद्द किशुक—केसुब, किसुब सिंद्द—सींद्द, सिंसुब

२२ अनुस्वार पछी वर्गनो कोई पण अक्षर आवता अनुस्वारने बद्छे वर्गनो पांचमो अक्षर विकल्पे मुकाय छे १

पक-पद्ग, पक
संख-सह्ग, संख
अंगण-अङ्गण, अंगण
लंघण-लङ्गण, लंघण
कंचुअ-कृष्णुअ, कृषुअ
ल्छण-लुक्छण-लुक्षण
अजन-सञ्जण, अजण
संझा-सन्झा, संझा
कंटअ-कृष्टअ, कृटअ
कठ-कृष्टअ, कृटअ

कंड—कण्ड, कंड
सद —सण्द, सद
अंतर—अन्तर, अंतर
पंथ—पन्थ, पथ
चद—चन्द, चंट
चधु—बन्धु, वधु
कंप—कम्प, कप
गुफ—गुम्फ गुफ
कलंच—कलम्ब, कलब
आरंभ—आरम्म, आरंभ

२३ केंटलाक पदोमां वे पदनी वच्चे म् उमेराय छे:२ अन्न + अन्न = अन्नम्अन्न-सन्नमन्न । - एम + एम = एमम्ण्य-एममेग ।

१ हे॰ प्रा० ब्या॰ ८११६०। २- हे॰ प्रा॰ ब्या॰ ८।३।१।

विच + आयंत्रिय = विच्यम्मायंदिय-विच्यमायदिय । जदा + इसि = अदाम् इसि-जदामिसि ।

न्दा - भागमः = इद्दान् साध्यः -इद्दान्तानः । इद्दान्तः - भव्यक्तितः = इद्दानुम् सर्वक्रिय-इद्दानुमक्तियः । स्रोतः - भव्यक्तितः = स्वतः स्वतः सर्वक्रियः - स्वतः स्व

हायाज + अप्युक्तम = हायामाम् कप्युक्तम हास्त्रमा स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स

नव् + थरित = त्रवृत्यि चुन्दर्भ स्विकाम = दुर्द्भ स्वारिकाम = दुर्द्भ स्वार्थि = युक्तदर्भ स्वर्थम = दुर्द्धराज्यम् 
२५ नदि तरिका से से जिल्लो स्वर्थार्थ्य हो से वर्धराय उत्पान से से 
राज्ये क करायों हे तमे तसी स्वर्थम स्वर्थम् स्वर्थम्य

सम्बद्धाः

म सकि करती द

चनान्य एउटे शहीर. बचारे अवने स्थवना साथ बोधा बच्ची बारदानी बेटीन नाम समास के

लवड़ जोड़ पड़े बने बीकालं पर बोई रहे क्या करेंडे सिके करने कई रिटे सुकती शकात ए शीकांची वा स्थापनी मेंडोगी सीव बनेती है बने ए बीव परिवाद बंबीमां स्वित्तेवरणे विकास कर पासी है.

१ लग्दीन परंत्र क्षतीमस्। त्याद्वेश्या मा ८/१८१३ १।२ देशा मा ।शर्था देखे स मा ३१९१वी १६३। बोलचारनी लोकभाषामा आ श्रेलीनो प्रचार ओछो जणाय छे परतु रोकभाषा ज ज्यारे केवळ माहित्यनी भाषा बनी जाय छे त्यारे , वैमा आ समामनी शैलीनो उपयोग सारी रीते धयेरो मेळ छे

'न्यायनो अधीश ' क्हेबु होय तो समास वगरनी शैलीमा 'नायस्स अधीसो' क्हेबाय अने समासवाळी शैलीमा 'नायाधीसो ' क्हेबाय अर्थात जे अर्थने बताबबा साह समास वगरनी शैलीमा छे अक्षरोनो खप पडे हे ते ज अर्थने बताबबा समासवाळी शैलीमा क्वेबळ चार अक्षरोधी ज चार्छ हे

ए ज रितं 'जे देशमा घणा बीरो छे ते देश ' कहे जु होय तो समास वगरनी शैलीमा 'जिम्म देसे बहवी बीरा सित सो देसो ' एटल रगञ्ज कहे जु पड़ त्यारे ते ज अथने बताववा सार समासवाळी शैलीमा 'बहुबीरो डेसो ' एटल अखु कहे वाशी ज पूरु काम सरी जाय अर्थात जे अर्थने बताववा माटे समास वगरनी शैलीमां चौट अक्षरोनी जरूर रहे छे ते ज अर्थने समासवाळी शंली केवळ छ अक्ष-सरोगी सपूर्णपणे बतावी धके छे आ रीते समासवाळी अने समास मगरनी शंलीनी आ एक मोटी विशेषता छे

आ उपरात समासवाळी र्रालीनी बीजी पण अनेक विशेषताओं छे जैमके, 'अह्णिडल' (अहिनकुलम्) एवो एकत्रचनी हुन्ह, ते वे वच्चेना एटले साप अने नोळीया वच्चेना स्वाभाविक वर्रने वतावे छे त्यारे 'देवासुर' एवो एक्वचनी हुन्ह, ते वे (एटले डेव अने असुर) वच्चेना मात्र विरोधने सुचवे छे

चपरात जे समासमा केटलीक बार पूर्वपटनी विभक्ति लोपाती नथी ते पण विद्येप अर्थन बतावे छे 'गेहेस्रो ' समास माणसनी कायरताने स्चित करे छे. 'तित्थे कागो अत्थि ' एवी समाम वगरनी शेलीवाळ वाक्य गास कोई विद्येपता बतावत्न नथी त्यारे 'तित्थमाग' (कैर्पक्र) पूर्व सवायवात्री वसीत् भावन तीर्पस्ती बद्धन्तनी नव नव सार्य के देशक्ष्य नार वरणव्यानुं नम्म पर व बोधों मान के कर्य प्याव हारा से स्पेपनेता सम्बन करती वर्ष बरायर सुर्वेच्छ वती रहे हे. जैसने के स्वाद चन्द्र समायुक्त के तेनी वर्ष माझ्याना देशों के सुर्वे पेड के रूपों पात्र के. नार्य तेन सार्या नव स्वास्त्र कोराए त्यार एवं करते करते तीर्थ जारी वाल करान्या कोरारार (वाच्चाव्या) प्रदान्ति, वरंदा-वेड वर्ष्य कार्य स्वाद प्रदान के तार्य क्या कार्या के स्वाद कार्य कार्य स्वाद स्वाद अध्यावस्थारी वर्षा क्या कार्या का स्वाद कार्य स्वाद्य स्वाद अध्यावस्थारी क्याब ब्यूया कार्या कार्या कार्य स्वाद्य कार्य अध्यावस्थारी क्याब ब्यूया कार्या कार्या कार्या स्वाद कार्या कार्य कार्य क्याव कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य स्वाद कार्या कार्य कार्य करता व्यवपारित (प्रवाद क्यावर कार्य कार्

नहीं ए दान बाद राज्यु कीहेए के बयानीनों से गूरी परिदाह बारामां के देती गुरी एक क्षमानी सोकारपाल का अब्दान माहम्य नहीं राद्ध नजारणी जा नाब कर साहित्यनी व कर्यों वह स्थारणी बाना कार कर व परिवाह स्थारणा क्यायोगी बनार हाटी ऐके बोनी कर कर पूर्व कार्य कार्याहित बोरी निकारण वर्णी परिचार स्थारण

**दे**ठबाद तमान्ये तनी क्यों बर्ग दक्ति है

संदारमा अध्या पार अध्या तीन प्रवासे में १ दंद (इन्द्र), १ राष्ट्रीरेस (राष्ट्रवर) ३ नडून्नीके (बहुकीके) च अन्तर्रदात (अन्दर्शतात)

(अ धवरोनी समास करनो होन तेननं क्या क्या नागरी नता-क्या ठतु नाम निष्क् के निष्क् एटको क्यु व्यक्त)

#### १ वंद समास

दद एटछे जोडकु दद समासना जोडकामा वपराता यन्ने शन्दोमां ना वेथी पण वधारे घान्दोमा कोई, मुख्य के गौण नधी होतां अर्थात् दद समासमा वपराता तमाम शन्दोनी समान मर्याटा छे जेमके 'मानाप' 'सगोबहालां ' ए बन्ने टदाहरणो टद समासनां छे तेम पुण्णपावाह, जीवाजीवा, सुहदुक्ताड, सुरासुरा-वगेरे सदाहरणो पण दद समासना के, ए दद समासनो विश्रह आ श्रमाणे छे

> पुण्य च पाव च पुण्यपावाइ जीवा य अजीवा य जीवाजीवा सुह च दुक्ख च सुहदुक्खाड सुरा य असुरा य सुरासुरा

दद समास द्वारा तयार थयेछ पद घणु करीने बहुवचनमा वय-राय छे ए ज रीते इत्यपाया (इस्तपादा ) महालाहा (लामालामा ) सारासार (सारासारम्) देवदाणवगयन्वा (देवदानवगान्वर्वा ) वगेरे.

टद समासना विष्रहमा 'य' 'अ' के 'च' अपराय छे

# २ तण्डरिस समास

जे समायनु पूर्वपद पोतानी विभक्तिना सर्वधरी उत्तरपद साथे एटछे पाछला पद साथे जोडायेछ होय वे तप्पुरिस समास आ समान्सनु पूर्वपद बीजी विभक्तिशी मांडीने सातमी विभक्ति सुधीनी विभक्तिन बाछ होय छे जे ले विभक्तिवाछ ए पूर्वपद होय वे वे विभक्तिना नामवाळो तप्पुरिस समास कहेवाय जेमके,

बिडंबातप्युरिस (द्वितीयातत्युरुप) तद्देबातप्युरिस (वृतीयातत्युरुप) चडत्यीतप्युरिम (चतुर्योतत्युरुप) पश्चमीतप्पुरिम (पञ्चमीतत्युरुप) छट्टी-तप्पुरिस (पष्टीतत्युरुप) अने सत्तमीनप्पुरिस (सप्तमीतत्युरुप)

वे दरेकनां कमवार टदाइरणो आ प्रमाणे छे

विद्या तपुरिस-इंडियं मतीतो-इदियासीतो बीरं वस्सियो-बीरस्सियो सर्व पत्ती-सहपत्ता (बीराधियः) विषे पतो--विषगतो ..... जय प्रशा—स्वयसहा तर्रया वयुरिस-हैं सरेन करे - वेसरकरे मापाप सरिसी माजसरिसी (ईम्बरहरूः) कुकेन गुलेन शरिती-कुछ इवाप तुनी-इवाह्यो ग्रवसरिती गुवेहिं संपद्यो - गुवसंपद्यो रसेण पुन्ध-रसपुन्ध पञ्जी वजुरिस---कोगाय हिनो - क्षोगहिलो पहत्रमस्य दितो*-*-बहुबन् स्रोगस्म सही-स्रोगसहो पैमाप कई-पेमका पंचमी तप्युरिस-रंसवासी मही--वंसपमही बन्धाओं सर्प-बन्धसर्व मबायामी मर्थ बद्यायमध रिषाभो तुची-रिणमची संचापको भीको-संसार (-Bet ) शीमो **प्रभूति रा**ष्ट्रतिस— देवस्य मंदिरं-वेद्यमंतिर वैक्ष्य संस्था-श्रेषपाता क्षाप शुरं-क्यागृह विकास ठायं --विकासर्य नरस्य हेवा-नरिश्रो समाहिको ठार्च-समाहि-देवरस (यो-नीवित) हार्च

कलासु कुसलो—कला-कुसलो | वंभणेसु उत्तमो-त्रभणोत्तमो

जिणेसु उत्तमो—जिणोत्तमो दिण्सु उत्तिमे—दिथोत्तिमे नरेसु सेट्टो—नरसेट्टो

तप्पुरिस समासना पेटामां उववय समास (टपपद समास) आवी जाय छे उववय समासमा पाछलु पद कृटतसाधित होय छे ए ध्यानमा राखवानु छे

उचचय समासनां केटलाक उदाहरणो

कुभगार—(कुम्मकार) सव्यण्णु—(सर्वेझ) पायव—(पाद्प) कच्छय—(कच्छप) अहिय—(अधिप) गिहत्थ—(गृहस्य) सुचगार—(सृत्रगार) वृत्तिगार—(वृत्तिकार) भासगार—(भाष्यकार)
निण्णया—(निम्नगा)
नीयगा— नीचगा)
नम्मया—(नर्मदा)
सगडिम—(स्वकृतभित्)
पावणासग—(पापनाशक)

विशेषण अने विशेष्यनी समास पण तप्पुरियना पेटामां आवी जाम छे तेनु बीजु नाम 'कम्मधारय' समास छे तैना उदाहरणो

पीयं च तं वत्थं च—पीअवत्य
रत्तो च सो घडो च—रत्तघडो
गोरो च सो वसमो च—गोरवसभो
महतो च सो वीरो च—महावीरो
वीरो च सो जिणो च—वीरजिणो
महतो च सो रायो च—महारायो
फण्हो च सो पक्सो च—कण्हपक्खो

सबी व शो पक्तो व-- सरापक्को क्यों का समासकों क्यों शर वर्त विशेषकों का हीर अ

रचपीर्म बल्ध-( रक्तपीत बकाम् ) सीठण्डं बळ-( शारोष्यं बस्म्)

चन्द्रै शार पूर्वेच्च उपवातुशक क्षेत्र क्रंप

चेवी एवं सर्व-चेवसर्व धयो इब सामी-प्रवसामी

बात इस देहो-बात्मदेहो (बार्यहर) मनी शह पासके पर उपमास्कर होन हे

मुदं चनो प्रच—मुद्रचेनो | कियो हंनी एव-कियेंनी क्यों कर कुर्ववर केवळ निश्ववर्श्वय होत है।

संबंधी यह वर्ष-सब्धवर्ष सचो किया गर्क-तमोचन

पुण्यं चेम पाइका-पुण्यपाइका कुम्पवारत क्यासनी अन्य धन्य संक्राहरूक क्षेत्र से श्रेष्ट नाम

दिशा (मेरा) क्याच च्योपान केर नवर्षः तसायं समाहारी-वक्तरं चरकं बसायाचं समुद्दो-चरक्कसायं

तिच्यं सोमाण समुदो—तिस्मां विषक्ष कोमार्च समझो-विकोग

निवेत्रहर्कक 'ज' के 'क्ल'नी नाम ताने वे स्थात जाव देव नाम मतप्पुरिस्त समास्त केवके

त कोगो—सक्रोगो न इदं-अधिवर्द

स बेबो-प्रवेशी भाषारा—श्रणायाचे

व विवृद्ध-मरिदृष्ट व इत्यो-मक्तिस्त्री (ज्यां नामनी आदिमा स्वर होय त्यां ज 'अण' वपराय छे )
प अह अब परि अने नि वगेरे उपसर्गोनी साथे पण तप्पुरिसः
समास थाय छे आनु नाम पाटि तप्पुरिस कहेवाय छे

पगतो आयरियो पायरियो सगतो अत्यो समत्थो अद्दक्ततो पद्धंक अद्दपहुको उग्गओ वेल उन्वेलो निग्गओ कासीए निक्कासि

ए ज रीते पुणोपबुट्टो, अतब्मूओ वगेरे पण समजवा

## ३ वहुच्चीहि समास--

आ समासमा वे के तेयो वधारे पदोनो उपयोग थाय छे 'बहुव्वीहि' एटले वहु छे बीहि (डागर) लेनी पासे एनो जे कोई होय ते 'बहुव्वीहि' कहेवाय जेनो 'बहुव्वीहि' नो अर्थ छे तेनो ज भा समास द्वारा तैयार थयेला तमाम शब्दोनो अर्थ छे तात्पर्य ए के भा समासमा प्रथम पद धणु करीने विशेषणरूप होय छे अथना उपमास्चक होय छे अने प्रथम पछीनु पद विशेष्यरूप होय छे अने समास थया पछी ले एक आखु विशिष्ट नाम तैयार थाय छे ते पण बीजा कोईनु विशेषण होय छे आ समासमा वपरातां नामो प्रधान नशी परतु तेमनाथी जुदु अन्य तत्त्व प्रधान होय छे माटे ज आ समासने अन्यपदार्थ प्रधान कहेलो छे छपर जणावेलो 'बहुट्वीहि' पदनो अर्थ ज आ हकीकतने स्पष्ट करे छे

ज्यारे आ समासमा वपराता नामो समान विभक्तिवाळा होय हे त्यारे आ समासने समानाधिअरण बहुन्बीहि कहेवामा आवे छे अने ज्यारे ए नामो जुदी जुदी विभक्तिवाळा होय छे त्यारे आ समासने बहिकरण (व्यधिकरण) बहुन्बीहि कहेवामा आवे छे

समानाधिकरण बहुचीहिनां उदाहरणीः

 श्र बाह्यो वायरो वं ठवनं सो बाह्यवायरो ठक्को (इस) जिब्राचि ईवियाचि केल सो जिब्रवियो सुणी

जिल्ली करती केंक की जिल्लाकी प्रवासिकों किया परीसाहा केन सो बिश्वपरीसही योगमी

५ यहो भाषाचे जाजी को महापारी जली बड़ो मोड़ो सामो सो परमोड़ी साह भोर नमचेर अस्त को घोरनमचेरो अंग् सम चढरंस संहाच बस्स सी समच्चरमसंद्राची रामी बच्चे अच्छे अस्म मो क्यरधी बन्डो

भासा वर्ष समि ते वासंबंध सेवं भवर केशि ते शेवंचरा महता बाहुनी बस्स सी महाबाह पंच बचानि जन्म सी पंचवची-सीडो चचारि सहाणि बस्स सो चडमाहो-चम्हा पगी वंत्रो बस्स सो पगरंता-गनेसा

 वीरा सद्य अधिम शाम सो शामो वीरवारी सची सिंधी बाप सा ध्रचसिंबा ग्रहा विकरण वहन्त्रीहि

बच्च पाणितिम बच्च सो बच्चपाची गबीब करे अस्त हो गबीबकरो मज्जुमी राप्यान जेवा अवस १व के एक नहुन्तीहियाँ उदावरणः

सिग्धपकार इव नचकाकि जाए सा सिगमपका र के प्रयाचे कम्बनक्या यक्षाचना ईसक्यमा चवलही वसेरे

ते विम्चिती त्यक

२ ३ कोरे सकता समासमा व परावेको नान्योने कानोकी से

# र्न' बहुच्बीहि—

न नारस्चक 'अ' के 'अण' साथे पण बहुव्वीहि समास याय छे. ते आ प्रमाणे

> न व्यत्यि भय जस्स सो अभयो न अत्यि पुत्तो जस्स सो अपुत्तो न अत्थि नाहो नस्स सो अणाहो न अत्यि पच्छिमो जस्स सो अपच्छिमो. न अत्यि उयरं जीण सा अणुयरा

# 'स'यहुव्वीहि

ए ज प्रमाणे 'सह'स्चक 'सं' अन्यव साये पण यहुट्गीहि समास याय छे

पुत्तेण सह सपुत्तो राया सीसेण सह ससीसो शायरिओ पुण्णेण सह सपुण्णो होगो पावेण सह सपावो रक्ससो सम्मणा सह सकम्मो नरो फलेण सह सफल. मृलेण सह समृल चेलेण सह सचेल पहाण कलत्तेण सह सकलतो नरो.

ए ज रीते प नि वि अव अड परि वगेरे उपसर्गी साथे वहु-च्वीहि समास थाय छे अने तेतु नाम प्राटि बहुद्वीहि छे

> प (पिगद्व) पुण्ण जस्स सो पपुण्णो जणो नि (निग्गया) छज्ञा जस्स सो निह्नजो वि (विगनो) घवों जीण सा विधवा अव (अपगत) रूवं जस्स सों अवस्वो अइ (अइफ्कतो) मग्गो जेण सो अइमग्गो रहो परि (परिगतं) जछ जाप सा परिजला परिहा

#### ४ अष्टर्भाव समास--

ज्यारे नुब एउके काई वा धंनाते नातावा बामामती किया ताराइर कावनी होन नाई वा कामामती वर्णनेत के प्राप्तारी वराराज्य गारामार्ट, कुमामुखी नेपेरे बच्ची का कामामता प्रचान करहाज्या केशा केशा देवाराद नोर्ट बच्ची के बा समामार्थी के निकारी दर्शाक वान से नम्मे नाजी ज्ञान एक मराबां होनां बोईए ए जानार्थी एखा बाह के एउके हरून जर्म पात्र कैया सुरा सुरा स्वनीयों का बाह के एउके हरून जर्म पात्र कैया सुरा सुरा स्वनीयों का बाह के एउके

वा रसाय समाव बसाव पनाव छ

ना तिवान गीमों केरलोड अध्यक्ती वाचे वन का बसाय बान क्रंट कम—गुरुणी समीचे सकतुर.

बयु—भोयबस्स परदा बयुगोयनं.

महि—अपंति मेरो बनापं

बहा—सर्थि वन्तर्कानस्य बहासचि बहा—विद्धि वयस्कानस्य बहासिट

अहा—तमार जनसम्बद्धानास्य अहातिह अहा—तमाय जनसम्बद्धानास्य अहारिह

पर—पुरं पुरं पर् पर्पुरं वै बनो प्रशासनं कारेका होन के केरोना स्नव बनाने संदिक्ष तर हरन होन के स्थानकों कह करीने धीर्ष करने की ए व धीरे धीर्ष तर होन के इस्त करने !

इस्क्लो दीर्ष-

सन्तर्वेदि - श्रीतावेद सप्तविद्यति - सन्तावीसा बारिमती - बारीमई वारिमई शुक्रपण्य-सुवार्यतः, सुवर्धतः पतिसूद्य-पश्चरः, पद्दवरः वेणुवन--वेक्ष्यणः वेतुष्य

# दीर्घनो हुस्व-

यमुनातद्र—जंडणयड, जंडणायड नदीम्रोतस्—नद्दसोत्त, नईसोत्त गौरीगृह—गोरिहर, गोरीहर वधूमुख – वहुमुह, वहुमुह

आ सिवाय आ समासना बीजा घणा प्रयोगो पहिताउ भाषा सस्क्रतमां मळे छे, पण ते बघानो अहीं विशेष उपयोग नथी माटे तेमने नोंच्या नथी.

आ रीते समासो विशे उपयोगितानी दृष्टिए उदाहरणो सापे अहीं जोईए तेटली स्पष्टता थई गई छे एटले आशी अधिक लखवानी अपेक्षा नगी

# (पाठमाला विमाग-वान्यरचना विमाग)

सङ्करपरिवर्तन-स्वाकरण-या विभावमां वर्णनिकान, सन्दर्भा निमाय

क्ये प्रश्ता पेरधारी क्याँ त्याय द्वाँच्यी वधानेको है. प्रक्ता पेरधा (स्वार माम्यां माण्डरमकी क्यीवरी माय करात्त क्यां का स्वार्च कर्म व्यवस्था क्रिया पात्र प्रक्र क्यां वहां क्यां प्रदार क्यां पांत्र क्यां प्रवाद क्यां प्रवाद क्यां प्रवाद क्यां क्यां

हों बा प्राम्मां ब्रुप्त ब्रुप्त पार्क्षमां विकास्त्रोधों करो, वामीलां करो तथा इस्त्रीमा अने व्यक्षित्रात्र क्ये आरावाधों के तथा आहला विकास वामात्र वागे पुत्रपति शासकोगां आधीरते क्ये ब्राइय रामचीलां भारतानों पर विधानीं करे हे बारे करतीयों पर नीय और्या प्राम्म गुरुपति बोकता करतानीं के लिखानीं मात्रे अधीरास्त्र पार्क्ष कर्मा मीत्र गर्मना नात्री पूर्व बात वृद्याच पाठ गुलैक के एरके ए मार्थ को भारता कर्मा कर्मा करताना के क्याना पायकार दिखानीं भारते मेंने जोगाना करी क्यानी के क्याना पायकार दिखानीं ह

## पाठ १ लो

# वर्तमान काळ

# एक वचनना पुरुपवोधक प्रत्ययो

१ पुरुष एटले (हु)	२ पुरुष एटछे (तु)	३ पुरुप एटडे (ते)
पुरुप	प्रत्यय	सस्कृत अत्यय
ę	१मि	(मि)
રે સ	सिर	(सि)
३	ति२	( ति )
	<b>દ</b>	
	2	

## घातुआ

३हरिस् (हर्प्४) हरखनु
चरिस् । वर्ष ) वरसवु
करिस् (कर्प्) कपेबु-काढबु-
वेंचयु, खेडबु

मरिस् (मर्ज् ) विमासबु-विचारबुं धरिस् (धर्प्) घसबुं-सामा थबुं गरिह् (गर्ह् ) गरहबु-निद्वुं

१ हे॰ प्रा॰ व्या० ८।३।१४९।१४०।१३९। र सस्कृतना 'से' प्रत्ययनी पेठे अहीं 'से' प्रत्यय पण वपराय छ तथा 'ते' प्रत्ययनी पेठे अहीं 'ते' अनं 'ए' एम वे प्रयय पण वपराय छे अने घातुने छेडे ज्यारे 'अ' आवेलो होय त्यारे ज 'ते' 'ए' अने 'से' प्रत्ययनो स्पयोग करवानो छे हे० प्रा० व्या० ८।३।१४५। ३. जुओ पृ० ६५ नियम १६ ४ ( ) आ निशानमा मुकेलां तमाम घातुओ के नामो वगेरे सस्कृत छेन् अने केवळ सरखामणी करवा माटे तेमने अहीं जणावेलां छे.

मरिस (मर्प) श्राप्त समा थैम् (थैम्) जमदु र राज्यकी वेक्क (क्या) वेक्क घरिस् (घर्षे ) यसत्र पुरुष (पुरुष्ठ ) पुरुष् तुरिए ( दुईं ) त्वच करवी-प्रद्र (प्रद्र) प्रक प्रतासम्ब करसी बर (बर) करत मरिष्ट (सहे) प्रत्रई बैद (बन्द) बोदद प्रिंप (पूर्व) पूर्व प्राची-पद (पत्त) शहर भरत १ मि ठि स्ति गोरे पुरुषोक्ड अन्यो कमारत पहेंची तुरू पातुनीने क्षेत्रे विकास का विराणाता वाणि है । केरके: **पर्** + ति--चंड् + अ + ति = वंडति पुष्क + ति-पुष्क + स + ति = पुष्कवि र प्रथम प्रकार "प्रांची कथ बता प्राथकीयी पूर्वे अरवेगा 'का'नी

₹ .

पड + स + सि = प्रक्रांति प्रक्रि प्रश्नवीयक प्रकश्न करावना प्रश्नी वापुत्रा संकता अर की विकास य थान है.३ जेनने: र्वत् + म + इ = वंतेष्ठ, वंबद जाप + भ + सि = जानेशि, जापसि

पुरुष + स + मिं = पुरुष्किमि पुरुष्कामि, पुरुष्किमि त है का ला । शरीका के है का मा दाउ

१९४१९५३ हे हैं व्या च्या अहारहरू

निकार कार का के हैं जेता है। वेद + म + मि = वेदानि वेदनि

#### रूपाख्यान

देक्छमि, टेक्सामि, टेक्सेमि टेक्सिसि, टेक्सेसि१ देक्सइ, देक्सेइ१

	मापातर—वात्रया	
बादु छु घमुं छु करु छु (त) बादे हे , जमे हे , हरपे हे (त) देग्रे हे , करे हे , सहे हे	घसु छु पहु छु पूछु छु (ते) घसे छे ,, जाणे छे ,, पढे छे (त) खेंचे छे ,, बरसे छे ,, सहे छे	(ते) जमे के के के पूरे के के पूरे के कि के
१वटामि करिससे टक्टिनि	र्वारहेड् पुच्छामि प्रक्सिसि	इरिससि मरिसामि गरिनमि

हरिसम चरिस्रति देक्वसि गरिहामि तुरियइ

घारसास करते जाणेसि करिससि पूरइ

गारहास जेमइ घरिसेमि मरिसामि तुरियेसि

१ लुओ पृ० ९९, टिप्पण २ २ प्रथम पुरुषना एकवचनमां 'बटे' रूप पण वपराय हे • वन्द्-अ+ए=बदे (स० वन्टे-हु बाटु हु) "रसम अजिअ च बन्दे"

कोधन्यास्त्र कोई एव माक्स्यां क्षित्रकाने मताश्या माटे बाच करा अकरो क्यांत नहीं, व उद्याने क्षोक्तवारक प्राकृतमाशामां पन दिश्यमंत्रा रुक्षेत्र श्रुषा प्रावशे नशी. देशी. एकम्पन पत्नी. व्यावसा स बहुरक्तना प्रकारी जापनाधी जान्या के परंश स्वादै विरक्तनी अर्थ स्कारो होन त्यारे किनावा के नाथ शाने द्वितकारयक दि बन्दर्ग बहरकार्य प्रकारकारेची बनवीय करती यह के से कार्य भा प्रधाने हैं" बिच्य (ब्रीसि !)

> <del>वे</del> विक्**षा**सो— वर्तमानकास्ट (चास्ट्र)

बद्रवन्त्रना प्रवस्तोचक अस्पनो

प्रकोतः

भावे एवं करें बाब १व लगी क्षरी कोकमानामां प्रचीवर के कैमके:--

गबर करें — वे

करने

'इ' बन्दर्श के रूपी फार स्थान्थं के तेवनी धार्च नगरर मसर्थं.

क्मी 'हरे' अस्त्रो पण करराय केर करन्ते करिये, के व्या व्या - दाश् १४२।

क्षातिस

नोपीय धीय

शो<del>षित पराठी हो</del>ल वंकली—सी

[३|१४४| ह को भी जनवी छना संस्कृतना

# घातुओ

गुन्म (झुम्प१) ग्रोमझ-होमझ-क्षोम थवो, गमराई इत्प् (झुप्य) कोपउं सिन्च् (सिच्य) मीवउं हब् (लप्१) हबाउ-हबारो बय (तप) तपउं-संताप थवो, तप बरवो सन् (बप) बेपबु -क्षपबु सन् (शप्) शाप -शाप देवो टीय (टीप) टीपगु जव् (जप्) जपगु-जाप करवो पित् (क्षिप्) ग्वायु-ग्रेपगु-फॅमर खिल्प (क्षिण्य) येपगु-मेवयु-फॅमर्य छुट् (लुट्रम) लोटयु-आळोट्यु टिल्प (टीप्य) टीपगु' गच्छ (गच्छ) जयु वोहलु (मू) योलगु

४ प्रयम पुरुषना 'मर्था शरू थता बहुउचनना प्रत्ययोनी पूर्वे आवेला 'ख'नो बिक्ले 'ह' याय३ है जैसके,

बोह्+अ+मो=बोह्नमो, बोह्नामो,<sup>६</sup>

योहिमो, योव्हेमो

#### रूपारुयान

१ पु॰ बोल्छमो, बोल्लामो, बोट्लिमो, बोल्लेमो. २ पु॰ बोल्लह बोल्लेह५ ३ पु॰ बोल्लित,६ बोल्लेति

१ नुओ प्र० ५१ नियम १ २ नुओ प्र० ३५ नियम ९ २ हे॰ त्रा॰ व्या॰ ८१३१६५९। ४ 'मो'नी पेट मु, म, अने म्ह प्रयः योनां स्था पण आ रीते करवा नेमके, बोह्ममु, बोह्मामु, बोह्मिमु, बोह्ममु, बोह्मम, बोह्मिम, बोह्मिम बोह्ममह, बोह्ममह वोह्मिम्ह, बोह्मेम्ह बोह्ममह, बोह्ममह

म्ह प्रत्यय लगाइती जुओ पृ० ११ नियम २ ५ बोल्ड+अ+इत्या= बोक्टिया अथवा बोक्ष्डत्था जुओ पृ० ८२ नियम ९ ६ बाह्र्+अ+न्ते= बोह्न्ते बोल्ड्स-अ+डर=बोह्न्स् स्यो पण समजी हेर्बा

#### बाक्य

समे शीविये किये » वातिये क्रिये

, बाद्धोदिये क्रिये

(तमें के) बोखों को . सीचो छो

(समे के) फेंकिये किये क्षिये किये

(समी बे) शाप दे 🕏 वर्षि के

जपे के

(इ.) साव इसे (हे) बीचे 🖢

थंदामी

मिरि

**क**च्चेब

व वे के

**पण्यात** 

गर्च्छति

**अ**चिमो

वंदैस

र्वत ह बोस्करो सबेम श्रद्ध दुविक

क्रिपित्या के

(क्षमें वे) वांदों छो (तमे) अपो ध्मे

कोची को गमपमी को (अमं के) बीपिये किये

(से भी के (18) कर्य छ

**(द)** लेंड स (श) भाळाडे 🕏 धीचे के

, अरपे के

व्यक्तित्या हो बोक्धामु स्त्रहामि

क्रप्पेष विवासि बोक्समि बंशति

# पाट ३ जो वर्तमानकाळ (वाछ)

सर्व पुरुष १ ज्ञा सर्व वचन १ ज्ञा

ज्ञ अने ज्ञा प्रथ्ययो लागता तेमनी पूर्वे आवेला अगना अन्य र्था नो 'प' याय२ छे

> वंद् + अ + ज = वदेरजः वद् + अ + रजा = वदेरजा

# स्वरांत-छेडे स्वरवाळा-धातुओ

१ हे० प्रा॰ न्या० ८।३।१७७। २ हे० प्रा॰ व्या॰ ८।३।१५९। पुरुपरोधक प्रत्ययो अने स्वरांत घातुओनी वच्चे ज्ञ अने ज्ञा ए वेमाथी गर्म ते एक प्रत्यय टमेरीन पण रूगे बई धके हे

हो + इ = हां + ज्व + इ = होज्जड अयवा होड़

हो + इ = हो + ज्ञा + इ = द्वीज्जाड अयन होइ। हे० प्रा० च्या० ८।२।९७८।

## विकरण लगाड्या पही-

हो + थ + ६ = हो + थ + ८५ + ६ = होएज्जड, होसइ

हो + अ + इ = हो + अ + जा + इ = होएजताइ, होअइ

होज्जड अवना होएज्जड साथे सरखानो होजे, यने, करने, चालजे, देजे, टेजे नगेरे गुजराती नापानां रूपो

बू(ध्) बोडबु मा (धार्) धार्च-दोडल बो (म्) ध्रेष्ठ-पष्ठ ৰা (ৰাষ্) কাছ भी (ती) घर जन-में पोर्ख हा (हा) बीजा धन -तजन

क्षकारांत विकासभा स्वरांत मातुकांने क्षेत्रे प्रकानोत्तक ऋतन क्याकर्ती प्रोश विकरण माँ विकाये साथे हैं। हो जा पना । । १९१४ )

को + र ⊏ दोद हो + ज + इ ≕ दोलद मा+ ह= ≒तत सा+ स+ ह≃ मानद

 $\mathbf{w}_1 + \mathbf{g} = \mathbf{w}_1 \mathbf{g}$ ,  $\mathbf{w}_1 + \mathbf{w} + \mathbf{g} = \mathbf{w}_1 \mathbf{w}_2$ ( अफारीत पा<u>त</u>ने क्रेड वर्ष के व बाउं विकरण 'मां प्रतेशार क्याचवानी अवर वती.)

मकारांत पात--

विषय (विकित्स) विकित्स करवी—धेका करवी अध्यक्ष चपाय करकी.

हुइच्छ (शुगुप्स) चूचा करनी नचना दथा करनी समयप (समयप) देवनी केम रहेते. चित्रपक्त सरप्रा श्रमरापद

4	
विकरण	विनानां

होसि १ पुरु <del>min</del>

₹प क्रीसि s go

# विकरणवाळां

१ पु०	होअमि होयामि होपमि	होअमो, होआमो होइमो होपमो
२ पु०	होअसि होएसि	होअ <b>द</b> होपह
३ पु०	होअइ होपइ	होयति होदंति होइति
सर्व पुरुप सर्व बन्नन	} होज्ज, } होएज्ज	होज्जा , <b>होपज्जा</b> (विकरणवाछ)

## वाक्यो

गाइये छिये	अमे वे तजीय छीप
दोडो छो	तेओ टे छे
(तेओ) वोले छे	वाय छे
ते वे खाय छे	अमे दोरीए छीर
कभो रहु छ	तेओ दोरे छे
तु दोरी जाय छे	तमो उपाय करो छो
अमे जईए छीए	हुं घृणा करे छुं
तमे पीओ छो	अमे देवनी जेम रहिये छिये
तेओ गाय छे	

1	•	h	c

WITH

याइ

जापि

द्यमि

चुम

à Gr i Par

TITE.

**XIX** 

कारत्या हासि

चेंकि

चामो

बेसिर

वितिः	
वे जामी	
झामो	
मापसि	

∎वि

ri Pr

#ति

नमो

प्राक्तो पाठ ४ यो

असु विषयान होई कर बाननों कर अभिनिधत के बच्चे से का प्रयाने के हि अ

FRE INLEVELLATIONS (1) १ पु० लिक्स, क्रिया, (जस्मि मो.६ स (चमा)

मि. धीसि and the same ९ पुसि असि (असि)

क्षारिका ३ प्रमित्य र्वात्य ध (स्य) मरिय थरिय संवि (सन्ति)

वहुद्धन

१ पू+वा+ निव=यू+यू+निव=वैक्ति स्वार्थिति २. यु+ भ + सि = यू+ ए+ सि ≃ वैसि । सह स्ती करे सह करी

पन नगरान कं व्यक्तिय-अप्तैन कर वर्ष प्रका अने तर्र गणामा करतात्र के

# घातुओ

मन्न् (मद्य१) माचर्तु-मद करवो, खुश थवु खिज्ज (खिद्य) खीनवुं-खेद थवो सं+पह्ज् (सं+पद्य) संप-जबु-सापडवुं नि+प्पन्ज् (निप्प्य)नीपजर्वुं विज्ज (विद्य) विद्यमान होबुं

जोत् े ( द्योत ) जोत जोञ ऽ थवी-प्रकाशःतु-जोतुं सिङ्ज ( स्विध ) सीजतु-चीकणुं थवुं दिव्य ( दीव्य ) रमदुं-सूत रमवुं

#### वाक्यो

(तेओ) थाय छे (तुं) दे छे (ते) थाय छे गाइप छीप दोडो छो (ते वे) खाय छे कभो रहुं छु छो जाय छे खुश थाउं छु पेद करे छे नीपजे छे प्रकाशित थहए छीय

(तेओ) जपे छे (अमे बें) ध्यान करीप छीपः पीओ छो (तेओ बें) रमें छे सीजे छे छीप विद्यमान छे (तमे बें) छों (तुं) दीपे छे तजीप छीप जाउं छु छु

के जाय ो मो विष्यताने Contract Co.

**≰**ि

ateur et De

सारकीर

क्राचि जिया उत्तर HITTE विश्वाम

क्राचित

वस्ति

प्रकृति

#### पाठ ५ झो

૧ વળો છુખ ગિખુર છું પ્રદેશનથાદ કર્યું

पुरुष् (पूर्व ) पूरके, पूर्व है विक्य (विषयः) श्रीवर्ष गित्रह्म (युग्य) युक्त वर्षु-

इन्द्र (काप) मोच काची सिन्ध (सिम्प) शीशके-क्तिम शर्म

मध्य (नदार) नाश्ची-बोधई तुत्रम् (पुष्प) जूसने-पुद करने

(कार्) सार्

कब (कथा) कड़ियं कर ( कप) बोर्ड-सर्ट वाह (बाबः) बाधा करबी~ शरकाय करवी

सिव (विकार) शक्तां सह (समा) केव-रोटवर्व

सिकाट (न्यापः) सरावर्न-वकायर्थ

चोह् (ग्रोघ) वोघ थवो-ज्ञाणवुं चह्र (वध) वध करवो-हणवु सोह्र (श्रोभ) सोहवुं-श्रोभव 

## वाक्यो

वे ध्यान धरीप छीए (ते) वींघे छे **ळळचाइये** छिपे वे मुंझायो छो वे सडो छो चींघीय छीय शोभो छो शोघो छो सोझो छो वे छखीण छीय खंचो छो सापडे छे वे निंदा करे छे (तमे वे) होडो छो गाउं छु शाप दे छे प्रकाशे छे

छो तेमो छे छ (तुं) छे छीप (ते) छे द्यो छो जाणे हे माचुं छु वे जाय छे कंपो छो वे वखाणे हे वाय छे धईय छीव सेद करीय छीप (ते) कभो रहे हे सिद्ध थाउ छुं

स्रोप

सिकाई दि गिन्छान मि बादि नगरपित बाद के सोबापो मुख्यित क्षेपित विज्ञीत क्षेपित विज्ञीत क्षेपित विज्ञीत	वाँति क्षेत्रंति ज्ञाने क्षेत्रंति ज्ञाने म शि विति क्षित्रे अव वित्रंति क्षेत्रे अव क्षेत्रंति क्षेत्रं अवित्रंति क्षेत्रं वित्रंति क्षेत्रं वित्रंति
भार	मो
१बीड् (मी) बोड्रे करूब (सरको खाळडूँ-घोमड् बेस् (बेप) बॉड कर्म (कर) करड्	লন্ লন্ লন্ লন্ বিধান কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব

चिए (चिन्न) चवश्च-पक्र 400

क्रदंति .

१(शुष्य) शोपर्य-संस्र

९ सरकाओ बीह अभी शी −म्+इ+है "प्'लने"हू" मेना पत्नी करा मां जने तेवां की नतवां भी २, क्षणी हा ५ मिनप १

निया फरबी

सुमर (स्मर) स्मरण करबु-याद करबु गच्छ (गच्छ) गति करवी-ज नस्स १ (नज्य) नाश नास १ थवो नेण्ट् (गृहणा) श्रहण करबु नष्य (मृत्य) नाचवु कुण् (कुणु) करवु रूस् । (रुप्य) रूटवु-रोप रुस्स । करवो हण् (हन्) हणर्बु-मारवु

## सार अने पन्नो

<sub>एक्यचन</sub> **१ पु॰ चद्मि, चंटा**मि, वटेसि

**G** ....

२ पु॰ चंदसि, चदेसि वदसे, वदेसे

३ पु॰ चदइ, चदेइ, चद्रण, चटेण चद्रति, चटेति, चटते. चदेते

सव पुरुप । वदेज, वदेजा सर्व वचन ) वदेजा बहुवचन

वरमो, वदामो, वदिमो, वरेमो वदमु, वटामु चित्सु, वदेमु वरम, वटाम चित्म, चटेम वरम, वटाम चित्म, चटेम वरह, वटेह बदहत्या, वटेहत्था चटित्था वटति, वटेंति, वटेंति,

वदते, यदेते घदिते धंदहरे, यदेहरे, वदिरे

स्वरांत धातुनां विकरण विनाना रूपो

१ पु॰ होमि २ पु० होसि ३ पु० होइ, होति होमो, होमु, होम होह, होइन्या

द्वोति, द्वति द्वोन्ति, द्वन्ति होन्ते, द्वन्ते

होइरे

सर्व पुरुष, सव वचन—होज्ज, होज्जा

बोधमी, बोबासी बोदमी 4 3 होस्रवि **शोवमी** होवम् होमख होस् शोपस

पायपम

क्षोजम दोषाम होत्रम

क्षोणति क्षेत्रेति क्षोपेति

228 स्वरांत पातुनां विकरणपाद्यं क्यो

होपस होबह हो ३४, होमहत्या **र प्रशासि गर्जस** त्रोत्रसे होपसे क्रोप**रर**पा

द्येम र होनेप हानति होयस होनारे होत्रविः होपति शोपारे सर्वे पुरुष सर्वे वजन होरस्य होरस्या

१ प्राप्तन भाषाओं क्या क्या क्या लगी नहीं वस्ताल में नहीं पत्ताल

केल्या बद्दरुग्धा गया श्वा श्वरी बच्चाय के है से बचाप्रत्य साचे राजकार है.

g do gjut ajeit

क अधिका प्राथमिक प्रमाण करी भारी समाने-

मृत्तिका ताम्बुक कीवच वैत्य वीट. कीमुरी नगम् शीवैकर गोग्री नग्न

३ मोचेना बण्डीनां बरका करे चतावी

समुद्द वंक साहा पढद साहु हरुदा अगाल सद्द चोदद छट्ट भायण

४ नीचेना मयुक्त व्यजनोनो जे फेरफार यतो होय ते उदाहरण साथे जणावो

क्ष त्य द्य प्स प्

५ नोचेना संयुक्त ब्यजनवाळा शब्दोना प्राक्तन रूगंतर करी बताबो' श्रीष्म स्तम्भ पुष्प प्रश्न मुष्टि ध्यान श्रीण्डीर्य ऊर्ध्व तीर्थ निम्न कर्तरी

६ नीचेना शच्दोनी सिंघ छूटी करी वतावो

वासेसि द्वामद वहूद्गं पुह्वीसो काही

७ नीचेना शब्दोना समास समजावो

देवदाणवर्गघन्वा वीतरागी, तित्थयरो मिंदी महावीरो

- दीर्घनो हस्त्र अने ह्स्त्रनो दीर्घ क्यारे क्यारे थाय छे ते उदाहरण साथ समजावो
- स्वरांत धातु अने व्यंजनांत धातुनी रूपसाधनामां जे मेद छे ते समजावो
- ९० प्राकृतमा द्विवचन के श द्विवचननो अथ कई रीते बतावाय छे ?
- 99 प्राकृत भाषानां रूपो साथे आपणी गुजराती भाषाना रूपोनो केत्रो सवध जणाय छे ?

#### तक्सम्म (उपसर्ग)

क्रम्यय बाहुबी पूर्वे जानी बर्ल करीने बाहुबा शुरू कर्मणी स्नुतिकता करी निक्रेष वर्ष-स्थून व्यव अ वक वक के सुरी वर्ष-क्टारे हे दश तनकर्य श्रीने समय है:

प (इ) भागळ पश्चात-पत्रतः-भागळ बाय के प+कोतते=पकोतते=विशेष प्रकारो है पश्चरतिन्यहरतिन्यकार करे के

परा-सार्च कन्नई परा-जिन्ह=पराजिनह=पराजय करें है

परा+क्षेत्रभ्यराक्षेत्रभ्यसम्ब बरे के-बरावे के.

(वप) हक्क रहित बो+सर्ए=नोसर् नीचे हुट स्व-सर्ए=मदस्य सप+सर्ए=मपसर्थ

जयः। अधेकाय=जनत्ययं=अपार्धक-जमपुं-भो+मास्यम्=भोम**ध=विमाल्**य सं ( सम् ) एक द्वं साथे सं + गच्छति = संबच्छति-सामे

जाय के शंक्षिया-शंक्षिया-शंक्षय करे

के-एकड बरे के ंबतु) यात्रळ, सरर्शुं वयु+आइ≈मणुडाइ-पाठळ बाय छे

जगु+करद^म*णुक्त*ु-अनुकरण

यो । अवः) बीचे यो+तर्यु=योत्तर्यः व्यवतरे के क्रानरे के स्व+तर्यु=सवतर्यः तीचे बाय के.

(निर्) निरंतर, सतत, रदित निर्+इक्षद्र=निरिक्षत्रइ-नीरखे छे-निरीक्षण करे हे नि+ज्झरद=निज्झरद-छर्या करे छे नि+सरद=नीसरइ-नीमरे छे-निरतर सरे छे. निर्+अंतर-निर्तर-निरतर-सतत निर्-भधन =निद्धणो-निर्धनियो-धन घगरनो दु । ( दुर् ) दुप्रता दु+गन्छइ=दुग्गन्छइ-दुर्गतिष जाय छे १ट् । दो+गच्च=द्रागच्च-टोर्गत्य-दुर्गति दू+हचो=दूहचो-दुर्भग-फमनसीव यि । (थिप) सामे अभि+भामइ=अभिभासइ−सामे बोले छे. अहि । अहि+मुह=यिमुह=अभिमुख-सामु वि-विशेष, निह, विपरीत वि + जाणइ = विजाणइ-विशेष जाणे हे वि + जुज्ञ इ = विजुज्ञ द-वियोग करे छे वि + कुव्यद्द = विकुव्यद्द-विकृत करे हे (अधि) अधिक अधि+गच्छति=अधिगच्छति-मेळवे छे, साणे छे, उपर जाय छे अधि+गमो=अहिगमो-अधिगम-ज्ञान भ्रु (सु) सारु सु+मासण=सुमासण-सारुं बोले हे स् म् + हबो = म्हबो-सुभग-भाग्यवान भ 'द्र' अने 'स्'नो उपयोग फक्ष 'हव '-(भग ) शन्दनी पूर्वे याय छे ज्ञो पृ० २३ नियम ५

थतिशय इर बहार. मह+सेह=महसेह-भविशय

करे छे-इब बहार बबाये छे. अति शास्त्रकति ≃मति। कारित~ क्षत्र नदार आध्य के मि ] (नि) सिरंतर, बीचै चि+पडड≔विपडड ] विरंतर पढे छे Fir | मि+पक्द=निपक्क | नीचे पके के पति । प्रति-सामु, भरमु विपरीत पति । पति । पति । पविन्यासपन्यक्षितासप-माई बोके के १परि । पविश्वार्व्यविद्वार्-प्रविद्वित थाम है पर्ग-द्रान्यरिक्र-बेरिक्रा पविश्मा=पविमा-सरबी बाहरि पडि+का-परिकार-प्रतिकृत (परि) चारे बाह्य परि+बुडो-परि+बुडो-परिबुद-चारे

पक्षि+बो=पश्चिप्रो-परिष यथ P को+विन्दोवि को+दन्दोर किम्+शविजिक्सवि-कोइ पन

वालची बीटापको-

र्धाःचि=अधि-श्री पच पि भूषि भिन्न क्यारिय 'व न बचारमस्थान कर करचे के अको प्र

१ मिनस १२.३ व्यक्तो द्व: १६ वि:

या—मर्याता, ऊल्ह था + वर्सड् = आवसङ-अमुक मर्यातामां रहे छे

### आ+गच्छर=आगच्छर-थावे छे

टपसर्गना अर्थो नियत नदी कोई टपमर्ग धातुना मूळ अर्थ करती विपरीत अर्थ बतावे हे कोई ए मूळ अर्थने अनुमरे हे, कोई एमां घोडो बवारो देखाँड छे अने कोई, मात्र शोमा माटे ज वपराय छे— धातुना अयमा कशो फे फार बतावतो नथी 'अपि' टपसर्ग हे अने 'पग' अर्थमा अन्यय पण हे एयी 'अपि' साथेना टटाइरणोमा तेनो यन्ने जातनो टपयोग बनाह्यों हे

#### धातु

पुण् (पुना) पियत्र करखं युण् (स्तुन्) स्तृति करबी यच्च (ब्रज्ञ) फरना रहेबु इह (क्रुट्ट) ऋदबु अच्च (अर्च) अर्चबु-पृज्ञबं यहू (बर्घ) ययबु मम् (अम) भमबु मम्म (आम्य) भमबु मिन् (भिनन्) मेरबु-

क्टका क्रवा

छिद् (छिनद्) छेटबु
तिच् (मिञ्च) सींचवुं
मुच् (मुञ्च) मृक्ष
छुण् (छुना) लणवु-कापवु
गट् (प्रन्य) गटबु-गुंबवुं
गञ् (गर्ज) गाजवुं
मिला (म्ला) म्लान थवुकरमाष्ट्रं
गिला (ग्ला) ग्लान थवुं
गळवु-क्षीण थवुं

790

चित्रकार (चिकित्रमा) चिकितमा । विस्ता (चिनसार) बीसरह करबी-रोगमो उपचार करणी. जम्म (ब्रायः) ज्ञावर्षे

करम (अग्मव) सम्मर्थ बन (४५) रोड वोख (वोक) वोक्ष्य

वहवयन

पाठ ५ मो

अकारांत नामनां कपारुयानो (परबाति)

ए कर कर

र बीर+मा≔बीरा। (बीरा) बौर+मान्वीरा (बीयः) बीर+प=बीरे

 बोर+मज्बीरेर (बोरस बोर+बाञ्बोरा (बीराब) बोर+रज्वीरे

३ बीर+पण=बोरेज (बारेप) चीर+पडि बोरेडि (बोरेकि) की रे क भीरेशि भोरेशि (क्रिंटे) भीर+माप=नेराच (वीराच) बीर+च=पीराच (भीराव्याम्)

धीर

नीर+भाव-चीराव बीराव र्पार+स्सन्धीरम्स (पीरस्प) १ के जा मा | Diet क्या (शार्यका दा) शा रे.

हे क मत राज्य के है क मत राज्य र है जा ब्ला । भारत भारत । भारत्य प्रताहे जा व्या टामान

१६ ६ हे ब्राम्स था शराहे जा ब्ला स्थानका हे मा ज्या टाशका काका

**≄वीर+आ=**घीरा१ (वीरात्) वीर+ओ=वीराओ

चीर+उ=चीराउ

चीर+ओ≃बीराओर वीर+उ=वीराउ

धीर+हिंतो=वीराहिंतो, वीरेहिंतो (वीरेभ्य)

वीर+सुतो=वीरासुतो घीरेसतो

६ वीर+स्त=बीरस्स३ (वीरस्य) वीर+ण=बीराण४ (वीराणाम) **बीरा**ण

७ वीर+ए=वीरे५ ( वीरे ) वीर+स=वीरेसु६ (वीरेपु)

वीर+असि=वीरसि (वीरस्मिन् १)

वीर+मिम=वीरिम५ सं० वीर ! (वीर!)

वीर+आ=वीरा॰ (धीरा ¹)

वीरा० ' वीरो । वीरे !

मस्छन अने प्राकृत रूपोना उच्चारणोमां नहि जेवो मेद छे ए मेद, ए रूपो बोलता ज समजाय छे मात्र पाचमी विभक्तिमां वधारे धनियमित रूपो छ

🛩 पाचमी विभक्तिमां नीचेना वधारे रूपो पण थाय छे

पक्षवचन वहुवचन वीर+तो=त्रीशतो वीरातो वीर+तु=वीरात वीरात्र षीर+हि≃वीराहि वीराहि वीर+हितो=त्रीराहितो वीरेहि वीर+तो=वीरत्तो वीरसो

१ हे॰ प्रा० व्या॰ ८।३।८।८।३।१२। २ हे॰ प्रा॰ व्या॰ ८। ३।९। तथा १२।९५। ३ हे० प्रा० व्या० ८।३।१०। ४ हे० प्रा० स्या० ८।३।६।१२। ८।१।२७। ५ हे० प्रा० व्या० ८।३।११। ६ हे० प्रा० च्या० ८।३।१५। ८।१।२७। ७ हे० प्रा॰ व्या० ८।३।३८। तथा ४११२।

करो नयसको नायमु न्दुः सेच करे अवनयो क्षेत्र-ए वस ह्या पामेर्द कर्मादेश के करे साथे ए उपरक्षी सावित कर्या होरेक करो पर्य ह्या हुए। एक्टीकों के एसे वा सावक्यप्रति हारा व नियानी अध्य-रात वासन्यं करोने समझी केले

#### साधनपद्वतिनी समज्ञव

চলমা ইটেবা কুটালা পত্নবা লন জননা নিনক্ষিণা কাহাছি মন্দ্ৰনী কো বন্ধনিনা বৃদ্ধ নাল আ প্ৰথমৰ অন্তৰ্ভী কানা কামৰ কোনা কাম কৰোলা ট (অ্লাছ ২ নিকল ১)

#### -

२ चीर + स्= चीर (चार्य प्र मनाम १५-1) चीरस् + सस्य = चीर समि चीरमचि

१ क्टीमा क्ले वडी निमित्रण च वजर तथा वसमी निमित्रमा स्टें वपर श्रद्धकार निकमी वाथ क्रेम्

बीर + पण = बीरेण बीरेणं बीर + ण = बीराण कीराणं बीर + शा = बीरेस, बीरेस

व गुणीया वार्व तप्प्रमीया पशुस्त्रकामा व्यवसीमी पूर्वमा क्षवराति कंत्रका कार्य ना मी ए शास है जाने दुव्यतील नीयमी हाना व्यवसारीत कारमी अंग्य के वार्ष के वार्ष की

करूरे अंग '६ करें ह हीय वात के। बीर-दि बीरोड़े | स्थि-मीह-दिसीड़ि | आणु-दि-प्राण्डि बीर-सु-बीरासु | रिसि-सु-दिसीड़ि | आणु-दि-प्राण्डित ५ पचमीना 'ओ' 'ट' 'हिंतो' प्रत्ययोनी पूर्वना स्वरात अगनो अत्य स्वर दीर्घ याय छे तथा पचमीना बहुवचनना 'हि' 'हिंतो' अने 'मुतो' प्रययोनी पूर्वना अकारौत अगना अत्य 'अ' नो 'ए' पण थाय छे

एकवचन

वहुवचन

वीर+श्रो=वीराओ वीर+ड=वीराड बीर+हि=बीराहि, बीरेहि

वीर+हिंतो=वीराहिंतो, वीरेहिंतो

वीर+सुतो=बीरासुंतो, बीरेसुंतो

रिसि+हि=रिसीहि

रिसि+ओ=रिसीओ भाण्+थो=माणुओं माणु+हि=भाणृहि

रिसि+हिंतो=रिसीहिंतो

६ पष्टीना बहुबचननो 'ण' लागता पूर्वना अगनो अत्य स्वर दीर्घ थाव छे बीर + ण = बीराण, चीराण रिस्ति + ण = रिसीण

- सवीधनना रूपोनी माधना प्रथमा प्रमाणे छे बधारामां मूळ अग पण जेमनु तम वपराय छे बीर विरो दीरा विरे!
- ८ तृतीया विभक्तिनो 'हि' प्रत्यय माथे अनुस्वार पण छे छे अने तेनो मानुनामिक उच्चार पण थाय छे आ रीते ते एक 'हि' ना पण त्रण रूगे थाय छे वीरेहि, वीरेहिं चीरेहिं
- वीराए१ (च प०) वीरिस (स० ए०) रूपोनो व्यवहार विशेष
   करीने आर्पप्राकृतमा देखाम छे केटलेक स्थळे चतुर्घीना एकवचनमां

मार्ग जमनवाही कर राम शके के (है प्रा जम ८१६१२३३) परार (वपाव) आम आप को बार्ड यु समेर्या बार करते विष सक नहीं, 'आप' जमनवाह कर गृहु प्रमुख्य करते देवी में ये कर एवं करोबर्ग जम्मण्यु नहीं केशके, बुचके बाए दी वहके जाये जनवा कर करराएको के एकी वीराएंको ऐसे गीरावें कम पन मार्ग प्राकृत्य वररारखा के प्राकृत मारावां चुक्तों निवांक बान हरी को पन वे चही दिशांकार्य प्रदार बराबी के देवी से वब दियांकां करेंगे एक शर्मा नाम के

#### माम [ भरजावि ]

च्यदिशेष्ठ (महत् ) योदराय बाख ( याव ) शक्र-शक्त अक्रमाय (बरामान) क्रा हर (इर) महावेत पास**−शपाल-**-धा-प्रश्न (इस) हबसेन माम (सार्म) भाग-बार्य कायरिय (अन्तर्भ) तराचार फसर ( क्यर ) कार-क्यो क्ष जब-**प्रत्य ( इस्त** ) हाल शिक्त (रिव) वंदेवी वीक्साच पान्य (पान) पान-नय, नानो शिष ( घर ) धर⊣राम भार (मार) बार बुद्ध (बुच) बुद्धिमाल-बाह्यो धुवर

१ लिम्लाए (ब्रॉक्शान) मसाए (द्वांबान) हत्कार (द्वांबान) वनेरे बाए प्रत्यवनाकां करे कोगांव (क्लेके) फेडि (फेटिमर) अध्यासि (बनारे) स्थानकि (स्वासी) नगेरे लॉकि प्रवासकों करों बाव वर्ग बार्मागिरिक्शोंकों पढ़े के पुरिस (पुरुष) पुरुष
आह्म (भादित्य) आदित्य-सूर्य
हंद (इन्द्र) इन्द्र
चट (चन्द्र) चद्र
मेह (मेघ) मेघ-बरसाट
भारवह (भारबह) भार बह

समुद्ध (समुद्र) समुद्र समुद्ध (समुद्र) समुद्र नयण (नयन) नेण-आंख कणण (कर्ण) कान महावीर (महावीर) महावीर देव जिण (जिन) जय पामनार— वीतराग

मेय मार्गने सिचे छे इन्द्र बुद्धदेवने नमे छे डाह्यो पुरुप वाळकने पृछे छे आखबडे चन्द्रने जोडं छु समुद्रने कानबडे सामछु छु वालकना इत्यमा चंद्र छे कलहने छेरो छो सूर्य तपे छे राजा मार्गने जाणे छे सिद्धोने नमी
मजूरो मार्गमा दोडे छे
सम्रद्रमा चंद्रोने देखीय छीए
वाळको उपाध्यायने पूछे छे
राजाना पगोमा पह छुं
वीतराग देव! नमु छु
वे वालक वोले छे
समुद्रो गाजे छे
राजा जोमे हे

भनमो अरिहताण भारवहो हर छद्द महावोरो जिणो झाथइ कण्णेहि सुणेमि नयणेहि टेक्खामु भारवहा भार चिणति नमो उवस्त्रयाणं समुद्दो खुल्मइ मेहो समुद्रम्मि पडह वाला द्वत्ये घरिसंति समुद्र तरह हत्येण हर अच्चेमि नमो आयरियाय आयरियाण पाए नमाम बाला कुद्दति चन्दो घड्ढह्

९ णमो के नमो साथे वपरातु नाम छट्टी विभक्तिमां आवे छे

#### पाठ ६ हो

बद्धारांत नामनां कपासमाना [ नान्यतर प्राति ]

१ समग्र-सम्बद्ध (कारस्) काक्र-णि-काम्राणि ) कास-र्थ=कार्ड

कमक+६=चमधाई ik ur un inftic () , (, ) , , , सं० कमस्र ! (कमस्र !)

के प्रा. भग नावा वतीयाची सप्तमी सुपीर्ता रूपो ' बोर 'ती केवा कामचा

ति है हैं जन्मीनी पूर्वय केवन जान हुन स्वरणे रोवे कार हे कामक + कि = बामकाबि वारि + ई = वारी है मात्र + है = मार्स्ट

७१ संबोधनमा प्रवासनमा नक क्षेत्र थ क्षरात के ब्राह्मक !

#### माम निरम्पतः प्राति 🛚

सभाव (नगर) नैप केट ( वर ३ देर-देर

भारपाय (यस्तक) साथ बाच (३११) ज्ञान

व्यव्य (बन्दर ) पश्चम ब्राप के सक्दर बयम ( १५०० ) १<del>५४० - १</del>४ क्षप्रण (वदन) वदन-<del>॥व</del> णगर नगर णयर नगर (नगर ) नगर-बाहेर णयर नगर ) मुद्र (मुख) मुख पित्त (पित्त) पित्त सिंग (श्वह्न) शिंगडु फल (फल) फळ चण (वन) वन भायण । (भाजन) भाजन-भाण (भाज-) भाज-

मगल (मज्ञल) मगल
पास (पार्श्व) पास -पडखं
हियय (इदय) इदय-हैयु
गल (गल) गलु
पुच्छ (पुच्छ) पृछङ्ग-पूछ
पिच्छ (पिच्छ) पीछु
मैस (मास) मांस
अजिण (अजिन) अजिन-चामडु
भय (भय) भय-भो
चम्म (चम) चामडु

## नाम (नरजाति)

सीह | (सिंह) सिंह
सिंच | (सिंह) सिंह
स्व (न्याप्र) वाघ
सिगाल | (म्थगाल) वियाक
सिगाल (बीतकाल) घोआको
स्य (गज) गज-दाथी
चसह (वृषम) वृषम-बळद
सोंद्र (ओष्ठ)-होठ

दन (दन्त) दांत कुंभार (कुम्मकार) कुमार चम्मार (चर्मकार) चमार ह्व्ववाह (ह्व्यवाह) ह्व्यवाह-अप्नि कोह (कोष) कोष लोह (लोम) लोम दोस (हेष) हेष दोस (दोष) रोष राग (राग) राग-आसिक

## धातुओ

घड् (घद्र) घडवु-चनाववु जहा (जहा) छोडवु-त्याग करवो

**जागर्** (जागर्) जागब्र

भक्ख (भक्ष) मक्षवु-खाबु-भरखबु जाय् (जाय) जन्म यवी-उत्पन्न यय परि+स्ट्रम् (परि≔क्रम्) परि असल का ग - परचस्त्र -प्रश्रिका परणी

र्वह (स्क) रक्त श्वमा (रब) रायत गावत बह (शह) महेन-मान

विद्रोपण

स्तव (करन) स्त्रेत क्रम्ब (म्बरून) भाग

संस्थाय

स (व) न १व (श) ग-ववश-के रक्षिका (निवा) निवा स्त्या (क्या) स्वा इमेस साध्य (वड्ड) सर्विद (बार्वन्द) सह-वाके

शिक्यों (शिवार) निस्त

बरबी बैर वधे के बगरबी पड़के बहनते का सिंह के बाबकी विधान after Der

मांसने मादे सिंहपे हवी को वांतो सादे हाचीओंचे मारे है बक्षनी छाये महाबीर बोके के

१ व नो वज्जोप--पुत्रो व नीरो व कविको (कपिन) व सन्तन्त्र, र 'दिना' के 'विन्क'वी साथे जानका नामनं नोजी जोन्दी के चीवारी किसीफ कार्ग के मेर्ड निचा मेहेच विचा मेहात विचा. ३ वर्ड के सर्वि मी सामे आवाल बाधनं शीवी जिसकि लागे के बुदेव बहुcentle eff.

घडे हे वायने पीछा नथी होता थीप्र बनने बाळे हे धानमा मगल छे महावीरने माथाबडे बदन फर हुं राजाने कान नथी मिहना हृदयमा भय नथी हाथी खुढ बडे बनमां फळा

क्षमार शीआळामा पात्रो

चामहा माटे वाघने हणे हे हाथीओ वळहोशी घीता नथी सिहनु पृछण्ड छातु होय हे आंग्रमां फोयने जींड खुं एयं के चड़ समता नथी बळहो हिंगडायी छोसे हे चमार चामहाने शुह करे हे मृग्यबंड बचनो बोल खु पुरुष नाना होटथी जास हे बरसाट नित्य पहे हे बरसाट यिना बनो सुकाय हे

अजिणाग यहित वग्ये
फाराई भायणिम माहित
बुद्दा पुरिसा हियये वरं
न रमगति
निया वणेसु मित्रे वा वग्ये
या हणह
सियो फार न गायह
चंदणस्स वणित जामि
कुमारी नगराश आगच्छह
चममारो अजिणाण नगर जाह

नियम्म मन्यर्थाम क्रमलाणि छटजति मन्यणण बटामि महायीरं यण गण देशप्रह यग्यस्म या सीतस्म वा मिंग नित्य लोहाओं लोही यहहरू रागा दोसो जायह कोहेण पिन फुल्पर

# पाठ ७ मो

नर चावि १६८५ (बर) वडी बैय (विश) ऋत्वेद क्येरे चार वेद शक्त (वद) शर फास (राग) राग्रं पळ्ळ (परह) पत्री-बीब श्लकाय (वकान) क्लाब सब (मर) वन-बरो शब्दा (पदव) नदव सोड (मोड) मोड-राज्य **BITT** क्षाच कान) नाम-काना-कंधर THE ध्यक्ष (खबर) सवद-साव-अवस्य हरिम (हर) हरच-पर्व १अक्ट (मठ) मही बठ शम्बाशी-पोषकर (पुन्तर) छहत भोते स्टेबल वाप (क्षत) क्षत सह (वड)-सचे

क्रबार (इसर) इसमे पाद (पाउ) पात्रो-क्रांक्यो पात्रो -974

समाज (धमन) प्रदेश माने अम करणार-वन अवन मोक्स (माध) गांक-सम्भरी

(कार) चारी

संघ (रंडम्ब) दांद-स्टांट वाद. वोगी शब कोश्व (क्षेत्र) पाची कवानी कोत सक्यो

पाच (शर्थ) अच-वीन रांच (क्य) वंब कास (कान) काम-तून्ना-एका सप्याच (नायदः) नायः-पोते-आप

माम्यतर भाति अस (अस) च्या पाणी मिस्र (भित्र) भित्र रपद (१वट) स्वत-क्स ब्रामा (इ.स.) इ.स सुक्का (धीका) प्रव गीध कारिस (गरित्र) का गील

सीस (शोप) शोप-माथु गुत्त (गोत्र) गोत्र-वश गहण (प्रहण) प्रहण करवानु साधन पजर (पञ्जर) पाजर सील (बील) सदाचार लावण्ण | (लावण्य) लावण्य-लायण्ण कांति **रसायल (**रसातल) रसातल– पाताल कुम्पल (कुइमल) कुपळ-कुपल फणगो रुप्प (रुक्म) रूपु जुम्म । जुरम (युरम) युरम-जोडु क्रम्म (क्रम) काम-काय-सारी नरसी प्रवृत्ति घाण (घ्राण) नाक-सुघवानु साधन सयद (शकट) शकट-गाडु-छक्डो (पद) पद-पगलु जुग (युग) धींसह खीर | छीर | (क्षीर) क्षोर-खीर-दूध लक्षण (लक्षण) लवण-लच्छण छीअ (क्षुत) छींक खेत | छेत्त | (क्षेत्र) खेतर-छेतर सोअ | (श्रोत्र) श्रोत्र-कान-सोत्त सामळवानु साधन वीरिय (बीर्य) वीर्य-वळ-शक्ति

## विशेषण

मूढ (मूढ) मूढ-मोहवाळो-अभण-अज्ञानी पुडु (पुष्ट) पुष्ट सजय (सयत) सयमवाळो पुद्ध (पृष्ट) प्छाएछ पिडत (पिडत) पिडत-भणेलो, पिडस पडयो, पोपट पिडत दुल्लह (दुर्लभ) दुर्लम-दुल्लभ-मुर्कल

### अन्यय

नो (नो) नहि च ) अ } (च) अने य चहिआ | (बहिर्) वहार चहिया।

जहासुत्त (यथास्त्रम्) स्त्रमा-शास्त्रमां-कह्या प्रमाणे पुणो (युन) युन युन -फरी बार बक्रामी (नवतः) वहारवी-

वचो (कः) केरी किंद्र (किस्) हा भा माने

पात्

साथ (सम) जिल्ला

(सव) होतु-बनु

पड (पड) पश्च-भन्न स्रोधः (कीन) तोस्तु-स्रोचः विचारत् स्रोकं करवी

शगु (सन) सन्तु

द्याची श्रवह धान है वने कछद्यी द्रप

धाय दे संचर्मा धरमा संबोधी

हरकाती शरी वने इंग्लोची कोपतो नयी बारो शील ध्राय के मने

नाचे के चिंत्रो **धने बाधी तस्म**बर्ग

वाकी पीप के काय कहे सिंद्र पीत्ररामी

कोंग्रे के

गानेस्ट (गरेप) कोवर्ड

दस (रच) रचकु-शहेत

बद्य (वद् ) वस्तु-नोल्यु पिन् (रिन) पीन

मा+पिष } (भा-रिय) वीर्ड

मा+पिय रीष्ट्र-मर्गावामी मा+विच पीच-सामाने हरूसाल न बाब ए रीते चाम्ल

महामा त्रस्थान्त्रं पाणी के नदो होस साथ माणेमा काले है

बाळको सरिषके छोसे के शियो शीसने शकाणे के कुराज्ञावने चन्त्रको केषु ह्रा गम्बद्धं जोद्धं शुळालगां वारे के

गासको स्टीम करे है बोतरमां बाद के तेती क

क्या कभी जान के शान्तीनो कोश क्षत्रं क्षं

कलह्यी वर याय छे श्रमणो मटमा रहे छे श्रांन्ना पाडाते मृली जईव छीव खीर पीओ छो बळटो पाणीनो कोस मचे छे राजाना भडारमा स्पु छे पंडित पुरुषो मोक्षने इच्छे छे यळद्ना कांघमा घोसर जोमे छे पडितो जीळने जोघे छे पण गोत्रने पूछता नथी जीळनो मार्ग दुर्लभ छे वाळको उपाघ्याय पासेथी पाठ भणे छे भड पुरुषो दु ख्यी जोक करता नथी

वाणं गयस्म गहण वयति
लोहा मोहो जायह
दुम्हेसुनो वेया वि न
रम्खति
सोत्त सहस्स गहण वयति
दुम्हेहितो वोहंति पहिता?
काय फासस्म गहणं वयति
सुम्हेसु मित्त सुमिर्तत
समणे महावीरे जयति
मूहो पुणो पुणो वज्ला देम्खह
पहिता । खीरं पिवित्था

मृद्धा कामेमु मुझ्झति
चन्द्णस्म रसमापिवित अत्पाणो अप्पाणस्स मिर्च कि विद्या मिर्चिमन्छिति पुरिसे वीरिय पुण दुछ्ह पुरिसस्स काये पुण दुछ्हे अप्पाण जिणामु सजया ' पुद्दो पिडियो जहासुस वद्यति पिडता पुद्धा न होति गीअस्स सह सुणह

#### पाठ ८ मो

अकारांत सर्वादि (नरजाति अने मा पतर वाति)

सन्व (सर्वे)

म (यद्)

स (ययू)

क्ष (विद्युर)

सम्प्रातील कर्मणारीली कराज्याची गरवाकियां थीर सिनो सने नाम्बक्तरवाकियां क्रमण जैनो बाब के वे बाल विश्लेषका के है, स्प्र मीनो समझ्की राणे सार्थ और

 अस्माना महुनपन्त्रको शात्र एक्क्स एक्से (खरें) से (के) ते
 (त) के (के) बाव छे जातीए प्रमानना बहुरफ्रमां अफार्ट्य स्थानामो नरव्यक्रियों केक्स ए प्रस्थक के क्वे है प्राप्त न्या

RENCE

१ स्प्रेमा वहुरकामा धावेशि (धवेंस्प्), विश्वं (येस्प्) टेरिंग् (टेस्प्) केशि (केश्रप्) का वात के कार्यत् क्षोता महत्त्वकर्मा कार्यत्त वर्षमामे वरकार्यत्र कार्यत्त वर्षमामे वरकार्यत्र कार्यत्र केशि है प्राप्त वर्षा प्रमुख्यात्र कार्यत्र केशि है प्राप्त वर्षा वर्षमान वर्षा वर्या वर्षा वर्षा वर्या वर्षा वर्षा वर्या वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्य

असमाना एक कमा क्यांति एक हिंदिय ) एक स्वारंति (क्षेत्रिय ) एक स्वारंति । विशेष प्रदेश (क्षेत्रय ) क्षांति प्रदेश (क्षित्रय ) क्षांति प्रदेश (क्षित्रय ) स्वारंति । विशेष प्रदेश (क्षांत्र ) क्षांति (क्षांत्रय ) क्षांति (क्षांत्रय ) क्षांति । क्षांत्रिक प्रदेश के स्वारंति । क्षांत्रिक

नामोने नरजातिमा स्सि, हिं अने त्थ प्रत्ययो (हे॰ प्रा॰ व्या॰ ८।३।५९। ) उपरात पूर्वोक्त असि अने म्मि प्रत्ययो पण लागे छे. मात्र 'ए 'प्रत्यय प्राय नथी लागतो

# रूपारुयान (सञ्च-नरजाति)

१ सन्बो, सन्बे (सर्वे) सन्बे (सर्वे) सब्बे, सब्बा (सर्वान्) २ सब्ब (सर्वम्) ३ सब्बेण, सब्बेण (सर्वेण) सब्बेहि, सब्बेहि, (सर्वेभि सद्वेहिँ सन्वेसि (सर्वेषाम् ) ४ सन्वस्स (सर्वस्य) सन्वाण सन्वाण (सर्वाणाम् 1) सव्वाओ, सन्वाउ (सर्वत ) ५ सब्बओ सन्वाहि, सन्वेहि सन्वाउ सब्वाहितो, सब्बेहितो सन्बम्हा (सवस्मात) (सर्वेभ्य) सब्बासुतो, सब्देसंतो सब्वेसि (सर्वेषाम्) ३ सब्बस्स (सर्वस्य) सञ्चाण, सञ्चाण ( सर्वाणाश् १) ७ सब्बंसि (सर्वस्मिन्) सब्बेसु, सब्बेसुं (सर्वेपु) सन्वस्सिः सन्वस्मि सन्वहि, सन्वत्थ (सर्वत्र)

### सन्त्र (नान्यतर जाति)

१ सन्त्र (सर्वम्) सन्त्राणि, सन्त्राङ्ग (सन्त्रीणि) सन्त्राङ्ग (सन्त्रीणि) २ ,, ( ,, ) ,, ,, ,,

#### \_\_\_\_

क (यक्) सरकारित

रक्तो के(प) जै(चे) रक्तं(बस्) जेका(बान)

के केच केज (येन) केब्रि केब्रि केब्रि (येमि

भ जस्स जास (वस्प) केसि (वेपाम्)

अर्थाण, अर्था (पानास् ) भ सम्हा (पस्तात् ) जानो काट (पतः) नामो काट (पतः) जाहि सैहि

बाहितो, वेहितो (वैम्पः) बाहितो केहितो (वैम्पः)

६ चतुरी विर्माण मनाने ७ जसि जस्सि (पश्मिन्) केस चेस (वैद्र)

व्यक्ति वस्मि जन्म (वव)

सावे, साका पेनहेंगा (राज्य)

(बदा)

हे हा व्यक्त । । । ६५।

व (शास्पतर) रेज (पत्) वाणि आहं आहें (पानि)

मानीलो जाजाति—क—प्रमाणे

1 वा प्रणे क्यों वहा—क्यारे त्या क जवता वस्राव के

## १त, ण, (तद्) नरजाति

१ स, सो, से (स॰) ते, णे (ते)

२ तं, ण (तम्) ते, ता (तान्)

णे, णा

इ तेण, तेण निणा (तेन) तेहि, तेहि, तेहिँ (तेभि, ते)

जेपा, जेपा जेहि, जेहिँ, जेहिँ

थ तस्स, तास (तस्य) सिं, तास, तेर्सि (तेषाम्)

ताण, ताण, (तानाम् १) जेसिं, जाण, जाणं

आस, आस, आस ५ तो. ताओ, ताड (तत) ताओ, ताड (ततः)

५ तो, ताओ, ताउ (तत) ताओ, ताउ ( तम्हा (तस्मात्) ताहि, तेहि

ताहिंती, तेहिंती (तेभ्य)

नासुतो, तेसुंतो

णाओ, णाउ णाओ, णाउ

णाहि, णेहि

णाहिता, णेहितो णासतो. णेसतो

६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे

<sup>9</sup> प्राकृत भाषामा 'त' अने 'ण' ए वने 'ते'ना अर्थमा वपराय छे है० प्रा॰ व्या॰ ८।३।७०। माटे 'त'नी साथे 'ण ना रूपो जणावी दीघा छे 'त' अने 'न'—'ण' रुखवामां तद्दन सरखा छे तेथी भा 'ण' रिपिदोपने लीघे प्रचल्ति थयो होय तो ना न कहेवाय, 'त्या ने वद्छे 'न्यां'नो प्रयोग गोहिलवाडमा प्रचलित ज छे

## भाकीनां मरजाति-सक्त-प्रभाष

ज्ञ (यस्) मरशाति १ भ्रो को (य') को (ये)

र र्शा(यम्) थे का (यातः) क्षेत्रं क्षेत्रं (येन) क्षेत्रं क्षेत्रं (येमिः

व केल कोण (येन) क्षेत्रि केदि केवि ४ क्रस्स जान (यहन) क्षेत्रि (येनासू)

भ बस्सा (धस्मान्) वाणे (धानाम् 1) भ बस्सा (धस्मान्) वाणे बाद (धतः) नामा आर्थ (धतः) वाहि, वोहि

नामा आड (पतः) आहि साहि साहितो, बेहितो (येन्यः) साहितो, कैहितो (येन्यः)

बाएंग्रे, केंच्ये ६ चतु निवर्गक प्रमाण ७ जस्ति अस्ति (विस्मार) बेखु खेखु (वेषु)

वर्षि कस्मि अस्प (थर्ष) साहे, बाका १वर्षमा

साइ८ जासः गणहरू (यदा)

> व ( वात्यतर ) आक्रि अन्य कार्ट (कार्

र ज्ञ (बह्) जाकि जाह काईँ (बानि)

वाक्रीनां सरजाति—अ—प्रमापै

ी जा तर्थ करों। यहा—हशारे —ता य क्ष्यामें वस्तान हे दे का क्या १९६५।

# भन, प, (तद) नगजानि

१ स, मो, से (म) ते, णे (ते)

२ तं, ण (तम्) नं, ना (तान) णे. णा

६ तेण, तेण तिणा (तेन) नेहि, तेहि, नेहिँ (नेभि, न) णेण, णेण जेहि, नेहिँ, णेहिँ

तस्म, नाम नस्य) मिं नाम, नेमिं (नेपाम्)
नाण, ताण, (नानाम् ¹)
णैमिं, णाण णाण

• तो, नाओ, नाउ (तन ) नाओ, नाउ (तन ) तम्हा (तस्मान्) नाहि, तेहि नाहिनो, नेहिनो (तेभ्य)

नामुनो, तेसुनो णात्रो, णाउ णाहि, णेहि णाहिता, णेहितो

६ चतुर्थी विमक्ति प्रमाण

१ प्राकृत भाषामा 'त' अन 'ण' ए उन 'ते'ना अर्थमां वयराय छ इ० प्रा॰ न्या॰ ८१२१७०। माट 'त'नी साथे 'ण ना रूपो जणावी दीचा ठे 'त' अने 'न'-'ण' रुखवामा तर्न सरमा ठे तेथी आ 'ण' लिपिटोपन टींच प्रचलित यथो हाय तो ना न कहैनाय, 'त्यां'ने बद्छे 'न्या'नो प्रयोग गाहिल्यादमा प्रचरित ज छे

णामुनो, णेसुनो

130 ण वैसि वर्जिंग वर्जि वेस वेसं (वेष) त्तरिम (त्रहिमम्) तत्थ (तम) वाह, वाका भवदमा (वहा) हे जा न्या काशका पंति, परिश पहि, वेश, वेश वसित सामा स ( वास्थलः ) १ वे (तल्) साचि ताई ताई (नानि) पाणि जाई नाई 8 m (m) m " " ( ) वाकीको सरकाति—स—स्थाचे १ को (का) **客(を**) र कं (क्यू) के, का (काब्र) है केम केल किया (केल) केहि, केहिं केहिं (केसि, क) BYAT **४ करत काल (२ स्थ) कास केलि (केयाम्)** काण काने (कानाम्?) ५ फाहा (कामात) काली, जार काहि केरि किया धीश कामो काउ काहियों केरियो बागु तो के सुठी १ जा तथ करी तथा स्थारेना च अपेका वस्ताव छ

६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे
७ कसि, कस्सि, कहिं केसु, केसु (केपु)
कम्मि (कस्मिन् )
कत्थ (कुत्र)
काहे, काला, कहुआ (कदा) हे॰ प्रा॰ व्या॰ ८।३।६५।

क (नान्यतर) १-२ कि (किम्) काणि, काङ, काइँ (कानि

# सर्वनाम

अण्ण रे (अन्य) अन्य-वीजु
अष्णयर (अन्यतर) अनेरअन्नयर वीजु काई
अंतर (अतर) अदरनु
अवर (अपर) अवर-वीजु
अहर (अपर) नीजु, वीजु
इम (इदम) आ
इयर (इतर) इतर-वीजु
उत्तर (उत्तर) उत्तरिक्षा, उत्तरनु
एम
हक (एक) एक, वीजु
एक

प्य } ( एतद् ) ए
प्य } ( एतद् ) ए
तुम्ह (युष्मद् ) तु
अम्ह (अस्मद् ) हु
फ (किम्) कोण
कष्टम ( (कतम) क्यो,
कतम केटलाक
कयम (कतर) क्यो
अमु (अदस् ) ए
ज (यद् ) जे
त, ण (नद् ) ते
दाहिण ( दक्षिण) दक्षिण,
दक्षिणन

१ आ त्रणे रूपो 'कदा-क्यारे 'ना ज अर्थमा वपराय हे

पुरिमा(प्रगन्धम) प्रोक्तम् पूर्वे पुष्म (प्रशं) पूर्व प्रश्ने बीस (स्पि) रिध रह स सुर (स्र) रष-पीते पोतान्त

लावे पोताच्य | सामान्य वस्सो [मरशावि]

वाच (वाप) शत वाप-तबसे

सम (प्रम) गत

सिम (किम) वद्

सदय (१४४) हर्न)-१४-४५

मूज (मृत) सूत-क्रक-क्रैव सीसः (क्रिक) म्रिक्न दिवार्थी सिरसः (क्रिक्क) क्रैववाडी-

कसियक (प्रांत्यन) वेवशही चंद्रत चंद्रत (संद्र) थ द-राजि

चंद्र (सष्ट) व व-एक्का चंद्रव गान्त्रक) शंवर माहे पाद्याय (जनाव) जासाव-महेक

पासाय (मनाव) जासाव-व सीय (स्पेत) थांव संगाया (अज्ञव) जांच्युं सीम (बीच) सीम उस

साझ (कपा) द्वार राह रो.स (क्षेम) द्वेष हुक्क महत्त्रय (महामन) ग्रहासक-मोर्टे जन करुथ (क्ष्म) नव नक्कर-क्षम

मार्था नव सरथ (४७) वज्र वस्तर-वश्दु सद्दु (४१३) श्रेष्ठ श्रेक स्थ्यी-सरम्

१ पूर पुरिव पुरिस पू

बंगल क्षान जिल्लामा स्थापन विश्व विद्यार विद्

> क्रासकीच (वर्षणीय) वस्तीय-कर् व्यवद्-सस्त्रात् वीव भोषण (वीका) भावन-समय चया (वन) चन साम (वान) रहन करन नामपे

थर (एर) पर आडप (मानुज) भानुष्य गीरावे ४ १ वागीची साना पेरफार

# विशेषण

पहुन्पन्न (प्रयुत्पन्न) वर्तमानताजु

पमन्त (प्रमन्त) प्रमन्त-प्रमादी

सम (सम) समान मृत्तिवाळुसरखु

वीयराग (वीतराग) जेमा राग
वीयराय निश्ची ते

सुजह (सु+हान) सहेलाइथी
तजी शकाय ते

जुन्न (जीण) जीण-जून-जळीजरी-गयेळु

पिय (प्रिय) प्रिय-वहाळु

आसन्त (आसक्त) आसक्त-मोही
हुआ हत। हणायेळु -हणेळु

आगअ ं 🖟 ( भागत ) आवेलु **पिआउय** (प्रियायुष्क) आयुप्यने प्रिय समजनार (उत्तम) उत्तम चुद्ध (वुद्ध) वोध पामेल-ज्ञानी वद्ध (वद्ध) वद्ध-वाधेल-वधायेल सीम (शीत) शीत-ठड अधीर (अधीर) अधीर-धीरज विनानु-नवळु **हतव्य (ह**न्तव्य) हणवा योग्य अप्प (अल्प) अल्प-थोड अणाइअ (अनादिक) आदि विनानु

### अन्यय

कत्तो | (कृत ) क्याथी, शायी, कुनो | कई वाज्यी कथो | कई वाज्यी जहा | (यथा) जेम पव | (एवम् ) एम-ए रीते पव

सन्वत्तो ) (सर्वत ) सर्व प्रकारे-सन्वतो चारे वाज्यी सन्वओ ) तहा (तथा) तेम यतो (अन्तर) भदर खद्ध (खद्ध) निश्चय

पातुषो লাব্ (আনা) বাবৰু वह |(वह) वहर्त-वळद-प+मत्य (प्र+मन्) भक्तू-बन । सम् (तर्) सर्यु-श्रम्भ कर्यु नाव करको पास (परव) चेतु कील् (केड्) बीडा करवी~ कीर परि-यह (धरे+क्त परिक्तंतु-कां क्यु-स्वतुं रम् (रब्) रमन व्या+इक्ल (मा+वध) सम् (सम्) नम्सु जाबपन् नदेन

188

बयांने सवा सुक्त विव है जे में वारी क्यां आसक है ते में मुझ है पाग मने हैं पर संस्थाकों मनारिना है क्या मागोजां बारे बाहुय बरके हैं में में जेनां कराईं सीवीर क्षेप से राजा है क्षेप ते माजदाने बाढ़े हे तेम बुद्ध पुरुष पोनाना बेराने बाढ़े हैं.

उत्तर पूर्वमा शान के अने

वद्भ पन सूत इवका योग्य

बक्तिनमां नाप के

वड अने भासक प्रयो

इच्छीण छीं य ते पोनाना दोपोने जुग छ हाथीथी हणायेलो खेडन भयथी बुजे छे तेना आगणामा वधा बाळको रमे छे नहा जुनाई कहाई हुन्व-बाहो पमत्थीत नहा जुन्ने दोसे समणो दहइ जस्स मोहो हुओ तस्स न होइ दुक्ख सन्वेसि पाणाण मुआण

कर्मवीजवडे संसारमां फर्या करे छे

अमे वीजाओनु मगळ

जे मृढ शिष्यो, याचायने वाटता नथी तेओ दुख सहे छे वीतराग पुरुप सर्वमा उत्तम ब्राह्मण छे वीतराग सर्व भृतोने सरखां जुण छे

वाहो पमत्थित नहा
जुन्ने दोसे समणो दहइ
जस्स मोहो हुओ तस्स
न होइ दुक्ख
सक्त्रेसि पाणाण मृआण
दुक्खं महत्भय ति वेमि
'सब्दे वि पाणा न हतव्या 'पत्र जे पहुष्पन्ना
जिणा ते सब्दे १वि
आइक्खिति
जे एग जाणह से सब्द जाणह १इअ महावीरो भासते जस्स मोहो न होइ तस्स दुफ्खं ह्य पगेसि माणवाण आउय अप्प खलु अधीरेहि पुरिसेहिं इमे कामा न सुजहा पुरिमाओ, दाहिणाओ, उ-चराओ वा कत्तो आगओ त्ति न जाणइ जीवो जे सब्ब जाणइ से पग जाणइ

१ ज्ओ पृ० १९ नि॰ ३ तथा पृ० ८३ नि० १३-१८। २ ज्ओ पृ० ८३ नि० १२

188 पातुष्रो

बान् (कारा) धानकु प+मत्य (प्र+मन्) मन्तु-नाम करवी कीलः (भेर्) कीश करणी-कीलः

रम् (त्व) स्यतु (सम्) काम्

वयनि सदा सक प्रिय है केंग्रो प्रारिक्षी मानक के

तेमो सड है राग अमे हेर संसाध्यां अमारिका है मंग्र क्या मागोमी खारे वासप बरसे के

समें से जेलां अपना मीबीर क्षीप से राजा के छे तम बुक्र पुरुष पोताना

भवि केंद्र सामानीके बादी बोचमी बाक्षे है. प्रमन पृष्ट मपद्मी क्षेपे के. उत्तर पूर्वमां शोत के अने इसिजमां नाप छे

व ६ एच भूत इनका योग्य नची

साम् (सम् ) शाह्य-साम करत् पास (परन) खेनु परिन्धाः (क्रिन्बतः परिवर्तेन-वर्षा कल-नरमतं मा+इक्क् (मा+चड) बायपत्र-स्टेड

वह (वह) रहनु-कक्ष्य-

वर्षा बासको साथ के बचा केंद्रतो दाह भने वाप भारे के में कोई जीवने इपती

नकी तेमें बसे सम्बन करीय बीव कोच परांधी शावेली है। माचनो शरीरमा क्षेत्र माडे पंडियो इपबंदे हुन्त सद्दे हैं

सर्व शिप्यो मायावहै माकार्यंते सरे है 🛊 बघाओंने साढे चत्र धर्स प्र के तनाची मनस्य छेते सब बची

बज भने मासक पुरुषो

कर्मवीजवडे संसारमां फर्या करे छे अमे वीजाओनु मंगळ इच्छीप छीर ते पोताना दोपोने जुर छ हाथीथी हणायेलो खेडत भण्यी धुजे छे तेना आगणामा वधा वाळको रमे छे जे मूढ शिष्यो, आचायने वादता नथी तेओ दु ख सहे छे वीतराग पुरुष सर्वमां उत्तम बाह्मण छे बीतराग सर्व भूतोने सरखां जुण छे

नहा जुन्नाई कहु। इ हव्ववाहो पमत्थित तहा
जुन्ने दोसे समणो दहइ
जस्स मोहो हुओ तस्स
न होइ दुफ्ख
सब्देसि पाणाण भूआण
दुफ्ख महब्भय ति वेमि
'सब्दे वि पाणा न हतव्वा ' एवं जे पहुण्या
जिणा ते सब्दे रिव
आइक्खित
जे एग जाणह से सब्द जाणइ १इअ महावीरो भासते जस्स मोहो न होइ तस्स दुक्खं ह्य पगेसि माणवाणं आउय अप्प खलु अधीरेहिं पुरिसेहिं इमे कामा न सुजहा पुरिमाओ, दाहिणाओ, उ-चराओ वा कत्तो आगओ स्ति न जाणइ जीवो जे सन्व जाणइ से पग जाणइ

१ जुओ ए० १९ नि॰ ३ तथा ए० ८३ नि० १३-१४। २ जुओ ए० ८३ नि० १२

समाय को समोद्य भूपद्य स बीमरायो

केर्द करो की वो संसादे परियक्त से रागा व दोसा य कम्मनीर्थ

जेण मोडो डलो वसो मंसारे परिपश्च सकी थाला दिवाडम सहिमक्षेति

पाठ ९ मो

'तुम्ह', 'अन्ह' 'श्रम' अने 'एअ'ना अपारुपानो तम्द ( युप्मत् ) त ( चये काति )

धंकरका तुरुद्वे, तुरुमे (सूयम्) " (तुरमाद् )

र 🕁 १ सम्रोतं (स्वस्) र ॥ ॥ ॥ तमे तुप (त्वाम् )

तुम्बेकि तुम्बेकि तुम्बेकि १ ते तरः (त्थपा) तुष्मेहि तुष्मेहि तुष्मेहि (युष्मेनिः !) ¥ तुव तुम्स द्वित तुम तुमान तुमान (युक्ताक्रम्) तं तुम (तम ते) त्रमहाण तम्हार्थ

( भाभ्यम् ) तुमसभ्य तुमस्य (**4**1) तुवची तुवाबो, तुवाब तुम्बची तुम्बाओ तुम्बाब (च्च) तुम्बाबितो तुम्बेबितो तुमची, तुमाओ, तुमाब तुम्बाद्वती त्रम्बेद्वतो तुम्हत्तो तुम्ब्राओ तुम्हाङ (बप्पत्र)

१ इसी हे अर म्या लगा स्थाप भी १ त

तुहत्तो, तुहाथो, तुहाउ,
तुम्हतो, तुम्हाओ, तुम्हाउ
६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे
७ तुर्वाम, तुवसि, तुर्वास्त, तुगेस, तुषेसुं (शुण्णासु)
तुर्वाम, तुमंसि, तुर्वास्त, तुगेस्त, तुवसुं
तुमे तुमेस, तुमस्ति तुम्हास्त तुमसु, तुमेसु
तुम्हिम, तुम्हिस, तुम्हिस तुमसु, तुमसु
तुम्हिम, तह, तप, (त्विय) तृहेसु, तुहेसु
तुम्हेसु, तुम्हेसु
तुम्हसु, तुम्हेसु
तुम्हसु, तुम्हेसु
तुम्हसु, तुम्हसु

# अम्ह (अस्मद्) हुं [ त्रणे जाति ]

१ १ ई, अहं, अहंयं (अहम्) मो, अम्ह, अम्हो, अम्हो (वयम्)
२ मिम, अम्म, अम्ह, म, " " " " " " "
(माम्) (अस्मान्)
पे (न)
३ मइ, मए (मया) अम्होहि, अम्हाहि, (अस्माभि)
अम्ह, कम्हे,
पो
४ मम, मज्झ, मज्झं मज्झ, अम्ह, अम्ह, अम्हा, अम्हा, अम्हा, अम्हा, अम्हाण, अम्हाण, अम्हाण, पो (न) (अस्माकम्)

१ जूओ है० प्रा॰ ब्या० ८।३।१०५-११७

भारत अर्थ गर्थ. समाहि समा (भत्र)

६ ममत्ती ममाबो, समाव समत्तो समाजो समाव सम्बक्ती जनदानी शम्बाङ

६ चतुर्थी विमक्ति समाचे ७ से समार, मि. सच

( अस्मत् ) मर अम्बेस, अम्बेस (मधि) अन्द्रसु सम्बद्ध

भ्रम (इदस्) आ~[ नरबादि]

१ आर्थ इसी इसे (अयम) इसे (इसे) २ इसे इसे जे (इसम्)

इमे इमा (इमान्) वे इसेज इसेलं इमिला इमेडि इसेडि इसेडि

बेच जेच (भनेन) वक्, वृद्धि वर्गि (यमि) वाकि नेहि नहि **४** इमस्त से अस्त (अस्य) दि. इमेसि (यपाय)

हमाज ह्याज ५ इमक्ती इमानी इमाड इनकी इमाध्ये इमाड इमाहि इमाहिंसी इमा इमादि इमेडि (परवः) इमाक्षितो इमेक्षितो (भस्मातः) इमार्चनी इमेन्ट्रेतो-

< नमर्थी विश्वकि प्र<del>वाक</del>

इसिन इसिन्न इसिस श्रीस इसेस पस पस (पन्) रह मस्सि (अधिका)

m my illegrate boat standardett धव सवनी समानः

## नान्यत्रज्ञाति

# २एअ ( एतद् )-ए [ नरजाति ]

१ पस, पसो, एसे (एप) पप (पते) इणं, इणमो २ एअं (एतम्) पप, पआ, (पतान्) ३ पपण, पपण (पतेन) पपहि, पपहिं, (पतै -पतेमि ?) पपहिँ परणा सिं, पपसिं (पतेपाम्) ४ से, पजस्स (पतस्य) णआण, प्रभागं ण्यसो, प्यायो, प्याउ. ५ पत्तों, पत्ताहे, पयचो, पञाओ, पयाउ, पञाहि, पपहि. (पतेभ्य) प्याहिंतो, प्पहिंतो, प्रवाहि प्रवाहितो, पशासंतो, पपसंतो (एतस्मात्) ६ चतुर्थी विमक्ति प्रमाणे ७ पत्थ, अयम्मि, ईअम्मि पण्सु, पप्सु, (पतेषु) पश्चित्र, एवर्सिस, (पतिसमन्)

पश्चिम

१ जूओ हे० प्रा० च्या० ८१३।७९। २ जूओ हे० प्रा० च्या० ८१३।८९।८६१८६१८५।८६।

#### नाम्पदरश्चाति

१ एस एकं, इच्छा व्याधि प्रशा प्रवाहें (पत्त्व) (के अर का दाशक्त) (प्रतामि) बाबीयो लरजाति ध्यापे.

#### सामान्य शब्दो

#### भरमाति

भ्रम (ह्य) हव-बार समर (बबर) बगरी राम (रब) रब क्षमय (भाष) कार-विक ध्याच (धार) काप-धार माप्दर (भारहर) भार को कार -पन्छ मधार } (शवार) वातारा-मधारा }

क्रचविक्रप (कर्रानका) करोन्छ -वैदा-सम्बद्धाः सार्वा

क्रमा (कम्बर्) समा धन (बात)-विचार्यी बळधाण (वपरान) वर्षेत्राय-

बहाशीरचं बाम

पराचम (परतम) देशतम-नोसी हलारे स्रोत (बोड) संद-वार स्रोत

सद्भाव (सद्देश) सद्भाव-पद्यत-शह (वयस्) मन-आकाव महाबोस (महारोभ) बहारीय

क्षेत्रे क्षेत्र शस्य (गाव) गाव नास (न्यात) व्यात-वास्थ सुधर (बाधर)-धृष काक (काक) धाल-समाव

व्यक्तिस (धतिय) असिन व्यक्तिराय (शमरात्र) वशिरात्र

-चे नामचे मिविज्ञानी रू सर्वर्ष पमाट (प्रमाट) प्रमाद-स्नसाव-धानता-त्राळस मंग (सग) सग-सोयत यसमण (अथमण) थमण निह ते त्रेअ (तेजस्) तेज तस (त्रस) त्रास पामी गित करी धके तेवा प्राणी थादा (स्यावर) स्थिर रहेनार— गित न करी धके ते प्राणी —वनस्पति वगेरे

पञ्चय (पर्वत) पर्वत तच (तपस्) तप-तपध्या नह (नपः) नस्र अय (धयस्) धयस्-नोद्ध जायतेय (जाततेनस्) नेमां तेज छे ते-अप्रि

पाय (पाद) पा-चोथो भाग उट्ट (उप्ट्र) कॅंट

## नान्यतरजाति

पाब (पाप) पाप पावग (पापक) पाप फंद्रण (स्पन्दन) फादब्र-फरकब्र **-थोड़ घोड़ इल**व जुडम } (युद्ध) युद्ध-टहाई जुद्ध **ध्वारण** (कारण) कारण पय (पद) पद-पगन्त सत्य (शस्र) हणवानु द्यीआर-तरवार वगेरे महन्मय। (महामय) मोटो महाभय। भय रय (रजम् ) रज-पाप, धृळ, मेल अरचिंद (अरविन्द) अरविद-रतम कमऋ दाण (दान) दान

अभयप्पयाण (अभयप्रदान) अमयदान-प्राणीओ निर्मय रहे-यने-वेबी प्रपृति (असात) शाता नहि - मुख निह ते रच्च (राज्य) राज्य-राज सरण (दारण) दारण-आदारी धीरच(घीरत्व) घीरत्व-घीरपण-मेर्ब पुष्प (पुष्प) पुष्प-फूल अत्य (अह्न) अस-पेंकवान हथीआर-चाण वरोरे सत्थ (शास्त्र) शास्त्र चेह्न (चरय) चिता ऊपर चणेल स्मारक चिद्य-ओटलो. छत्री, पगलां, मृक्ष, सुर, मूर्ति वगेरे.

**छत्त (बन) बन-बनी** वस्त्रवेदः (ब्रह्मका) ब्रह्मकां-चमचेर | स्थानारकाओ प्रति.

म्हान्धं परायम रहेत से सव (कर) सर-धान

(तात) काटा<del>- एव</del> ग्रावकक (प्रकार) बदायारगान प्रस्को क्यां यहे हे ते स्वल

सथ (श्रा) स्त्र-दार, दाक इंद्रे समय

यगया (एक्स) वस्तार-स

मर्छ १(कथ्य) का-<del>एई ग्</del>रु रामो (का) वेबी, त्यार क्री (बनारे) फार

सरमार्था स्पर्य-सर**ा** धवर्त (धकर) का संपर्क

**विराद्ध** 

प्रच (प्रका) प्रच-क्रेमत

अक्टात्ये। (बन्दाय) बारमाने

क्लिपम

मदक्ष (भाष) नाव-ग ४६ -वडी-धकार तेर्व कार्य बाद-दोब.

व्यवप्रश्न (क्ष्मव) पार(देश बुरजुबर (इस्तुबर) केनु भार-रम करन कार्य है. 1 नकाभी साथे जापता नाजने श्रीजी विसरित कार्य हे

इदम कम रनेया. ५. प्रतिमा बरबोध बड्टे धूमी है गरे निका १६-१॥

मुत्त (मुफ्र) मृतेष्ठ सुत्त (मुक्ष) वक-मार्ग टिक-मुमापित

वद्धमाण (वर्षमान) वधतु गहिय (ग्रद) अनिशय लाटचु सहम (अधम)अनम-इट्य-नीच जिहंदिय (जितेन्द्रिय) इन्टियो टपर अय मेळवनार

निरट्ट्य (निर्धक) निर्धक-नकांमु धीर (श्रीर) धीर-धीरजवालु अणारिय (क्षनार्य) अनार्य-आय नहि ते-अनाडी पिय (प्रिय) फ्रिय-वहालु दुष्पृरिय (तुर्पृषं महकेनीयी
प्राय-भराय तेतु
स्यल (सकल) मकल-समञ्ज कुसल (क्वल) कुशळ-यतुर दुर्तिकम (दुर्तिकम) न मटे तेतु मड (मृत) मृत-मरेलु म्य (शृष्ट) धेष्ठ-उत्तम दंत (दान्त) कंण तृष्णाने दमी हे ते, दमेलु –धांत, पलीटायेल क्य (कृत) करेलु

कड़ | (कृत) करेन्द्र कय | चिचित्र (विनिध) विविध-जात जातनु

# धातुओ

मास् (माप्) माम्बबु-माषण करवुं प्रश्नम्यः (प्रश्नमाद्य) प्रमाद करवा जृरः (जुर्) ज्युव तिष् (निष्) टपकवु -गळवुं पिटट् (पिट्ट) पीटवु -मारवु -पीट्यु परिभताष् (परिभत्तप्य) परिताष पामयो-दुःखी यबु सम्भाभयाः (सम्भनाभ्यर) आचरण करवुं

अणु+तत्प् (अनु+तत्य) अनुताप करवो-पश्चात्ताप करवो प+यय् (प्र+यत्) प्रयत्न करवो अभि+नि+कखम् (अभि+निष्+ कम् ) इमेशन माटे घरवी नीकळनु-सन्यास छेयो परि+हर् (परि+हर् परहरशु-तजनु तन्छ (त्स्) तासनु-छोलनु-पानलु कर्यु कप्र १(दल) वर्श्व-३व्ति होन् षरम् (रमे) रस्तु −शोवन् चयु (स्वत्र) स्वयु चट्र (चर) बरह्य चाल्य सी।शब्द ( व+जक ) वज्रह--तरम-भोग करवी. माचार्यो क्रग्रस बाढे विरंतर प्रपास करे है संसारम्। पापमी मार क्ये के प्रेम जेम शासना वये 🕏

शेव है

नेप नेप क्रोप वर्ष 🖢 पुरते पुरति पूर्व अर्थम वमें विरबंध शेवता नहीं ममयमो फुकोमां शोहे है झाडो पाधी पीप के अने ताप सडे 🕏 मिराज पडने सबे है श्रमियो एको नवे अक्षो समिश्यास्य | (अभिनामायर) समिपत्य प्राक्ता कर्ग स्मिन्जाम् (नविश्यामः) अदियास्त् -श्रेडस्ट खण् (वर्) बल् ~केर्ड धरि+बाय् (धरि+स्वत्र) परि अस्य कारो तेबा बांगचामां सुरश्रव देव रीपे के

तेको तमने बारंबार पार et b क्ये अवेक्सी वर्ष चीर समाधानां ते एक जिलेंद्रिय dDen in तमे वर्षे वारंबार बांदी को एको तमे समे जमे इस

पीय धीय पापी हाहाय सर्वेमां हकको है संसारमं कोर्र तारण नदी

तहै अंदर्श जानो हो तेथी

वडे निर्धाप सनम्पनां साचां कारे के प्रधान करता नदी

१ 'खपट नहीं एवा वर्षना था नात के करे तेथे पदारेन-

कामो इसेवा गुरुकस्त्रमा रा के

अपनेत अवस्थित स्टब्से असे

अमे, तमे अने तेओ वघा, ससारना पाइाने कापीप स्रीय श्रमणो पाणी वदे वस्त्रोने श्रद्ध करे हे कुञळ पुरुषो निर्दोप वचनने उत्तम कहे हे तपोमा ब्रह्मचर्य थ्रेष्ट छे क्षत्रियोन लक्षण घेर्य अने बीर्य के जितें द्विय पुरुषो बुडनी अने महावीरनी सेवा करे छे बचा जीवो लोमश्री पापने मार्गे चाछे छे धीर अत्रियो मनुष्योनुं कुशळ इच्छे छे तमें घंप बढे छोमने जितो छो ब्राड़ो वधे हे अने करमाय के तेथी तेमां जीव के भाचार्यो जागे ने यने ध्यान घरे हे ब्राह्मणी अने धमणी शास्त्रो वढे छडे हे चत्यमा महावीरना अने व्हनां पगला हे

मारो भाई टादधी धूजे छे. आ ब्राह्मण ए लोकोने ज्ञाप यापे हे मा सागर खळमळे छे ते अने इं ठाकडां छोछीप लीप केटलाको निरर्थक कोपे के तमे, तेने, मने अने एने जिनो छो **साचा ब्राह्मण विना वीज्ञं** कोण उत्तम है ! कोई ब्राह्मण जन्म बहे ब्राह्मण थतो नधी ससारमा बर्गा वघाना ञरणस्य छे संसारमां चारे वाज इस अने स्थावर जीवो ले श्रमणो पापरूप कर्मोनो स्याग करे हे श्रमणोमा वर्घमान श्रेष्ट 🗟 दानोमा सभयदान श्रेष्ट हे पगथी अग्निने हणा छो पवेतने तमे नखोथी खणो छो. पुष्पोमा अर्रावद् श्रेष्ठ छे थोह पण असत्य महाभय-रूप हे

848 मञ्जूरी क्या माहै वहाइवे तप बढ़े बधता वर्धमान चोरे के भक्तपोना होम माहे संन्वास वापना कोळामी पुत्र à è बाखोरे हे वांतची कोशने काची छो. बुक्ते कामे नहार एपो इ व्यक्ति में को वि पावगेज कामेज पुजी पुजी नाइमध्रस्त करुत वि क्सको अस्पति भीरो वा पश्चित्तो सहस्रमनि मो प्रतायव अस्य प्रमादेण कुसकरत वंक्रियो म हरिसेह म इत्पर इसे क्या पाचा असे यावरा पाणा म इंतरण इति सम्बे वाचाच असाते महन्मये बाचरिया आसंति 374 अभेगविचे अनुवर्वपुरिक्षे शरिय बॉन्स्स नासी 🖼 सदावं जन्माचे दुर्ग्रारेप विविदेषि पुरुक्तेषि जुरा वमी से पमधा पासेकि software . विकास श्रमकार्थ कवविक्रयो महा-बाह्रेज मोह्रेज सोह्रेज वा बोसो न कप्पा विसं श्रम्भार शको शक तुमे सन्दर्भ समये हवा तब पपहि शक्कं सळकं स गरिवर मय पुरिश्त गरिष्य सावत् पुत्तामें अपने मे कुरु विष्या, विक्रा, मोपम में चि गहिए परिनाधा पुरिसे दक्तर के बाजार थे जायति ते ते पुत्ता तम ठामाय माळे

तमं पि तेसि सरवाप

लाई होति

बहिया वि जाजति

नीराण सन्ती बुरखुकरी

नमं बाधक्स संगेर्ण

पस छोगे संसारित गिज्यह त वयं व्म माहणं जो पगमवि पाण न हणेज्जा पुरिसा' तुममेव तुमं मित्तं कि विह्या मित्तमिच्छिसि! जहा अंतो तहा वाहि एवं पासंति पिटता कामा खलु दुरितक्कमा असमणा सया सुत्ता, समणा सया जागरंति कडेहितो कम्मेहितो केसि-मिव न मोक्स्तो अत्थि मृहस्स पुरिसस्स सगेण अलं लामो ति न मज्जेज्जा,
अलामो ति न सोपज्जा
सतत मूढे धम्म १नाभिजाणित
जाणित
जिणा अलोमेण लोम जयितससारे पगेसि माणवाण
अप्य च सलु आउय
जहा दुमस्त पुष्फेसु भमरो
आवियह रसं
स्वित्या भम्मेणं जुज्झ जुङ्झितिजहा लाहो तहा लोहो
लाहा लोहो पवहदह
समणा सब्वेसि पाणाणं
सुहमिच्छंति२

१ जूओ सिंघ पृ० ८२ नियम ६ न+अभिजाणित=नाभिजाणित २ जुओ सिंघ पृ० ८४ नियम १८

144 पाठ १० छो

भृतकाळ-मस्पयी

न्दर्गंड चात्रभोगे सगावकांशा

१ पुरु सी बी सीम (सीवा) १ पुरु सी बी सीम (सीवा)

'ग' वात्रनां स्पो

 $\begin{array}{ll} \mbox{tet$^{4}$ gev} \\ \mbox{tr$^{4}$ aux} \end{array} \begin{array}{l} \mbox{crit} (\mbox{ } \mbox{u} + \mbox{ii}) (\mbox{ } \mbox{u} + \mbox{ii}) (\mbox{ } \mbox{u} + \mbox{ii}) (\mbox{u} + \mbox{ii} + \mbox{ii}) \\ \mbox{crit} (\mbox{u} + \mbox{ii} + \mbox{ii}) (\mbox{u} + \mbox{ii} + \mbox{ii}) (\mbox{u} + \mbox{ii} + \mbox{ii}) \\ \mbox{crit} (\mbox{u} + \mbox{ii} + \mbox{ii}) (\mbox{u} + \mbox{ii} + \mbox{ii}) \\ \mbox{crit} (\mbox{u} + \mbox{ii} + \mbox{ii}) (\mbox{u} + \mbox{ii} + \mbox{ii}) \\ \mbox{crit} (\mbox{u} + \mbox{ii} + \mbox{ii}) (\mbox{u} + \mbox{ii} + \mbox{ii}) \\ \mbox{crit} (\mbox{u} + \mbox{ii} + \mbox{ii}) (\mbox{u} + \mbox{ii}) (\mbox{u} + \mbox{ii}) \\ \mbox{crit} (\mbox{u} + \mbox{ii}) (\mbox{u} + \mbox{ii}) (\mbox{u} + \mbox{ii}) (\mbox{u} + \mbox{ii}) \\ \mbox{crit} (\mbox{u} + \mbox{ii}) (\mbox{u} + \mbo$ 

'हो ' भावनां रूपो

होसी (हो + सी) होमनी (हो + व + सी) दोदी (दो+धी) दोमधी (दो+ज+दी)

होहीन (हो + हीम) होमहीन (हो + व + हीन) १ प्राकृतमां बच्चयो मूल्यक्रमी श्री अन्तर को शहरवर्ष

क्परानी मृतदात्रानी चीए अन्यव वंत्रे बनाम छ. अवादीन् मध्यप्रीतः वर्णरे गरहाग करीयां बारहरूको बीन्द (वृत्येय इ. एक.) मृत्यासन स्वरिक शहरणां से म्यास्य ग्री सर्व प्रस्त को बा बचनत इस्तरि सं ही अने हीश वृज्ञधानन सी नी सावे व

ब्रह्मानता चराचे स

### पक्षवचन – वहुवचन

च्यंजनांत धातुओने लगाडवाना है भ (ईत्१) १ पु॰ " २ पु॰ " ३ पु॰ " चद्-चदीथ (चंद् + ईंग्र)

बद्-बदीय (बंद् + ईंग) इस्-इसीय (इस् + ईंथ) करू-करीय (कर् + ईंय)

मास करीने आर्थ प्राकृतमा वपराएना प्रत्ययो

प्राय ततीय पुरुष े तथा एक वचन े इत्था ( ब्रष्टः )

प्रायः तृतीय पुरप-महुबचन ) इत्थ (इष्ट् ) १स्तु (इप्रु )३ असु

१ 'डैंअ' अने सस्यतनो भूतकाळ स्चक 'इंत्' बन्ने समीन के 'अमाणीत' 'अबादीव' बगेरे सस्कृत कियापदोमां आयेलो 'इंत्' (तृ० पु० एक०) भूतकाळने दर्शांचे छे, प्राकृतमां ते सर्व पुरुप अने सर्व वचनमां आये छे व आ 'इत्य' प्रत्यय अने सस्कृतनो 'इप्ट' प्रत्यय बण समान छे इप्ट-इट-इत्य, त्या अभिवष्ट, अजिन्छ, बगेरे सस्कृत स्पोमां आवेलो 'इप्ट' (तृतीय पु० एक०) भूतकाळनो स्चक छे प्राकृतमा पण ते, प्राय तृतीय पुरुपना एक्वचनने स्चवे छे ३ आ 'इस्' अने 'अंम्' तथा सस्कृतनो भूतकाळदर्शक 'इप्व' ए बचा समान छे 'अवादिप्व' 'अमाजिष्ठ' बगेरे सस्कृत कियापदोमां वपरातो इप्व (तृतीय पु॰ बहुव०) भूतकाळनो स्चक छे अने ते प्राकृतमा पण प्राय. ते ज काळ, पुरुप अने धचनने स्चवे छे

स्याक्यान हो होस्या (हो + स्व्य ) et . रीइल्पा (री + इल्पा) 4400 पहारीच } (पहाद + इत्य) मुक्तित्वा (भुष् + दत्वा) सेव विश्वतिका (विश्वत + शत्वा) विश्वद सेव् सेकित्या (सेष् + इत्या) गर्वेक्स ((पच्छ + इस् ) गच्छ उद्भित्त (उन्हें + इंग्र) द्रक 転 वरिष्ठ (ब्रा: + इंस्) वर्षिक्य (वदश् + इंग्रु) वरव मार्क्स (बाद्र + बेस्र) माह

क्टबांक अनियमित रूपो

नस् वोद्यं

वत्य नदेशि श्रासि (शर्व पुश्च शर्व वचन) भासिमो, भागिमु (जास्म) १८५ तथम पुरुषता बहुवबनाये भार्प माञ्चमा चन्नवित वपराप्रदे स्थेते हे

बस् मानुर्तुं 'बरीस इत बधु बोस्प हे कर्ता वार्षे माहतमां बरीस ने बस्के बहारतो अहे स्वासी १ इतनो उपयोग यरको के सर्वात उक्त 'सी' वस्पण स्वरोत घातुने लगाडवानो छे ते, आर्प प्राष्ट्रतमां क्विचत् व्यजनांत घातुने पण लागेलो छे, वद्+सी=बदासी आर्प प्राकृत होवाने कारणे 'वद 'तुं 'वदा' थयु छे

### कर

भृतकाळमा 'कर'ने वदले 'का' पण थाय छे कर + ईंग = करी ग 'कर'नो | का + सी = कासी 'का' थयो | का + ही = काहा त्यारे | का + ही = काही ग

आर्प प्राकृतमां वपरापलां वीजा केटलाक अनियमित कपो

```
कर्-अकरिस्सं (अकार्यम्)
                              १ पु० पक•
             ( अकार्यीत् )
कर्=क−थकासी
                              ३ पु०
                ( अब्रबीत् )
   वू−अव्यवी
                 ( अवोचत् )
   वच-अवोच
                                37
   भस्-आसी, आसि (आसीत्)
       अ(सिमु
                ( आस्म )
                               १ पु॰ वहु०
                  (आह्)
   व्—आह
                               ३ पु॰ एक०
   ,, आहु
                  (आहु)
   रहा~अद्षखृ
                  ( अद्राक्षः )
```

भृ अभू (अभूत् के अभुवन्) एक तथा वहु । हूं । अह

उक्त आर्परूपो सस्कृत अने प्राकृत एम ये भिन्न मिन्न भाषाना अस्तित्वनो स्पष्ट रीते निषेव करे क्वे ए घघा रूपो मात्र उच्चाणमेदना नमूना क्वे

#### **मस्मा**चि

बारिय (अल)-श्रवण, वार्न कारतस्वरं (बलक्र) बाव प्रवेच (सम्ब) प्रांच नायसुप । बबनो दुन-बहातीर सक (बह) बंच समध्य (अन) साह-नदा संद्रम् (१२३६) संदे बावपुर्व १ (क्रव्यूव) कांग्र पंचा (क्रम) पंच-साम जातपुच क्षांच (काम) क्रांस वी स्रथ्य (वर्ष) सन देख (क्य) देख নিভিত্ত (ক্ষেত্ৰ) কৰা संबाद (पार्थर) 🕶 काल्य (कार्य) वास्य सम्र (यूप) वह यूग-इरव हरकाक (इन्सर) इं<del>सर</del> स्यंक (सम्बद्ध) क्षमा निवान

वासी-चा प्रमुख्या (म्युका) म्युका प्रमुख (बारती इम्म्ली-ह्रम सम्बद्ध (स्वर) सरा-प्रमुख्य

त्रकाराह्य (काताह) जवाह रिकास (१४७०) रीक

नो प

काराह ( भ्यासन् ) शाने अवदार-कार्यर प्रवह (शाने) शाने कार्य (शाने) शान-कार्य प्रवह्म (आप्ता) वारो पुरुवाह (एसंड) मेनवरो प्रे

९ व्यूओ हू ५६ निजय ६ १ व्यूओ हू ५६ निजय ह इ. व्यूओ हू १६ निजय ६. ह व्यूओ हू १४ निजय १६ ५८ ब्यूओ हू हुए निजय १ ६ व्यूओ हू ५६ निजय ६ व्यू वर्गर

हेमंत (हेमन्त१) हेमत ऋतु-शियाळी मूसअ } (मृपक मूमक-उदर पल्हाअ ) (प्रहाद) प्रहाद पल्हाअ ) (प्रहाद) प्रहाद पल्हाअ ) नामनी भक्त राजपुत्र मोहणदास (मोहनदास) ए नामनी वीरपुरुष-मोहनदास गाधी धर्म-समप्र देशनु हित कर-नारी प्रशृति गाम (प्राम) गाम देविंद् (देवेन्द्र) देवोनो इद-देवोनो स्वामी मोर ) (मयूर) मोर मयुर ) हरिणस्वल (हरिकेशमल) मूळ चडाळ कुळमा जन्मेलो एक जन मुनि

#### नान्यत्र

गमण (गमन) गमन-जवुं पाणीय | (पानीय) पाणी, पाणीय | पीवानु दुद्ध (दुग्ध) दूध रायशिह (राजगृह) विद्वारमा आवेळ हालनु राजगिर-मगध देशनी राजधानी कुस्मगपुर (अशामपुर) राज-गृहनु बीजु नाम विद्याण | (विज्ञान) विज्ञान भारहवास (भारतवप) भारतर देश-हिंदुस्यान महाविज्ञालय (महाविवालय) मोह विवालय-कोठेज पाडलिपुत्त (पाटलिपुत्र) षाट-लिपुत्र-पटणा शहेर चडालिय (चाण्डालिक) चडा-ळनो स्वमाव-कोघ नाण (जान) ज्ञान पवहण (प्रवहण) वाहन, वहाण अच्छेर (आध्यं) आधर्य-

९ जूओ सिष पृ० ८४ नियम २०-२२

#### विशेषम

महिंदस्य । (पहरित्र) योगी महिक्टिय ऋदिनक्ष बनावन बाधायकर (जावतकर) व्याचत धरवार-विम्न करनार सहरव (महत्त्व) चीत् सन्ध (सर्व) गाँउ

क्रेरिस (शैरव) वेश मबीच | (नरीमा) क्येन-सबीय । सर्ज्ञयम् । (जन्म) धाःम्-सरस्रक

सरस (सरह) सरब पबक्र (राज) शम्ब-रस्तानां विकास

स्ववह ो (स्टूल) **सूल-स्**वव OF U सुद्रम सन्तम सहस्र (इन्ह्र) एच्छ विद्य (मेक) मेळ

নুমুখ্য (নুসুখ) স্থাসা ম

नार÷कृता करणार

चिकिम (ब्लिस) सिक्रेप वर्णन -वीखिल (वीरित) वेसी-वीमे पुरांच | (इतन) इत्ह पुराजन |

विषय | (भाग) विमानीत

अञ्चय

हेच्या र

तेब (तेन) व वरक क्षेप (देव) से शहर जबर्स (जनावम्) अधरम

क्या | (एवम् ) व्य-व् अशर्वे

Q¶

करबारा—नवराकी कागळ वहावाडचारी-

सुर्द्ध (इन्ह) बारी धैवे ब्रह्म (ब्रह्म) इह रावे क्रियं (ब्रिस्) के अली। पच्छा (न्बल्) की इष्टब (रहेप) नहीं स

9मास ८. ३ भीतुं ए प्रतिक क्यार s तरमारी-- निम उत्तरी चीतो <del>वे</del> वसद्द ( अमहन् ) वाग्वाग् नामाणुग्गामं | (प्रामानुष्रामम् ) नामाणुगामं | गामे गाम-दरेक गामटे नमा । (१नम) नमस्कार णमो । पर्गे (प्रमे) प्रागडनाइये-प्रात काँठ मा (मा) मा-नहि

घातु

अच्च् (अच) अचयु-प्जयु
उन+हिम् (उप+हिछ) उप
क्षत्र -स्परेश करवी
नच्च (रूच) नाचतु
प+हार (प्र+धार )धारयु सकर करवी
ने { (नी) रुटं जयुं-डोरयु
ण }
आ+णे (आ+नी)आणयु -रावयुं

सेव् (सेव) सेवतु
हस (हस्) इसतु
पद् (पट) पाट करवो-पहतु
पुष्क (पृच्छ) पृछतु
भण् (भण) भणतु
रीय् (रीय) नीकळतु
वि+हर् (वि+हर) विहरतु -परतु
अणु+मव् (अनु+मव) अनुमनतु
भोगवतु

हु गाममा गयो अते माथे यकराने छड़ गयो आये पुरुषोण महावीरने अनेकवार बाद्या मेघ वरस्थो अने मोरो नाच्या 'महावीरनु शील केंबु छे – णम ब्राह्मणोण पृछ्यु तेमणे घणा मारा कामो
कर्या अने जीवनने
मफळ कर्युं
महावीर हेमत ऋतुमा
नीकल्या
ज्यारे तेणे पूछ्य त्यारे
नमे खोह बोल्या
अमे मत्यनो जाप कर्या

अक्वरनी पछी अवंदा विसर्गन पदछे 'ओ' याय छ —
 नम = नमो तम = तमो मन = मणो तत = ननो.

तमोप पाणी पीर्ध वने ममोप रूप पौर्ष पाणी नीं काप के पम धोण नदी जामते ! क्षान वडे हें ब्रोधने जनस्य 덩효 नव दुए राते संकाप कर्यों-श्रम क्रम सार्ग रीते सेवा करी

मात्रदे दृश्च सरम दत सवार अने पड़ी पन बाधको मौद्यसम्बं रज्या समजा साम्रा बक्तोने जड क्या मधी

साकाय काम माढे पेक्रिकीन पुरुषा माम साच वाट्या राजा अने इंद्र विशयपूर्वक बोस्या दं सरे न महाविद्यास्त्रपती गया अने शायावर्गने भ्रम्पर

कारता पार्विस्

के यस सवापीर को 'कोई' वय प्राची हचवा बोम्म नवी' नम मार्पोप कर् मोहनवास महापुरने गामे गाम विदार कर्यो अवे राष्ट्रकर्मने उपवेषके

'बधा प्राचीको हरावा सपद

प्रमुखनो द्विष्य पारुश्चिपुत्र **எவ் उदासमां देशमां मानमोप** इन्स भोगायुँ मोंदा द्विण्यो इसता वही तमें दिल्योंने शीम प्रमु

चोडु बक्त हा मारे बेस्पी। पुरुशुं नार्चु हे पर नदी जरी सर्च लोगु के यम पण अकी आपेंगि तसम्बद्धाः विकासना भागमा भागमा शयन प्रस्ये हिंदान्यानमा साक्षी छोडि जब काय है

शक्षि देखील दुक्याओं दांसी

मा प पडिनियं कासी। तिबद्धा से प्रमादंस १ मध्यान्यु 'या वार्थान्' (अक्तन सून तृ० १) कर को सा

त्तवस्स वाघायकर चयण वयासी इम पण्ह उदाहरित्था गोयमो समणं महावीर ण्वं चयासी सीलं कह नायसुतस्स आसी ? नमिरायो देविदमिणमञ्ज्वी अगणस्मि बाला मोरा य निचसु ते पुत्ता जणय इण वयणं किंसु वडमाणो जिणो अभू सो दुइ पासी १ तम छगलय गामं नेही माणवा हसीअ? जिणा ण्य कहिंसु आसी अम्हे महिइहिया तेण कालेण तेण समयेण पाडलिपुत्ते नयरे होत्था जेणेव समणे महाचीरे तेणेव गोयमो गच्छीअ पुर्विछसु ण समणा माहणा य सो पुरिसो पाउलिपुत्त नयर गमणाण पहारेत्य रायगिहे नयरे होत्था अहू जिणा, अत्थि जिणा स्ववे वि जिणा धम्मस्मि सन्त्रमुत्तमं भाह्सु ते पाणीय पाहीअ१ वालो इसीय तुम्हे तत्थ ठाहीअ आसिमु वघवा दोवि सो इम घयणमध्यवी अत्थि इद्देव भारहवासे कुसग्गपुर नाम नयरं सीसे विणयेणं आयरिये सेवित्था तंसि हेमते नायपुत्ते महा-वीरे रीइत्था जे भारिया ते एव वयासी समणे महावीरे गामाणुगामं विहरित्था हरिएसवलो नाम जिइदिओ समणो आसिः कि अम्हे असच्चं मासीयर 📍

९ हे० प्रा॰ न्या० ८।३।१६२। ज्ञो पानु १५६ मुं २ हे० प्रा॰ न्या० ८।३।१६३। ज्ञो पानु १५७ मु २ हे० प्रा॰ व्या० ८।३।१६४। ज्ञो पानु १५८ मु अस्-होनुं

पाठ ११ मो ह्यारीत यन तकारीत (नरवाति)

र रिसि ≈ रिसी (अप्रि') रिसि + बाड + रिसड रे म मा व्याप्त रिसि + अको = रिसमी

वे खाळ्याच्यासम् रिसि + अस्तो = रिसयो (ऋषपः) रिक्रि + को = रिसिको

रिचि = रिकी

९ रिचि+मन्दिर्वे (राजिस ) रिवि = रिवी ( स्तीनः) के शिरु **भा**ग ∉शारा रिधि + को = रिसियो

रिसि+वा=रिसिना(न्हिपका) हिसि + द्वि = रिसीबि के अप च्या सार्थन

४ रिशि+मये=रिश्तये (ऋषये) रिशि + व = रिशीम रिसीर्च

चिस + इस = रिसिश्स fefer + mi = fefermi (क्लीशम्) हे श्र व्या नाएश

५ रिसि+मो>रिसीमो(क्षिकः) रिसीमो रिसि-श=रिसीड रिक्ती व

रिसि + को - रिसिको गिरिव+**वितो**-रिसीवितो

विविधानीनोन्दिसीती

विके + दिनो = विक्रीतिनो

रिसि+ण=रिमीण रिसि+स्स=रिसिस्स (अपे) ξ रिसि+णो=रिसिणो रिसीणं (ऋयोणाम् ) रिसि+°सि=रिसिसि रिसी+स=रिसीस, रिसीस O (ऋषिप्र) (ऋपिस्मिन् १ ऋपी) रिसि+मिम=रिसिमिम रिसि+अउ≕रिसउ ¹ (ऋपय ) सं॰ रिसि=रिसि । (ऋपे।) रिसो≈रिसी ' रिसि+अओ=रिसओ ! रिसि+अयो=रिसयो 1 रिसि+णो+रिसिणो ! रिसि=रिसी 1 भाणु (भानु) माणु = १भाणु (भानु ) भाणु+अवो=भाणवो (भानव-) हे॰ प्रा० च्या० ८।३।२१। भाणु+अवे=भाणवे र माणु+अओ=भाणको भाणु+अउ≃माणउ भाणु+णो=भाणुणो भाण-भाण भाषु+म्+भाषु (भानुम्) भाषु+णो=भाषुणो २ भाणु=भाणू (भानृन्) भाणु+णा=भाणुणा(भानुना) भाणु+हि=भाणृहि भाणृहि, भाणृहिँ (भानुसि-)

१ अहीं ऊपर जणावेलां स्त्रो द्वारा उकारात नरजातिना पण रूपो मिद्ध करवाना छे २ प्रथमाना-चहुउचनना 'अवे' प्रत्ययनो उपयोग आर्य प्राकृतमा ठीक ठीक थयेलो छे

#### १६८ ४ माणु+प्रदेश्न्यावदे(सावदे) आणु+पऱ्याण्च (धानूनाम्)

भागु+बा-माणुको भागु+स्त=भागुम्स

बारम्बद्ध 🛡 —

ķ.	माणु÷चा⊐माणुचो			
	माणु+मा≔प्राणुको	<b>माण्</b> भो		
	भाषा <u>ु+ड=भाष</u> ्	भाग्ड		
	(सञ्जूषः सानोः)			
	माणु+चो=माणुवो	भाजु-दितो=मान्दितो		
	माणु-हितो=माच्यद्वितो	(भाषुम्पः)		
		माणु <del>। पुना=साब्</del> संदो		
•	माणु नम्स नमाणु म्स(मानीः	) माणुभवन्धाम् प्रम्बाम् भागूर्वं (सम्बाम्		
y	माणु+ सि=माणुंनि	भाजुशसु=भाष्मसु (मानुज्र)		
	माणु+स्मि⊭भागुक्ति	मत्त्रस्		
	(भानुम्मिष्?, मानी)			
	सं॰ भाणु=भागु (मानो <sup>१</sup> )	माणु-सबो=मामबो (माबद)		
	मागु=माण्	श <del>्राणु।</del> चयो <del>=मापवी</del> ( ≠ )		
		बाणु+सर=माजर ( ⊬ )		
		अस्तु-धो-व्यक्तुची		
		माणु-माण्		
	भाषागान नावाना करोगी ना	क्यामां के अन्यको वक्शाएका के हैं		
		र्व नवारे क्यानमां नगरास्था व वने		
	इत नद्धारपी यह जीवाल			
١	प्रथमाना जन संगोधनन्य एक	तका बहुवकामाँ तथा हितीनाच		
कर्णकार प्रकारण क्षेत्र प्रकारीत मुख्य क्षेत्र प्राच्य ग्रीम करीने				

 प्रथमाना, सयोधनना अने चतुर्यीना स्वरादि प्रत्ययो लगाडी पूर्वे स्वरनो एटटे अगना अत्य 'इ' के 'व'नो लोप करवानो छे —

रिसि + अओ = रिस् + अओ = रिसओ भाणु + अवो = भाण् + अवो = भाणवो रिसि + अये = रिस् + अये = रिसये भाणु + अवे = भाण् + अवे = भाणवे

उनमा रूपोमा तृतीया एकवचन, 'णो' प्रत्ययवाळा वघा रूपो अने चतुर्थीतु एकवचन छे, परतु ते वर्धानी साधना ऊपर जणावेला विमाग उपरथी समगाय तेवी ज छे

सस्कृतमा 'इन' छेडानाळा (दिण्डन्, मालिन्) नामोमा प्रथमा-द्वितीया बहुवचनमा अने पचर्मा-षष्ठी एकवचनमां दिण्डन , मालिन रूपो प्रसिद्ध छे ए रूपोनु प्राकृत रूपांतर दिख्णो, मालिणो थाय उ आ जोतां अहीं जणावेलां रिमिणो, भाणुओ रूपोनी घटना सहजमा समजी शकाय तेम छे वळो, 'इन् ' छेडावाळां नामोनां वधा रूपो लगमग इकारांत नामनी जेवा थाय छे

#### इकारात उकारांत नान्यतर

इकारात अने दकारांत नान्यतर अगनां, तृतीयाश्री सप्तमी सुधीनां चम रूपोनी साधना इकरात अने उकारात नरजातिवाळां अगना रूपोनी समान छे अने प्रथमा, द्वितीया तथा सबोधनना रूपोनी साधना, अका-रांत नान्यतर अाना रूपोनी जेवी छे — बारि (बारि)
१-२ बारिभ्य्-बारि (बारि) बारिभ्यं-बारीमि बारिभ्यं-बारीमि बारिभ्यं-बारीमि बारिभ्यं-बारीमि बारिभ्यं-बारीमि बारिभ्यं-बारीमि बारिभ्यं-बारीमि बारिभ्यं-बारीमि बारिभ्यं-बारीमि (बारि')

(सूमी माडे हुनो पाड छहुनो प्रारंम)

मह (मझ) १-२ मह+प:जमहे (मञ्ज)ः-सह-पिकन्सहित मह-पिक्सहित मह-पिक्सहित्

स॰ मह्र ! (शबु !) ॥ ॥ ( ) ( रखने माहे हानो पाट छहानो धार्रम )

पहर्नम्य एकानामानं नारिने, नारिस्य बहुने बहुस्य करो सम कार्त्य हे रम 'पारते' के 'महने' क्यो सम्बन्धानां नदी.

#### कारांच भने उकारांच नाम (नरमावि)

मुणि (मुलि) मुश्निक्यन वर पार-बीग (स्वयार वद स्वर्षि (पुर्मुल) कडुश्नि-वर्षा प्र वही (पुर्मुल) कडुश्नि-वर्षा प्र वही (श्रुल्या)-वर्णी-पार्मिक्य प्रमाण (स्वर्षाणी)-वर्षाणी-व्यापम् (स्वर्षाणी)-वर्षाणी-व्यापम् (स्वर्षाणी)-वृत्रिक विदे वे

परवड् (एसनि) क्षापी परि-नाप्तवड् परवार रिसि (स्त्रि) इवि व्हेस्स् वेस्ट्रॉस्ट्रिस्स् क्ष्मार-क्षेत्री स्ट्रिस्

दुमबर्गम (रु मर्गान) दुःखन जीनाग-दु च पामनाग मोगि (नानित ) मोगी-भोद्र मागोन मोगपनार उद्गहि (उदांब) उद-पाणी-ने वाग्ण कम्नाग-मनुद्र साहु (गाउु) मात्रक-गापन क्रनार, माधु पुरुष, यज्ञन, शाहुकार जंतु (बन्दु) ब्रदु-प्राणी मिसु (शिशुः) शिशु—याद्धक (मृखु) मीच-मृत्यु-मोन-मरण बिद् (चिन्दु) बिंदु मीदृ, टीपु भागु (मानु) मानु भाग-स्रव (बायु) बायु-वा विण्हु (बिण्तु) विण्तु हरिय (हस्तिन) हामी कुछबद्ध (कुरपति) कुरनी पति –आचार्य नरवर (नरपीत) नरीनी पीत नग्पति-नग्पत-गत्रा

इकागत अने उकारात अफिन्न (अति) ऑस अच्छि (असि) इट्डो-हाटऱ्-हाट मुसियड (भूमिपति) भूमिना पति-रात्रा उबाहि (उपाचि) उपावि सेट्रि (थेप्टिन) थप्टी-डॉड-चेट्टी गदमदेसि (गमर्दागन) गर्मन जोनार-जन्म धारण करनार अभोगि (अमंगिन्) अमोगी-अभोड |मोगीन नहि मोगवनार पिन्छ (पिन्निन) पर्नी-पान-वाळ् मोमिति (गीमित्र) सुमित्रानी पुत्र-लक्ष्मण सिक्तु (भिद्ध) भितु चक्रामु (चक्रुप्) चश्र-आव सयभु (स्वयभू) स्वय यनार-ब्रह्मा, ते नामनो मसुद्र **संसार**हेड (ममारदेतु) समारनो हेतु-समार वयतानु कारण **गुरु** (गुर) गुरु-बडिल, माता पिना बगेरे तर (तर) तर-दुम-बाह बाहु (बाह्) बाहु-याय-हाय

( नान्यतर ज्ञानि )

चत्यु (बस्तु) बस्तु

दहि (टिच) दक्ष

जर (जर्रु) जर्रू-लाय

भेषु (पहुन्) महन ৰাপু (বানু) বাল-ব্যাপন-ব্যাক नारि (बारि) बारि-पानी मकारांत ( गरभाति )

पसद्ध (दुवर) दुवन-वका कोसिय (बीवक, बीक्ड

पीत्रवाडो द्वा अवशः चय-थोलिक स्व नाहार (भारार) बाहार-बागा

**ब्हाबिम** (स्तार्थक) नवराव नाविम नारो-नावी-क्रयान

सम (५४) मूच-वनका-करन

मार (नार) कर कुमारवर(कुमारवर) क्लब बुमार

क्ला-क्ला रहेतु

माहार (बाचर) शाबार शबस्य (पदव) नदश रण्यकास (ब/म्बनक) अरध्वर्धा

वेसाह (नवाय) नवाथ गर्ग enterior ব্যালভ) ভ্যা<del>ত্</del>

\$w\$

शह (वषु) सर्व

बाबु (लाड्) ला<del>ड वीचे-</del>

शब्दार्थन (तर्वका) वर प्रक्र

रथो एक-इवेब-शावि सञ्चासम् ( सहाक्त्र ) केर्ड

आकान-पापीची मीड्ये सम

इत्यान्याको-पुरस्य-सम्ब

र्वस-व्यंत्र स्थ-क्षत्राचे

हवास्त्री कृत्या

-दारी-कोपी

सङ्क्ष्मसाध (सहाप्रसाव) क्षेत्र

ज्ञास (माध) मा<del>द</del>-मामि

प्रसद्ध (स्त्र) अल्लावराण्डि

क्षोक्बर (बोरार) क्रेस्स गर्भ

सोवान (दगर) चंगड **अकारोत ( भेज्यताबाति )** 

क्रव (क्य) क्य \$56 (\$H) \$4-54 घष (इ.१) वी

त्वया (तृष) सर्नु-बान मिचराण (निश्रक्त) मिश्र

धर (ए६) क पेत्रर (९ अन) धंबद (इरक) उदय भाषी

भाग्रद्ध(बाधरभ)आज्ञाल-वर्षेष्

द्वार (द्वान कोम

# विशेषण

बुद्ध (युद्ध) वोधवाळो-शानी
हुत (हुत) होमेछ -हवन कराएछ
सेट्ट (श्रेष्ठ १ श्रेष्ठ-सार्व
संभूज (सभूत) सभवेलो-धएलो
चउत्थ | (चतुर्थ) चोथु
चतुत्थ | (तिण) तरी गएछ
सुत्त (सुप्त) सुतेछ -आळसु

अप्पणिय (आत्मीय) आपणु
पासग (दर्शक-पश्यक ²) द्रष्टा
समजनारो-विचारक
परिसोसिय | (परिशोषित )
परिसोसिय | परिशोषित –
तद्दन सुकाएलु
विद्वज (द्वितीय) बीज़

#### अन्यय

ताब (तावन् ) तो, त्या सुधी पगया (एकटा) एक वखत- एक वार

सया (सदा) सदा-हमेशा

जाव | (यावत्) जो, ज्या सुधी पत्थ (अन्न) अहीं चिर (चिरम्) चिर-लावा वाळ सुधी

### धातुओ

अव+मन्न् ( अप+मन्य ) अप-मानबु—अपमान करबु आ+घा (आ+ख्या) आख्यान करबु—कहेबु जाट ( याच ) जाचबु—याचना करबी—मागबु प+वय् (प्र+वद) वदबु—कहेबु

पूज (प्ज) प्जबु
पूज (र्यज) तजबु-छोडवु
भण् (भण) भणबु-बोलबु, कहेबुं
डस् (दश्र) डसवु -डस मारवो
रक्ष् (रक्ष) रसवु -रासवु साचवबु -रक्षण करवं

९ उपयोग—जेमां श्रेष्ठ कहेतु होय ते नाम छट्टी अने सातमी विभक्तिमा आवे छे 'पाणीसु सेट्टे माणवे' अथवा 'पाणीण सेट्टे माणवे' एटळे प्राणीओमा मनुष्य श्रेष्ठ छे विन्सा क्ष्म (विन्सा क्ष्म) स्था स्थान स्

tou

के बारे स्वर्धमूर्त व्यान करे के रापयी प्रवर्धमूर्य ग्रामित्र क्रमार्थों इसे के ब्राह्मार्थें कर करें क्राह्मार्थें कर मान्य करें क्राह्मार्थें कर संस्थार करें

नरेको के जुक्कपरिए धनन अहापीरों का प्रति के प्राप्त प्रवाद है जो जुनारकर । वार्षी का प्रति प्रवाद है जो जुनारकर । वार्षी का प्रति प्रवाद है जो जिले प्रवाद प्रति का प्रतिका अनुनिमा होता सुत्रेक्ष अनुनिमा होता सुत्रेक्ष

अमुनिया हमेशा सुतक्ष सुतियो जाहार माटे वर्षा सु मानं मुनियो वर्षेशा सुत्योगे परे हैं तारा छें भाग मार्थीरने वर्ण वीथे परे महावीर

बद्ध चया

क्राधिक सर्प प्रथ्यो

जे कोधदर्शी छे ते गर्भ दशीं है अने जे गर्भ दशीं छे ते दु खदशीं छे हे पहितो । हु बधा प्रकारे लोमने तनुं छुं। चंद्रकीशिक सर्पमा अने देवेन्द्रमा महावीरे मित्र पणुं राख्यं चायु वडे वृक्षो कंप्या अने पाणीना विद्वओ उडघां शुं विचारकने उपाधि होय हे ? कौशिक देवेन्द्रे ध्रमण महाबीरने पूज्या समुद्रना हाथीण पाणी पीधु

मुत्रसन्न मुनिओ कोधदर्शी होता नथी प भिक्ष शेठना कुळनो हतो हे सिक्षो । मारा घरमा दुघ नथी, घी नथी पण पाणी छे प गृहस्थने वे वाळक हतां तेओप हाथवडे पाजराने फॅक्यु• को ने आखो मधी <sup>२</sup> पक्षी पाजरामा कप्यु अने हल्या कयु **होट गजाने नम्यो** अने राजा गणपतिने नम्यो तमे पाणी इच्छो छो? मुनिओना पति महावीर राजगृहमां चिहयां

मुणिणो सया जागरित अमुणिणो सया सुत्ता सति 'घय पिवामि'त्ति साहुस्स णो भवद्द? पम्खीसु वा उत्तमे गरुले विराजद्द

लोम संसारनो हेतु छे

ण्गे भिक्खुणो उदगेण मोक्ख प्रयाति सउणो पजरासि उड्डेइ ते उवासगा भिक्खुं निमतः यन्ति यह्वे गहवहणो भिक्खुं वदते

१ 'भवइ' एटडे योग्य होय छे.

अरज्ञार केंद्र हु जीतकाले गहबर्ड सचिको तक विका मचर्र परवर्ष य बोबि गुर वर्गमि महरिसी ! ते पृष्ठवामु म मुली रण्यमासेच जिल् नामेय सुकी होर समी सुनिवर्ष कथावि ल

काराब्दिक कामी नियम् धरम साइक्केण्डा सोद्रेय जनुको प्रकालि <del>रापिति</del> निमुचों कि कि न छिन्दि । जहां सपम् चर्त्राण सेवढे

इसीच भट्टे सह बन्तमाचे

उदाहरति भिष्यु सम्बद्धी महात्त्रे चरित्राजीम ओगियो संसारे ममीम बसोगी चया स्प

असे <u>मु</u>णियो हुएय मास्त्री

इत्योस दशब्यमा सें यगया पाडिअपुत्तस्य वर वर्ष वहाविक्ये होरपा सहरासाया इसियो ह्येति म व सुची कोवबरा प्रचेति

बर्दासर्व संसारहेड वपवि चका बको सर्थसम्बद्धान तरीम गणबा शन्तिस्स मिसे रक्कीश

पाठ १२ धा संविध्यकानः व्यवदे

PACAMI ष १ श्रमामि (धामि) राधि ı fefa

सर्व

१समस्मो (प्यामः) **स्थाम**ो

भिका

व्याः दश्शाद्दश

पु॰ २ स्सिसि (ध्यिमि ) स्मसे (ध्यसे ) हिसि हिसे	स्सह स्सथ हिस्या हिंह	(ष्यथ ) (म्यध्वे)
पु॰ ३ स्तर स्मिन स्सन स्सन स्सने (प्यते) िइ हिति	≠मित स्तते हिंति, हिंते	(ध्यन्ति) (ध्यन्ते)
हिए हिते सर्व पुरुष सर्व वचन	हिंते हिंहरे	

१ भविष्यराळना प्रययो लगाटतां घातुना मूळ अगना अत्य 'अ' नो 'ए' अन 'ड' वाराफरती थाय छे २ भण्+अ=भण+स्सामि=भणेस्सामि, भणिस्सामि वगेरे

#### रूपाख्यान

भणेस्सामि भणिह्सामी, भणेस्नामी पु० १ मणिस्सामि, भणेशमि 💎 भणिस्मामु,३ भणेस्सामु भणिहामि भगेहिमि भणिस्साम,३ भणेरसाम भणिहिमि, भणेस्सं भणिहामी, भणेहामी मणिस्स, भणिहामु,३ भणेहामु भणिहाम,३ भणेहाम भणिहिमो, भणेहिमो भणिहिम्,३ भणेहिम् भणिहिम ३ भणेहिम

हे॰ प्रा॰ त्या॰ टा३११७७। २ ह॰ प्रा॰ व्या० टा३११५७। उया धारमा पाटमां भविष्यकाळ-प्रथम पुरुपता बहुवचनता प्रथयो जणावेला छे त्यां स्तामा हामी अने हिमा एम त्रण प्रत्ययो जणावेला छे ते उपगंत स्नामु, स्नाम हामु हाम हिमु, हिम प्रत्ययो पण वपगय छे अने ते प्रग्ययोगाळी रूपो पण अहीं आपेला छे

१७८

अप्रेडस से

प्रविस्सद

प्रक्रिसम्ब

पु• २ मजिस्सनि मणेलासि

मनिस्त्रसे.

**प्रवे**स्स**द** 

धजेस्स्य

सचेहित्य मिविहिसि शके दिश्वि सविक्रिया समितिहरू मनेहिर **अफिटिमे** भवेडिसे मजेस्सी ६ मणिस्पन्न भवेरधाः मिस्संति प्र अमेर पंते भ कि स्मानि र्जाजस्मिते ज्याचे काराधित समर्विति व्यवस्थित. मचेस्सप सबिद्धिति भनेहिंचे धांबस्सते सचि हिते <del>स्थलकारे</del> मनेदिर मणिबिष्ट दे <del>प्रकेशि</del>र दे मा विक्रिय समिहित अवेहित सबेदिय समित्रियः अवेडिसे मणिहिते, ्र मुजिल्का मृजिल्हा सर्व प्रम सर्वप्रसाम ( स्रोक्टम स्रोक्टमा कारांच असे डकारांच बन्दो आस्मि (अपि) आव शवरिमि (एका क केन्स्यर्थ) सक्रि (ग<del>निन् ) वन परा।</del>-ने क्रीचाड (जीशद्य) श्रीरम्स शासकार-शासम पिति ( चडिन ) कारन क्षेत्र मणि (पनि) बान क्रमि (क्री) करि

सम्बद्धपु (क्षेत्र) वर्ष व्यक्तार क्रिसापु (क्रापु) की माने वर्षपुत्र स्वत्र (क्सुपुर्व) नामने वर्षपुत्र स्वत्र पुर्व (भ्रम) मेळ उत्तरमु (श्रम) मेळ वर्षमु (श्रम) स्वत्र कार्य

वंत्रयारि (स्क्रमारिक) स्क्रमारी

म्बाम वगरे महर्षि

मेहावि (मेधाविन्) मेनावाळीधुन्दिमान
वणाफाइ | (बनस्पति) बनस्पति
वणस्माइ |
धनेणु (करेजु) करी-हाधी
धुंखु (कु धु) वधवा-एक नानो
जीवडी
विज्ञितिय (विद्यार्थिन्) विद्यानी
अर्थी-विद्यार्थी
विद्यु (विद्यु) चद्र

कमंडलु (कमण्डलु) कमडळ मंतु (मन्तु) अपराय, शोक तक (तक) तक-दु-साट जबु (जम्बु) जाबु, जाबुनु साड विडिवि (विटिपिन्) वीड साड साणु (धानु) शिखर यधु (वन्यु) वधु-माडु-भाई पांलु (पीछु) पीछ पीलनु साड ऊरु (ऊर) टर, सायळ पावासु (प्रश्नित्) प्रशासी

# विशेषण

कयण्णु 'कृतज्ञ) कृतज्ञ-कदरवान गृरु (प्रुठ) गुरु-मारे-मोट्ट छहु (त्यु) त्यु-इळबु नानु मिउ (मृदु) मृदु-कोमळ-नरम दुहि (दु खिम्) दु;बी दुग्गिय(दुग'त्यन) दुगन्यी चीज चार (बारु सारु-मृत्दर मृहि (मृदिन्) मृत्वी साउ (स्वाह्) स्वाहु-स्वाटवाळु दिग्धाःच ( र्धाषांगुष् ) रीर्ष आगुष्यवाळु सुद्ग (ग्रुचि) ग्रुचि-पवित्र सुगधि (सुगन्विन्) सुगती वस्तु वहु (बहु) बहु-घणु नामाण (ग्रामणी) गामनी नेता

### सामान्य शब्दो (नरजाति)

लोहार (लोहकार) छहार छत्र सोविष्णय (सीक्षिक) सोनी गैधिय (गान्विक) गाधी गर वाळो वस्त्रने वेचनार वाध्यक्रवार (वाध्यक्रकार) वय वारो-नगर करगारो-नेपारी कांबक्रिय (काम्बक्रिय) काम कींबो-कांबक्रीयोंने मेंब-गर वा श्रीक्रवार मोचित्र (वीर्ष्यक्र) योची-

कुर्वेव (क्वांन्य) क्यारी कोहसित (क्वांन्य) क्यारी राज्य क्षत्रक्षक क्यार राज्य (बाट) काळ्डे-वाडी राज्य (बाट) काळ्डे-वाडी राज्य (बाट) कोरवित (बीरिमक) क्षेत्रों— स्राम-स्पंती-केक कोरोजे क्यारा

कस (क्त) पहुंच समित्र (व् -ध्यक्ते सामान्य खब्दो ( नाम्यताबादि )

सामान्य खन्दा साह (१५४) लड

बाध्यक्षत्र (राज्यिक) बबल-विद्यार संस्था (११ संस्था तबोर्ड ११ दूर) नवाळ-नाबर विस्तृ वाच संस्था अस्त्य वाच्यक्षत्र व्याप्त स्थान आक्रिक (शक्तिक) माओ-गास देवता वोश्तिक वीमिक) रोबो-एर्न --श्रम-देवता कंप्रमुख (उक्तकक) स्थाने

सत्तवार (दत्रकर) बण

ने किएम (तैकिक तेको -रेन वेक्स

सीमाक (धारमाक) विवासं रोवोकिय (रारमूक्ति) योगी वृंद्ध (एक) वृद्ध -वोगी-क्यार्थ स्रोवोक्तिय (व्योक्तिक) सेवी साइविबं (बारमिन) राजनी राजविबं -व्याप्त क्यार्थ स्रोविकार (स्रोवेक्स) स्रोवेक्स स्रोविकार (स्रोवेक्स) स्रोवेक्स

श्यवरबावि ) कंडयर<del>णक्</del> (स्टब्स्स) संग्रह

-कांदाची रक्षण करणार-गोश क्षेत्रक (कानक) करण-न्यायक चेत्रस (चेत्र) चेक्क-च्यायक चीत्र (चेत्र) चेक्क-च्या चीत्र (चीत्र) थी-गीत्र जीवण्य (चीत्र) चीत्र-न्यिको

जीवयः (धीरन) चीरन-जिस्से गामकाल (गरत्रान) करवान पगरमख (पदकरक्ष) पगरसां

-पगतु रक्षण करनार
वत्थ (बस्न) बस्न-बस्तर
पट्टोल (पटकूल) पटोल्ल
खेत्त } (होत्र) होत्र-खेतर
मिहिलानयर (मिथिलानगर)
मिथिला
घरचोल (गृहचोल) घरचोल्ल
पम्हपड (पक्षमपट) पक्षम-पांपणजेव झीण कापड-पांमही

#### सामान्य शब्द

घटु (घृष्ट) घसेल — सुवाल करेल बाटेल मट्ट (मृष्ट) माजेल - गुद्ध अतिअ (अन्तिक) पासे - नजीकमां चंड (चण्ड) प्रचड - कोधी लहुस | (लहुक) लघु - हळवु हलुम | हलु नानु चित्त } (वेत्र) नेतर-नेतरनी
वेत्त } सोटी-बेत
सुवण्ण (सुवण) सोतु
रयय (रजत) रजत-रूप
रूप (र्जन) रूप
रूप (र्जन) रूप
रूप (रोप्य) ,,
लोमपट } (लोमपट) रुवाटानु वस्न
लोमपट } (रोमपट) -लोबधी
पम्ह (पक्षमन्) पांपण
नेडु | (नीड) निलय-नीडणेडु | माळो
(विशेषण)

(विशेषण)
नाय (ज्ञात) जाणितु-प्रसिद्ध
अम्हारिस (अस्मादश) अमा
रीशुं-अमारा जेवु
सचेलय (सचेलक) चेलवज्ज-वाद्ध-कपडावाद्धं
अचेलय (अचेलक) ऐलकअपलय कपडा विवान

अन्यय

सन्वत्थ (सर्वत्र) सर्वत्र , यथे - स्थळे मज्झे (मघ्ये) मध्ये - वच्चे - महीं - मां जं (यत्) जे - के सक्ख (साक्षात्) सासात् - प्रत्यक्ष स्वयय (सततम्) सतत - निरंतर अद्व (अय) अय- हवे - प्रारमस्चक

मणा | (मनाक्) मणा-थोडु-मणयं | खामी दर्शक सह (सदा) सदा यभिक्खणं (अभिक्षणम्) क्षणे क्षणे-वारवार अहुणा (अधुना) इमणा श्रेष् (नुष्र ) गोन्स<del>ु -व</del>ेस्सु-

श्रवात्तु न्यवभ करती

बित् (कित्) फिल

थीसद्भ (विश्तम्) भीगाउँ

सूरी आहे स्तोष्ट्र (बोब) सोह बोब्सु स्तेश्वद् (स्थरपर) समाग्ड सिम्ब (बीम्ब) श्रीवत् यात प्राप्त द्यम् (दन् ) दन्त्रः कव् (क्य) क्यू -क्यू सम्ब् (बन्द) सम्बद् पाष्ट् (प्रभ्याप् )क्रम्यु -मा वर्षे ओप्प् (अर्थ) पाणी व्यक्तु -वक्षाम् ( स्मिमान्समा ) पानी चडाक्यु –जांप्यु रकान्द्र नीरगरमा क्ये पवस्र (प्रभव्यः) प्रवादः करशे न्तवास परवी समिद्धि (क्या रिक्र) क्यरिक्य तक्क् (न्बर्) वस्त्यु-डोन्द् रहेतु -चैनावां शायर रहेतु श्रजुसास् (शतु÷वात् ) विवन वाब् (वाप) क्यान्य -क्षत्रम् बार्च स्थवान्ड विषक्ते (नि+मी) वेचन वेचन

संयुक्त (य+तुष्प) समन्त मोन्य (अर्ग) आस्त्र बब्ध् (दन) वन्तु-भार गरीने पैस पीव पीश्र) पीक्तुं पीक्तु (ब्रून) पृष्ट कर्तु पह प्राथ (प्रस) प्रस्तु प्रस्त जानगां शुसर कोशने पडसे क्रीभारत क्रथ पण क्लम नसि विद्यार्थीयोवे अमे बारे

**अ**थिमजे सभ सापक्षे धवाजारी राजधाम प्रवास सास्त्री पदीस्रो मसीए करहा अने वस्तुओ अने घरणोत्त्रनि वेषशे सुतार लाकक्षाने छोल्छो अने पल्ली ग्रहरो ग्रहस्थो, ब्राह्मणो अने साधुओने अन्न आपरो अमण महावीर, कुमारने अने मोर्चाने घमें समजावशे सरैयो मुगंघी बस्तुने बसाणरो मोची मारा माटे एगरखां सीवशे

कुशळ तरनारो तळावने पोताना वे हाये तरशे कामळीयाना शरीर उपर कामळ अने लोवडी शोमशे

उनाळाना दिवसोमां कोयल आबा उपर कुह कुहू करने

गुरु विद्यार्थीओने तेमनो पाट समजावशे तेली तलने पीलको अने तेल बेचको

सोनी सोनाना अने रूपाना घरेणा घडशे अने तेमने नासको मारा (दुःस्त्री जीवननं औपच घर्म थशे हु पहाडना शिखरे चडने जोईश वादराओ थावाना झाहमां कुददो उनाळामां स्यंनो प्रचंड नाप तपदो तबोळी तबोळ वेचको अने अमे तवोळ खाईश्र विद्यार्थीओनी बच्चे आचार्यो जोभंज आ यायो शियाळामा फळघे तमे वे वयाळ अने कृतज्ञ शको ऋपिओ कमदळथी शोभ शे जेओ पोताना भोगोने छोडशे तेशोने लोको त्यागी कहेन्ने मारो सोनी बरेणाने ओपड़ो केटलीफ वनस्पतिओ उना-ळामा फळशे अने तेमने तु खाईश कणवी खेतरने वारवार खोद्शे हवे हु पान खाईश, ते तेनो पाट सम हरो अने तमे पाणी पोजो

मिश्र पिश्रुवै सीला येहं पक्रांनि इत्यीस वराज्ये नापमाङ मध्यू भरे नर हु अंतकाके रिसी राचरिसि प्रमुख यमञ्जूरी सरव साहुची गुड़बी मणुसासमं बहाज मिल्लिन मद्दे अचैतप सम्रेक्ट

चिति स्ता

गाउस्सनि

वक्का विद्स्तिति

वाजिल्लारा समो गाने

पामे बाणिकां परेशामी बन्धप्र च विवकेतिश

गुर उपचिद्रिमाध

शक्रवर्मातप श्रीको प्रकृषा

सद उरु म शंजिस्मद

मा इंड शिकान म सक्ते प्रचा अंबरूस तहे सरक्ष महारे हैं बोहिस्सारी नुमे व्यक्तिस्साह सो य

वह सम्हे समर्थ वा मी इप वा विमेतिस्सामी सी सक्कां मुद्दी किमनि न संयुक्तिसदिश तुमं बल्च लिम्पिस्सचि अप च पड़ोड़ से विदस वर्ष छोषांच्याको सुर्वत शोबिकामि तस्म च मासरपाई पश्चिमि जासी सिक्च जिल्लामे वक्षी विशेषि कसेवि वेप प्रधारिया से रिलि तास दति शाहे सो क्रमचनी समर्थ महाबीर अपुस्तक्ति श्रवति व कुमारबर संबंधी ताच अध्यक्तिय

एक रक्ष्मति

राचरितिसम विमिन्स निकारी मिहिसामधरे

सरक्य सोगो पासी

अन्द्र सोदारा घोर्

ताबिस्साम् तरम सरकाणि प्रदेशिया

साहजा पाणिका वाणे व

**ह** जिस्मंति

### पाट १३ मो

### मिवायकाळ (चालु)

स्वर्गत बातुना मित्रप्यकाळना रूपो मामता त्रीजा पाठमा १ फक स्वर्गत घात माट ले विशेष मापनिका बताबी है तेनी उपयोग ऋग्वो

### अंगोनी समज

विक्रग्णविनानुं	<b>निकरणवा</b> छ
हो	होय
पा	पाय
ने	नेअ

#### रूपाख्यान (उदाहरण)

होस्सं, होइस्मं, होवस्सं पु० पास्य, पाइस्स, पाण्यसं नेक्सं, नेइस्सं, नेपस्सं

23

### केटलांक अनियमित रूपाख्यानी

#### करन

मविष्यदालमा 'कर ने बदछे 'का' पण वपराय छे अने तेनां यघा रूपो स्थरीत घातुनी सरखा थाय छे तथा प्रथम पुरुषना एक-वचनमां ३'छाइ' रूप थाय छ जैमके.

# ३ पु० काहिर २ पु० काहिसि १ पु० काहिमि, काह वगेरे

१ जुत्रो पृ० १०६। २ हे० प्रा० व्या० टाश२१श ३ हे० यार स्था० दोशीपना

w 'दा' बाहुवां मनियनकाश रोवंद्यां बचां करते रचनीत बाहुकी नरका बान के एक प्रवत प्रदेशना एक्स्प्रेशमां वर्षों कर नहीं बार के बेसके १ पुत्र काहिमि, काहे स्मेरे

१ प्र वादिव २ प्र वादिसि १सोरछ (धेप) शब्दर्स वेच्छ (केल) वेखं-म्हरणं रोच्छ (रोलन रोत मेच्छ (मेल्ब) मेखं-इका क्ष मोच्छ (मोस्ब) सच्छ-सर वर्ष

मोच्छ (गेस्न) गोका चलु

बच्छ (इस्न) योग् देक्ट शोपक्षं सच्छा (धरन) जनु चन्द्री बोच्छ (सन) च्येत्-गेव्स मात्र का उप्सुंक इस बताओंने दि आदिवाडा (दिन्दि द्विति दियो दिय दिव वयेरे) अन्तरी समावता रोबसी स्वारित

क्षेत्रक (क्षेत्रम) केर्यु

'ति' विकाये सोपाया के कैपणे:--मोक्छ + हिमि = सोक्छिम नोक्डेमि सोक्छिहिमि सोच्छेतिमि-वरोदे

वजी, साम अवस पुत्रका एक्तकासी न ए वहे बाहुओड़ करें क्यारकाश क्य एक कर नवारे बाग के बेमने ---•स्मोस्पर्ध Breiz क्षक

काकित्रस्त वेच्छित्सं वरिक्रासं वरीरे बान्धीकी क्यों सामित्रा यक बातकी समान है

१ के अप च्या १६१९ । १-७ के अप च्या 4/३१

र । के का ज्या बोधा श

### रूपाख्यान [ उहाहरण ]

#### एकवचन---

१ पु॰ सोच्छ सोच्छिमि सोच्छिम्सामि मोच्छिस्सं, सोच्छेमि, सोच्छेस्सामि सोच्छेस्मं, सोच्छिहिमि, सोच्छिहामि सोच्छेहिमि, सोच्छेहामि

२ पु० साच्छिसि, सोच्छेसि, सोच्छिहिसि सोच्छेहिसि सोच्छिसे, सोच्छेसे, सोच्छिहिसे

३ पु॰ सोच्छिइ, सोच्छेइ, सोच्छेहिइ सोच्छिर, सोच्छेद, मोच्छिहिप,सोच्छेहिए स्यादिः

आप प्राकृतमा वपराएखां बीजा केटलाक अनियमित रूपो

(भोक्याम ) — भोषलामो

( यविष्यति ) — भविस्सइ

(करिष्यति) — करिम्मड

( चरिष्यति ) — चरिस्सइ

( मविष्यामि ) — मविस्सामि

(भू-मो+प्यामि) — होक्खामि

### अमृ ( अदम् ) आ [ नरजाति ]

१ अह१ ) (असी) अमुणो (असी) असू असू (असी)

२ अर्मु ( यमुम )

अमुणो ( अमृन् )

१ हे॰ प्रा॰ व्या॰ ८।३।८७। २ हे॰ प्रा॰ व्या॰ ८।२।८८। १ स॰ 'असी' व्याना अन्त्य 'औ' नो 'ओ' करवासी आ रूप याय छे

वम्सः (धरीषः) ( ब्रासचित्र )

नाची नर्या सानु भी प्रमानी बस् (जन्स ) आ [नान्यतरदाति ] र 🖛 (संग)

**प्रमाधित**ी

蚺

इबस्मि

वसस्य

बाकी बचा कहा जी प्रमाण

सार्रोड (धरनि) बसवि-स्व

संख्यात धरकेसि (बरवर्डिय् ) उत्तम रीते बीनार मारामिसंदि नागांशवाहन)

मार-तुम्बा-बी लेक्ट रहेमार क्षा रहेगार राज्याची करतारी चर्राइ (स्वावि) ध्वावि-श्व महासर्वेष (वहानदिन्) नोती

-अन्तर-शासकारी मचस्य (तर्गलय) व्यस्त्र बवाहि (इसमि) असमि प्रसम

इकारांत अने उकारांत छन्दी (नरवाति) प्रचारित (ज्ञादिद्) ज्ञान

> पद्ध (स्था) अगु-प्रशासका<sup>ती</sup>" र्वत् (तन्द्र) वांचनो भडातचरिस (स्थातजैतर) क्षेत्रे तत्त्वे

समत्तर्भि (अनक्तर्भिः) बाकी क्षेत्रस-समज्जार **लाक्टबर** 

पस (का) भा

filter (Hat) Fax viz

जंतु (जन्तु) जतु-प्राणी-जीवजत जोगि (योगिन) योगी-जोगी फेसरि (केसरिन) वेमगवाळो -याळवाळो-सिह-नेसरी मिह मंति (मिन्यन्) मत्री-कारभारी चक्रविट (चक्रवित्) चक फेरवनार-चक्रवित् राजा वसु ( वसु ) वसु-धन, पवित्र मनुष्य सभु (शम्भु<sup>)</sup> शभु-सुगन, स्थान -महादेव संकु (शक्षु) शकु-खीलो

# सामान्य शब्दो (नरजाति)

मगा (मार्ग)-माग मार (मार) मारनारी-तृष्णा दुस्सीस (दुद्शिष्य) दुष्ट शिष्य-इस्सिस्स विशार्थी चवहारिस (न्यावहारिक) वहेवारी-वेपारी थेर (स्यविर) स्मिर बुद्धिवाळी-पाकर-वयोगद सत गग्ग (गार्य) गर्मनी पुत्र-ते नामनी एक ऋषि वैचाहिय (वंबाहिक) वेशाई वबहार (व्यवहार) वेव्हार -वेपार कंसआर कमार (कांस्यकार) समागे लेहसालिअ (हेमशालिक, निशा ळीओ-निशाळ भणवा जनार

सुभिण (स्त्रप्त, स्वप्त-सपनु-सिमिण सुविण सिविण गणहर | (गणधर) गणने धारण क्रनार-समृहनी राणधर व्यवस्था करनार-आचार्य **अणागम (अन्**+आगम) न अनागम | आवञ्च ते-अनागमन क्तण्या (कर्ण) कान, कानी विराग (विराग) रागधी विरुद्ध भाव-वैराग्य विष्परियास (विषयीस) विष-र्योस-विपरीतता-भ्राति सद (घठ) घठ-द्वचो अकम्म (अक्मन्) कर्म रहिन -निमळ-पविञ

#### सामान्य प्रब्दो [ नान्यतरज्ञाति ]

क्ष्म (स्प) स्था-नास्-गास्थ क्ष्मम (स्पः) क्षमे पुत्रम सामी क्षमि (स्पः) क्षमा-नामी साम (साम) साम-प्राम माम (साम) साम-प्राम प्राम-गोमी पोड़ साम (साम) साम-नोम

ক্তপ্ৰ (ক্ৰম) হিচা– ভাগ্যৰ হিচাস কল सरक (यरक) गरव-तेत बरमसाम् (कमान) प्रतंता बाम क्यी प्रयुक्त कांत्रम करं का काश शहर सहस्मय (यहास्म) मोदी स-दोरी बीच पुष्प (दुष्क) मुक्ते व्यक्त (क्या) व्यक्त-विव क्या (क्या) वर्ष-ह्रेष

#### विश्वेषम

निरम् | (शिक्षा ) सेक्ष्य तिरम् | संस्थार-तेन पुष्प (पुष्प) पुष्प-गतिन सस्य पत्त (प्राप्त) केत्रत् झररन् गायस्त्रं यमेक्स

विष्मास्त्रे (विश्वलः) निहस्त-विष्ठस्त । सामज्ञी-पवरायुक्त सोक्ष्मः (वीवितः) योवेस्स वक्कामा (१६८८१०)राष्ट्री-स्व पुरुष (१वँ) वृद्धे-तरेके-एर्साम्ब्रो गुच्छ (१७६८) गुच्छ-राव-सर्थ प्रवाद (१०६८) श्रापेत स्वादी प्रवाद (१०६८) वर्ष, श्रापेत स्वादी (१०६८) श्रीमार्थ-

#### अन्यय

इत्य (इत्यम् ) ए प्रकारे तु (तु) तो इह (१६) अही-आमां दाणि राजि (इदानीम्) हमणां-इयाणि इयाणि वि+इर् (वि+इर्) विद्रयु -फरबु -दस् (दश्) दम्यु –कग्दवु प+गच्भ् (प्र+गल्म) प्रगल्म-ययु वडाइ मारवी अमराय | (अमराय) अमरनी पेठे अमरा रहेब -पोतानी जातने अमर मानवी अइ+चाअ (कति+पात) अति-पात करवी-हणव वि+सीअ (वि+पीद) विपाद पामवो-खेद करवो क थ् (क्रथ)क्यबु -क्रहेबु , वसाणबु फुट्ट (स्फुट) स्फुट धन - सीलव -फरी नीकळवु वि+चित् (वि+चिन्त) चितवबु विघ् (विघा) नीवबु

(ईपत् ) ईपत्-थोडु इशारामात्र पक्ष ( एतत् ) ए उप्पि अधरि ( उपरि ) जगर **ड**बरि

#### धातुओ

उ+यकुद्द (उत्+कूर्द) उचे कृद्व -अदर अछळब् (भन्न) माजवु –भागवु अव+सीख (अव+सीद) अवसाद पामयो-खेद थवो लिप्प (लिप्य) खरहाब्र सं+जम् (स+यम) सजम् -समम करवी पिंडि+कुल् (प्रति+कूल) प्रतिकृल थवु-विपरीत धव सर् (स्मर) स्मरण करव प+मुच्च (प्र+मुच्य) प्रमुक्त थतु न्तदा छूटी जबु सेव् (सेव्) सेवबु विङ्ज् (१२य) विद्यमान होवु हिंस् (हिंम) हिंमा करवी-हणव उव+६=उवे (उप+इ) पासे जबु -पामञ्ज

पंत्रितो इरखासे नहि जने कोप करछे सक्रि भने वे ए प्रकारे भाषा र्यने बारबार कडीहाँ य विचायी बढाई मारशे निक्र पण संपम राखाधे इं य साम्र कडीच सार्ची प्रवासी सामग्रे बने बाहनमां कोवधे

बीयो लडि

जननो कैसरी बनवा हाचीने

बाबाय पूर्व भने तुम्ह वंत्रेश धर्म कहेथे चयाचान श्रीवित प्रिव

क्षेत्र का कोच नहीं धनप्रकारी हैं द्वार शिष्यो मणशे बहि पण निरंहर दक्क्ष नारचे जने करचे

बीरो मड़ो हृद काहिर

रायगिष्ट गच्छ सदाबीर

अक्टास्ट्स ब्यहारी व

तमें कि कि पार्वपूर्ण

गुरुयो सम्मगहस्

<del>के दिख्य</del>ों

थ काही

गाम्य मुनि गवचर घरो

तेमा माधामां क्रेक्को

समन्द्रे मद्रावीरे पुरमस्य कन्पिहर तरा नुष्प्रसम् करियदिश uni beis सर्व भाष्यं पते डमा पुरस्रक्रिय पते

वपस्त्री पोगी व्याधियोती

विधा मसियक्ष

तुक्त सहस्मयं ति वोचक जियम्स बयलाई कन्देश्वि मोच्यां

सक्षे तक्कृदिदिय, पनिमा

विकार

क्यति ॥ तस्स मुद्दे इच्छं तेय व सुद्दे बीरे छवपपव इंशिसमि व विविधि

दाण का पर्णकाई ततो प इक्त सम्बद्ध र साधिर (बच्छ षमीय सम्बद्धाः शब्द्ध

जेहि यह विसीपस्सामि तेहि कयावि सुविणे वि न रोच्छं मीलभृत्रो मुणी जगे विह-रिस्तह अह सो सारही विचितेहिइ ज बोच्छं त सोच्छिसे नाऽणागमो मच्चुमुहस्स भरिथ तवेणं पावाह मेच्छ महासङ्ढी अमरायह

# पाट १४ मो

# ऋकारान्त शब्दो

ऋकारांत नामीनी ने आत छे?—केटलाक ऋकारात नाम समध-स्यक विदेश्यकृष छे.. अने केटलाक ऋकारात नाम मात्र विदोषणरूप छे

सवश्रमुखक निशेष्वरूप-जामातृ, पितृ, श्रातृ वरेरे मात्र विशेषणरूप -कर्त, दातृ, मर्तृ वरेरे

# फ्रकारांत-( संवधस्रचक विशेष्यरूप )

१ प्रथमा अने द्वितीयाना एकत्रचन सिवाय यधी निमक्तिशोमा सम्बद्धिक विशेष्यक्ष्य ऋकारात नामना अस्य 'ऋ' नो निकस्पे 'ठ' याय छे (हे॰ प्रा॰ व्या॰ ८१३।४४।) जेमकें पितृ = पितृ, पिड जामातृ = जामातु, जामाड भ्रातृ = भातु, भाड. २ शर्ममञ्जूष विशेष्यका शासारांत मामना जीव 🙃 मी नवी विमिश्वकोद्धो कर गांग के (है वा कर ८१६१४४) केमके-पिल = पितर, पिषर, बाबाच = बाबातर, बाबावर. भार = भारत, माचर. ३ बाद प्रदाना एकनचनमां उच्च नामना श्रीरन भद्र नो ना विकारी बान के (दे अर न्या टाइए४०) केरके-

पित = पिता विमा जामातः = जामाताः जामापा स्मदः = काला कावा इ.स. संबोधनना एकाचनमां ए नामोना नाम भ्र. तो म

बाने कर ए करने विकल्पे कात के हि जा करा ८१६१६६ तना ४ ) केनके-पिछ = पिछ पिछरे! पिछरो। पिछरा!

Poet Rutt Ruch! Guer!

सामाय = बामात ! सामावरे ! सामावरो ! बाबावरा ! बामाच ! बामापरे! बामापरे! बामापरे!

भ्यतः = मात् ! सातरे ! मातरो ! मातरा ! भाष भावरी भावरो । सायस्य 1

#### काराम्स (विदेवनसम्बद्ध)

९ वस्त्र निरम पेगी को जीवी-वैवनक्षक निवेक्का सकार्थ। नामने बनदों हे ते जा विशेषनदायक मामारांत कार्याने पर क्यारवाची है क्रिके-

बाय-बाह, बार कल-करा अर्थ-महा ... वियम देशा प्रमाने राता दावा क्रचा मचा निकास सीका ब्रामाने- विशेषणरूप भ्रकारांत नामना अत्य 'ऋ' मो यधी विभक्तिओमां 'सार' याय छे (हे० प्रा० व्या० ४५) जेमके—

दातः दातार, दायार कर्त्य=कत्तार, भर्त्य=भत्तार

फक्त सबीयनमा एक्वचनमां आ विशेषणरूप ऋकारात नामोना अत्य 'ऋ' नो 'अ' विकन्पे थाय छे (हे० प्रा० व्या० ८।३। ३९१) जैमके—

दात्र≈तय ' दायार ' दायारो ' दायारा ' कर्त्र=कत्त ' कत्तार ' कत्तारो ' कतारा ' भर्त्र=भत्त ' भत्तार ! भत्तारो ' भतारा '

टक बन्ने प्रकारत ऋकारात नाम उपर नणावेली सामिनका माणे प्रथमाथी सप्तमी सुधीनी नधी विमिक्तिओमां अकारांत अने कारांत बने छे तेन्दी तेना अकारांत अगनां रूपाख्वानोनी सामिनका बौर नी पेठे समजी लेवी अने सकारांत अगनां रूपाख्यामोनी साम नेका माणु नी पेठे समजी लेवी

# रूपाख्यानी

# पिच, पिअर (पितृ)

एकरचन	યદુવખન
१ पित्ररो, पित्रा (पिता)	पिसरा (पितरः)
	पिउणो, पिअचो, पिअमो
	पित्रर, पिऊ
२ पिसर (पितरम्)	पित्ररे, पित्ररा, पिउणो,
,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	पिक ( <b>चि</b> न )

a foreign freedang पिडणा (पिका पिछकारी)

w frares

५ विश्वरामो

विश्वरा

चित्रको

६ पिनरस्स

पिकमी पिकर

(पितृतः पितः पितृकः ।)

पित्रणो पित्रस्य (पित्र) पितृज 😲

को पिन्नरं पिछ ! (पितः)

विकारे विकास ! विकार !

u fratte franklin पिमरे (पितरि) चित्रकी विक्रक्ति

पिसराठ

पिडयो पिडस्स

(पितः पित्रवा ।)

(विवाधित) विमयज विभागा विकव विकर्ण (विद्वाम्) विषयांको विभयातः

विश्वपाति, विश्वदेशि

विभारेति, विभारेति विभारेति

पिकति, पिकति, पिकवि

240

विजयाति विक्रोतिको पिनरासेको पिनरेसेको पिक्को पिऊड (पितृतः)

पिकवियो (पिनम्पः) पिकसारी पिमराणः पिन्नराचं

पित्रच। पित्रवं (पितृवाम्)

विवरेस, विवरेस

पिक्स, पिक्स (वित्रुप्त) विक्रमो विक्रमो विममी विकास विका

# दाउ, दायार (दातृ)

१ दायारो, दाया (दाता) दायारा (दातार ) दाउणो दायबो, दायओ, दायउ, दाऊ

२ दायार (दातारम्) दायारे, दायारा दाउणो दाऊ (टा<sup>तृ</sup>न्)

३ दायारेण, दायारेणं दायारेहि,दायारेहिँ,दायारेहिँ दाउणा, (दात्रा, दातृणा ) दास्रहि, दास्रहिँ (दातृमिः)

४ दायारस्स दायाराण, दायाराणं दाडणो, दाउस्स टाऊण, दाऊणं (दा<sup>तृ</sup>णाम्) (दातुः, दातृण)

५ दायाराओ, दायाराउ दायाराओ, दायाराउ दायारा दायाराहि, दायारेहि दायाराहिंतो, दायारेहिंती दायाराहिंतो, दायारेहुंतो

दाऊणो, दाऊओ, दाऊउ दाऊथो, दाऊउ (दातृत ) (दातृत दातु दातृणः) दाउहिंतो, दाऊस्रतो, (दातृभ्यः)

६ दायारस्त दायाराणं दाउणो, दाउस्त दाउणो, दाउस्त दाऊण, दाऊणं, (टा<sup>तृ</sup>णाम्) (दातु दातृण)

७ दायारिस, दायारिम दायारेसु, दायारेसु दायारे (दातिर ) दाउंसि, दाउम्मि दाऊसु, दाऊसु (दातुपु ) बारको शुर्वको, कृषको बावक बार रस्ती-रेजा रिका कोर कोको का के का ने स्तरे

वाबाय । (शतायः)

ता के व श्रुपत प्रकार के रिका निया निवार निवार निवार, निवार कार्र ]

तमर तमर कर) संबंधनाचक अस्तारीत (अस्ताति) अंगो

साव (आतु) नाई विड (पिन्) पिता साधार

बामायः | (श्रावादः) श्रमाह बामापरः | (श्रावादः) श्रमाह विशेषणवायकः श्रकार्गतः (सरवातिः) शाी

बार (बाद ) बातार सङ्ग्र (सर्ग्) सर्वो-बादार संचार संचार सेवार

क्ष्म (क्ष्मे) करबार करवार

र्शे॰ दायार ! शाय !(शाव:) दावारो ! शायाय !

भाषारांव (शान्यसरमावि)

बारतीयमा कारत कोने सामाति कार्यो कारमानो देवी है निर्माच्या कार्याची है से शिक्षाच्या के क्ये क्ये क्ये कार्याची संगयी कारमानी नाल क्ये है निर्माच्या पहुच्चमाँ पहु भी वर्षा कारमानों कार्या कार्यो क्यो केरमातिक कारमानी प्रमाणिक कारमानों कार्यो क्यों केरमातिक कारमानी

### अकारांत अंग-दायार

१ दायारं २ दायारं टायागणि, दायाराइ, दायाराइँ दायाराणि, दायाराइ, दायाराइँ दायाराणि, टायाराइ, दायाराइँ

सं॰ दाय ! दायार ! दायारार्ष वाकी बचा नरजाति प्रमाणे

### उकारांत अंग-दाङ

[यादी: तकारांस अनग एकनचनमां वपरातु नश्री जुओ पाठ १४ नि० १]

१-२ } दाऊणि, दाऊ**इ दाऊँ** सं० } (दा<sup>तृ</sup>णि)

# अकारांत अंग-सुपिअर ( सुपितृ )

१ सुपिभरं सुपिभराणि, सुपिअराइ, सुपिअराइँ २ सुपिअरं सुपिभराणि, सुपिअराइ, सुपिअराइँ सं० सुपिअरं, सुपिअरं सुपिअराणि, सुपिअराइ, सुपिभराइँ सुपिअं

### उकारांत अंग-सुपिउ ( सुपित् )

१-२ | सुपिजणि, सुपिऊई सुपिऊई र्स॰ | (सुपितृणि)

### सामान्य शब्दो (नरजाति)

कुष्मिल | (कुक्षि) चूस कुष्टिल | (कुक्षि) चूस वाणित्र (वाणिज) वाणिओ धणि (धनिन) धमवाळो-धणी यहिणीवइ (मांगनीपति) यनेवी

अग्गि (अप्नि) अप्नि-आग रिस्स (रिष्म) राग्ग-सगम सुणि (ध्यिन) झण-झणझणाट, अवाज-ध्यिन अच्चि (अर्चिस्) अच-जाळ मास (मध) व्यव-योगे महाराष्ट्र देव चे।दिरुप (प्रक्रिक)यीठ समर बहन सरहर्षीक(सहाराष्ट्रीय)बदाराष्ट्रीय बरनार-पोक्रिमो महादेवनी पीक्रियो वक्ती-सराधि क्षेत्र क्ष्मक् (कर्ष) दोशे-कोवी सुध (सूक्ष) भूगो गहर (अरम) संवडी मोडम (चेरद) चेडी तुर्रगम (दुरेका) क्ल क्यार-**8**€ (89) केंद बच्छ(क्य) कर्यु-सत्तन पाष्ट्रके तुरव-कोकी सम्ब (बर्क) सूर्व जानगार्त्त शाव बच्छपर (शरहर) वहेरी सम्बद्ध (गप्त) नावी, श्वरकी (सन्त सोपता

800

सुरहर (सराध) बोरड देव वेक्ट (देवर) देवर देर-दिवर सुरद्वीम (तुरामृत ) सोरद्वीम सेरामृत-वारम्य **केंद्र** (क्ले**ड**) मौरी खेउ क्ष्मक (क्ष्म) कथ धार ( मान्यतरजावि ) शामान्य श्रम्हो विका (दिन) दिन-दग-परित्र-

संस् (मन्) कोच क्षोडिक (स्पेड्रिक) जोही सन्दित्र (संवित्र) सामझ स्रक्षिय

स्टाल्य (त्रमा) कामग्र बाद (दाद) दाद सादपु भार समार (हार) नार नार्छः

बरिस ( नर्ष ) बरघ

ब्ब्युट्स (क्यार) शिक्षार ब्याहर भाव (गाव) साव-क्याब-बकार

कोहक (कृषान) केष वस्य (वस्त) देव स्थत-व्यव बंब (पान) पान रोड (तैब ) देव तेष (क्षत्र) वंत्र

क्रीक्ष्य (काम्बक् ) मानी

कोममञ्ज (गीवन) योगन-गीवन

(विकेश | (केवर्डक) केवेब-रीयरोक रेगी गामगान देश

**रहमी-डोर**की स्रोच

-मरहहू (बहाराष्ट्र) सोटो हैप

## संख्यासुचक विशेषण

पढम (प्रयम) प्रयम-परधम
विद्य
विद्य
विद्य
दुरय (द्वितीय) बीजु -दूजु
दुर्ख
तर्य (त्विय) त्रीजु
व्यद्ध (त्विष) छर्डु
स्तम (सप्तम) सातमु
व्यद्ध (त्राम) व्यमु
व्यम (त्राम) व्यमु
व्यम (द्राम) द्रामु

सवाय (सम्राद) सवायु-सवा
दियाहुँ । (दितीयार्घ) जेमां एक
दियाहुँ । अध्य अने वीज अवधु
छे ते-दोव
अव्हाइअ । (अर्घ तृतीय) जेमां वे
अहुँहिअ । अवधु छे ते-अवी
अव्हाइअ । अवधु छे ते-अवी
अव्हाइउर (अर्घ वृत्युर्घ) जेमां प्रण
आसा अने चीधु अवधु
छे ते-ऊठ-साहात्रण
पाय (पाद) पा-चोथो माग
अव्ह । (अर्घ) अहधु ।
पाऊण (पादोन) पोणु-पोणो भाग

#### अन्यय

१ अह्व | (अथवा) अथवा अह्या | अवस्थम् ) अवस्य-अचूक अत्थ (अस्तम् ) आथमञ्ज-अद्शेन पगया (एकदा) एकवार कहि, कहि (कुत्र) न्या-कहीं आम (आम) हा-स्तीकार अंतो (अतर) अदर इस्रो (इत) आधी, एथी, वाक्यनो आरम, आ वाजुधी केवळं (केवलम्) केवळ-नकरं तहि, तहिं (तन्न) स्यां-तहीं

१उपयोग-'एत्य तुम अहवा सो आगच्छट' अर्थात् 'अहीं तु अमना ते आनो'

मारस (चन) वाच जोते पोर्ट्रिक्ट (विक्रिक्ट)ति कार क्षण कारमार पोर्ट्डित ग्रहावको विक्रिते कार्यु (कार्य) पोर्ट्डा-चोटी पार्ट्ड (कार्य) पोर्ट्डा-चोटी पार्ट्ड (कार्य) पोर्ट्डा-चोटी पार्ट्ड (कार्य) वेट पार्ट्ड (कार्य) कार्य्ड-चाराम पान्टको स्वाप्ट (कार्य) कार्य्ड-चाराम पान्टको स्वाप्ट (कार्य) कार्य्ड-चार्याम स्वाप्ट (कार्य) कार्या कार्यका स्वाप्ट (कार्य) भोरा कार्यका

सम्बद्धः (रह) व व व्यव श्रासान्य सम्बद्धाः संद्धः (वश्रुः) नांत्रः सोदिमः (योदिशः) नांत्रीः सरियाः (विका) व्यवकः

इतियाहि (श्रीका) सामक स्तिया (श्रीका) सामक मार्क्ष (श्रीका) सामक्ष मार्क्ष (श्रीका) सामक्ष सामक्ष्म (श्रीका) सामक्ष सामक्ष्म (श्रीका) सामक्ष्म सामक्ष

परिस ( वर्ष ) वाय

शृत (नृष) मृर्गे चाडम (केडक) पेडो मुरेतस (हर्रक) रात कार-हारंच-वेडे जक्क (कर्क) पूर्व काव्यावी सम्मा (नार) वाले, सक्यो सुरह्ह (स्टाप) सेरड देव

सरहाह (महारतम्) धीरी वैष

सरहर्द्वीस(यहाराम्]म)वहाराम्

सहारान्यु देख

न्छमी-सराजी सोब

को रहीमा | व्यापकीय नीर कटके की दिवें (मान्यत्यादि) त्रिव (केत) त्रिव न्यन्यनीयो त्रिव (केत) त्रिव न्यन्यनीयो त्रिव | (केती) ठीव त्रीवत्या | केती कामवर्ध व्यापक (ब्यापक) केव बद्दा (ब्यापक) केव व्यापकीय (ब्यापकीय)

तेष ('ताष) चेत्र वेशिय (दाम्बर) पांगी

सर्वाम । (बराधीन)

### संख्यासुचक विशेषण

पढम (प्रयम) प्रथम-प्रथम
विद्द्य
विद्द्य
दुइय (द्वितीय) थीज -दूज
दुइय
तहय (त्विय) श्रीज
तहय
तहय (त्विय) श्रीज
चउत्य (चतुर्थ) चोथ
प चम (प्रचम) पांचम
छुट्ठ (प्रष्ठ) छुदुङु
सचम (सप्तम) सातम
अद्दुम (अप्रम) आठम
नवम (नवम) नवम
दुसम (द्राम) द्राम

सवाय (समाद) सवायु-सवा

वियाई (हितीयार्घ) जेमां एक
दिवाई | आखु अने वीजु अहधु
छे ते-दोढ

अह्दीभ | अर्थ तृतीय) जेमा वे
अहूँ हिंस | आखु अने वीजु अहधु
अह्दी अवह्यु छे ते-अढी
अद्धुट्ठ (अर्घ चतुर्घ) जेमां प्रण
आखां अने चोधु अहधु
छे ते-ऊठ-साहात्रण
पाय (पाद) पा-चोघो भाग
अह्र | (अर्घ) अहधु
अहुँ | (अर्घ) अहधु
पाऊण (पादोत) पोणु-पोणो भाग

#### अन्यय

भमह्म (अथवा) अयवा अवस्स (अवस्यम्) अवस्य-अच्क अत्य (अस्तम्) आयमञ्ज-अदर्शन पगया (एकदा) एकवार कहि, कहि (कुत्र) क्या-कहीं आम (आम) हा-स्वीकार अंतो (अतर) अ दर इस्रो (इत) आधी, एथी, वाक्यनी आरभ, भा वाजुधी केवलं (केवलम्) केवळ-नकरं तहि, तहिं (तम्र) त्या-तहीं

९उपयोग-'एत्य तुम सहवा सो आगच्छर' अर्थात् 'अहीं तुं अमना ते आनो'

101 पात

भक्ते (मठिन्द) भरीत वर्ष हां+प+भाडन् (वय्+प्र+नाप्+ह) बाधै रीवे पान्छ बार बासब बास्यम् (बास्यन) व्यक्तन वर्षे-पश्चिमकाम् (प्रति।पव) चान् --स्वीद्धारम व्याप करते यरि+वेष् (परि+विष) वेष परणे कोन् (बोन) ग्रोग करनो, प्रशित विरम्हा (विरम्पत) मन्दर्-विश्वव नाम पामची था+राम (बानगम्) भावव

ए+क्साकः (त्र+क्षाकः) प्रवासर्-श्रद्धि+द्र (जनि+स्वा) व्यक्ति-प्राथ मेळक्त-क्यरि वर्ग एक् (एव) एक्क करवी-कोक्स सम्+धाः।समा+रेम् (बर्+बा परि+व्यय (परि+त्रव् ) परिवरणा +रम्ब) समारंग करते-इन्ह केंग्री-पर्मन रक्ति वह चारे क्षेर चर्च तेजोनो प यथेडो ध्येको के

जि+ज्यिक्स् (मिर्+विव)निर्देर तमारो बमाई दिवसे दिवसे निवेंच पासे के तेजी हमाबे घोडो पोठियो अने ऊंट क्रद्रेय खेड पामे चान्य जाते पांचरे के बाढमें विश

नमारा बनेबीको पुत्र वरसे सकि सरवानी पार पास्की बरमे चल पासको समी विताने कवित नहि तमारा माईप पोताना

चोधाची धंदर सादात्रम ब्रमाईने सवायु भाष्युं

अमे धान्यो बोकीस भक्ते बरमें साज्ञ वज गासे

बाधनी बांचमां शिवेख एउसे

नते दोड विवसे समे पक्रवार सावमें बरले ते

भाषको

बातारे वर्ध धन बाप्य

सुरह्री आ को हं न का हि ति
तुम्हें सोरहीय घोडण
वश्वाणे ह
सोवण्णिओ दहणित तंव
खिवित्या
मूओ केवलं कजि जं पाहिइ
तुवारित को हल पिहिइ
गड्डो तुरंगमो य दोन्नि
भायरा संति
दिणे दिणे तुम आसं च
पश्वालिस्स
ते हेल दीवा दी वे हिति
सो तुज्झ भाया तस्स जा—

तस्स पिउणो भाउणो य
जोव्वण विघडीश

मरह्दरोगा लोहं चयति

सत्तमंसि वरिससि आगसिस्सं

मम भाउणो भाल विसाल
मिथ

तस्स छट्ठो भायरो न परिव्विधिहिए

सहं विद्ञले दिणे दीवेहं

पापिहिसे

मम बहिणीवई पगया घणं
संपाउणित्था

पिअ 1 मम बयण न सुणि
हिसि ?

पाठ १५ मो षिष्यर्थं अने आज्ञार्थ मत्ययो

एकवचन बहुवचन
१ पु० १ मु १ मो
२ पु० १ मु १ मो
६ (६) १ ह (६वम्)
६ जासु२ इज्जिह इज्जे
३ पु० १ व हे (तु) १ नतु (अन्तु)

१ जुओ—हे० प्रा॰ व्या॰ ८१३१९७३ तथा १७६१ २ हे॰ प्रा॰ व्या॰ ८१३१९७५।

धामिनारामां विष्यर्वेते गीवं नाम धानी के व्यव नाहार्वते चीह नाम पेपती के बरक्रमां काचान हैमकी वब, ए व नाम स्रीचारेन के पालिनीय स्थान्यसमा विष्यपन्ते गाम विविक्षिण के क्षेत्रे बाह्यपन्ते नाम नोट हो

रच्यास्ट्रेस्ट, विश्वि विश्वेष्ठम काश्रास्त्र स्थानेत्र, संद्रास प्रार्थेस प्रत, सहदा जरहर को संशीष्ठि भारता क्योंने शुप्तका निर्मा की माहायमा प्रत्यतेनो प्रयोग वाव हे हे अवेड कर्वची साहिती <sup>स्</sup>र क्रम के

र इच्छाएचत− इ बच्च त ते जोवन करे एस अर्थनी एक्स ते इच्छाल्पन । इच्छानि च सबद

रै विद्याल्योन केला करना। तो क्लं सिमाद – च करमने 415

व निमंत्रच-फेरण क्यां को आधि न करवार दोक्नो मार्चदार वाव एचे प्रत्मा श्रोकं संते क्रवत ~ वे बार सञ्दा करो

ध भारतेष्ठम क्रेपा वर्गाशकी शाहित करते के न करती वे स्का क्रमर रहे एकी अरुनाः एत्व वन्नित्तव - नार्टी नेती

अपनीय समार देशका- वय पातात - अपने काडी

६ श्रीप्रप्र:-एक प्रधारणी गारणा कि बाद शामरण का<u>स</u> कम मार्ग्स प्रदान - १६ ६ व्यापारच गण के आवार गणे हैं ध प्रार्थमा थायनी पानका तक लायम काल - वारी नायनी हे

इं आसम मह

८ प्रेय-विद्यारपुरकर्ग प्रेरमा यह कुनड - वहाने करें।

- अनुद्धा-निमणुक-'भव हि अणुषाओ घड कुणउ '-' तमे निमा-एला छो, घडाने करो '
- १० अवसर-ममय-' भवओ अवसरो घड कुणउ '-' तमारो अवसर छे घडाने करो ' अर्थात् तमारो काम करवानो समय थई गयो छे एटले काम करो
- ११ अधीष्टि-मान साथेनी प्रेरणा- भव पिक्को वय रक्सड '- 'तमे पिक्कत छो, ब्रतने साचवो '

### धातु

वह्यु (वर्ज्) वर्जवु-तजी देघु कोच् (कोप्)कोपावसु सेव् ( सेव् ) सेवबु -धारण करबु आश्रय हेवो **छिंद्** (छिनद्)छेदबु -हणवु-मार**बु** लभ् (लभ्) लाभवु - मेळववु भन् (भन् ) थनु - होनु ग्येस् (गवेष्) गवेषवु -शोधवु वि+िकर् (वि+िकर्) वेरवु वि+प्प+जद्य (वि+प्र-जहा) त्याग करवो-दूर करवु<sup>®</sup> करप्(कल्प् )खण्बु -उपयोगमा लेब् **हण्** (हन् ) हणव् कुन्त्र (इह) करव (पर्य) जोवुः

सं+जल् (स+ज्वल) वळवु — कोप करवी उव+आस् (उप-आस्)उपासना करवी **गच्छ** (गच्छ) जबु-पामबु भा (भी) बीव जिण् (जि) जीतवु -जय मेळववी खल् (स्खळ्) स्वलित यवु, दूर यबु नि+द्धुण् (निर्+धुना) सक्षेरवु-दूर कर्य वस् (वस् ) वसञ्च –रहेन् प+माय् (प्र+माद्य) प्रमाद करवो-आळस करवी वि+णस्स् (वि+नश्य) वणसी जबु –नष्ट यबु –बगङबु मा+**लोट् (**आ+छट्य) साळोट्चु

१ वर्ष्युक्त वद्या प्रत्ययो क्षागर्वा धातुना अकार्यत मेंथना मार्च भ नो 'ब' विकास धार के बेतके-

इस् + थ - इस् + ध + व = इसेव इसव इस् + मो - इस् + ज + मो = इसेवी इसमी [ अ' विकरण मादेशामी पाड १ जि १ ]

२ प्रयम पुरुषका प्रत्ययो कागर्ता चातुका अध्यर्गत अंधवा

श्री में मो मा तथा है विकार वाय के वेगके-

स्म + म - सम् + म + म = स्ताम् स्तिम, स्मृ

हे मकारीत संगत संगता है। बारवयना बावः हिरोप बाप के अने क्यांच प काला कत्व 'कंको 'बा' पण याप के

इस + म + क्रियास शब्दा + थ + क्रियाच्छाति

ध कोइक क प्रयोगमां बीजा पुरुषतो (एकश्वनती) 'व' के

'तु' प्रत्यस स्नागर्ता पूर्वमा 'म' मो मा' पम धाप के

क्षेत्रके —सूच्+ अ + व ≃ शुलाङ श्रुवड शुनेड

क्षपानमान

इसमें, इसामी रेषु इसमु इसाम्

ब्राह्मिक इसमी इसिम्, इसेम् २ पु॰ इसाध्य इसीस्ट, इक्रेज्जस प्रकार हवेंद्र

इसारि, इसरि, इसेन्डरि इसेओ इस

३ पु॰ इस इ इसेट वर्षत वर्षेत्र, वस्तित

दसत दसेत

ar ear hit 's

सर्व पुरुष | इसेन्ज सर्व बचन | इसेन्जा (क्ट क्या गाउँ सुओ पाड है) म्रो

१३ म्प्र पाठमा (जुओ पातु १०६) बताच्या प्रमाणे प्रत्येक स्वरांत बाहुना विकरणपाळां अने विकरण विनानां अ गो बनाववा अने ए तैयार यएला अ गो द्वारा प्रस्तुत विष्यर्थ अने आज्ञार्थना रूपो साधी टेवां जेमके — हो (विकरण विना)

द्दोय (विकरणवाळु

१ पु० होमु

होमो

१ पु॰ हो अस होसासु होइम होशमो होशमो

होइमु होएमु हों हमो होएमो

२ पु० होअसु, क्रोक्स

होपसु, होग्रज्जस

होए**जसु**, होआहि

होसहि, होपज्जदि,

होपज्जे

होअह होपह

पूर्व प्रमाणे 'हो' वगेरे वमां स्वरांत भातुकोना असी बनाव विभाव कने आहार्यनां वमां रूपो साववानां छे

सामान्य जन्दो (नरवाति)

भायरिय (भाचार्य) आचार्य-धर्मगुरु, विशागुरू

पाज (प्राण) प्राण-जीव पाणि (प्राणिन्) प्राणी सस्तंत्रम (असयम) असंयम

अ**स्तजम (अ**सयम) असयम **अप्प (**भारमन् ) आत्मा−भाप-

पोते चिन्त (निन्न) एक सारविनु नाम बोस्म (नद्य) बोजो हरिण (हरिण) हरण दाहिम (दाहिम) दाहम तिल (तिल) तल छेम (हेद) हेदो बोक्कड (बर्कर) बोक्डो-बकरो गन्म (गर्भ) गाभो पायय (पादक) पायो

वेसम (वशक) नासो-पीट

भारव (नारक) मारो

#### नाम्पत्रसाति साबन्ध (राज्य) गणनाति सङ्ख (बस्र) हान

साक्षरप ( बश्चाक )शहर-सासराज वर निषाय (रिशाम) नगम-महासभ बिकास (रिसल) वहाने प्रया SEE-BOTT

धेश्य (अन्तर) १४

प्रशास (पर्माण) प्रसास

विशेषम

बार शका येण्ड (चिड) येन-चास क्रिय (क्रिक्र) क्रोड योत्तिम (बीश्वर) योद्य वारित्र (नक्त) बर्मा-श्रय यय (क्ये) थी

बरम्बरूप (बहुर्स्सक) बोह्रं-

केंच्य (भाग) राज पोड़ (क्रेप) परोच्य-परोवेश पच (त्रप्त) व्होम्यू-पहोस्त् मैदाल (लेदाव) नेदान-पंतेदाव श्रीहरूमधी क्षांबिक्क | (कामाक्क) धानाळ-

रसास्त्र (रक्का) रक्क∽ रतासु रस (१७) राह-रनेड डब्ड (शाम) अही-हमो-साम कर-नजी पर्स उन्हें-करों (रेस विषद् (शिक्त) रोतं-भगोदार शरिक्य (वॉभवर) क्यूक्-ध्राम विकाद (स्थित) एई-सर्वाट र्शस (बेबस) बांच -विकोष

ज्ञास (४२ल) क्यंत-म*ाना* Man or

याचर नवु-केंग्रज प्राचा (गार्ग) भरेष प्रधारची क्षतिका (बोहर्का) बहुछ

**डा**याख**े** 

महिं(एक) सर्वक्त

रुष्टि (२४) व्यां-का

कर्षि (क्षत्र) शरां-कर

तुं इक्षाने न हणजे ते पापप्रयुक्तिने न करे हे चित्र! जा अने हरणने शोध मुनि असंज्ञपने चर्जे तुं चीटामां जा अने टाड मने लाव पोते पोताने शोध, बहार न भम तेनां बधा शल्यो बळो ब्राह्मण ! घोकडानो होम न कर पण तलनो होम कर सर्व भूतोमां प्रेम करो प्राणीना प्राण न हणो घोढा उपर पलाण राख

सावज्जं वज्जउ मुणी
ण कोवड आयरिय
न हण पाणिणो पाणे
संनिहिं न कुणड माहणो
संबुडो निद्धुणाउ पावस्म
रज
सक्य गंथ करुह च विष्प
जहाहि भिक्खू!
कि नाम होज्ज त दम्मय
जेणाह पाणा दुम्खं न
गच्छेज्जा
गच्छाहि ण तुम चित्ता!

विचेण ताणं न लहुउ पमसे
उत्तमट्ठ गवेसड
वसामु गुरुकु है निष्वं
असलम णवर न सेवेज्जा
मिम्न न कमिव छिदेह
वालस्स वालस पस्स
वालाण मरण असई भयेज्ज
सुयं सिहिंहजा
गोयम! समयं मा पमायड
सिव पय विणस्सड अञ्चपाणं
न यण टाहाम सम नियदा!

पाठ १६ मो

विष्यर्थ (पाछ)

रिपर्नेग म बाब प्रक्रों का तीने अधी है।

१९ अलामि प्रशासी

रेष क्याचि क्रमाह and:

1ेपु≎ आरय क्या क्या

क्य

731

पर के का कारियाता अन्यते करावर्धा पहेलां पापुण भ भी इ समें ए शाम के कैंदरि:-

इस

१ पु॰ इसिज्जामि इसेन्द्रामि

९ पु । इसिज्जासि **(**सेरबासि

**हमित्रश**नि इसेर≅सि

≰सिरशामो श्रमेक्तामो

हसित्रबाह

हरिस्माह

३ पु० हसिज्जप हसेल्जप हसे दसेय दसिज्ज हसेज्जा हसेज्जा

द्वसिज्ज, ह्येज्ज ह्यिज्जा, ह्येजा

सर्व पुरुष ) हसिज्जह सर्व वचन ) हसेज्जह

सवयचन होएजाइ

'हो'नु विकरणवाछु 'होअ' श्रग थायः तेनां ऋषो 'हस्' प्रमाणे जागवां अने ए रीते विकरण छगाडेलां तमाम स्वरांत धातुनां ऋषो जाणवां

( विकरणवाळुं )

विकरण विनानां 'हो'नां रूपो आ प्रमाणे

१ पु० होजामि होजामो
२ पु० होज्जासि होज्जाह होज्जिस ३ पु० होज्जण होज्जा होप होज्जा होएय होजा होज्जा भाग प्रक्रमानी पपराप्तनी वीजो केटबर्गक अनिमानित स्पर्धः

(कुर्यात् ) (कुर्याः)

(निक्चात्) निक्वे

(सभितापर्येत्) समितावे (समिमाचेत्) समिमासे (—— ) (सिया

(स्पात्) {शिया (समा (सम्प्रियात्) शब्दे

(ब्रामिन्यात्) सन्मे (इन्यात्) दक्षिया

विवास्त हाने योगे ज्याचेका बच्चोमी शंध होन हो बा पहरूप बचारेका निव्यं क्रमनीयों करेगा वह बड़े हे उस इस अस्तय — बाम इस्त्रका — चार्च द्वे करे स्वि

प्रदा के समामना जनमा बाहुको अनोधः

सहद (भानु) — 'सहदामि सो पार्ड पाडिक्क' — नदा राज्य से न पार्डने मध्ये

मनावेश्य तुर्वे व तुन्तियस्यस्यः — श्रीमाथना वर्षे हुं हैं नहीं सबै

म नाये काडवालक कोड क्ल सब्द (काल कैना वजन स्वता कोरे)

काओं जे सणिक्जानि — वश्रत के हूं मधु वेक्स जे शायक्वति — वेक्स के हुँ गा क्यों, उपारे एक किया बीजी कियानु कारण होय त्यों पा आ पाठमा जावेटा विष्ययं प्रत्ययो पा वरराय हे — 'ज्ञड गुरु डवासेय सत्यन्ते गच्छेय' — 'लो गुरुनी डपासना करे तो जास्त्रनो छेडो पामे'

## घातुओ

टच-पी (टप-नी) पासे हर्ड बर्डे पस-ियण् (प्रयम्ग-प्रतिम्बर्भण) पाद्ध सोंप्तु पिंड-नी (प्रित-नी) पाद्ध देवु-पिंड-पी। सास देवु-बरट देवु बर् (कृ) वरवुं-स्वीकारवु-बरदान टेवु साद् (वाप्) नावर्ज, वनरावनु नृर, (त्वर) त्वरा करनी-इपाटा वस्ष नव सं+िटस् (अम्+िटस्) संटेशी
आपवी-स्वन करतु
टव+टस् (टप+टर्ग) टेखादतु -पाचे चंडेने बतावतु
अणु+जाण् ((अनु+जाना) अनुजा
अणु+जाणां | आपवी-समिति आपवी
सं-स्वृह् (सम्+वर्ष्) सर्वन
करतु पोपतु -साचवतु
स्विणां (चितु) चगर्तु-एक्दु
करतु

### क्रियाविपचि

उपारे परस्तर सकेतवाळा थे बात्रयोत एक समुक्त वाक्य बनेळुं होय अने टेमां आती बन्ने कियाओं कोई मात्र साकेतिक किया लेवी अगक्य माम्बद्धी होय त्यारे कियातिपत्तिनो प्रयोग याय छे कियातिपत्ति एउटे कियारी अतिपत्ति-असमिवित्ता कियानी असमिवित्ताने स्वववा स कियातिपत्तिनो उपयोग याय छे

#### मत्ययो

सर्वेषुरुप - नतो, माणो, उज्ज, उज्जा (हे॰ प्राट व्या॰ ८।३। १७° दथा १८०)

एक्स्का मच-मनतो सवसाधी हो- होस्ती होस्ताको

बाँची बोमानी

सन्-सनेवज, सनेवजा

धी-- शोपन्य सोचन्या शोपन शोजना

[ नावा>-नारीमारियां नदी नदा शवा शाब्दे क्षत्रे मान्य प्रकार

में का पर्जा को बताओं के से बाद फारनादी व्यवसायों है.

सुनि पापने सर्वे

माधापेने कोपानका नहि केतरमां वी वाव भनेबा काम शाहे लगा कर रुप्यां सं पर्ने गारे जन

बापरे पुत्र भने दो पंडित बाब (कियारि )

विश्लेल तार्चल कम प्रस्ते

वसे गुरुकुछे निष्ध बक्तमङ्ग गर्वेसप क्षेत्रमा ! समर्थ मा प्रमायप मर्गता यजमाना श्रीनंता होममाना

शासक

क्यक्याचा के भागां चरीअतियां करी तथा क्रिमारिपरियो बहुनवाडी प्रनोध कोक्याची के बोकाओं तथी ब्यानों क्यां नहीं

धवा राश्चं हुं ते सत्य बचनवे नोहें

समय के हैं यह मेर्रे कर् थाने के हु शारा काम शादे संमति वापै

रिष्पने ग्रुक्ती पासे क्यें वा तने जत गाउँ सुचन वर्ष

वाकार्ण सर्व अलई मवे सावार्य वस्थार सुणी बीको होती तथा श्रेप पारी बहर्सती

न कोवए आयरियं संनिहिं न कुव्यिज्ञा संयुद्धो निद्धुणे पावस्स मळं सन्वं गथं कलह च विष्प जहेय सिफ्सू रावणो सील रक्खतों तया रामो त रफ्खंतो

### पाठ १७ मो

# आकारांत, इकारांत, ईकारात अने ऊकारांत नामो [नारीजाति]

प्राइतमां आकारांत नामो वे जातना छे -केटलाक आकारांत नामोनु मूळ रूप अकारांत होय छे अन नारीजातिने लीधे तेओ आकारांत बनेला होय छे त्यारे बीजा केटलांक आकारांत नामोनुः मूळ रूप तेनु आकारांत नथी होतु पण तेओ बीजी रीते व्याकरणना नियमने लीधे आकारांत थयेला होय छे

आ नीचे ए वर्षे आकारांत नामोनां रूपो आपेलां छे जेओ मूळवी अकारांत नबी तेपन्न सनोधननु एकत्रचन प्रथमा विमक्ति जेनुं ज याब छे त्यारे जेओ मूळवी अकारांत छे तेपन सनोधननु एकत्रचन करतां तेमना अत्य ' आ 'नो विकल्पे ' ए ' करवामा आने छे - ( हे० प्रा० थ्या॰ ८।३।४९) ए वेय नामोनां रूपोमां यीजो कशो सेद नबी,

जेमके —ननान्दु — नणंदा — हे नणदा! अप्सरस् — अच्छरसा — हे अच्छरसा! सरित् — सरिया — हे सरिया! सरिआ — हे सरिआ! वाच् — वाया — हे वाया!

माख — माखा — है माहे ! है माख! या — एमा — है रमें ! है रमा! बाला — बाला — है बहेत ! है बहेत! देवत — हैवना — है बेहते ! है देखा! मैच — मैमा — है मेहे ! है मैहा! क्याक्याम माचा [मृज अकारांत] र माखा≃माखा (शाखा) 1मासा+ड=सम्बद माधा+जोन्माक्षाणे १माका-धाका (सामाः) र मासा+म्≈श्लास (मासाम् ) सामा+द≪सासाद गका⊬को सळाजी माध्यश्यासा (भाषाः) श्माका+स=मास्राव (माहचा) मास्रा+हि=मास्राह(माक्रामिः) मासा+१=माकार नामा : विन्याकार्दि माजा+प=माणाप भाषा+हिँ=माकाहिँ ¥ मासा-नन्मासात्र गाधा+वश्याद्याच (शकानाम्) माखा+६=मासाह माधा-चन्नायाचे मासा+प=माखाप (बाकारी) ६ ४मासा+#=मानान (मानापाः) १ के प्राच्या शहर । र के प्राच्या ।।१५ १ दे घरणा ।३। ६। वचनी विनयिनां अन्यारीय बायने सामात व भी 'सो' अने 'सो' अनवी का वहीं क्यांबैस त्याम नामोने सार्ग का केयरं---धावात साकाशे नाव्यती नाव्यती

278

माला+इ=मालाइ माला+प=मालाप माला+हितो=मालाहितो

माषा+हिंतो=मालाहिंतो

(मालाभ्य)

माला+स्रतो=मालासंतो

६ माला+अ=मालाब

माला+ण≈मालाण (मालानाम्)

माला+इ=मालाइ (मालाया )

साला+ण=मालाण

माला+ए=मालाए

७ माला+अ=मालाथ(मालायाम्) माला+सु=मालासु (मालासु)

माला+इ=मालाइ

माला+सु≃मालास

माला+अ=मालाप

सं॰ माला=माले । (हे माले !) माला+उ=मालाउ माला+ओ=मालाओ 🐣

माला=माला <sup>1</sup>

माला+माला (माला )

# वाया (वाक्) [मूळ अकारांत नहि]

'बाया'नां बघां रूपो 'माला' जेवां ज करवानां छे विशेषता मात्र संबोधनमां हे 'हे वासा!' ए एक ज रूप थाय, पण 'वाये!' 'वाया।' एवां वे रूपो न याय

इकारांत

वुद्धि

१ बुद्धी ((बुद्धिः)

वुद्धि+उ=वुद्धीउ । वुद्धि+बो=बुद्धीओ (बुद्धय )

बुद्धि+बुद्धा

हे० प्रा० स्या० ८।३।२७।

#### 216 **श्वृत्ति+व**≔**वृ**द्धीत

वृद्धि+भो=पत्नी हो पुनि-पुर्वी (ब्रुटीः) ३ बुद्धीमः बुविश्मान्बुवीस (हबसा) बुवीबि (बुविसि ) ब्रवीविं दुर्वीष ४ दुरीय बुकीय (बुद्यीलाम् ) वजीप दुवीना दुवीर (दुवने) दुवीप (दुवये) उद्योग (इक्या) स्वीर डबीप (इबे )

डबीहिंचो (डबिन्पः) व्यक्तिंग इक्षीना (डक्याः) श्रमीच (इसीनाम्) जरीचे उसी ह क्सीय (वर्ष ) धुरीस (धुरिय) ও বস্ত্রীপ पत्नीमा (अवयास तकी स्ट उद्योद इयो )

मं पत्री प्रक्रि (इसे !) इसीय उसीयो, पुत्री (उसपा) P Ing inites अलो प्र २९६ दिल्ल ४-सबीउ

५ ४डब्रीम **क्वा**विंचो ६ उन्हीं न

पदी-र

बढानी पुढिली

# ईकारांत नदी

नदी+आ=नदीका १ १ नदी (नदी) नदीउ२ नवीओ (नच) नदी २ नदिं३ (नदीम्) नदीया नदीउ नदीमो नदी (नदीः) नदीहि (नदीभि ) ३ नदीअ४ नवीहिं नदीआ (नद्या) नवीहिँ नदीष नदीप नदीण (नदीनाम्) ४ सदीअ नदीण नदीश नदीह नदीए (नधै) ५ नदीअ५ नदीया (नण) नदीइ नवीप नदीहिंतो (नदीभ्य) नदीहितो नदीसुतो

१ हे॰ प्रा॰ ध्या॰ ८१३१२८। २ हे॰ प्रा॰ ब्या॰ ८१३१२७। ३ हे॰ प्रा॰ य्या॰ ८१३१६। तथा ८१३१५। ४ हे॰ प्रा॰ ब्या॰ ८१३१२९। ५. जुओ प्र॰ २१६ टिप्पण-४ मधीउ, नदीओ नदिस्तो

ररेट ६ मदीश नदीन (नदीनाम्) नदीना (नदाः) मरीमं नदीय मधीय नवीच्य (नवीच) नवीमा (नधाम्) मशीर्ध मदीर मदीय र्स0 श्लिक् ! (स्विट् !) नदीमो (नयः) डकारांच पेख (थेडा) १ वेष (वेद्धाः) बेचुको (बेजवः) र मैच्छी। (मेख्या) थेणु (धेशः) ३ देश्य पेणमा (पैन्ता) वैष्टि (वैद्यमिः) पेचा **Awill** विवरि । इत्तर र है **म**ेन्स देशरण

३ हे मा ब्ला टाराध क है जा ब्ला बारास्थ

```
४ घेण्अ
                            घेणूण (घेनूनाम्)
  ्घेणुआ
                            घेण्णं
  घेण्ए ( घेनचे, घेन्च )
५ घेण्य
  घेण्डें (धन्वा, धेनो)
  धेण्ड
  १धेणुंड
  धेणुळा
  घेणची
  धेणुहितो
                            घेण्डितो (घेनुस्य )
                            घेण्सुंतो
६ घेणुब
  घेण्या (घेन्वा, घेनो ) घेण्ण (धेनृनाम्)
  घेण्ड
                            घेणणं
  घेणप
७ घेणुँअ
                            घेण्छ ( घेनुषु )
  घेण्या (घेन्याम्, घेनी) घेण्सु
  घे्णइ
   धेणंप
सं॰ धेणू,॰ घेणु ( घेनो ! ) घेणुड, घेणुक्षो ( धेनम )
                                   घेण्
                        ऊकागत
                      वहु (वयू)
१ बहु (बधू) (हे॰ प्रा॰ ब्या॰) बहुउ, बहुओ (बध्व) (हे॰ प्रा॰
                 ८।१।११।) बहु
                                          म्या॰ ८।३।२७। )
                 २१६ टि• 💌 🤉 हे० प्रा० ब्या० ८।३।३८।
```

```
Ren
२ वर्षु (वयूम्) दिमामा
                           बहुड बहुमी
            । शाहका वना भ) वहू (हे अरू ब्ला नाहक्स) (वसूर)
रे बद्धभ (हे बा म्या॰ टी शेष्ट्रप) बहाडि (बप्रिमा)
                            नहर्दि
  बद्धना (बच्चा)
                            वड है
  TIT
  बहुए
                            गद्भव (वपुनाम्)
र बहुम
                            पदर्भ
  च्डमा
  नकर
  बहुँदे (दमी)
4 484
  बहुमा (बन्नाः)
  चहर
  बहुप
  बहुर
  वर्गो
  बहुन्त
  पहिंची
                            वहविसो (बयुम्पः)
                            गामको
                            वहूज (बच्चाम्)
६ वडम
  बहुमा (बच्चा )
  481
  वद्वप
O STH
                           महस् (भप्र)
  बहुमा (बज्जाम्)
  गहर
  बहुय
```

याओं बहुड (वस्तः)

से बहु(क्यु!)

(देशास्त ३९) - त्रक्रोच १६वि नामनु अग अने प्रत्वयनी अश ए बने छूटा पाडीने ज जणा-वेटां छे अने साथे ए उपरभी साधित भर्तां दरेक रूपी पण जुदा जुदां बतावेटां छे

आकारांत, इकारांत, ईकारांत, रकारांत अने ऊकारांत-नारीजाति— नामोनां बधां रूपो तहन सरखां छे, जे फेर छे ते निह जेवो छे एकी मूळ अग अने प्रत्ययोनो विभाग-ए पद्धति एक ज स्थळे मुकी ए बधी साधनिका समजावेली छे

दीर्घ ईकारांत नामोने प्रथमा अने द्वितीयाना बहुवचनमां एक 'आ' प्रत्य नवो लागे छे तथा आकारांत सिवाय उक्त बघां नामोने तृतीया-दी सप्तमी सुधीना एकवचनमा पण 'आ' प्रत्यय वघारे लागे छे-आपेलां क्यो ज आ फेरफार बतावी आपे हे

ए नारे प्रकारनां नामोनां नघा रूपो तहन सरझां छे छतां सस्छत सायेनी सरखामणी नतानवा अने विशेष स्पष्ट करवा ते इरेकनां सर्व रूपो जनावेला छे तथा ए रूपो द्वारा भाषानां प्रचलित रूपोनी सर खामणीनु पण भान बाय एम छे

- 'तो' अने 'म्' प्रत्यय सिवायना बीजा नघा प्रत्ययो लागतां पूर्वनी
   स्वर रीर्घ घाय छे 'बुद्धीओ', 'पेण्ओ'
- २ 'म्' प्रत्यव लागतां पूर्वनो स्तर इस्व थाय छेः 'निर्द्र', 'वहुं'
- ३ उर्या मूळ अग ज वापरवानु छे जवां तेने बीर्घ करीने वापरवानु छे 'बुद्धो', 'क्षणू'
- ४ इकारांत उकारांतनु समीधननु एकवचन विकल्पे सीर्घ थाय छे 'सुद्धि !' 'नुद्धी '', 'चेणु !' 'मेणू'
- ५ ईकारांत ऊकारांतनु सबीधननु एक्वचन हस्त थाय छे 'निद्।'
  'बहु!'

सका (बदा) बदा मेद्दा (मेवा) मेवा-बुवि पण्या (प्रजा) कर धारणा (बडा) राजा-बाय-बयव संधा (बन्ना) क्रांत मेद्रा (रम्पा) चंत्र-वांश्वची मुक्बा (इप्रदा) प्र तिमा (तृक) तरव-काल्य तच्या (तच्या) तच्या मुक्ता } (ख्या) ख्या-प्रकाह पुष्पा (पुष्पा मन ৰিবা (কৈনা) কিয় মাজা (লারা) লারা-লাব १सदा (श्वया) भूव फाउडा (बडमा) विका निमा (लिया) लिया-राजी श्रीतमा (तिमा) विशालका

भाषा (बीचा) शम

शहबा (नाकः) नाव

- अन्तर्म, वान वी रच सम्विद्या } (तिक्रप) नगी समित्रा । नगी समित्रा (योग्य) वर्ती विश्वप्र (योग्य) वर्ती वर्ती वर्ती (योग्य) वर्ती व

ારક શાયા છે 🛪

सकापा (बन्नच) वर्ध

महिमा (पत्तिक) गरी

विकासिका वा नय-प्र स्मावसिका (न्याप्त्रवा) नावी सावस्क्रम (न्याप्त्रवी नदेश नावा (नावु) नावु-दान-प्रेय १ सामा (नावु) नावु-नगरी १ सामस्य (नावु) देशे, स्माय सामस्य (नावु) देशे, स्माय १ हे सा मा दोग्रर। ससा (स्वम) स्थमा-बेन
१वाया (बाच्) प्राचा-बाणी
१सरिआ | (सरित्) सरितासरिया | नदी
१पाहिवका | (प्रतिपदा )
पाहिवया | पहनो तिथि
१पारा (गर्) गिरा-बाणी

सपया (सपना) सपन-संपञा (पनि चिद्रिका) चंदनी, चिद्रिका चंदी-रूपुं चंदिमा (चन्द्रिका) चन्द्रमानी चंदनी रन्छा (रण्या) रथ बाछे तेशी

पहोळी शेरी-शेरी

यादीः 'अच्छरसा'षी मांधीने 'सपमा' मुचीनां नामो मूळ अकारांत नथी, ए थ्यानमां राखवानु छे ]

नुत्ति (युक्ति) जुक्ति-योजना रित्त (रात्रि) रात माइ (मात्) मा-माइ मृमि (भूमि) भूमि-मौ ज्वेह (युवति) युवति धृति (धृति) धृत रद (रति) प्रेम-राग मइ (मति) मति दिहि | चिद्र (धृति) धैय सिप्पि (ग्रुक्ति) छीव सत्ति (शिक्त) शिक मति (स्मृति) स्मृति-सरत दित्ति (दीप्ति) (दीप्ति-तेज पति (पर्कि) पक्ति-पगत-पांत थुर (स्तुति) स्तुति-धोय

कित्ति (कीर्ति) कीर्ति-कीरत सिन्धि (सिद्धि) सिद्धि रिद्धि (ऋदि) ऋदि-रध संनि (शान्ति) शांति कित (कान्ति) यांति खति (क्षान्ति) क्षमा कति (कान्ति) यांत-इच्छा-होदा गड (गो) गाय-गड कच्छु (बच्छु) साज-वरज धिज्जु (विद्युत्) वीजळी उज्जु (अजु) सरळ माउ (मातृ) माता दद्व (दद्व) घाघर-दराज चचु (चण्नु) चाच गार्ट (गी) गाय षाची (वात्री) वात्र

। है० प्रा० च्या० टाशावुषा २ है० प्रा० व्या० टाशावुहा

बहिजी (बन्धिमी) बहेन बाराणसी |(धरान्धी)शरान्धी नापारसी -नगर विकार (प्रची) इभी मराई (मानी माई-मनरानगरी शासा प्राची (प्राची) धार्बी (सची) धर्म सिसी (वैजी) विकास-वैजी प्रति नरसू (बार्य) शह-नामे कमेद (करेम्) शतनी क्षणकंत्र (क्रांग्यू ) मोरबे मधाक्र (स्थाप्) दुर्गने-काळ धार्म

बार्च ( वच् ) वह केले विकेशारी स्टब्स सभी

के बेज ! लगी सर्ववधी श्रीक्रमे शब्दी व वरे लेख से बेला

माने पहले के तेवी बकार्य सकि प्राप्त

थुन समें को पंत्रित धाप । कियारा॰ )

बाकादामां बीमजी क्षमणो ध्यक्तो वस सोसीय कर्ण

सेमी साध मने जातिय शायको के लाव करमान्त्र

चान्हो माय भने हाधणी फळली

माना वह शीवही कार्ति यमें कावबी विक्रि मार्थे प्रयास करो

क्रमती (बस्थी) के

राई (राग्री) राख

नारी (नारी) नारी-नार

रद्यारी (रवनी) रवनी-रेज

क्रमारी (इमाधै) इशरी

तक्षी (तक्षे) तक्ष्य क्षी समापी (कालो) शालो

सार्द्वी (शमी) "

त्तव्यक्षी (तन्त्री) पत्रको स्त्री इत्यी (क्षी)-की-विरिका

वेदी भीम कपर नमृत है

अपे तारी बीम पपर क्रेट के सच्चेइ कालो तूरंति राईंओ
वरेहि वरं
हे धूआ! जहेच देवस्स
विट्ठिजासि तहेच पदणो
वट्टिजासि
समह ज मप अवरदं
दीवो होंतो तया अंधयारो
नस्सती
चच्च, देहि से संदेसं, मा
रुयह
गडछहण तुटमे देवाणुष्पिया!

समणो गिहाइं न कुव्विज्ञा स्र्वांतं सेवेज्ज पहिए मिश्र कालेण भक्ष्यप तुम्हे गच्छतो तया अम्हे गच्छमाणा तओ तस्स मा भाहि उट्टेह, बचामो श्रहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिवंध करेह पवहण जुत्तमेव उवणेहि संदिसतु ण देवाणुप्पिया ! ज अम्हाणं कज्ज

### पाठ १८ मो प्रेरकमेद प्रेरक प्रत्ययो

स | (अय) (है॰ प्रा॰ ब्या॰ ८।३।१४९।) याव | (आपय) आवे | (आपय)

मूळ घातुने 'क्ष' 'ए' 'साव' अने 'आवे' प्रत्यय लगाडवायी तेनु प्रेरक अग तैयार थाय छे

> कर् + अ = कार | कर् + आव = कराव कर् + प = कारे | कर् + आवे = करावे

 मृद्ध वासुमा वर्षालामी छोडा दिनो प्रायः 'वृ' वाय क्षे अमे जिन्दी प्रायः 'वर्ष' वाय के' (है प्रायः स्था ८१८१६२०)

बिस्ट् + क्षेत्रः — क्सावः क्षेत्रोहः क्षेत्रावदः क्षेत्रावदः द्वतः + योगः — क्षेत्रवः योजिवः वीजावदः वीजावदः

र वर्षण्यातं रीक्लरणका श्राह्मयाको 'श्रादि स्थयत क्या वर्षारे असी के (दे प्रा. च्या ।३१९५ ।)

> ष्टः + भ -- ष्टरः ष्टरः ष्टावरः ष्ट्रावरः ष्टावर

३ माँ मने दि ज्ञानम कामको पातुस्य क्यांत्व क्यांनी माँ बाद कें (है जा स्थान ८१३१९६१)

> सम् — साम — सामह सम् — सामे — सामह

प्रकाम 'सम्' शतुर्थ तेरक क्षेत्र 'समाव'९ (सम्स्थाव) यम वासं के (है जा न्या (३१९५९))

मम् + अ अम्महः सम् + य - सामेह सम् + अश्व - असावहः सम् + आवे - समावेह

भर नव - समावद, शमावेद भारतस्था कोई कोई गरीनीमा तरवासुबद अदे अपन रम

 गृक्षाणी जाणको एक काड जनवन्त्रत्वे केएक चाहुनीची प्रकार कर्म क्रीको लगीर चारणु चरावणु कर्मनु-क्रेमावणु चारणु-करावणु बारत्-बारावणु क्यानु-चरावणु वर्गेष्टे. लागे छे अने आ 'अवे ' प्रत्यय लागता घातुना उपीत्य 'अ'ना 'आ' याय छे कर् + अवे = कारवे - (कारापय) -कारवेह - (कारापयित)

उक्त रीते घातुमात्रमां प्ररक अगो साधी ठेवाना छे अने ते रीते सघाएलां प्ररक अगोने ते ते काळना पुरुपवोधक प्रत्ययो लगाटवायी तेमनां दरेक प्रकारना रूपाख्यानो तेयार थाय छे ए रूपाख्यानो साध-बानी बधी प्रांक्रया आगला पाठोमा आवी गइ छे छत्तां उदाहरणरूपे अहीं एक एक रूप आगवामां आवे छे

घेरक अग

रुप

#### वर्तमानकाळ

	एकवचन	बहुवचन
खाम —	खाममि,	खाममो, खाममो
	खामामि	स्त्रामिमो,
	खामेमि	<b>स्त्रामेमो</b>
स्त्रामे—	खामेमि	खामेमो
खमाच	खमाविम, समावािम	खमावमी, खमावामी
	<b>ख</b> मावेमि	स्रमाविमो स्रमावेमो
		इत्यादि

सर्वपुरुष | स्नामेज्ज सामेज्जा सर्ववचन | समावेज्ज समावेज्जा

#### भूतकाळ

स्नामसी, स्नामही, स्नामहीअ, स्नामसु, स्नामिस्य खामेसी, स्नामही, स्नामहीअ, स्नामसी, स्नामही, स्नामहीअ, स्नामसु,स्नामिसु,स्नमावित्य स्नामेसी, स्नामेही, स्नामेहीअ

(आ बधा रूपो प्कतचन अने बहुतचन बन्नेमां प्रणे पुरुषमा वपराय है)

चाम	चामिस्स आमेरसं
	चामिस्सामि चामस्सामि
	काविहासिः सामहासि
<b>377</b>	वामेस्स वामेस्सामि, वामेहामि, वामेहिन
	समाविन्दः समाविन्द
CHAIR -	ख्याविस्नामि, खमावेस्सामि
	चमावस्नाम, चमावस्ताम
	समाविद्यति, समाविद्यति
	न्यसाविद्यास अप्राचेद्रिम
समावे	खमाबेस्स बमाबेन्सामि
	कराचेदामि चामाचेदिमि
<b>-</b>	स्वाधित्व स्वाधित्वतः । सर्वेग्यस्य
न्याद	लामेरक लामेरका   सर्वपुरप स्थानेरक लागरेरका   सर्वज्ञा
	बाहार्थ
	• •
स्वस—	काममु कामानु काशिमु कामैसु कामेनु कामेहि, कामे
न्यामे —	नामें मु चामेहि, सामे
समाच~	समाध्य समाचनु
क्षमार्थ-	समार्थक समार्थम्
	<b>बिश्यध</b>
	** **
	मानिज्ञानि सामञ्जामि
	न्यासेरबन्धि न्यासिकासि
	न्यसःविज्ञहः न्यसाचन्नहः
समावे 🗝	नमानगर जनानिग्रह
नाम —	शासित्त्वह लामेन्बह सर्वपुष्टच सर्वप्रचार

### कियातिपत्ति

खाम— स्वामनो, खामेंतो, खामितो। खाममाणो, खामेमाणो ग्वामे— खामतो, खामितो, खामेमाणो खमाव— व्वमावनो, ख्रमावेंतो, खमावितो खमावमाणो, व्यमावेमाणो खमावे— स्वमावेंतो, स्वमावितो, स्वमावेमाणो

आ प्रकारे प्रयोक प्रत्य अगने नधी जातना पुरुपयोधक प्रत्यंथी लगादी तेमनां रूपो साधी लेवानां छे

प्रेरक सहामेद अने बधी जातनां प्रेरक फ़ुदती वनाववा होय त्यारे पण प्रेरक अगनं ज ते ते सहामेदी अने छुदतना प्रत्ययो जोग्री रूपा-रूपानो साधवाना छे सहामेद वगेरेना प्रत्ययोनी समज हवे पछीना पाठोमां आवनारी छे

#### घातु

खच+दस् (उप+दर्शय) देगाडवु – पासे जइने बतावनु आ+सार् (आ+स-सार) आमतेम अफळाववु -आमतेम लड जबु अ+स्प्रोइ (आ+सोद्) खोटबु – कापनु उ+छन् ( टद्+रुप्) मोलबुं जाव् (याप) वीतावयु'-यापन करखु'
या+भोश्र (आ+भोग) घ्यानपूर्वक
जोत्रु
परि+नि+च्या (परि+निर्+च्या)
धात करखु-ओलवर्युं
याद्य (अष्) मूल्यसु-मूल्य
करावरु

ì

१ हें॰ प्रा॰ ब्या॰ ८।३।३२। नारीजातेमां 'सामती', 'नाममाणी' एवां स्पो करवाना छे

मंद्रीक्ष ( मोर ) मोरा करवी**-**

मेल्य (मनन) वैक्षत्र - मेक्स्यु

एक्स६ ६४९

व्यक्तात् (स्त्रः) शक्ता-रेक क्यु-स्थी कर्न्य रमय रबनी छोह्न क्षेत्रह प-। बास्य् (त्रम्बस्य) वार्षः एक का निवाध ताब (अपन) अवस् - स्टान्ड कोभगास् (श्रूभमा) बीकर् क्षाप-गळत् था<del>। रोष्</del> (बा+रोप) कारोच्ड क्रिय (सेन) वरीख्-वेबद्ध गर्क } (स्वर्) ध्वरण काड **म्या+सः (भा+र) भा**षर करवे क्य (बच्च) बच्च प+सन् (व+स्थान) जनानतु बीर (न्द्री) जन्द स+स् त+स्वा) खोतु अक्ट (बर्ग) अक्षत करह पसार (अभवत्भवर प्रेकर) क्रमु~वर्ष क्येम भा**।वर्** (जः।रम्) नार**न्त्** चक्कार् (मि+क्स्+चर्-म्ब्यर) बद वर्ष चक् (वक्) जुक्क (ग्रुक्त) पूरत प्रश्नि अप् (अल्य) पुछोम { (त⊬थेच्) प्रमे पिसुज् (रिद्युतन)कोष्ठ वामै करवी पुष्टम ∫ सुग् (मर) कन्तु पुक्तभावा (पुरुषान) पुरुषि पिन्स (पीव पीख न्तु --शमन्तु बध् बच्च वसारा (विश्वा)नसम् -नामु सरभुक् (कार्य) अवीरतु-थ-१-वच्चास् ४१-शावः) प्यान्द धामका श्रामु -चेत प्र+ष्ट्र (उन्हरूमा) क्रम् सिष्ठ (तार) रहरा करते खाय ( कार्) कान्-वांक्त्

य+द्वष् अश्र्याप्) गम्बर्

वि+वतम् (नि+वर्) गीमन] अहिन् - शानपु

स्रोम्बास् (उन+प्राव) प्रावित करवु धग्गोस् (वि+उद्+गार-व्युद्गार) वागोळवु परि+खास्त्र (परि+वार) पण्यित करवु - वींटबु पयलस् (प्र+मर्) फेलबु नी+हर् (निर्+मर्) नीहरबु नीसरबु समार् (सम्+आ+रच) समारबु सह | (प्र) स्डबु -नाश सर्वो

गढ् (घट) घटतु
जम्मा (जृम्म) यगासु सातु
तुद्धाः (तर) त्यरा करती
पेच्छ (प्रभईक्ष) जोतु
चोप्पड् - चोपटतु
अहि+लस् | (अभि+लप) अमि
अहि+लस् | लपतु - इच्छा करती
चड् (चट) चटतु
निभम्नाल् | (निभसाष्ट्र) नीसानिभम्नाल् | एतु - योतु
विभच्छलः (विभस्न) वीछळतु घोतु

# सामान्य शब्दो

स्वन्म (खह्म) खट्म-तरवार
स्टपास (उत्पाद) उत्पादटत्पाति
रिस्स (रिह्म) राध-बळदनी
के घोटानी राहा
सुर्ग (सुर्क्ष) सुट्म
पिन्न (स्ट्क्ष) सुट्म
चिन्नुझ (युधिक) बाँछी
भिग (स्क्ष) सुग-समरो
स्मिगर (धक्षार) धृगार-धणगार
निच (तुप) तुप-राजा
स्टप्पञ्च (पर्पद) ध्रुगोस्टप्पञ्च (पर्पद) ध्रुगो-

# [नरजाति]

सज्ज (पर्ज) पर्ज-एक प्र
कारनी स्र
इसि (ऋषि) रुषि
तय (स्तव) स्तव-स्तुति
नेह (स्नेह) स्नह-नेह
सर (स्मर) स्मर-कामदेव
पाउस (प्राष्ट्रप्) पाटस-पावस
प्राप्तान्त) धृतान्तसमाचार
नज्ञ । (नप्त्क) नार्तानिज्ञ । प्रेन

THE P

बेत (स्वम् ) सम्दन्ताराठे साराज्य (स्टान्स) समाह इटिबंब (इरिक्ट ) इरिक्ट मध्य (अक्ट्र) एक जन्मरनी राक **EUTERO** ( नाम्प्यरमावि )

अब (अन्य) पर सिरदा (जिन्ह) चीच-न्छ भारतस्य (साधनक) भावाई-

विश्वय (निम्बद्ध) विव-स्थि विय-शिष TEG (EEs)

क्षेत्रस्य (क्षणान्) कृषण-उपास (स्टब्स) शहर कार समाज (सर्चन) नवाप क्राहिकाच (अधिकत्त) पंचल कार्य (वर्षेत् ) कार-कार्य

[ भारीबावि ]

सोरी (धेरी) भ<del>ौरी-नाग्यी</del> गोदी (मीत्री) चेठ-चेठनी ( feft ) ta (रेबा)रेबा मीड-

घत्ती (नात्री) वात्री facer (Base) faut-fefte-फिया (इन) इन

ভিজা (ছম) বিদ ছব किसरा (प्रभरा) बोक्ये साविति (नप्रके) वप्रके सामा स्था) वर्षाः वी

विद्येपण

संस्थ (तक बायस्य मृत्तु (तुष्क) शृख⊣ग्रह विक्रीस्थ (बाह्य) गीव मीर्च-सल (१७६) छन्छ-श्रांकवान भी सामा प्रका (भूक) शक व व विवेद सरम् (सह) रूज्

विश्वास (निश्वय) निवय

**मिट्टर** (निम्हर) नठोर **छट्ट** (षष्ट) छदन्त गुत्त (गुप्त) गुप्त-गोपवेल-सुरक्षितः सुत्त (मुप्त) स्तेल मुद्ध (मुग्व) मुग्ब

पुरुष स्त्रीने चुकावे हैं माताप बाळकने पसाळाव्युं नोकरो छोक्रांने रमाहरो स्तार लाकडाने छोलावत तो स्वाळ थात राजाप धीने खरीदाब्युं गोवाळो पशुने पाणी पीवडावे भाई बहेनने सासराने घरे पाटने छे माता पुत्रीने माटे घरेणां घडानको ते सारां कार्यों वहे कीर्तिने फेळाने छे नेड चोमासा पहेळां घरने समरावशे

सेहठी सरीरमिम तेहं
चोप्पडानइ
निन्नो कुमारं इत्थिमिम
चशाविहिइ
मिचो मिनन्त्रण टाणं
अहिवादसी
इत्यीयो वेडस्म नरीर
रेफ्डावंति
माया पुर्च मिट्ट किसर
सण्हावेहिइ

नणंदा पुत्ति उंचावती । तया पुत्ती न रुवंती विडतत्थी अस्न विडतिय विद्याणिम्म उद्ठावेद गुरू सीसं पणामावद महावीरो गोयमं सरावद गोयमो लोगे धम्म सुणावद

कियात्पित्तित् नारीजातित स्प हे

पाठ १९ मो

मावे प्रयोग सर्वे कर्मणि प्रयोग

क्रमाण प्रयोग प्रस्थयो

हैंस हैय इस

कोई यन पाइनु भाषमधान के पूर्वपदान अंच बमान्यें हैंगे स्वारे छने हैंस हैव लवता इन्द्र न्यू बच्चोदी यने ते दक्ष अन्यन बनादवाचे छ

ए वर्षे प्रवर्गी एक गर्डमाण्डाक निषय आहार्य के हरण-मूर्त्यक्रमां व वाणी श्रवाम के तेत्री गरिवासक, क्रिमानिर्णत वर्षेत समये मार्चेडमा स्त्रों कानिस्त्राचीण, क्रार्ट्सिन्सेटम्पे केन सम

मार एउके किया, में क्योग सुक्यांचे कियारे व बाहरे के शरीकराम

न पत्रसाम संस्तर चाहुणीनो जाषेत्रसीम शांत के जुदराणी स्वास्त्रस्य ऐने स्पन्न तुई, रुपई, नामकु सोर्ट चाहुसी स सर्वाट स्टॉर्ट

संगढ क स्वारे कहा ता के बादुआं नक्ष्मक होन करा अध्यक्ष राम्य कम न कहरानु हाव-सम्बाहारका होन होनी पन सक्सक म न क देवी जानु वीतु, साहु सहस्, कम्मे नगेरे क्यांक धातुक्षो पण तेमना कर्मनी अविवक्षानी अपेश्वाए अकर्मक तरीके छेखाय छे ए बन्ने प्रकारना अकर्मक घातुओनो मानेप्रयोग थाय छे

कर्ता, किया द्वारा जेने विशेषपणे इच्छे ते कर्म-नानी मोटी मधी क्रियाओनु फळ जे प्रयोग कर्मने ज स्चित करे ते कर्मणिप्रयोग भावे अने कर्मणिप्रयोगनां अगो

# भावस्वक अगो

बीह-बीही अ
वीहिज्ज
उंघ-उंघीय
<b>ব্</b> ঘিক্স
कह-कहीरा
कहिज्ज

स्ता – साईश				
	साइउज			
लंजन	-लज्जी अ			
	ਲਰਿਗਰਗ			
बुङ्	- बुड्डोभ			
	<b>बुड्डिज</b> न			

बोह्न-बोह्नीस बोह्निज्ज हो - होईस होईज्ज

# कर्मस्चक अंगो

पा - पाईअ
पाइज्ज
दा- दाईअ
दाइज्ज
शा- झाईय
<b>झाइ</b> ज्ज
ला- लाईय
लाइन्ज

पद् - पढीय
पहिन्त
फड् <b>ढ−फ</b> ड्ढीय
कड्डिंड
घड् - घडीय
घडिज्ज
खा - खाईय
<b>खा</b> इज्ज

कड् - कहीय कहिज्ज वोल्ल-चोल्लीय वोल्लिज्ज

ए रीते षातुमात्रनां भाववाची अने कर्मवाची अंगो बनावी टेवानां

हे अने दैनार बर्ग्या अंचने हे से काळना पुरशेवक क्यारी क्यारी रेजना करी वाली केवानां हे:

#### वर्तमानकाळ मावप्रधान

वीडिकः दीदिश्वा (दीयते) वीड-११४-१-वीडि - वर -यम्-वय -यद, वीद-१७०२-१ -वीडि-जन् -जीड, जन्य, ज्लेय प्रदेशकः (वीडि-जन्म क्लिप्टम

वाह-वृज्ञम-द्व-वाह-ज्ज्ञहु-ज्ज्ञहु-ज्ज्ञहु-ज्ज्ञह्य सर्वेषुद्वर ∫ वीहीच्यक वीहीच्यका सर्वेष्यम } वीहिज्जीयक वीहिज्जीयका म्हारतार प्रयोगीयो लाग फ्रिस-च स्थ्य हीच के. अबर वे

हिरोम हुस्य एवं यमको नवी देश ने अब वा देवी अक्रिक कंटना यम बनती कन्दी गती माने वे हारत दे दे पुरुषेत्र या दूकरी समित्र रूकतातु सुपन्न पह क्यार गती. सावारण सेवे आवेत्रसेय, जीवा डॉप

# थना एक्नफ्तहारा व्यवहारमा नामे हे

कर्ममधान मणीवङ्गः शनिक्रमद्ग गयो (सन्वते धन्यः) सन्दर्शसन्दर-सनी-महा-नद्दन्त्रयः, एए

सन्तर्भन्य--सन्तर्भन्य-नयः, यदः सन्तर्भन्दत्रज्ञ-ह्-सण्य-पण्यः त्रज्ञयः, प्रजेपः अजीपेतिः शेषाः (सन्यग्ते सन्तरः) स्रोतन्त्रतिः

 सर्वेपुरुप | भणोण्जा, सर्वेचचन | भणिज्जेज्जा,

पुच्छीयसि

तुम

(पृच्छघसे त्वम्

पुच्छिज्जसि

पुच्छ+ईय+सि+पुच्छी-यसि,-येसि,-यसे,-येसे पुच्छ+इज्ज+सि-पुच्छ-ज्जसि, ज्जेसि,-ज्जेसे

पुच्छीयामि पुच्छिजामि

मह ( पृच्छघे भद्दम् )

पुच्छ+इंय+मि— पुच्छी-यिम,-यामि,-येमि पुच्छ+इंज=मि—पुच्छ-रजमि-रजामि,-जेमि सर्वपुरुप | पुच्छीयेरज, पुन्छीयेरजा सर्वयचन | पुच्छिरजेरज, पुच्छिरजेरजा

# आद्मार्थ

पुच्छी-यउ,-चेउ, पुच्छिज्जउ, क्जेउ पुच्छी-यतु-चेतु, पुच्छि-ज्जंतु,-क्जेंतु

# विध्यर्थ

पुन्छ+ईय=पुन्छीयिज्जामि, पुन्छीयेज्जामि ( अह पुन्छयेय )

पुच्छीयिज्जामो, पुच्छीयेज्जामो

(वय पृच्छयेमहि

द्यस्तन भृतकाळ

भण्—भणोजसी, भणोजही, भणीवहीज, भणीयहत्या, भणीयहत्य र्भावज्ञाती स्विज्ञाही भविज्ञाहीन मेनिकारमा विभागातमा मीविकास

व्यवन यवकाळ

मधीम यजित्या मिनल यजिस वर्षस यक्षिप्यकार

समित्र प्रंस

मजिस्से अधेरसं भवित्सामि अधारमधी सचितामि समेतारि समिक्रिमि सपेक्रिमि

मधेरे वर्षा क्ष्मी कर्नार जवान ( खुओ चाठ ११ )

कियातिपत्ति मचती यजमायो, मनेश्व संकेशा मचती यचमाची (नारीमाति) मचना यजमाणा ( 🕫 )

> देख पारमपोग mit

**4**.सचित्रयोग

९ बाहुई हेल्स माहित्योगी के कर्गालस्थीनी कर करहे और त्यारे मूद बाउने क्षेरणाण्यक एक शाय आदि अनव सन्धवता अने बादि प्रत्यम सर्गाना है तथार पएल अंगरे गाये जर्ने धमीब हैं। अपरा स्था प्रथम है जि

अभीतमा ब्रुवक क्या शि बावनिकाने अनुसारे अगावना

### अथवा

२ प्रेरणास्चक कोइ पण प्रत्यय न लगाडी मान्न मूळ धातुना उपान्त्य 'अ'नो 'आ' करवो अने ए 'आ' वाळा अगने उक्त ईअ, ईय के इज्ज प्रत्यय पूर्व प्रमाणे लगाडवा ए रीते पण प्रेरक भावेप्रयोगनां अने प्रेरक कर्मणिप्रयोगनां रूपो बनावी शकाय छे

[यादी भा सिवाय बीजी कोइ रीते प्रेरक भावेप्रयोग के प्रेरक कर्मणिप्रयोगनां अगो बनी हाकता नथी ]

# अंगना रूपाच्यान— करावीअइ (काराप्यते)

अग— कर्+आवि−करावि+ईअ−करावीअ—करावी−अइ,−अए,असि, असे इत्यादि

कर्-कार+ईअ-कारीअ-कारी-अइ,-अए (कार्यते ) कारी-असि, कारी-असे (कार्यसे )

कर्+आवि-करावि-इज्ज−कराविज्ज-करावि-ज्जइ,-ज्जप (काराप्यते)

कर्-कार-इज्ज-कारिज्ज-कारि-ज्जइ-ज्जप (कार्यते) कारि-ज्जिस,-ज्जसे (कार्यसे)

ए रीते धातुमात्रमा प्रेरकभावे अने प्रेरककर्मणिना अगो तैयार करी सर्वकाळना रूपो उक्त साधनिका प्रमाणे साधी जवां जोइए

# भविष्यकाळ

THE रस्की कारिक्सते कारिहिय ('कारियव्यते ) केळांड वनिवरित कंटी क्ये हेना वराहरणे क्यासमान **POMP** स्त्र पाठ--- सा॰व॰वं कव श्रीष:- शीखह (दश्यते) शीस**न** शीसर पीसिज्यस, बीसिज्यब क्य-पुरुव-पुरुवह (इच्यते) द्वचवड ह्वच्यती दुविवस चिन्-} विम्म विभाव(क्षीमते) वे विम्मादिह विमानिहे विमा-विमान्य ग्रेश्विमादिह विमानिहे १इष्-वस्म-वस्मा (वन्यते) वस्माचित्र वस्माचित्रः कप्-बाग-बागार (कमाते) बागावित बागावित्र **१५६ - इ**च्या कुष्पते (द्वहते) तुष्पाचित्, कुम्माविदिर र लिय्-किम्य-किमाप (किक्कते) किम्माविद, किम्माविदि क्षत्-पुष्प-मुख्याय (बडाते) हृष्याबिह, बुब्याबिहिड क्म-समा-क्साप (क्याते) क्याबिक क्याबिकि र्मकारिके

**५वद—बन्स बन्सप (बबले) बन्साचित्र बन्सावित्रिः १वंध- वरा**स-वरास्य (वस्पति) वरासाविष्ट वरासाविष्टिष्ट धे+४५-संदर्भ-संदर्भप (संबन्धते) संबन्धाविद ी हे मा च्या । ।।१६९ की श्रंप अभी श्रंप-आ में सीओ सा माभाम विश्वय आहात अने हासमञ्ज्ञाती व स्वराय के र है *म* स्वा २, २। ४३। विका बी सांतीने 'प्रव्य' सुवीलां अंगी बडामे विवास सम्बंध संपर्शनों संबंधि है है जा तथा देश दिश्रणों में है भाल्या । दिल्ला हे आाचना तरपदा द हे अर च्या दारश्यक्त ह व्या व्या दार्थर त

वरिस---

यणु+रुप्-अणुरुज्य-अणुरुज्यवः ( यनुरुष्यते ) अणुरुज्याविदः, अणुरुज्याविदिः

उव+रुधृ-उचरुज्झ-उचरुज्झप ( उपरुष्यते ) उवरुज्झाविद्द, उचरुज्झाविद्दिर्

भगम्—गम्म-गम्मप (गम्यते) गम्माविह, गम्माविहिर हस् —हस्त-हस्तते (हस्यते) हस्साविह, हस्साविहिर भण्—भण्ण-भण्णते भण्यते) भण्णाविह, भण्णाविहिर छुप् । —छुव्य-छुप्पते (छुप्यते-स्वृश्यते) छुप्पाविह छुप्।

कत्—रूव-रूवप ( रुवते ) रूवाविद्द रूवाविहिद्द लभ्—ल्य-रूव्भप (लभ्यते) ल्याविद्द, ल्याविहिद्द कथ्—कत्थ-कत्थते (कथ्यते) कत्थाविद्द, कत्थाविहिद्द भुंज्—भुव्ज-भुव्जते (भुव्यते) भुजाविद्द, भुव्जाविहिद्द च्द्र-हीर-हीरते (हियते) हीराविद्द, हीराविहिद्द तद्द-तीर्-तीरते (तीर्यते) तीराविद्द, तीराविहिद्द कद्द-कीर्-कीरते (कियते) कीराविद्द, कीराविहिद्द वद्द-जीद्द-जीरते (जीर्यते) जीराविद्द, जीराविहिद्द

२अङ्ग्—िवढण्प-२विढण्पते (अर्ज्यते) विढण्पाविङ, विढण्पावि**द्धिः** १जाण्— { णडन-णडनते (झायते) णडनाविङ, णडनाविहिङ् णब्नान्य- (णब्न-णब्नते णब्नाविङ्, णब्नाविहिङ्

५वि+आ+हर्-वाहर्-वाहिणते (व्याह्रियते) वाहिण्याविद्द, वाहिण्याविहिद्

धगर्-घेप्प-घेप्पते गृह्यते) घेप्पाचिह, घेप्पाविहिद

५ है० प्रा० व्या० टाशर४९। २ हे॰ प्रा॰ व्या० टाश२५०। ३ हे॰ प्रा० व्या० टाश२५१। विदण्य ए अ ग 'अत्र' धातुना अर्थमा वपराय छे पण तेनु मूळ स्त्रह्म 'अर्जमां नथी 'अर्ज-अञ्च अने 'विद-प्य' ए बच्चे कशी समानता जगाती नथी ४ हे॰ प्रा० च्या० टाश २५२। ५ हे॰ प्रा० व्या० टाश२५३। ६ हे॰ प्रा॰ च्या० टाश२५६।

**बाहण्याविहि**ह श्रीण्-विष्य जिम्मते (जीपते) क्रिकाबिइ क्रिकाबिहिइ सुग्-सुम्ब-सुम्बते (कृवते) सुम्बावित्रं सम्बावितिः re-re-rent (gut) genifes genulalit श्च-पुन्न-पुन्नते (स्तुयते) पुन्दावित्र पुन्दावित्रित्र बुक् नुष्य सुष्यते (सूचते) क्ष्माचित्र सुम्यावितिः चुँच-- चुँच्च-चुँच्चले (चूँचले) चुँच्चाविद्विह चुँच्चाविद्विह चुँच--चुँच--दुव्यले (पूचले) कुँचाविद्व, पूच्चाविद्विह

### चीसिंगी सर्वादि 'सम्मी 'सम्मा 'सी 'सा 'सी 'सा 'सी 'सा 'सी

'इस्त' 'रई 'एका' अने 'क्सू' क्लेरे ब्रोकिंगी सर्वादे बानोमां क्ले 'साका' 'गारी करे 'विद्व' भी केवा वीजी केवाची के विश्वेषक सा अवस्थि है।

Scale of the state of the state of

ती ता (तत्त्र अपी ता) र सा (सा)

तील तीड तीजो दी क्षाव करूमो सा(सा) तीका तीड दीओ ती २ तं(साम्) ताक तामी, ता (ताः)

3 तीम तीमा ५ तीह तीच सीहि सीहि तीहि ताम ताई ताप (तया) ताहि नाहि ठाहि त्र क्षेत्रका ।। अन्य क्षेत्राच्या ।शस्त्र **न** 

है का च्या ५ था है जा बसा (इस स

४ ) से१ अने } तास, तिस्सा, तीसे ६ (तस्य, तस्याः) सिर तीअ, तीआ, तीइ, तीप तेसि (तासाम्) ताण, ताण (तानाम<sup>०</sup>) ताय, ताइ, ताप ३ताहिं (तस्याम्) तासु, तासुं ( तासु ) तीय, तीया, तीइ, तीप ताम ताइ, ताप 'णी' अने 'णा'नां रूपो पण 'ती' अने 'तां प्रमाणे समजवानां छे जी, जा (यत् नुं स्री० या) नीमा, जीउ, फीओ, जी १ ना(या) जाउ, जाओ, जा (या) २ जं(याम्) थ ) जिस्सा, ज़ीसे जाण, जाणं (यासास्) भने (यस्ये, यस्या ) (यानाम ? (यानाम् १) जीअ, जीआ, जीइ, जीए जाअ, जाइ, नाप ७ २जाहि (यस्याम्) जासु (यासु) नीय, जीया, जीइ, जीए जासुं नाय, नाइ, नाए

१ हे॰ प्रा॰ व्या॰ ८।३।६२।६४। २ हे॰ प्रा॰ व्या॰ ८।३।८९। ३ हे॰ प्रा॰ स्या॰ ८।३।६०।

189 की, का (कियू हुं औ॰ का) कीया कीड कीजी, की E 92 (921) काब काबों का (का) ३ चं(काम्) किस्सा बीसे कास (कासाम्) (कस्म कस्याः) काल कालं(कानाम्!) क्रीड, क्रीमा कीर क्रीप काम कार, काप बीस कीसं(कास) ७ कार्डि(कस्थाम्) कास. कार्स कील कीला कीत्र सीप काम काह काप (कामाग्रा)

१ स्मित्रा इता इती (इयस्) स्मीत्रा इतीड इतीडें इताड इताडों इतीट इतीट इताड, इताड, इताड (इताडा अलवा) व्यक्ति इतीडें इताडा, इताड, इताड (इताडा अलवा) व्यक्ति इतीडें इताडि इताडि इताडि इताडि इताडि इताडि काडि, वाडि काडि, वाडि, वाडि काडि, वाडि, वाडि काडि, वाडि काडि, वाडि काडि, वाडि काडि, वाडि काडि, वाडि,

INICARE I TO BE

् इसाम इसाई इसाय (मस्प, इसाय १)

श्या श्मी (श्यम् चै सी॰ श्या)

# एआ, एई (एतत् नुं स्ती॰ एता)

१ पसा, पस, इण, इणमो पईआ, पईउ, पईओ, पई (ण्पा) ण्याउ, ण्याओ, प्या (पता) ४ ोसे भस (पतासाम्)

भे से १ शिस ( एतासाम् भने } पईअ, पईआ पईई, पईए पईण, पईण ६ ) पआअ, एआई, पआप पआण, पआण (एतस्य एतस्या पतायै १) (पतानाम् १)

[ बादी उक्त रूपोमां ईकारांत अने आकारांत अगनां मधा रूपो नथी आपेलां पण ते बधांय समजी छेवानां छे. ]

# अमु (अदस्)

🐧 २अह, अमृ

अमृउ, अमृओ, अमृ (अमृ)

याकीनां 'धेणु 'वत्

# सामान्य शब्दो

केवह (केंवर्त) केवट-स्वेवट-हाडी हांकनार जह [जर्त (²)] जाट जातनी माणस धुत्त (धूत्) धूर्त-ध्तारी मुहुत्त (मुहूत) मुहरत-महुरत सयह (सख्) मलाहि गुण्ह (गुण्व) गुष्पर-यक्ष,

कलाव (कलाव) कडपली-समूह साव (शाप) श्राप-सराप सवह (शपथ) शपथ-सोगन-सम परहाज (प्रहाद) प्रदाद नामनो राजसुमार आन्हास (आहाद) आहाद-

पड़्ज (प्राज्ञ) प्रात्र-डाग्वो

१ है॰ प्रा॰ म्या॰ टाइ।८९। २ है॰ प्रा॰ व्या० टाइ।८७,८८,८९।

RUC भित्रोत्र} (बोड) न्ही शिक्षोत्र (बोड) न्ही समझ (स्वर ) वार-व्य wirelet ( शिरिमा (जेमर) फेब काराम् (कारतप) कारत को नी साथि-कारतपेर सर्व देशका (देशक) रक्ते जालगार विक्रोस (क्षेत्र) प्रकेश क्षेत्र महाचेर स्था विकोस (क्लिश) क्रेप-पाट ভবিত্ত (কবিত) কবিত প্ৰ कविकारी तरण गडेगार केवरवर्ष बरियो तराय के पिताबडे प्रकार बमाय छ क्यामचेवन धर्म बहुब श्चर्यक्रमडे क्लेको जिला काश्यपक्षे क्षत्राध स्थ-तेजीवडे शास्त्रो संस**स**ा कारिय के क्रेजीयडे बकरो होमाय राजाबंदे बीलि सेना प्रजीवधे धर्म बचाती त कराय के भाषानारेज ज्लेज ४ ज निषेध मसूनो किन्नंति वाचि सिर्प गोबाकेण शक्यो ब्रम्मते कविवक्केथ तमाद सर्था भारबद्देदि मारो बुष्मप सोवारेडि मत्यवर्ष प्रव बापारेण बाबेज वच्छात वक्षत्राचेत्र सम घर पुष्प

समिवा संज्ञमो घण्पत

वासेच दामी गम्मर

वालेसि हस्सर

# पाठ २० मो

# व्यंजनांत शब्दो

पाकृतमा रूपाक्यानने प्रसगे कोइ शब्द व्यजनांत सभवी शक्तो नधी एथी एनां बधां रूपो पूर्वोक्त स्वरांत शब्दनी पेठे समजवानां छे

'क्षत्' अने 'अन' छेढाबाळा नामीना रूपोमां जे विशेषता छे चे आ प्रमाणे छे

नामने छेडे आवेला वर्तमान कृदन्तना स्चक 'अत्' प्रत्ययने (हे॰ प्रा॰ व्या॰ ८।३।१८९१) स्थाने अत तथा मत्वर्थीय 'मत्' प्रत्ययने स्थाने 'मत' के 'वत' नो व्यवहार थाय छे (हे॰ प्रा॰ च्या॰ ८।२।१५९।)

अत्—भवत् – भवत गच्छत् – गच्छंत नयत् – नयत्, नेत गमिष्यत् – गमिस्संत भविष्यत् – भविस्संत मत्—भगवत्— भगवंत
गुणवत् – गुणवंत
धनवत् – धणवत
झानवत् – । नाणवंत
णाणवत
नीतिमत् – । नीइवंत
णीइवत
ऋदिमत् – रिद्धिमत

'अत' छेडावाळां ए बर्षा नामोनां रूपो अकारांत नामनी नेवां समजवानां छे -

भगवतो, भगवत, भगवतेण इत्यादि 'बीर' प्रमाणे भवतो, भगत भवतेण इत्यादि 'सब्ब' प्रमाणे

'अम' रोजाचा चच्चेच अनियमित रूपो

```
440
```

```
मम्बन
     द•द० भवर्ग (हे माच्या «krittin) (समकार)
                                             (भयक्तः)
     प्रथ व व सगवेती
                                            (भगवता)
     त् ५० शरक्या
     प॰ ए० सम्बन्धी
                                            ( मपकः)
    संबद्ध अपन्य । सपन् । सपन् ।
                                            (के सग<del>वर</del> 🕽
                       (8 m mi air 1481)
                         मक्त
             सक (भवाक्)
                  (दे आर प्या । शर्द्धा)
     प्र वर्णसर्वतो (सवस्तः)
     क्रिय० सर्वतं (शक्तकम्)
     क्रिक्ट शबदी (शबदाः)
              भवयो
     द्र प भक्ता (भक्ता)
              संबंधा
     र प सक्तो (शक्तः)
मक्सो (⇒)
     प० व॰ सथपाल (सचतास्)
     अन् क्षेत्रानातां लगारांच गायोगा अवृत्ये निकाने 'आवा' (हे०
प्राम्भा ८।।५६०) काम क्रेस-
भरक्त्-∫ अरह् अन्⊳त्रज्÷भाग सञ्चाग ] अद्यान, नद
भारमत-अप्याण ज्ञप्य | श्रह्मत्-वरहाण वरह
उभाव उपकाण उपक्ष | प्रसंद स्थानाथ स्पत्र
उपकाण उपका | सूर्यन्-शुकाण शुक्
प्रावद-शामाण गाम
                              राधव-रायाच राव
युवन् गुवाज गुव
```

तक्षन्- तन्छाण, तन्छ तक्साण, तक्स पुपन्- पूर्साण, पूस

श्वन्-साण, स सुकर्मन्-सुकम्माण, सुकम्म

ए बधा नामोनां रूपो अकारांत नामनी जेम साधी छेवानां छे

यदाणी, यद्धाण, यद्धाणेण यद्धो, यद्ध, यद्धेण साणो, साणं, साणेण

सो, सं, 'सेण

'रायाणी, रायाणं, रायाणेण 'रायो, राय, रायेण

वगेरे

छेडाना 'अन्'नो 'आण' न थाय त्यारे ए जातनां नामोना वधा रानां केटलाक रूपो जुदी रीते थाय छे

# शय (राजन्)

श्राया (राज्ञा)
 श्राया (राज्ञा)
 श्राहण (राज्ञानम्)
 श्राहण (राज्ञानम्)
 श्राहणा, रण्णा (राज्ञा)
 श्राहणा, रण्णो (राज्ञा)
 श्राहणा, राण्णो (राज्ञा)
 श्राहणा, राष्ट्रणं (राज्ञाम्)
 श्राहणं
 श्राहणं

६ ८राइणो, रण्णो (राह्म ) ९राईण, राईणं (राह्माम् ) ९राइण

१ है॰ प्रा॰ न्या॰ ८१३।४९। २ हे॰ प्रा॰ न्या॰ ८१३।५०।५२। ३ हे॰ प्रा॰ न्या॰ ८१३।५०। ४ हे॰ प्रा॰ न्या॰ ८१३।५३। ४. हे॰ प्रा॰ न्या॰ ८१२।४२। तथा ८११३७। सा 'रण्णो' रूप 'राज्ञ' उपर्यी साधवानु छे ६ हे॰ प्रा॰ न्या॰ ८१३।५१।५२ तथा ५५। ७ हे॰ प्रा॰ न्या॰ ८१३।५४। ८ हे॰ प्रा॰ न्या॰ ८१३।५०।५२। तथा ५५। ९ हे॰ प्रा॰ न्या॰ ८१३।४४। तथा ५३।१० हे॰ प्रा॰ न्या॰ ८१३।४४।

त्राच्या ४३४९। ४ हे छ व्या शशहरण । शिक्ष ६ हे छ व्या शहरण १८३१ % है 3 णा ४-६ णो इणं ५ णो सं० + णो

+ आ निजान छे त्या अर्थात् प्रथमा अने सवीधनना एकतचनमां राय, पूस, मधव बगेरे नामोनो अत्य स्तर दीर्घ थाय छे

राय=राया मधब=मधबा पृस=पृसा,

'णा' प्रत्यय सिवायना 'ण' कारादि प्रत्ययो लागतां पूस वगेरे शब्दोनो अत्य स्वर दीर्घ याय छे

पूस + जो = पूसाजो राय + जो = रायाजो

### अपवाद

प्रयमा अने सबोधन सिवायना 'ण'कारादि प्रश्ययो लागता 'राब'ने बद्छे 'राइ' अने 'रण्'नो उपयोग थाय छे —

राय + णा + राइणा, रण्णा राय + णों ≈ राइणो, रण्णो

प्रयमा अने सबीधनना बहुवचननो 'णो ' लागता तो 'राय 'ने स्याने एक मात्र 'राइ' वपराय छे

'डण' प्रत्यय लागता 'राय'नो 'य' लोप पामे छे

राय + इण = राइणं (राजानम्) राय + इणं = राइण (राज्ञाम्)

[ यार्टा राड+ण=राईण, राईण ए रूपमा 'इण' प्रायय नधी पण पष्टी यहुवचननो 'ण' प्रत्यय छे ] 'क्ट' क्षेत्रवाका प्रोह क्षेत्र कमाने तृतीनाता एकनकर्मा 'क्या' सने एक्यों छत्। वृत्तेता वृत्तवनार्था 'क्यो' प्रवत कारों के क्षेत्रके

कस्य (कर्मन्) इस्स ⊹ ब्ला≃ कस्मुवा (कर्मवा)

क्रम + वजी = कमुको (कमैकः)

केटलांक अनियमित क्यो

गचशा (मवसा) गचशो (मनसा)

मचसि (मचसि) क्यसा (क्यसा)

क्पसा (बबसा) सिरसा (शिरसा) कापसा (बारेंब)

कास्यरमुचा (कास्वर्गन )

केन्साक सदिव प्रत्ययोगी समझ

१ 'तेतु सा १ वर्षमां किर' अस्य व्याने के बारह+केरं-जन्दकेरी (अस्माकम् इत्म्-जस्महीयम्) समार्थ

वरश्चाकरण्याकरः । (काशाकम् १९५० न्युसारीवस्) वसार्व तृत्रश्चाकरं (वर्षाकम् १९५० न्युसारीवस्) वसार्व स्या-केरेल्यकरे (वर्षाव १९५० न्युसारीवस्) पारक राप-केरेल्यकरे (वर्षाव १९५० न्याकरीयम्) समर्थ

र क्रां करे 'कर्ल' प्रथम 'केसे महल' क्यमे ह्याँ के गाम+रह-धार्मिहर (आसे सम्बन्ध) गामना यस्क्र

सर+रह-परितं (गृहे शवस्) वरेलु यस्मां पप्तुं १ हे व व्या ८१९१४० १ हे० वा व्या १९११६१

अप्प+उल्ल-अप्पुर्छ (आत्मिन भवम्)आपुर्खु-आत्मामां थएलु नयर+उल्ल-नयरुल्लं (नगरे भवम् ) नगरमा थप्लुं ३ 'तेनी जेवु' एवो भाव स्चववा 'व्व' १प्रत्ययनो प्रयोग करवो महुर ब्व पाइलिपुत्ते पासाया (मधुरावत् पाटलिपुत्रे प्रासादा ) ও ২'হ্বদা' 'ল' अने 'লেগ' प्रत्यय 'पणु'ना भावने वतावे छे: पीणा+इमा-पीणिमा (पीनिमा-पीनत्वम्) पीनपणु-प्रप्रता देव+त्त=देवत्तं (देवत्वम्) देवपणुं वाल+त्तण=वालत्तण (वालत्वम्) वालपणुं ५ 'वार' अर्थने बताववा ३'हुत्त' अने 'खुत्तो' प्रत्ययनो उपयोग कर्बो पग+हुत्त=पगहुत्तं ( एककृत्य -एकवारम् ) एक वार ति+हुत्त=तिहुत्त (त्रिहत्व-त्रिवारम्) त्रण वार ति+खुत्तो≈तिखुत्तो | (त्रिकृत्व - ") तिभ्खुत्तो | ६ आल, ४ आछ, इत्त, इर, इल्ल, उल्ल, मण, मत अने वत ए बभा प्रस्ययो 'वाद्ध' अर्धने स्चवे छे आल- रस+आल=रसालो (रसवान्) रसाळ-रसा<u>ल</u>ं जटा+आल=जहालो (जहावान् ) जहावाळु सालु- द्या+बालु=द्याल् (द्यालु) द्यालु-द्यावाळुं रुजा+आलु=रुजार्स्(रुज्जालु') राजाळ-राजवाळु मान+इत्त=माणइत्तो (मानवान्) मानवान इस-रेहा+इर≈रेहिरो (रेखावान्) रेखावान इर गव्य+ईर=गव्यिरो (गर्ववान्) गर्ववान सोभा=इह=सोमिह्रो (गोभावान् ) शोभवान इछ-

उछ- सद्+उछ=सद्छो (शब्दवान्) शब्दवान

१ हे॰ प्रा॰ ब्या॰ टारा१५०। ४ हे॰ प्रा॰ ब्या॰ टारा१५४। ३ हे॰ प्रा॰ ब्या॰ टारा१५८। ४ हे॰ प्रा॰ या॰ टारा१५९।

सोदा+मच=व		गवाद्) सोहमणी
मत ची⊹मेव≕ची	भरतो (ची	
र्चत सचि⊬यत≕ ७९'तो जन्म केसी		केशास्) शक्किका स्वयो हैः
सम्ब⊬चो=सम्बद्धो	(सबैस)	सबैबी सब प्रका
क+चौम्कचो क+चोम्कचौ ठ+ची=चचो	(asi) (asi)	क्यांची केंची व्यांची केंची
र+सो <del>=द</del> ची	( <del>श्व</del> )	वहींची नाची
८ ९% (५० मो १४) अस्तिकारि		

क्र+वि=क्री 电HEER क+स्य>कस्य (क्रम) ९ १ हेतु हेल एवा बचने सुचवता 'एक्स (हैकर) प्रचन मनरान हेर

製・利用を開発

त है जा ज्या शाराव । र है जा प्या नारी १६३३ ३ हे ज न्या ।२१९४४। ४ धीरस्य तैवान्-ग्रेग्तेनम् इ सन्दर्शयो

ील ब्रम्प कोई बाके नीराजुं न्यक्तित्व कोई प्राप्तकी नाली क्ष बार कशासामा क्लेल कां नैक' शब्द समादे नदी के छो। दन

भोज तम बन्दर्ग व्यवहार त्रवसिय है

```
कडुम+पल्ल=कड्उलं (कटुकस्य तैलम्-कटुकतैलम्)
                                              कड़र्व तेल
  दीव+ग्छ=दीरेह (दीपम्य तैलम्-दीपतैलम्) दीवेल दीवानु तेल
  प्रड+प्ल=पग्डेल (परण्डस्य तेलम्-प्रण्डतेलम्)
                                     पग्डेल परडान तेल
  धृग+पहः=भृपेहः (भृगस्य तैलम्-धृपतैलन् ) धृपेल-
                                            ध्रायुक्त तेल
o १स्वार्थने मुचववा 'अ' 'इल्ल' अने 'उल्ल' प्रत्ययनो  व्यवहार
   विकल्पे थाय हे
   चंद्र+अ=चद्रओ चद्रो (चन्द्रकः) चांदी
   पल्लब+रल्ल=पल्लबिल्लो, पल्लबो ( पल्लबक्त ) पालबडो-
                                             पालव, छेडो
   हत्य+उल्ल=हत्युलो, हत्यो ( हस्तक ) हायो, हाथलो
११ फेटलांक अनियामन तदितो
   ९एक्र+सि=एक्रसि
एक्र+सिअ=एक्रसिअं (एकदा) एक वखत
     एक्+ह्या=एक्र्इश
   १भ्र्+मया भ्रमया ।
भ्-+मया भ्रमया )
                       (সূ) মথা
    भसण+इस=मणिस (शनै ) धीमे धोमे
    भडवरि+छ=अवरिहो (उपरितन ) अपञ्ज-उ रनु
    ६ज+>निअ=जेग्नअ
```

ज+रित्त=जित्तल (यावत्) जेटले

ज+पहर=त्रेहह

१ हे॰ प्रा॰ च्या र २।१६२। २ हे॰ प्रा॰ च्या॰ ८।२।१६२। ४ हे॰ इ. हे॰ प्रा॰ च्या॰ ८।२ १ र७। ४ हे॰ प्रा॰ च्या॰ ८।२।१६८। ४ हे॰

R4c"

(शक्त्) रेट्युं

सम्पत्तिमानेतिओ त+श्रीतम तेरिक स+पद्र=नेद्र **६** ।यतिस**ंदे** राजी च+५(त्रस=केरिक

**प**न+प्तिम=्रित्ति

पन+खद्र=खद्रं

S vereikrit यल -यशिश्रम्य निश्ने

(वियत्) वैद्यः 🕽

(पनावत्) पटले (इवस्)

(पन्छीयम् ) पारपु

द्याप पर=रायक्ड (रामधीयम्) रायद्वी-राम न रेक्षाइस चन्नय भारत्याचे ( सामानु वस् ) समाद भागना तुरह+६६वय=तुरहे चय (युक्तदीवम्) तमारं तुम्बा १ वर्षम+इम्भन्दर्शियो (सर्वाहीवम्) सब्भागां व्यास्त

५वन्य+वय=प्रयायये (बात्मीप्रय ) बावर्ष केटमांड वैद्यालक स्वो ध्यत्र हरूनमहो समो (मध्यः) सम्तु पर्द यक तःवन्ती वक्ती (यक्का) वस्तु

श्यक्त न्यान निर्देशों (प्रतिक्र ) विश्वक वर्षे

न्मनाक्र+भगन्मवर्ष ((शतक्) शवा बासी थोडे हप∙मिक्स ( मिस्स+म सिम्बर्धीसाबिम मीन (मिस्रम्) विस्र मेर्डे 🚉

मसामानाई ममासी शस भोदे प्तीय र-शिक्षे शीध निष्य (शीर्षम ) शीर्ष सांच् 1 रिज्ञानिक्जना (विश्वकृषिक्रमी पत्त संगत्तस यत्त (यत्रस्) यान् 🛭

पीत+ल=पीत्रकं, पीतलं, पीत्रलं, पीत्रं (पीतम्) पीळं सम्ध+छ=अंघलो (अन्घ ) आघळो तद्वितात-शन्दो

घणि (घनिन्) घनी-धनवाळो अदिश्वक्ष (अधिक) अर्थ

सबधी-अथन लगतु

सारिस (आप) ऋपिए वहेल

मर्डय (मदीय) मारु कोसेय (बोशेय बौशेय-बोशेटा

माथी वनल-रेशमी वस है दिल्ल (अधस्तन) हेठल

जया (यदा) ज्यारे

क्षण्णया (अन्यदा) अन्य समये

त्तवस्ति (तप्रस्वन् ) तपस्वी मणसि (मनस्वन ) युद्धमान्

काणीण (कानीन) कन्यानी

पुत्र-व्यास ऋषि

वस्मय (वाङ्मय) वाङ्मय-शास्त्र

प्रजाना दु रुथी दु खी राजा-घडे एकवार जमाय छे स्या पारमा वालको वहे रोवाय छे घरेल चस्त आलो इडे देखाय हे मनिवडे मध च्टान् नथी ते मन बचन अने काम वड की इने हणतो नथी

पिआमह (पितामह) पापनी वाव

उवरिल्ल ( उपितन ) ऊपलु -**उपर**नु

क्या (कदा) क्यारे

सद्यया (सर्वदा) सर्वे वदाते

रायण्ण (राजन्य) राजपुत्र

अत्थिञ (आस्तिक) आस्तव

भिक्ख (भेक्ष) भीख

निर्ध्य (नास्तिक) नास्तिक-पाप

नाहिआ (माहिक) पुण्यने न माननार

पीणया (पीनता) प्रष्टपण्

मायामह (मातामह) मानो बाप

सब्बहा (सर्वथा) सर्व प्रकारे

तया (तदा) त्यारे

कर्मवडे जीव ब्राह्मण, क्षत्रिय वैदय अने शूद्र थाय छे मारावडे रावाय छे अने तार वड इसाय छे गुरुवडे **डिप्यिने** भणावाय के भीलवडे पर्वतो वळ वाय छे महावीरवडे समभाव स थे धमं कहेवाय हे

₹4•

सापना करता सहसङ् रणना राज्ये मुख्याद् रामुद्धि प्रयाज डुण्यि सुद्धानि रीत पाजा राष्ट्र सिध्यक्ते सनवाजो संस्कृति श्र वृति

मारपरण मत्यो विस्ता

बारिसांबि वरणापि कीन क्षेत्र पुरुषेति राष्ट्रमा सहाय कामेर्य परिदेशी प्राणीय मन्यपरिम पूर्व कीमह सम्बंद्ध पुरुषक्ष हासह सर्वासमी

् । ज्योतहः आरश्वितसाद्या का वि ——— पाठ २१ मो

केटडांक मानवातुत्री

रंग्लन्सा रेग्ड क्रिका करते थीरी वर क्षेत्र विकासी कै कैसी के कर्मत करंग, बाह्यका को सामगढ़ा करा. नरंगू मान्यते ए मारे नाव कर्ष शिक्ष विचास नती. आवश्यक्षणों ए प्रकासमें क्षाकामी स्वास्त्वती की के वे वक्षी वर्णान्सा वा उपस्पति एवं निक्सीदारा वाक्षित करायों के सामग्रा स्थापन (शुक्त के) सर्गासक्षशनि इच्छे के, हा प्यान

संवा-करे छैं पीमला 'सी-निया ) विकाद कर हो पक्रम-साम्रप्टर (साथप्यते ) मुगबर वरे छै-बोस पोल

चंद्रमणं (सङ्क्रमणम्) दक्रमण-पर पर दर्ष

शामयातु-गरुआह (गुरुकायते) गुरुनी जेम रहे छे गुरुनी
गरुआअह जेगे डाळ घरे छे
अमगह (अमरायते) अमर ग्लेच थे, पोतानी
अमग अह जानने अमर समजे छे,
तमाह (तमायते) तम-अवारा-जेच छे,
तम अह
ध्माह (ध्मायते) ध्मने उद्दमे छे-ध्मने काढे छे,
ध्वामह
सुहाह (ध्यायते) सुहाय छे-गमे छे
सुहाथहे
सह इ (श्रूयायते) सादे छे-साद करे छे
सह अई

नामपानुना टक्त सस्त्रन रूपोमां ले 'य' देखाय छे, तेनी प्राह्न-रूपोमा विश्वते लाप थाय छे ए एक नियम मात्र नामधातु प्रतो छे १

### कृदन

# हेत्वर्थ ऋदंत

मूठ पातुने 'तु ' अने 'त्तए '२ प्रयम लगाडवामी तेनु हेत्वर्धे — ष्टरत बन छे

१ ह० प्रा॰ व्या० ८।३।१३८। २. हेस्वय कृदत करवा साख वैदिक संस्कृतमा त्वे प्रययनी टपयोग यएलो छे प्राकृतनो 'त्तए' अने वैदिक 'तवे 'ए बन्ने तहन समान प्रत्ययो छे तए' प्रत्ययवाळा स्वा आपेत्राकृत्मां दिशेष मुक्ते छे

मान के.३ सें~

fund 0

धण् + तुं -- { श्र्मांवा र्वं, स्वीतुं } (स्वितुन्) धनवा माडे हो + तुं - { होतुः होस्ड } (मवितुम्) श्रवा स है प्रेरक देखब कुरन्त [मूळ माञ्चमु क्रेनक क्षम धरना साथे लुओ पाठ १८ मी ] भन् भवावि+तः | भवावितः | (भवाववितुन्) भगवना मार्वे भनावितः चए--क्य चर—करिचय करेचय (कनके कर्नुस्) करना सके यम् चर-शमिचयः, यमेचय (शम्तवे शरुम्) गमन करमा स देखना साढे थारद्र+चय-माहरिसय भाहरेसय (मारतने मानतुन) माद्वार परशा माटे

हार्य+भय-वस्त्रकाथ वस्त्रकाथ (कालये-काल्य) रेवा साठे १ दे इ.सा. १३ ५ । स्वत्रवार वापुत्र छोडे औ लाते छे सन ६१६त वापुत्र क्षेत्री वर्ण (वस्त्रवे साल छ ए सावारक

> सम् + तुं = सम + तु = शन्तु समेतुं दा + तु = दास ता द तु, दार्ज

E) + E

['भाइरित्तए'ने बदले 'आहारित्तए' पण नपराय छे अने 'दल्र+त्तएमां 'अइ' उमेगयो छे ] हं । + तत्-होइत्तव्, होवत्तव् (भिवतवे - भिवतुम्) श्रवा माटे हो+त्तर-होत्तर (भवितवे-भवितुम् ) थवा माटे मुस्प्न+त्तप-मुस्क्तित्तर, सुस्वसेत्तप (गुरूपितवे-शुथ्षितुप ) शुप्पा करवा माटे चंकम+त्तर-चकमित्तग (त्रङ्ग्रीमतवे-चङ्क्रिनुम ' चक्रमण चक्रमेतर। करवा माटे मण्-भणावि+त्तर-भणावित्तर्-( भणापवितवे-भणापित्तु .) भणाववा माटे अनियमित हेत्वर्थ कृदन्त फर् + तु- कानु, (कर्तुम्) कर गामाटे कंड कस्डु, कटुटु गे इ + तु घेत ( प्रही-म् ) प्रहण करवा माटे (इन्हुर) देखवा मार्ट-जोवा माटे द्दरिस् + तु−दटठु (भोक्टुम्) योत्रा माटे, भोगववा भुज् + तु भानु मारे मुच् + तुं-मोनु (मोस्तु) हृद्या माटे-हृदा धवा माटे रद् + तुं रोपु (रोदित्म) रोता माटे (चम्तुम्) योल्वा माटे घच् + तु-घोत्त सर् + तु-नद् (त्य्धुम्) लेवा म टे रुध् + तु-रोद्ध (रोद्धम्) रोध वरवा माटे-रोक्बा माटे

#### 44.A

युप् + ग्रं- | कोर्ब | (कोरुस्) स्मान साट पुत्र धरण सावे

### संबंधक मृतकृदस्य

मूख बाहुने शहु, सून हाजान था इस्ता इस्तान बाव बने आएं (एप बाड अन्यवोशाची यसे ते एड) अन्यव व्यवदासी वर्ड स्वयंक मुस्कदन बने था.

द शोरे स्वकातमा चार ऋश्यो कमकर्ता पूर्ति। 'स'मी 'र्' भने 'र्' निकार्य मान क्रे

देन हातान क्षत्रे इतान स्वत्यों थ शहलारस्त्री नाने त्य करतवर के सूत्र तूर्व हुआय हुआयं इताम इताने रि---

हु--इस + हुं - | इसितुं, वनेते | (अस्तिका) असीते

इस + तुं - | इमितुं, बन्नेतुं | (इसित्वा) इसीमें इनित्र, इसेव हो+ब+तुं- | होत्रतं होन्तुं | (सूत्वा) धर्वे

धो + तु – बानु दावे (मूल्या) पनि

रूप-इस्र + मूण | श्विमुण वसेमूण | (व्यक्तिया) दसीने विकास वसकर

हो-म-मूज - | होत्तक हस्तक | (धून्या) यामे होक हो कल हो + नूज | हमूक होनूज | (धून्या) यामे

) हो का न्या ।२३ श. थ. है का न्या भारत

```
तुआण---
```

हस्+नुत्राण- | हत्मेनुत्राण, हमेनुत्राण | (हसित्वा) हसीने | हिन्दशाण, हसेउन्नाण | हो+अ+तुक्षाण- | होइनआण होवनुआण | (भूत्वा) थईने होइउआण, होवडआण (भून्वा) धईने हो+तुआण-हातुआण, हाउआण **अ**— हम्+य- हिमझ हसेअ (दिमत्वा) हसीते हो+अ+अ — होइअ, होएख (भूत्वा) धई रे हो+अ— हो अ (भूत्वा) थईने इत्ता--हम्+इता— हिंसता, हसेता (इसित्वा) इसीने इताण--इस्+इचाण-इतिचाग, इसेचाण (इतित्वा) " थाय--(गृहीत्म) प्रहण करीने गइ+न्राय- गहाय वाए--थाय+आप-आयाग (आदाय)

[ 'आय' अन 'आए' प्रन्ययनी उपयोग जन आगमानी भाषामा मळी आवे छे ]

(मन्ध्र) खूब विचारीने

सपेड+शाय-सपेदार

ए ज प्रभाणे सुम्युमित्, सुम्युमित्ण स्स्युमितुआण, सुस्युमिअ, सुम्युमित्त, सुस्युसित्ताण [ शुरूपत्था-शुशूपा सरीन ] वगेरे रूपो समम्बानां छ चंदिम तु मित्य सितुत्राव -सिम मित्ता सिताय (वर्ष्यमित्रा) चळमण वरीवे सेरहमत्वद्ध सूनकृत्रन्त स्वावित्र सुनकृत्रन्त स्वावित्र सुनकृत्रन्त स्वावित्र तु वित्रुव -वितृत्राय सिव -वित्रुव वित्रुव स्वावित्र । स्वावित्र स्वावित्र सित्रुव सित्रुव

सन्धिमन सर्वक्रम्बद्धन्तः स्ट्रान्तः चारं कार कडड् स्ट्रान्तः चारं कार कडड् स्ट्रान्तः कारं कार्त्वमा स्ट्रान्तः चेर्यः म्राच-सर्वका चार्त्याः नुमाय-सर्वकायः चार्याः स्ट्रान्तः वर्द्वः स्ट्रान्तः वर्द्वः स्ट्रान्तः वर्द्वः

पृत्राच-द्देश्वराथ देदश्वराथ । श्रीवर्गन प्राच्य प्रोच्य न्याम्य । तृत्राच सामशाल प्रोच्याय । श्रीवराश सोश्री स्थापनीते श्राचन प्रस्ता प्राच्याय । प्रस्ता प्रस्ता प्रस्ता । श्रीवराश प्राचित्रे सोश्रीयाल प्राप्त प्राच्या

ए जान ने इ.स. पान की छा जिल्हा में स्थाप क्षात्रका होईने क्षण की कर बाज क्षात्रका जाताब (इ.स. ) कोलीचे

त्याची कल राणु बालक व णुंबाव (इक् ) बोक्कीने १ इ. का ज्या | रेडे का ज्या ४ रे१ ३ डे जा च्या | ११६ डे श्रांच्या (इरोस) बद् उपरथी विन्तु विन्तु ( बिन्न्त्वा ) बांदीने 🗗 , बट्टु, कट्टु ( कृत्वा ) करीने [ 'वदित्तु' अने कटटुमा तुनी अनुस्वार छोपाय पण छे ] आयाय (आदाय) श्रहण करीने गचा, गत्ता (गत्वा) जईने किचा, किचाण (कृत्या) यरीते गण्या मञ्चाण (झात्वा) जाणीरे नता (नत्वा) नमी रे घुःझा (बुद्ध्या) बुझीने जाणीने भोन्ना (अवत्या) भोगधीने, खाईते मत्ता मच्चा (मचा) मानीने घदिता (बन्डिता) वादीने विष्यत्रहाय | विश्वत्रहाय । त्याग करीने सोच्चा (थ्रःवा) माभळी रे सुत्ता (सुप्या) सुई। आइच्च (अ।इन्य) आयात करीने-एछाडीने साहर्द्ध (महत्य भंह र क्रीने, लई जई ग,वलाह्यारक्री हे-हना (इत्वा) त्णीने थाव्ह्य (अहत्य) आहार वरीने परिचाय (प्राया वरावर समजी) चिच्या, चे चा, चइता (त्यक्त्या । त्याग करीने निद्राय (निजाय) स्थापाने, प्रदर्तादीने पिद्वाय (विधाय) दानीन परिचनक (परित्यट्य) परित्याम करीने

१ है० प्रा० व्या दाराध्य

मसिमूय (ससिमूय) मसिसव करी है परिदुक्त (सनिवृद्य) समग्रीमें

क्यारकना प्रेरको नीच्ये । बा तथां कांनवित क्रोपी नावन्यः नाम्ये कारोत शहन क्रमे हुत्ता व सानी क्रम्य व्याके जा का नि सी कारो व विकास को क्रेतिनो एक बास्टीम्स जा कोली प्रेरे स के सारे ए बना को नदी सानवा

पाठ २२ मो

विष्यर्व कुद्रम्स

मूढ पापुने तथा क्योज के आंच्या अपन कराउतारी निमर्प कृत करें के

्राचन के प्राप्त किया कि कि प्रश्निक के कि

| इसिनन्द्र इसेयाम | इसेना वेड देस! सामेप होश्हरू--- (होश्हरूद होयलाई )

हो+तर्- (होहनको होयनव्यं होहका गोधकत् होसदा होयन होसका

कान्तम् - शातव्ये भाषव्य (बातव्यम् ) आपना योग्य आगनु आगि

चिरंद + शाम | चिरित्तरतः निश्चीनवर्षः | (वित्रमा) | विवित्रमाम् विज्ञासकः | चिर्णानवर्षः चिर्णानवर्षः ।

### वणीय, अि स-

हस्+अणीय— | हमणीअ इसणीय (हमनीयम्) हमना हस्+अणिज्ञ— | हसणिज्ञ जेत्र, हसन्र जोईपः

# प्रेरक दिध्यर्थ कुदंत

हसावि+त व — र्हमावितव्य हसार्यितव्यम रहमा इसार्विभवा ववा जेवु, हसार्ये जोईस

हसावि+अणीत्र-| इसावणोअ, हमावणीय | (हसापनीयम् ) हसावि+अणिज्ञ- | हमाविग्रहन

ए ज प्रमाणे वयणीयं वयणिजन, करणीय करणिजज सुस्स्-सितव्नं, चक्रमितव्यं, सुस्स्सणिज्ज, सुस्स्सणीय वगेरे रूपो समजो टेवानां हे.

# अनियमित विष्यर्थे कुद्रन्त

करुजं (कार्यम् ) करवा थोग्य किन्छ (कृरयम् ) कृत्य गेरस (प्राह्मम् ) प्रहण करवा थोग्य गुरुशं (गुह्मम् ) कृत्यावा योग्य, गुज्ज धन्ज (वन्यम् ) वर्जवा थोग्य धन्ज (वयम् ) वर्जवा थोग्य धन्ज (अवयम् ) निह् योल्या योग्य-पाप धन्ज (गान्यम् । योजवा योग्य धम्क (वावयम् ) कहेना याग्य-

वास्य

जन्न (अन्यम् ) जणवा योग्यस्म्य-नोकर्
भद्धा (भार्या) भग्ण पोपम्य
योग्य-भारता
अद्धो (अर्थ 'अर्थ-वैश्य, स्वामी
अद्धो (आर्थ 'अर्थ-वैश्य, स्वामी
अद्धो (आर्थ 'अर्थ-वैश्य, स्वामी
अद्धो (आर्थ 'अर्थ-वैश्य, स्वामी
अद्धो (आर्थ 'अर्थ-वैश्य, स्वामी
अद्धो (अर्थ 'अर्थ-वैश्य, स्वामी
अद्धो (आर्थ 'अर्थ-वैश्य, स्वामी
प्रद्य पाच्यम्) ग्रचा योग्य-ठीक्
घे तद्य (प्रश्नीतन्यम् : प्रह्म
प्रया जेवु
चोत्तद्य (क्रिंश्तस्यम् ) रोवु-ठश्न,
रोवा जेवु

काराये } (क्टीमम्) क्टीम-काराये } काराये सोचार्च (जीवसम्) दीनं वर्षा अर्थ मोचग में श्रीचान (घोचस्पा) गुना कें क्षेत्रत श्री अरुट्य (इस्लम्) देवस में

पाठ २३ मो

र आ

षतपान स्वन्त

मूत्र बातुरी १ न्छ । संश अने दिंशानन क्याननार्थी 🗟 क्यमण कारचानी के

्रे प्रथम मो चन्छ अभिन्यातं च गरान के. २ भ्य भाग को शिक्षण नायतं पूरवा वांगा स्वरंगे प्रांगान के.

र न्य का का इक्षास्त्रका पूर्वा वया अस्तर र यहाँ न्य-स्य + स्य—सर्वेदो सर्वेदो स्वितो (सम्बद्ध) स्वयते

अवत सर्वेत प्रक्रित (प्रवर्त) प्रपर्ध सर्वेतीः सर्वेती प्रक्रिती (प्रवर्ती) सर्वेती सर्वेता सर्वेता स्रविताः (प्रवर्ती) स

भनता जवेता जविता (भवनारी) ल इनिजनारा-होर्मत) हो तो, होर्मतो, (भवन,) यदी होनी हुंनी

है है से बार अक्षानित हो। हिंदी है से स्थित अपने की किया है। है से बार 13 क्षानित है से बार की की की की बार कर की की बार की कर की बार की की बा

मीत भीत वीत्रा शेणी कर्त शंक क्षमा शणी

द्वाच्या प्राच्यान्याच्या प्रथमी

होअत, होबंतं, होइंत (भवत्) थतुं होत हुन होअती, होवती, होन्ती (भवन्ती) थती होअना, होजेता, होइता (भवन्ती) ,, होती, होना हुनी, हुता

माण-

भण्=माण—भणमाणी, भणेमाणी (भणमान) भणती भणमःण, भणेमाण (भणमानम्) भणते भणमाणी भणेनाणी (भणमःना) भणती भणनाणा, भणेमाणा

हो=अ=माण—होअमाणो, हो रमाणो (भवमान) थतो होमाणो हो अमाणं हो एमाणं (भवमानम्) थतं हो अमाणा हो अमाणी हो एमाणी (भवमाना) थती हो अमाणा, हो रमाणा हो अमाणा, हो रमाणा

**≨**−

भण् + ई - भगई, भणेई (भगन्ती) भणती हो +अ-ई हो ई, होप्हे (भवन्ती) थती ह ई

ए ज प्रवाणे क्रीर प्रेरक चग, सादु भावे अग सादु वर्मणि स्रम अने प्रेरक भावे तथा वर्माण अगने प्रग उक्त प्रणे प्रत्यमो लगा-दवायी तेमना वर्तमान कृदतो वने छे

कर्तरि प्रेरक क्रांबान कुरन्त--

करावि।कारत-करावती करावेती (काराव्यत् ) करावती

कार + = र नारशे कारती (कारवन ) कराबि+प्रभग्नाब-कराबधायो करा सम्बो(काराज्यमाकः) अ

क्टर + माथ - कारमाणी कारमाणा (क प्रमाण ) अ

साद माबे बतेवान क्षरत्न-

सर्ग इक्क+ल- सण्डिके + » +साथ-शोजक्रमां सर्व हैक+न्त्र-सर्गा क्र » + नमाथ स्थानसर्ग मन्यमानम् ) भनावे-राजनामः

सारं कर्मचि बतमान करनत-सवीबंतो सविवर्तनो गेधो (सन्यमानः सन्तः) सवातौ मंच

सबीममाओ प्रविक्तमाची सिक्षोगी स्वयसात प्रशेष ) प्रवेष समिक्ष्रंती सम्बोर्धनी गावा (सम्बन्धाना गावा सनानी पाचा सकिए नमाजी, संबोधमांची पंती (संबंधमांचा प्रकृतिः ), पवि सचित्रका समीतां

प्रेरक भावे भजा देश्वेतं (भजाष्यमानम्) भनाषादै —

सवाबदामां बाबड सवाधीशत वदीरे मेरक कई जि-

भागा अवता गुनी (मधान्यमान इतिः)

धवाबातो सम श्रेष : विज्ञा माणी

१२क स्वीकारा

भणाविज्ञती साहुणी (भणाण्यवाना साह्मीः) भणाविज्ञती साहुणी (भणाण्यवाना साहमीः) भणाविज्ञताणा भणानाती साहवी भणावीर्वती भणाविज्ञहै भणाविज्ञहै

ए ज प्रमाणे---

सुन्स्मंतो ( शुरूपन् ) च हमतो ( च इ कमन् )
सुन्स्माणो ( शुरूपमाणः ) च कममाणो ( च इ कममाण )
सुन्पतिङ्कतो च कमिङ्जतो | च कमिङ्जतो | स्म्प्रिक्माणो | (अर्ष्यमाण )चकमिङ्जतो | साण )
सुन्स्मीयतो च कमी अनो माण )
सुन्स्मीयमाणो ( च कमी अमाणो )

आ यथां रूपो जाणी हेवां

## पाठ २४ मो संख्यावाचक शब्दो

1 1

विशेषता

जै शब्दो हारा सख्यानो बोध धाय ते शब्दो सएयायाचक कहैवाय एया शब्दो अकारांत वण हाय छे अने आकारांत, इकारांत अने उकारांत पण होय छे आया शब्दो विशेषणव्य होवायी एमनु नियत लिए नदी होतु वण एवा शब्दो विशेष्यनो लिंग अने वचन ने विभाक्षने अनुमरे छे जे शब्दो अकारांत इकारांत अने उकारांन छ तेमनां हरो आगळ जणावेली रीत प्रमाण समन्यानां छे, तेमां ने सास विशेषना छे ते आ प्रमाणे छे रक की मोडीने नदारस (अद्यारस) सुवीना वेदराराणक सम्प्रेने ब्योगा बहुबचनमाँ १०१ जने जो इस में ऋतन वारावरणी साने हैं।

यम + चहु-यमच्ह्र सम्म + वह सम्म है। वस्मय-चरू-अभ्यच्छ सम्म ने स्वस्मवहै। ति + चह तिव ति न चह तिम् है। दे + चह तुवह

कति। यह-कविष्यः कविश्वदं कविष्यं ।

इषका यथक परा पत्र (यका) व्य वस्तर्भ क्षेत्रियों कहे चल्चती वेशं सम्बन्धन के क्षेत्रियों

को बचारो नेत्रं को ग्लेपक्रियों को ग्लुवक्रियों बच्चां में के कारणी कोणा गहुरकारों के वा बच्ची एवं जन्म

का को है। बग-रॉड-प्रोडिं। बनेरे. (बना नहं ३३० निस्म र थे)

क्त+-र्रांत-प्रमेश्चि । बनेके. (खना नतं ३३० निस्त्र र व्य कम सम् (स्त्रा)

का सम्प्रतां को बहुरक्तां शास के को से क्षेत्रको 'सम्बद्ध रेके समन्दानों के

प= दमें बीठ- बने बना स= बनेडि बनेडि, डनेडि।

स्या । सन्ता वसन्त् वसन्ति।

र्य -- विश्वची बनामी बनाम

9 R 20 M CO (1913 1

75 F रक्षांत्री इनेहिली उधान्यती, इधेर्स्ही, स्था पुरुष् स्केर्यु । र (दि) बाँग क्रियमां करो का जन्दरां स्पी बहुवचनमा याय है। पः — रेड्डिं, होणिंग, दुग्णि। दीद— हिंगि, दिग्गि। हो दें स्था दें। <sup>२०</sup> नेहि, नेहि, नेहिँ। विहि, विद् विहिँ क्यवा हेडि हेडि हेडि घट— | होग्ड, होग्ड, दुम्ड, दुम्हें तथा छठ— | विषद्व चेण्डें दिण्ड, विण्डें पः—) दुन्ती होत्रो, दोड होहिती, होसूनो शिवसी देशो, वेड, वेहिती, देसूती सः— होस्, दोस्, वेसु वेसु ति (त्रि) त्रणे छिंगनां रूपो पं०— } विष्णि घ॰— तथा छ॰—

१ क्षा स्पोनां 'व ये बदले 'ब' पण बोलां राह्य ने

नान्द्रेण्यं करी भागतः धनादेशः (रेशि' शहरायं महुरपनमं करेने कैद भागमा (शहरो पाधु १६६)

चर (चतुर्) वपे किंग्स क्यो प — { चत्रारो, (बरगर) चत्ररो (चतुरा), वत्र रि पी⊶ } (बस्मरि)

तः— ।चर्काह, चर्काह जर्काह चर्चाह चर्चाह, चर्चाह

चर्चा चर्चा चर्चा । स्या

बान्धीमां कर्या जाला 'सी कैस समजय' (सुझी करा १६०) यंक (यक्का) अधि स्त्रियमां करो

वर्षः --- } पव

ब्राफ--- पंचिति पंचिति, पंचिति, पंचति, पंचति पंचति

पंकरि, पंकरि पंकर बाञ--- ) पंत्रच्या, पंत्रच्या संघा

> माधीनों नवां 'बीर'वां बहुच्चनांत करें। सैचों के (श्वारों गातु १६ ) ब्या रीते. राज 'बी रीते. जीने बालेका उनान बण्गोनों समी

क्षत्रसी केंग्रामी क

छ (पद) छ       सत्त (सप्तन्) सात       सप्त (अप्टन्) आठ       ना (नवन्) नव       सप्त } (दशन्) दश       पआरह )	तेरस राष्ट्र
प्आरह प्रगाग्ह प्रगारस	सोलस (बोडरा) स्रोळ सोल्ह
दुशलस ) वारम वारह	सत्तरस (स्तर्य) सत्तर सत्तरह (अष्टाद्य) सत्तर अट्टार्स (अष्टाद्य) सहार
4146	1 Marca 1

### कइ (कित) केटला

प॰ — | कई, करणो घगेरे घ० — | कई, करणो घगेरे घ० — | करणह, करणह

याकीनां रूपो 'रिसि'नां बहुवचनांत रूपो जेवां छे

नीचे जणावेला जे शब्दो आकारांत छे तेनां रूपो 'माला'नी जेनां धाय छे अने जे शब्दो इकारात छे तेनां रूपो 'कुद्धिनी लेगां थाय छे (जुओ पानु २१६ तथा २१७)

प्रमुणवीसा (एकोनिविश्वति) प्रावीसा (एकविश्वति) स्वर्गणीय इन्द्रवीसा (एकविश्वति) प्रविश्वति) प्रविश्वति (प्रविश्वति)

बाबीसर (शर्मकारि) कारीब रीबीसा (प्रशेतियां) चेतीक १व्यवसीसा | (शतुर्विप्रति) बोदीसा पणपीसा (वर्णन्यति) वर्णम ध्य्यीता (वहरिष्टी) क्रवेश सचादीसा (सर्वन्त्रने) एसा **अक्टामीमा** SECREPART PROPERTY वहपीमा पय्यकीसा (क्लोबॉक्क्स्) रोपवर्षाच सीरा। (बिबर) बोब (एक्जिएत) DWS/NI इच क्रतीसा बद्यामा (द्वानियद् ) नतील वर्गलय्य ) तेत्र'स विसीक्ष पणतीसा (कर्षांत्रपत्) पंत्रीक छत्तीसा (नर्योद्रश्य ) प्रयोध सत्ततीसा (नर्तात्रवर,) एक

बङ्गतोसा (बर्जनर) मन **प्रस**ीसा व्यायवसाधिसा ( स्थेनव शार्थिकः) ब्रोधनकारि क्तांत्रसा ( क्वां मा) aradar चनस धगचनाविसा इच इचलानि मा व्यवच्या क्षिमा इनपामा रोमाध्यमा वसत्ताक्रिसा तिचला किसा 🗎 ₩ व भाषा राधायाम् र रावचासिया। (परकर्ता वर धापाको सत्तवत्त्वस्याः। (नतवत्रान्य सध्यासा बहुचलाखिसा |(वरचकारिय द् ) शस्त्रका

भा चान्यम् प्रवसा विमिन्द्रमा चारचीले वन नाम केः
 भा चान्यमा रि जिल्लारा

पगुणपण्णासा (एकोनपञ्चा-इात् ) ओगणपचास पण्गामा (पन्चाशत्) पचास प्रापण्याम्ब (एकण्डाशन्) इक्रवण्णाना एकावन पक्कपण्णासा प्रमायणगा (द्विपष्चाशत्) याप्रणा वापन दुर्भगसा तेवण्गा (त्रिपञ्चाशत् ) निपण्णासा घ्र≀न (चतुष्यम्चाशत् ) चोवणगा चोपन चडण्पणासा पणपण्णा (वटववटचीशत् ) पणपण्जासा पचावन पनानग्गा (पद्पञ्चाशत् ) छप्पणा छप्यणासा छप्पन (सप्तपञ्चाशत्) सत्तावदा सत्तपण्णासा सत्तानन (अप्राम्चा अर्ठ। यन्ना भ इंच्या शत् ) भरूउपण्णासा अट्रावन पग्रमसद्धि (एकोनपाँछ) आगण माठ सद्भि (पष्टि) साठ पगमद्भि (एकपिष्ट) एकपठ इगसद्भि

(द्वापष्टि) वासठ विषद्ठि तेसर्ग्ड (त्रिग्रिष्ट) त्रेसर चउसर्राठ (चतुर्पाष्ट) चोसठ नोसर्टात चोसदृढि पण नद्धि (पण्चप्छ) पांसठ छासद्धि (पदप्रि) छासठ सत्तसद्धि (मध्नपष्टि) सडनठ अइमर्डि । (अष्टपष्टि) अदस्ठ अट्डमटाँडे । १०मृणसत्तरि (एकोनमप्तति) ओगणोशित्तेर सत्तरि (गतित) शित्ते। पगमत्तरि (एकपप्नति) इक्कसत्तरि एकोवेर प्रकार कर वा (त्रि) स्वाहर है (द्विमप्तिति) चहोतिर वावत्तरि तिसत्तरि (त्रियप्ति) संतिर चोमत्तरि (चतुस्मप्तित) चउसत्तरि चुमोतेर पण्णसन्ति (पन्चमप्नति) पणसत्तरि पचें तेर छसत्तरि 'यदमप्तते) छोतेर सत्तसत्तरि (सप्तमाति) सत्त्योतेर

वेणमह (जिनसीत) छन्तं बरचा मर्छ

सहरुपणि (अडलगरे) संद्रद्रणि अठगरेर

पर्यासीइ (ग्रोवासीख)

पर्यासीर ( गोनावीक)  वीरकावृत्ये करार  कर्मार (कडीक) एवं  प्यासीर (कडीक) एवं  प्यासीर (कडीक) एवं  वासीर (कडीक) करार  मेसीर  (कडीक) करार  मेसीर  (कडीक) करार  मेसीर  (कडीक) करार  करारीर  प्राप्तीर  प	चडराबर (बहुनरेग) बीजवर पार्ट प्रकार के प्रवास (बहुनरेग) प्रकार कर पार्ट प्रकार के प्रकार कर के प्रवास (क्षार कर
. , , .,	meaning and duit stated?

दहसहस्स (दशसहस्र) इस हमार अयुम | (अयुत) दम हनार अयुन | (अयुत) दम हनार उत्तय लक्ष) लास दस लक्ष | (दश लक्ष) दह लक्ष | दम लास

पडम पडन पयुभ कोडि (कोटि) करोड, कोड कोडाबोडि (कोटीकोटि) करोड ने करोडे गुगो नेटला

चपर जणानेला बधा शब्दो साधारण रीते एकवचनमा वपराय छे वैने वापरवानी वे रीत आ प्रमाणे छ

'वीदा माणमो', एम क्हेनु होय त्यारे 'वीस मणुस्मा' अथवा 'वीसा मणुस्माण भर्भात् 'व'दा माणमा' अथवा 'माणसोनी बीदा सङ्या' ए रीते एनो वे जात्नो प्रयोग थाय छे

षठी उयारे टपर जगावेला सङ्गाताचक शब्दो एक वीश अयवा एक प्रचास एम पोतपातानी एक सङ्गा स्चातता होय त्यारे ते एकत्चनमां धावे छे अने घणा बीश, घणा पचाम, घणा नेषु आम पोतगीतानी धनेकता यतावता होय त्यारे यहुवचनमा पण आवे छे

ते आवार्यने छणान शिण्यो छे पण तेमा एक के बे ज सारा छे चद्र सोळ कळाओवडे शोमे छे पूर्वे पुरुषो बॉतेर कळा शोसना हना अने खाओ चोसन कला शोसको करी

हमणा श्रावक अने साधु बार अंगाने भणे छे ब्राह्मणोबंड चंद श्रियाओ शोखाय छे महिनामा शोदा दिवस होय छे पाच माणसोनां परमे-बर बसे के तेणे गुरुने पचर प्रश्नो पंछता रुपे व्यवपातिर वाष्ट्रपाने

ही मध्याणु श्रुतिभावे पंदन दय धजरूस क्रोडीर नि म

नस्स परे पोप्रयदाय संचंधे

लयेण जुमयं विद्वविद्या

धन मापे

धनोसी होड

पंचन्द्रे थयाचे पहल यथे (प्रतम्) पर्मसिक्तर चताचे असाया उपपाड वति

इन गाजा निसाय प्रदति वारह प्रश्लीमा बन्धार Reantlin बहुद्वारम तथा छत्तीसार्दियो थोधिंतो म बीरेति

पता है मरिय में कोवि सन्दे संतु निरामपा धरको सर्वताची शौत सावे प्रदाई पार्शत म होत्या को वि ड्राइमो

पाठ २५ मो **मृत्युद्धन्त** 

मूच बादुनं 'त' के 'स' प्रत्यत शयक्षाची वह भू/कृद्ध वने के ए बन प्रथमो क्षामता पूर्वमा अभी ९% वस्य छे-

गम् + स + त−निमनो | (गतः) घदैसो गम् + स + स−निमनो | मार्च--

र्शायके गाँउमें (गतप्) क्यूं-पासे

2 m unt tell 61

फर्मणि---

गमिनो गामो (गतो प्राम) जवापलुं गाम

मेरक-

षराधितो (कारापित ) | करावापलो-करावेलो कारियो (कारित )

### अनियमित भूतकृदन्त भ

गयं (गतम्) गयेलु, जयु, मयं (मतम्) मानेलु, मानतु, मत फंड (इतम्) करेलु, करखु इड (इतम्) इरेलु, इर्यु मड (मृतम्) मरेलु, मर्यु किश्च (जिनम्) भितेलु, जितनु तस्त (तस्तम्) तपेलु, तप्यु कथ (जृनम्) वरेलु, कर्यु

दन्छ (दष्टम् ) धीछ -देखेलुं, देखन् मिलाण | (म्लानम् ) म्लान मिलाम | थएल -करमाएलु, म्लान धवु अक्खाय (आख्यातम् ) कहेलुं, कहेलुं निहिय (निहितम् ) निहित-स्थापेलुं, स्थापेलुं

१ आ छदतो अने बीजां छदतो पण जे विभाचिवाळा जणावेलां छे ते उपरथी तेमना मृळ शब्दो विद्यार्थीओए जाते शोधी देवा जेमने —

U	त उपस्था तमना	मूळ शब्दा विद्यायाआए जात शाघा छवा जमक
	विभक्तिशळु-	मूळ दा=द−
	गय	गय
	मड	<b>म</b> र
	ददठ	<b>ट</b> ह
	पायगो	पायग
	<b>डे</b> हओ	रेहम
	इसिरो	इनिर
	वज्व	<b>य</b> ज
	भिष्यो	<b>শি</b> ঘ
	<b>ह</b> सेतव्व	इसेतन कगेरे

963 तेजे गरने पन्नर प्रका ही शब्दाणु श्रृतिभोने चंदन पस्त्रपा तमे भारतीते साह्ययोगे पंचनां रायाच प्रश्नम वर्ष ध्यक्षमा क्योजीय विज ( प्रवम् ) पर्शतिकाः पंत्रोमी बोड तहस वरे पीरचवान मत्तरी चत्तारी क्ष्माया तक्काप्ट बति सबेच जुमर्च विद्वशिक्षर इस बास्ना विसाय पहलि यमो है करिय से कोवि बारब इत्सीमो करवार सच्चे सत् निरामपा निकलार्थित सच्चे सहियो होत भटकारस कथा खतीसार्थितो साहे महाई पानंतु बोधें को भ बीहरित न दौरवा की जि विश्मो पाठ १५ को

मतक्दन्त मूढ बातुने 'त के 'ज' अवन कवाबनावी तेतु भूनकृतंत की के

ए बने प्रक्रमे सामको पूर्वना 'भागी १'इ' बाब छे (यतः) ययेक्रो

गम्+ध+त—गमिनो | गन्न+ध+अ—गमिनो सार्व--

कन्तिमं (*नसम्*) AL WAT CHAINAGE

कर्मणि---

गमिनो गामो (गतो प्राम) जवापलुं गाम

मेरक---

करावितो (कारापित ) करावापलो-करावेलो कारियो (कारितः)

### अनियमित भूतकृदन्तभ

गयं (गतम्) गयेलु, जयु, प्रयं (मतम्) मानेलु, मानवु, पत फंड (ष्टतम्) करेलु, करखु हड (हतम्) हरेलु, हर्न्यु मखं (मृतम्) मरेलु, मरवु जिस्म (जिनम्) जिनेलु, जिनवु तत्त्व (तन्तम्) तपेलु, तप्रयु कथ् (कृतम्) करेलु, कर वु

दर्ड (रष्टम् ) रीह -देखेलुं, देखतुं मिलाण | (म्लानम् ) म्लान मिलान | थएल -करमाएल, म्लान थन्नु

अक्खाय (आख्यातम् ) कहेलुं, कहेल्र

निहिय (निहितम् ) निहित-स्थापेलु , स्थापनु

वगेरे

भ अर हदती अने चीजो छुदतो पण जे विशिचवाळा जगावेला
 छे ते उपरथी तेमना मूळ शब्दी विद्यार्थीओए जाते शोधी टेवा जेमने —

विभक्ति गळ्-मूळ शब्द-गय गय मड मड ददठ दद्ग पायगो पायग टेहओ टेहअ द्दसिरो हिंभर च उस क्ज দিঘা भिश्च हसेतव्व **हसेत**न्त्र बायाचे (काक्शम्) काळा चेख्न पाळ चेख्न बाळा चंद्राचे (चंद्रस्य) वंद्रश्चाद चंद्राचे (कानुस्य) काळ्या चेळा काळ्या चेळा काळ्या चेळा चेळा चेळा चेळा चंद्राचे (च्य्रम) काळा चंद्राचे (च्य्रम) क्राज्ञ चंद्र्य कार्य (च्य्रम) काळा वंद्र्य चेळा चेळा चंद्राचे (क्य्यम) काळा वंद्र्य चित्रसार्थ (क्य्यम) काळा वंद्र्य चित्रसार्थ (क्याम) काळा वंद्र्य सुर्य (श्वन्तर) समरेह वार मरेहें सुर्य (धनम्) तानहेह बांमडड संसद्द (स्वस्य) त्वननाई, क्तन घटट (स्टम्) कोड मन्ह गोरे

श्वारणमा गेरणी मीरकेमां आयां आवेच करायां शावनिका वर्षपिकाशा निवयो हारा समाने केतानी केत

मविष्य क्रवन्त

मूत्र वाद्वने इत्थात इस्क्याम अने इस्तई प्रथम समावदाची हिंदू सनिभगरकात वर्त के

> स्टिस्मेंगे (क्टिप्यन्) करणे होईस क्टिन्समाणे (वरिष्यमाणः) ॥ क्टिन्समी (वरिष्यमाणः) ॥ क्टिन्समें " क्टाइस्ट्यमाणे (वर्रायपिष्यमाणः) कटाइस्सेंगे (क्टायपिष्यमाणः) कटाइनो होईस

# कर्तृदर्शक कृदंत

मूठ भातुने 'इर१' प्रयय लगाउनाथी तेनु कर्य दर्शक कृदत बने छे

हस+इर-हिसिगे (हमनशोल ) हसनारो

नव+इर-निदर्श (नम्र-न्यनशोल ) नमनारो

हसिरा, हमिरी (हसनशोला) हसनारी
निवरा, निवरा बगेरे, (नम्रा-नमनशोला) नमनारी

### अनिप्रमित क्रनुदर्शक कुदन्ती

पायगो (पाचक) पाक करनार-रांधनार नायको (नायक) नायक-नेता-दोरनार नेता विस्त (विद्वान् ) विद्वान् कता (कर्ता) धर्ना-करनार विकत्ता (विकर्ता) विकार परनार वचा (वका) वका-बोलनार हंना (इन्ता) हणनार छेता ( छेता ) छेरन र मेता (मेता) मेरनार कुमआरो (कुम्भकार,) कुम करनार-कुंभार कम्मगरो (कमंकर ) कमं-काम-करनार-कामगरो भारहरो (भागहर) भार लह जनार थणधरो (स्तनचय ) घावनार वाळक

१ हे० प्रा० स्थाव टारा१४५।

#### श्ट्य

परंतको (परंतपः) बाक्षे लपायमार प्रतापी संदर्भा ( खेलका) सलनार केटसांक अध्ययो क्षररो (अप्रे) आगे-बाबळ थमई (बरहरू) मनेस्वार सक्देद (भक्तमा) गींव परीने हु जि धवरि | (अपरे ) बगर सर्हेब ( (बाईब) बार्डाव-विदेश चपरि मतीय बहत्ता (श्वसम्बर्) गाँवे चागामे (थपरः) वाध्वयी चाहच्य ( जाहर**र** ) पनप्रदा<sub>र</sub> समो 🖟 (सरः) बागी-एची शतो । इस्मे (१८:) भारापः, रितर शानकार म ध्यवसम्बद्धं (सम्बोडम्बद्ध) इड्डा(१७१वा)एव नहीं दो-धन्यवः अस्थोधस्य एक बीआवे (सि (सि) नेह खान्य (बन्दर्) मानस्य वचरसुद्धे बताथ) सार्व बन्ध (बस्ट) कामी बाद्धा (महा) समय यगया (एक्स) एक्सा-एक ध्यम् (मृन्थमः) निवेत-निराधित श्राच्याहर (अन्त्रका) हेम व्यक्ति हो वर्गतलो (एकनकः) ए४ छ।य सक्रमर (मध्न्यम् ) श्रद्धा रिया. याच (मद) मही तरस बाह्य (शस्त्र ) पाने बारबा (मदरा) नवरा करा (धरव ) केन केंगे धेरे भद्रप 40 सदया (बदुश) हमसे बायमी (सबक) बाडे बडेरे शांत्रक सदेश) तस्य ध्यक्रिनी (मॉनन) चारै वाज क्षेत्रविदे (फिल्ला) केरमा सहस्रो सामग ध्येग समय सुदी aux ⊭स्प)लर्गे विदेशपूरत द्वेप्रसिद्धेच (जिन्दियोग)

धारुकार्य (अक्टबस् ) अराव

केरला सर्वेश करने

मूरख माणस लगलप फरे छे राजा इसीने लोकोने नम्यो हुं पानोने रोकचा माटे उतावळो धयो महाबीरने जोवा माटे लोको घडे दोडाय छे भोगो भोगचो भोगधीने तेओवडे खेद पमाय छे तस्वने जाणीने, विद्वान चडे मुक्त थवाय छे

प्रह्वाद कुमार प्रजाना दु खोने समजी ने तेनो सेवक थयो जगतमा घष्टु हमवा जेवुं देखाय छे अने रोग जेवु पण देखाय छे पुण्य पकडु करवा योग्य छे अने पाप वाळग योग्य छे ते भणतो भणतो उचे छे भणातो पाठ तेनावहे समक्ष्य छाय छे

सज्जणो सत्थवयणं सोचा
सहरह
मण्सा पुण्णं किच्च देवा
होति
पाव परिचज साहृहि सन्य
कीरर्
ऐदो भहावीर वदित्ता शुणक्ष
अवस्सं चात्तन्य वयित
महाणुभावा

दह्ड पासंति देक्छिरा नरा निवरो बालो पियर पणमह पायगेण ईसि अन्न पथिज्ञह पगया एव मए सुगं ज महावोरेण एव कहिअ पयाण पालणेण पाव विणह्ड पुण्ण च जाय



## नाम [नरजाति]

सकरम (अकर्मन्) कर्म रहित निर्मळ-पित्र म स्राह-आकडो स्राह-आकडो स्राम्म (अप्रि) स्रिप्ते, आग स्राह्म (अप्रि) स्रिप्ते, आग स्राह्म (अप्रि) स्राप्ते, आळ स्राह्म (अप्रि) स्राप्ते, आळ स्राह्म (अप्रि) स्राप्ते, आल्या स्राप्ति (अप्रि) स्राप्ते, अनागमन स्राप्ति (अप्रि) स्राप्ति अनेक स्राप्ति (आर्मन्) आत्मा-आप पोते

क्षण्ण (अन्य) अन्य, बीज् क्रप्पाण (आत्मन्) आत्मा-आप पोते

अभोगि (अभोगिन्) अमोगी-अमोइ ई भोगोने नहिं भोगवनार अमु ( अदस् ) ए अमुणि (अमुनि) मुनि नहिं ते-बटवड करनार

स्माह् (धरमद्) हुं स्मयं (अयस्) ध्रयस-रोदु स्मर्यं (धरक्) धारो-पैटानो स्मरिह्तं (धरिह्+धन्त) बीतरान देव थलाह । (अलाभ) अलाभ-थलाभ । भ्राप्ति अवर (अपर) अवर-वीजु असमण (अथमण) थ्रमण नहि ते असजम (असयम) असयम अहर (अधर) नीचु, बीजु **अंक** (भद्ग) अक−खोळो अंतर (अन्तर) अतरन (अन्ध) आघळो अंघल ∫ अंव (आम्र) आंवो अंव काळ । ( आप्रकाळ ) अंधगाल 🕽 आंवागाळी **अंघमउह (**आम्रमुक्ट) अवोडो आहच (आदित्य) भादित्य-स्य आयरिय (आचार्य) आचार्य-धर्मगुरु, विद्यागुरु **आरिय** (आर्य) आर्य-सज्जन

यारिय (आये) धार्य-सजन जास (अथ ) अय-घोडो आसाद (आपाड) अपाड मास आसंक (आग्रद्ध) भाचको धारहाअ (जाहाद) आहाद-

**याहार** (आधार) आधार **याहार** (आहार) आहार-खानानु

भानद

इ.स. (६९स्) का इक्ट (१९२) १२२८, धीर्ड इस्ति (कान्ति) कान्ति दंद (६९३) १७० कच्छाड (अस्त्रक) कान्ताह कच्छाड (इस्ट) १३० -विश्वी कह (उपट्ट) धोर

ठण्डाक (बण्डाक) वनाधे कत्तर (जार) उत्तरिका कत्तर चन्द्रि (जर्गन) वर-गन्धे में धारन करागर-छक्क कराव, सांद्रक (जन्म)

कोमन-कम स्पास (संपर) अपर-अपरि स्म (स्त ) स्त श्रमक स्थासाथ (श्रमक) श्रमका-

वादासा वंदावा अध्याप्त प्रकार वंदावा अध्याप्त अध्याप्त अध्याप्त अध्याप्त अध्याप्त वंदावा अध्याप्त वंदावा वंदाव वंदावा वंदाव वंदावा वंदावा वंदावा वंदावा वंदावा वंदावा वंद

इसं (एक) एक पक्क । परावक (पंपान) कैपनन-

यय र

कोष्ट (वीष) कोट-होट क (किए) कोल कहम कशम (वलन) नगी. केटकस कारकस (वण्डा) अलगी

क्रिक्कार (वर्षकार) क्रेस क्रव्य (क्रा) ध्रम घ्रमी क्रव्य (क्रा) ध्रम च्या क्रव्य (क्रा) क्रव्य-वर्ध क्रव्य (क्रार) क्र्यो क्रव्य (क्रार) क्रवे क्रव्य (क्रार) क्रवे क्रव्य (क्रार) क्रवे क्रव्य (क्रार) क्रवे

करेणु (क्षेतु) वर्धे—हासी कार्यंव (कारण) कार्यंतु द्वारण कार्यंतु (कारण) कार्यंत्रणे—कार्यं कार्यंतु (कारण) कार्यंत्रणे—कार्यं कार्यंतु (कार्यं) कार्यं—कार्यं कार्यंत्र (कार्यं) कार्यंत्रण कार्यंत्रण (कार्यंत्रण) केर्यं कार्यंत्रण (कार्यंत्रण कार्यंत्रण कार्यंत्रण कार्यंत्रण (कार्यंत्रण कार्यंत्रण कार्यंत्रण कार्यंत्रण कार्यंत्रण कार्यंत्रण कार्यंत्रण कार्यंत्रण कार्यंत्रण

वाशिकक (प्रस्तिक) केन्याने-केन्स कंत्रण (कन्म) पांचे कंत्र (कम्म) सम्ब-प्यामी कंसवार (कांस्यकार) कसार काग रे (फाक) कागडो काक ( काम (काम) काम-तृष्णा-इच्छा काय (काय) काया-काय-शरीर काल (काल) काल-समय कावडिश (कापर्दिक) कावडिय कोडो-कोही कासच (काइयप) काइयप गोत्रनी ऋषि-ऋषभदेव कांचलिय (काम्बलिक) कामळोयो. कावळीओने वेचनार वा ओढनार किण्हसार (कृष्णसार) काछी-

किलेस (क्लेश) क्लेश किसाणु (इशात) भि कुक्सि, कुन्छि (इक्षि) कूब कुडुम्ब (इड्मिन्) कणनी कुढार (इठार) इठार—इहाडो कुढारय (इठारक) इहाडो कुढारय (इहालक) मोदाळो कुमारवर (इमारवर) उत्तम

यार मग

फुलवह (कुलपति) कुलनो पति— धाचार्य कुंध (कुन्ध) कथवी-एक नानी जीवसी कंभार (कुम्भकार) कुमार केवट (कैवर्त) केवर्त-केवट-होडी हांकनार केसरि (केसरिन्) केसरावाळी-याळवाळो-सिंह-केसरी सिंह कोइल 🕽 (कोकिल) कोकिल-कोकिल र् कोड (कोड) गोद-खोलो **कोणय** (कोणक) खुणो कोल (फोड) खोळो कोड कोलिक (कौलिक) कोळी-क़ोलिश्र ( कोववर (कोपपर) कोपमा तत्पर कोपी-क्रोधी कोस (कोश) कोइ-पाणी काढ-वानो. कोश-खजानो

कोसिस (कौशिक) कौशिक

कोहदंसि (कोषदर्शिन्) कोषने

स्नग्ग (खड्ग) खड्ग-खाडु-तल्वार

स्रिय (क्षित्रय) क्षत्रिय

कोह (कोघ) कोघ

गोत्रवाळो इन्द्र अथवा

चडकौशिक सर्प

जोनार-कोघी

इस (१९५८) वा इसर (१९५८) १९९८, वीर्षु इसि (१९५८) वालि इस् (१९९८) १९९९ बच्छाइ (इल्लाह) बच्चाइ

बन्धाह (वातक) बन्धाह बन्धु क्षुत्र हक-केरवी बह (वन्द्र) त्रंत बन्दास (यनक्षक) ववाचे बन्दा क्रस्ट अस्तिका बन्दात

धवहि (जर्मन) वद-पान्ते-दे करण करणर-उसुर राज्य कोज्ञय (वसन) जोवर-क्रम

नोनन्-कृत्य कंप्याम (कंप्यन) अन्तर-क्रपति इत्य (कर्न) धन धनक कदमहाय (रुगध्यन) क्युस्थन-

वस्तात् (वस्तात् वस्तात् क्रास्ताः वस्तास्य वस्ताः) उत्तरकः यक्ताः वस्ताः वस्ताः वस्ताः

ध्यक्ता ११तर् समाहि स्थाप उपापि-अपेश इत्साव उसम शंका प्रभा पम एग्यू ए पम } (दक एक पक्क

परायमः । एरका) है। स्थ

ক (বিন্যু) দ্বীপ কামে কামে (বানুন) পৰী, বীনেক অভ্যান (বান্তা) বান্তা কলিবালাত (বাৰ্টিনত) কলৈ

कोड (क्षेत्र) भोउ-धेउ

कण्या (कर्ष) यान कालो कव्य (क्रमा) क्रमा-काल कार्यक्रय (कर्माक) कराई-कराई कार्यक्रय (करामक) करावल कारण (करार) करो कार्यक्रिया (कार्यक्रम) करीएई मेच्यु कार्यक्रम करसे करेखु (कोस्ट्र) करी-क्रायों

क्रतीयं (चरमा) वर्षमध् द्वार क्रकाव् (क्रमा) नवद्-क्रमे क्रकाव (क्रमा) नवको समूद्र क्रमाव (कर्प) थेगी क्रमि (क्रमे) धेरी-धमर क्रमि (क्रमे) धेरे क्रमिराव (क्रमेन) थेउँ

कविक्र (वर्गक) वर्गक कवि कार (वर्ग) चलुक कवित्तवस (क्रियक) चेत्रको-चेद्रत वेद्रत (वच्च) गांधे वेद्र (स्टब्स) सम्म-स्कटी **केस**यार ो (सस्यकार) कसार काग ) (काक) कागडो काक काम (काम) काम-तृष्णा-इच्छा काय (काय) काया-काय-शरीर काल (काल) काल-समय कावडिय (कापर्विक) कावडिय कोहो-कोशी कासच (कार्यप) कार्यप गोत्रनो ऋषि-ऋषभदेव कांचिळ्य (काम्बिक) कामळोयो. कावकीओने वेचनार वा ओटनार किण्हसार (कृणसार) काछी-यार मृग

किलेस (बटेश) कटेश किसाणु (इश्रात) भगि कुक्सि, कुच्छि (इशि) वृत्त कुद्रस्य (इर्श्टिम्न) नगरी कुढार (इर्श्टार) इर्शर—इहारी कुढारय (इर्श्टार) इहारी कुढारय (इर्श्टार) बेटाळी कुसारवर (इस्पत) चत्तम कुमारवर (इर्ल्यात) इस्मार

भाचाय

कुंध (कुन्ध) क्यवी-एक नानी जीवहो कुंमार (कुम्मकार) कुमार केमद्र (केनर्त) केनर्त-केन्ट-होडी केसरि (केसरिन्) केसरावाळी-याळवाळो-सिंह-केसरी सिंह कोइल (कोकिल) कोकिल-कोकिल कोड (कोड) गोद-खोलो कोणय (कोणक) खुणो कोल (कोह) खोळी कोइ कोलिक ( (कौलिक) कोळी-कोळिझ ( कोववर (कोपपर) कोपमा तत्पर कोपी-कोघी कोस (कोश) कोह-पाणी काढ-वानो, कोश-खजानो कोसिय (बौशिक) बौशिक गोत्रवाळो इन्द्र अथवा चहकीशिक सप कोइ (कोव) कोव कोइटंसि (भोवर्दागन) क्रोवने जोनार-कांबी खग्ग (खड्ग) खड्ग—छाडु—नछत्रार खित्य (धित्रिम) अत्रिम

छार ि क्षेत्र (स्वन्य) क्षेत्र व्योग आध वेशे शह गमा (गमं) वर्षनो द्वत्र-वे कारते एक शरी

सद (सर) चे-सर

चारो (धल) चये

सप्तर १ (वर्रम) ववेडो मदद् 🛭 स्टब्स्ट } (गमक्र) प्रका धारण शक्हर } क्लार-क्सूड्रमी व्यक्ता वस्तार-वाचर्व

गचन्द्र । (क्लरति) धन्तेम्ये पति ग्रस्ति (दक्ति) यन-धनुदने संस्थिता सामान

क्षस्म (गमा गम जम्मे गम्मदंसि (सम्दर्शिय) गम्दी जोशन क्रम चारण चरनार

साथ (यह दावी शहस वस्त वस्त गचचरा गरंध योगची-योग रीची गांध गांध तंत्रिय वर्तन्त्रक साथी-स्थ-**ब ह्री परनृत पेषनार** 

शाह्य

सुब (सुब) अप-मोर, वहिक मात दिन कोरे য়ুৰিভবন্ত (এইদ্বস) গুৰিনা चोठम । (चैठम) गैठम चेत्रनो सन

तिहि (प्रवेष) स्वरूप

सुबद्ध (पुरा) प्रचय-वर्ष प्रमा-

योगूम (जेक्ष) वेका-वड चक्क (कड) पडी सरबार । (शहपति) नामे परी-धक्रमा ि श्चाय∹(क्ष) ज्लड **ज्**ड सोक्ज (केरण) चेसे बरमोर (क्योरिय) कार्रेप कोरे कोच बळवडि (बक्तर्कित्) बक्र केर-

कार-चक्की ग्रम बक्लु (क्ट्रन्) वह-संव ब्राम्मार (बगबर) चनार ब्हेंस (क्या) केर भार (श्वतिन्) स्वयी बास (बल) केहरू वे पर

दाचा हे बिहरा (चित्र) एक सरविर्द्ध गान वित्रपृष्ठ 🕽 (चित्रपृष्ट)

चित्तयार (चित्रकार) चितारो छगळय (छाग) छाळु-वकर छत्त (छात्र)-विद्यार्थी छप्पस्र (पदपद) छपगो छप्पय ( छाइल्ल 🕽 (छायाल) छायाळ-छायाञ्ज । छावय (शावक) छैयो-छोकरो **छ्हागुड** (सुघागुड) छागोळ-चुतो अने गोळनु मिश्रण छेष (छेद) छेडो **ज** (यद्) जे कट्ट (जर्त) जाट जातनो माणस **जडा**ल्र (जराल) चटाळू-जटावाळ

जणय (जनक) जनक-पिता जण्डु (जह नु) ते नामनो सगरपुत्र जम्म (जन्मन्) जन्म जर (ज्वर) ज्वर-ताव लरद्धय (जरठक) घरहो-जरहो जंतु (जन्तु) जतु-प्राणी-जीववत जंवु (जम्यु) जांयु, जावुनु झाह जामाउय (जामातृक) जमाड जायतेय (जाततेजस्) जेमा तेज छे ते अग्रि जिल्ला (जिन) जय पामनार, जीव (जीव) जीव जीवाउ(जीवातु) जीवननु भीपय जेट्ट (ज्येष्ठ) मोटो-जेठ जोश्रस्थिय (ज्योतिषिक) जोशी जोगि (योगिन) योगी-जोगो **झ्रिंग (**घ्वनि) झणझणाट-अनाज ध्वनि **हंह (**दण्ड) दड, हडो, डाहियो इस (दश) इख णक नाक णातस्रत (ज्ञातस्रत) ज्ञातवरानो णायस्रय∫ पुत्र-महावीर **णिलाडबद्द** (ठलाटपद्द) निलबट ण्डाविश (स्नापित) नवरावनारी-नाविस ( नावी-हजाम त 🚶 (तद्) वे तलाय (तहाग) तलाव तरच्छ (तरक्ष) तरस नामनु जनावर तर (तर) तर-ह-झाड तच (तपस्) तप-तपश्चर्या तव (स्तव) स्तव-स्वृति तवस्स (तपस्तिन्) तपस्ती तस (त्रस) त्रस प्राणी-गति करी शके तेवां प्राणी तंतु (वन्तु) तातगो तंबोलिम (ताम्वृष्टिक) तबोळी

वाच (वाप) वाच-वाप-सब्बो बुवेद (धिवेशिय) स्वे 📢 तिस्र (किंद्र) क्या दुक्तीय ((इन्हिम) 😎 तम्ब (नुम्पद्) तं वृहिसस्स विश्व विदान तुर्वया (द्वापय) त्रसा करात. वेषका (वैश्वा) वैश्वे-मान्त्रने-तरंप-चोडो क्रमान-रोगी तेष (तेम्स) तेव विषय (वैनर) मेर-विषय लेकिम (नेकिम) तेकी तेक वैर्विष (वेरेन) वेबेनो इन्हरfortal most वैचनम बेस (क्ल) क्य पाकर (स्वतर) विवर चोकर-वेसका (वेकप्त) वेसके गरिय करी सके तंत्रको~ बोध्द (दोष) धन, हेर क्शरपति क्रोडे बोसिय (रीविक) रोबी-**बोर** (स्थमिर) रिकर कुम्बरकाले-रूप का रेकार <del>पण्ड-मधोपक शत</del> मध (भव) वज-मन द्वास्थ (१वड) स्का थिक (कीन्) धनको न्नी **देश** (दण्ड) एक-श्रांको-सम्बद्ध धवा (चन्प) कन र्देत (रन्त) श्रंत पुच (वृर्ग) क<del>ु उक्</del>रम बाजिस (शक्तिम) शक्स शरध (बन्ध) शब्दे-बन्धे वास (राच) वास मप्ट (वर) वर वाहित्य **। विश्वन** विश्वनत सक्तक । (कर्चक) राजी-सैत विकास ( विषयर (दिनक्ष) विभन्ते मिस (निमे) से नामनो एक करनार-सरव बीकते रकार्ष-वसिराम द्वकाक (दुश्शक) दुवक व्यक्तिराज्य (व्यक्तिराज) ननिराज-पुरुषारंसि । दु सर्वकर्) दु को ते गयमो दिविकानो एक क्षेत्रत हु व पासनार राजनि लब्बा (बका) वेश-स्रोश मुस्र (हमे) इस−काट

नरवह (नरपति) नरोनो पति-नरपति-नरपत-राज

नह (नख) नख
नह (नसह) नभ-आदाश
नहर (नखर) नहोर
नानपुत्त (जातपुत्र) ज्ञातणातपुत्त वशनो पुत्र-महावीर
नायपुत्त

नास (न्यास) न्यास-थापण नास (नाश) नाश निव (तृप) तृप-राजा

निंबु (निम्बु) लींबु नेह (स्नेह) स्नेह-नेह

नेहालु (स्तेहाछ) नेहाल-स्तेहाळ-स्तेहवाळो

पह् (पति) पति-स्वामी-धणी -मालिक

पक्स (पक्ष) पक्ष-पस्तवाहीयु, पत्त-पास, तरफदारी

पिक्स (पिक्षन्) पखी-पाखनाळु पच्छाताच (पथात्ताप) पस्तावी

पज्ज (प्राज्ञ) प्राज्ञ-हाह्यो पञ्जुषण ( (प्रयुक्त) प्रयुक्त नामनो पञ्जुष्म ) कृष्णनो पुत्र

पडह (पटह) पढो-ढोल

पण्ह्य (प्रस्तव) पानी-पोतानु वालक जोड्ने माताने दूध

आवे ते

पण्ह (प्रश्न) प्रश्न पण्हुः (प्रस्तुत) पानो

पमाद (प्रमाद) प्रमाद-असाव-धानता-आळस

पल्हास (प्रहाद) प्रहाद कुमार पवास्ति (प्रवासिन्) प्रवास करनार पर्वेच (प्रपत्न) प्रपत्न

पञ्चय (पर्वत) पर्वत

पस्र (पश्र) पश्च

पहु (प्रभु) प्रभावशाळी-समय

पंथ (पन्थ) पंथ-माग

पाउस (प्राहृप्) प उस-पावस

वरसादनी ऋतु

पाघूणय १ (प्राघूर्णक) प्राहुणो— पाहूणय ) अतिथि

पाण (प्राण) प्राण-जीव

पाणि (प्राणिन्) प्राणी पाणि (पाणि) पाणी-हाथ

पाज (पाज) पाजा-हाय **पाय** (पाद) पा-चोथो भाग

पाय (पाद) पाद-पग-पायो

पायय (पादक) पायो

पावासु (प्रवासिन्) प्रवासी पास (पाश) पाश-फाँसो, पाशलो

–फासलो

पासाय (प्रासाद) प्रासाद-महेल पिलोस (श्लोप) दाह

पीलु (पीलु) पीलु झाड

पुरिम [प्रतमस्य] प्रदेशंतु पृत चिडाक [विवाद] विकरो पुरिस [प्रका हुस्त बिंद भिन्हों दिए, मेंह, देश पूच्य क्ति क्ति प्रा श्रव हिंदी प्रदेश पुरवण्ड (पूर्वक) विकास पूर बह दिया हमिय व-कामी प्रस शक्ष मिर्देश महन्तर प्रवर फिल्मी करी-क्री समर भिगरी मारी पोषकर (प्रकर) चेका-ताल भाइणेखा (स्वयिनेत) स्थेत पोडिय (प्रक्रिक) फेंड कम महर माणु वित् भाग-सूरव बार [कर] अर प्रदेश रोडीये-व्यक्तिया de Carlo मारब (करब) भरे भारतह (करन् नर भा क्रमाहार (क्रमहरू) क्रा कास (स्वय) स्वय केल किया केल सारकर भिन्नरी नर व्य बक्त } [बक्त] नंबको करूर सबा सिंग विशे भय-नगरे मिक्स [बिम्र] निष्ठ बप्क (शब्द) शब्द सम (यूत) मृत-प्रन, धीन वहिष्मिया [मिर्गयेकी] वनेशे मुजिबह ( मुनिव्छे ) भूगेनी वर्षः एका वंश्रम (र न्या) बावर अर्थ बाई (क्यु) वद-साह-माहे वंशक्ष ) [प्रवान] जवा-निधाने सबहै [युक्त] स्-पूर्णा-मे प्री वाननार-समाननार क्ष्री - भूपर-शबा मोवि [बोफिन्] थेमै-बंग्रयारी (ज्याचरित्) क्यान्ती स्रोड ी में में मेपनार सम्बंधिको स्व-सम्बं-इत्व बाध । बाम नाबी नाद धरह (द्वार) होर-सूच्य बचक (सङ्क) येत्-वर्धी बार्ख (शह) गळ-गळड सक्तरण (स्केटक) प्रांत्रणी बाद मिता यह यांक श्रम

भरा (मार्ग) माग-मारग मग्र (मद्गु) एक प्रकारनी माछछी मच्चु \ (मृत्यु) मोत-मरण-मीच मिच्चु } **अट** (मठ) मडी-मठ-सन्यासियो-न रहेटाण स्णि (मणि) मणि मेंगल−मद **भयग**ळ (मदकळ) झरतो हाथी मयंक (सगाञ्च) स्मना निधान-वाळो चन्द्र मरहट्ट (महाराष्ट्र) मोगे देश-महाराष्ट्र देश मरहट्ट (महाराप्ट्रीय) महा राष्ट्रनो वतनी-मराठी लोक ससय (मगक) मच्छर महण्णव (महाण्य) महेरामण-ममुद महाप्पमाय (महाप्रसाद) मोटा प्रमादवाळो-सुप्रसन्ध-कृपाळ महातवस्सि (महातपिस्त ) मोटो तपस्वी महादोम (महादोप) महादोप मोटो दोप महाबीर (महाबीर) महाबीर देव महासद्धि (महाश्रदिन्) मोटी भचल श्रद्धावाळी महासव (महासव) मोटो भाशव-पापोनी मोटो मार्ग महेसि(महा+ऋषि)व्यास वगेरे महर्षि∫ महर्षि मंजार (मार्जार) मणजर-ਕਿਦਾ ਛੀ मंति (मन्त्रिन्) मन्त्री-कारमारी मंतु (मन्तु) अपराध-जोक माधव (मा+घव) लक्ष्मीपति-माधव-कृष्ण मार (मार) मारनारो-तृष्णा मारासिसंकि (मारामिशद्विन्) मार-तृष्णा-यी शकित रहेनार दूर रहेनार-तृष्णायो डरनारो मालिश (मालिक) माली-माला वेचनार मास (मास) महीनो-मास मिलिच्छ (म्लेच्छ) म्लेच्छ मुद्दंग ो (मृदद्ग) मृद्रग मिहंग । मुगगरय (मुद्गरक) मगदळ-मोगरी मुणि (मुनि) मुनि-मनन करनार--मीन राखनार-सत

चेटो समय क्स<u>म् क्</u>रमद्धं रहेत् मूम ( रखा (रत) सा (इक) सूची रखास रे (रबाव) रहम-प्लाह्म ∫ राज्य भूसथ ( (मूल) मूल-परिस (धीर) । । कारण मुंसय ( चंदर के बोरकी राज मेरा (मेरा) समीदा राय (एन) एए-नास्क्रि मेरामक (नेरा-स<u>त</u>-नेरा-स्त) राथरिसि (एक्सपि) धर्मा न्हेरमण प्रमा रिष्क (शब) रीव मेद (मेन) मे सेन क्यान रिसित्ती (काले) वर मेदाबि (नेवानित्) नेवाक्को-धीर ( नुविधान, क्क्स (रक्ष) रेक-सम मोक्क (क्षेत्र) ग्रेक-हरवारी खाद (काश) का<del>व का</del>नी मोबिस (गैबिक) गोची-सोबो कार ( धीनगर केसचाकिय (क्याविक) (सन्दर) धोर-शन्तर विकासीयो - विकास मदुर ( स्वयाः स्वयारं मोद्द(सेंद) स्टेर्<del>ग्यूक्ट</del>ा (बीह) कोइ-बन्धा-मोद्दणदास (मोदनदास) स नामनी कीराक्त-मोहनका खोड (बोन) फोन 100 धोबपार (जेबकर) क्यार प्रकार है (एएक्ट्रा) स्थान कोडार ( ) इदार-इचर रहरू (

क्षांस (अस्त्र) श्रम

बच्छ (क्स) वन्त्र-५ेद्रम--

बच्चकवर (गरकतर) नाहेरी

बाह्य हो

ξO

रण्यदास (बरण्यत) बल्पमं

सुब्रुच (सब्रुच) न्याप-व्यक्त-

रह्ममा (एप्का) सम्बो काँ

-चनम देखनु हेन्द्र

करवाचे अवसि

वणय्पाइ ) (बनस्पति) बनस्पति चणस्सद्ग ( चद्धमाण (वर्धमान) वर्धमान-महावीर **सम्मद्ध** (सन्मय) मनने मथनार कामदेव घरदंसि (वरदर्शिन्) उत्तम रीते जोनार ववहार (व्यवहार) वेव्हार-वेपार घवद्वारि (ब्यवहारिक) वहे-वारी -वेपारी वसम (यूषम) वरख राशी चसह (,,) वृषभ-वळद घस्र (वसु) पवित्र मनुष्य वसु-धन वसञ्च (वहाक) वासो-पीठ बार १ (वायु) वायु-वा वायु ∫ वाणिस (वाणिज) वाणीओ वाणिज्ञार (वाणिज्यकार वण जारो-वणज करनारो-चेपारी वाहि (ब्याधि) व्याधि रोग विक्तिरिय (विद्यार्थिन् ) विद्यानी अर्थी-विद्यार्थी विडिष (विटिपिन्) वीड-झाड विषद् (विष्णु) विष्णु

विष्परियास (विपर्यास) विप-र्यास-विपरीतता-भ्रान्ति विराग (विराग) रागथी विरुद्ध भाव-वैराग्य विवाहकाल (विवाहकाल) विवाडी-लगसरा विद्ध (विधु विधु-चन्द्र विचुअ (वृधिक) वींछी विछिष (,,) ,, **घीस** (विश्व) विश्व-वधु बुद्ध (गृद्ध) बूढो-घरडो व्रतंत (कृतान्त) कृतान्त-समाचार घेय (वेद) ऋग्वेद वगेरे वेद वेचाहिस (वैवाहिक) वेवाई वेस (वेप) वेष-भेख वेसाह (वेशाख) वैशाख मास बोज्झ (बख) योजो घोटझम वोजो स, सुव (स्व) पोतानु स ( यन् ) थान-कृतरो सउणि (शकुनि) शकुनि-पक्षी सज्ज (पड्ज) पड्ज-एक प्रका-रनी सर सद (शठ) शठ-द्वचो सह (शब्द)-साद-अवाज

सप्प (सप्) साप

**सम** (सम) यधु

करनार एंतपका समसर्दिः (सम्बन्धनदर्धिन) व्यक्ते बोका समुद्द हे (क्युब) बक्त-समेंडे (

समय (अन्त्) प्रक्रि गढे धव

सर्वम् (सर्वम्) सर्व वयार-मध्य है नामनो सप्ता सम्बद्ध (सच) सच वामनो प्रवास च्छी शक्तम से सर (रमर) रमर<del>-द्यम</del>देव

सबह (कान) काल-धोमा-सम स्तम्ब (सर्व) सर्व-वय-वर्ष सम्बद्धाः (एर्न्ड) एनड-वर्ग मा पनार सम्बन्धः (सन्द्रः सन् वाननार

सम्बर्भय (६९०६) सर प्रकारको सप-सर्वय-स्वर्धिक

संक्र (क्यूड) संक-सीधो र्मका (क्षत्र) एक सग (सर्व) सच-स्तेक्ट संदोस (स्टोब) बलोक

संभा सम्भु) दशु-प्रवाद स्वात-यातित मोबलम् (एराक) धर्माक गाव

साग्र (धरा) शिक्त साह (तार) बाक्ये-क्ये

साहय (पारड) सहस्रे-सरी सावणी १ (कारविन्) शक्क्ये-साउची 📗 सारक्रि (पार्ण<sup>क</sup>) धार्<del>ण</del>-रव

धाष (कार) धर शाचय (बयन) सन्त्र श्राह्म (क्रम) सन्द्र, सक्त, करणार-श्राच उक्क संज्ञान

शिकास (कुन्छ) विश्रम खिक (चित्र) **अदेश-मे**टराम चिम (शिम) गर्म

सिविमह (न्केपन्) न्केपन शिकेसम (न्केपर) श्रवेशन शिक्षोय । (न्केन) न्केन. शिक्षोय । कार्ड शिस (विद्य) विद्य-एउन क्षिपार (कृष्टर) कृषर-कनपर

गीवाक (बीएकर) विका

संसार (स्वर) संबर-क्य

र्धंसारहेड (स्वारहेत्र) पंधनपे

वेत-धरत वक्तानं गरण

वाडी रक्तर

द्यंक्यारो

STATE

सीस ( शिष्य ) शिष्य-सिस्स विद्यार्थी सीइ } (सिंह) सिंह स्रुत्तहार (स्त्रधार) सुतार स्रमिण द्धमिण सिमिण (स्वप्न) सपतु-सीणु सिविण **सुर**ह (सुराप्ट्र) सोरठ देश सुरह्य { सराष्ट्रीय } सोरहीय रे सौराष्ट्रीय } सोरठनी-वतनी-सोरठी छोक सुअर (श्रूकर) श्रूकर-भूड सेहि ( थ्रेष्टिन् ) श्रेष्टी-शेठ-चेटी सोवाग (ध्रपाक) चांडाळ सोमित्ति (सोमित्रि) सुमित्रानो

सोरहिय (बौरभिक) सरैयो-सुरभि-सगधी-तेल वगेरेने वेचनार सोवण्णिय (सौवणिक) सोनी-सोत घडनार हृत्थ (हस्त) हाथ हित्य (हिस्तिन्) हाथी हर (हर) हर-महादेव हरियंद (हरिथन्द्र) हरिचद राजा हरिपसवल (हरिकेशवल) मूळ चडाळ कुळमा जन्मेलो एक जैन मुनि हरिण (हरिण) हरण हरिताल (हरिताल) हरताल हरिस (हर्प) हरख-हर्प इन्त्रवाह (इन्यवाह) इन्यवाह-अफ्रि **हेमंत** (हेमन्त) हेमन्त ऋतु-शियाळो

## नाम [नारीजाति]

पुत्र-लक्ष्मण

यच्छरसा (अप्सरस्) अप्सरा यज्जू (धार्या) सास्—आजी यलसी (धतसी) अळशी यलाऊ ( धलावू ) तुबढी— लाऊ ) चलआ यंगुलि (अल्गुलि) धागळी आणा (आजा) आजा-आण आपत्ति (आपत्ति) ओपटी आसिसा (आगिप्) आशिप इत्धी } (स्रो) स्त्री-तिरिया धी } (स्त्र) सरळ

करहा (फुल्प्) विश्वा गोही (बेडी) बेड-बेउटी कर्डप् (क्लंग्य्) गेरही शोषी (शेषी) ग्रनी-सम्ब करवा (क्टा) क्रम मर्गाची शेवले कण्डांडिया (क्ष्मदिश) शहरी कोरी (वीरी) कीर-क्लंड क्यक (क्यू) बाव-बार्ड केर के धिया (श्वा) वित इस षशी (स्त्री) केह বঁড়ু (বলু) বাৰ कपसी (करवी) केड वंदिया । (व्येच) वास्य करुमी (कर्मी) काळी-१उमी कतिया ∫ ब्रक्तिथा (क्क्निय) स्त्री चेदियर (चनित्रक) कारायकी चंकतिमा (च्छित्र्य) श्रंपस चंदरी फेंति (बान्ति) स्रोति, खेत बिता (विन्तः) विक किचि (क्रीर्र) केख कवि, क्वी (क्वि) क्वी किया किया किया विकि-विकास क्षाया (कर) क्रीन किया । इस इस कापर कामी (गय) सम किसरा इस्त) शोचके प्रदा (तुष) प्र क्रक्वी इमी) दृब ह्वा (प्रय) की उसे क्रवारिया स्थारिका हहाबी वची (मी) चन क्रशांतिया (इएकिस) बोधली संदा (यहा) व्यंप विष्मा } (व्या) बोन कुमारी इनायें) इनये इन्हर्य बद्धा (को बद-बद्धे ज्ञति (पृष्टि) पृष्टि-सेवरा सर्वी क्षेत्र श्ववर (दुवरि) दुवरि **बंदि** (श्रा<sup>9</sup>त) समा तपानी (कनी) नवसी शह यो यत्र-मारे तन्ता (एन्य) यून्य गासमा ग्रीमा) याव तक्षी (तक्षी) वस मी समित्रकी प्रिनेदी) वासकी विद्या (त्व) त्रव-व्यव सिवा चित्रः विश-वानी पुर (क्वि लुक्टि-केन

दहु (दहु) घाघर-दादर दित्ति (बीप्ति) दीप्ति-तेज दाढा (दण्टा) दाढ दिसा (दिशा) दिशा-दश दिहि । (धृति) धैर्य धिइ ( देवराणी (देवराणी) देराणी धत्ती (घात्री) धात्री घाई (धात्री) धाई-धवरावनारी माता भुआ (दुहिता) दीकरी भूलि (धूलि) धूळ नणंदा (ननान्द) नणद नारी (नारी) नारी-नार नावा (नौका) नाव निसा (निशा) निशा-रात्री पण्णा (प्रज्ञा) प्रज्ञा पतीति (प्रतीति) पतीज-विश्वास परिहावणिया (परिघापनिका) पहेरामणी पंति (पिक) पिक-पगत-पात पाडियमा (प्रतिपदा) पडवो तिधि पाडिवया 🗀 पिडच्छा । (पित्रष्वसा) पिउसिया विनानी बहेन--फडे

पिस्की (प्रध्वी) प्रजी

पुच्छा (प्रच्छा) प्रश्न-पूछ पुरा (पुर्) पुरी-नगर-नगरी पहची (पृथ्वी) पृथ्वी पेडिआ (पेटिका) पेटी वट्वरी (वर्वरी) वावरी-माथानी वावरी चहिणी (भगिनी) वहेन बारिआ (द्वारिका) वारी वाहा (वाहु) धाहु-हाथ-वाय (भगिनी) वहेन भइणी भगिणी भाउजा (भातुनाया) भोजाय भीरमा । (भीतिका) चीक भीइका भूमि (भूमि) भूमि-भों म ६ (मति) मति मिक्खिया । (मिक्षका) माखी मच्छिआ ∫ मजाया (मर्यादा) माजा-मलाजो महिवा (मृतिका) माटी महिसी (महिपी) भेंश मंजुसा (मञ्जुपा) मजुह-पेटी माथरा । (मातृ) देवी-माता मायरा 🛭 माआ (मात) माता-जननी मार् (मात्) मा-माडे गाउ (भाव) माता

मार्गतिमा १ (यद्भव) बरलत्ता । (गरमण) मारक्या मिथी-क्रकरी बरमत्ता 🕽 वोद याद्व (गम्) गद्व माक्या (मक्त) गच्छा याळ वंशा (रम्प) शंद्र-यंद्रपी मिक्ती (बन्नी) मिनवा— बाडिया (क्यिक) बडी मेजी परिव बाया (रच्) राच-दनो मेहर (मेग) येच-इदि बारक्लरी (दारवावरिय) **रह** (रहि) प्रेस-शब growth. बारायसी १ (कर<del>ावदी) शामक</del>ी रक्का (रबा) एक रच्छा (एना) रण चाके तेथी बाबारसी -नवरच नवर बाबी (बर्ग) गर **प्रदेश वेरी-वेरी** विश्व (नियुद्) निकार धीर (वनि) एव रचणी (रजरी) रजरी-रेव शिवरी । (मिरी) मैव दाई (क्रां) चड (बिध्ति) सब्दि रिक्टि (क्रिके) रच-क्रिके

रेखा (रखा) रेख-रेखा अस्त-मेंटरे केंद्रा अस्त्र-मेंटरे कम्बा (कसा) कम्ब कक्षा (कसा) कम्ब काससा (कस्त्र) कम्ब कोसपदी ()मडी) कोमी-सत्त्रकन्न ग्रेस्मधी सत्ती बहु (क्षा कर-रखें

बत्ता (बर्ली सन

मरोदी (

वृत्तिः (वर्षिः) नावः क्लो ब्रह्मपोद्दो हे नहयोग्नीः) नरोंकी विवृद्धिय (मिजला) वेंग श्ववमा (वेंक) वेंक-प्रमा-धर्म स्रति (स्पेट) स्पृष्टि-प्रफ श्रति (ब्रांच) व्याप स्रता (क्या) मध्य

श्रीच (क्षेत्र) श्रीच सदा (क्या) भ्रमा सप्तपी (क्ष्मी) श्राची समित्रि } (हप्ति) वस्पी सामित्रि } सरिया ] (श्रीत) परिष-

सकावा (बळक) सकी

सवित्तका (सपत्नीका) शोक्य सस्मा (स्वस्) स्वसा-बेन संझा (सध्या) सांज स्ति (शान्ति) शांति संदंसिका (सदेशिका) सांडगी संपया (सपदा) सप्दा-सपका सपदा (शांटी) साडी

सामा (त्यामा) युवति स्नी
साहुची } (साची) साची
साहुणी } (साची) साची
सिद्धि (सिद्धि) सिद्धि
सिप्पी (ग्रुन्ति) छीप
स्द (स्चि) सीव
सुण्हा | (स्नुषा) स्नुषाण्हुसा | पुत्रवहू
दलहा, हिल्हा (हिस्मि) हळदर

### नाम [नान्यतरजाति]

छिष्छ । (अक्षि) भांख অভিন্ত 🛭 खद्यक्र्य (अत्यद्भुन) अचनो **अच्छेर** (भाख्य) भाध्य-भचरज **छाजिण** (अजिन) अजिन-चाम्ह सद्गुगय (अष्टगुणक) भारमणु राद्रि (अस्थि) ह्यी-हाटक-हड अत्थ (अस्र) अस्र फक्रवानु इथीयार अद्ध अध) अहधु वाण वगेरे स्रभयप्पयाण (अभयप्रदान) धाभयदान-प्राणीओ निर्भय रहे -वने-तेवो प्रशत्त समिय (अमृत) अमी-अमृत **धारविद (**अरविन्द) अरविन्द-उत्तम बसळ

णसाय \ (भसात) शाता
असात ∫ निह-मुख निह ते
अहिमाण (भिभज्ञान) एघाण
अगण (भज्ञन) भांगणु
अंडण (भण्डक) इडु
अंसु (भण्डक) इडु
अंसु (भण्डक) आयुण्य-जीदगी
आगरण (आगरण) आगरणघरेणु
आगरण (भागरक) भागछभांगळु
उद्यंचळय (उच्चळक)
उच्छंसळय (उच्चळक)

टच्यु**ह**ु ब

ŧ۷

चरियम (उरिका) बार्ड (एक्क) शहर-पानी बर्गास (शाक) सास्त-समह

WE (US) US-12-725-कडी-कापड **ब्हार (क्र्म) काम-काक-बाद्य** 

वरणी प्राप्ति करमधी भ (पर्मधीक) बन्नवीय <del>त्य-अस्त-क्षेत्रक्षा वी</del>न कारक (करक) चेता क्षेत्रक (प्रम्मक) प्रमक्त-प्रापक र्षकोषः पंद्रीस-क्ष्मीय-क्योगात्र बाच

कतिय (शांकः) शेशी क्षत्रपरक्क (क्यकात) क्षेत्र रक्त-वाराची रक्तम वरनार-बोबा **बारच** (शरथ) शाध

**क्रम्पस्स ।** (इन्ह्यस) <u>ज</u>न्म **副政 (連枚) 資本 卓型** 

**स्टस्प्यप्र ≱स**ञ्जूर)शत्रपृह्य

**श्रीकृष्टिया प्रश्निका प्रश्निका** कोदर (धेटर) धेल

बीज गय

शतं धाका

छर (५%) वर धरशास (धरचेत्र) भरचेत्रं ब उक्क (चार्य्ड) क्षेत्र

याच (अस) अस-गढ-धेन

ध्रम (एत) फी

शुक्त (क्षेत्र) जोन-नेव गुरुकुछ (प्रस्तृत) सरागर-रक्षा क्रमधे क्यां रहे है रे Real Property

यक (च्छ) च्छ शह्रज(ब्रह्म) ध्रद्भ करवाने ध्रम गीम । (पीत) पीत-

शसक (वर्षन) कम-क्तु

कोस । (क्षेत्र) क्षेत्र-केटर केस (क्षेत्र) क्षेत्र-क्रवन

व्यक्ति । (धीर) श्रीर-व्यक्ति <del>"रू</del>प

बापा (स्वज्ञ) स्वज्ञ-क्रेगे-

कोमख्य (केल्बर) क् कोइक (क्षमण्ड) श्रेष

efte (

बिक्द 🖟

चउन्दृष्य (चतुर्रतमेक) चौद्व चार रस्ता चक्क (चक्र) चक्र-चरधो चरम (चर्मन्) चम-चामङ घडाळिष्र (चाण्डालिक) चहा-टनो स्वमाव-कोच चंइण (चन्दन) चन्दननु झाउ के लाकड चारित (चारित्र) संचारित्र-सद्दर्तन ভুন্ত (নুন্ত) নুন্ত–সূত্র चेद्र (चेत्य' चिता उपर चणेलु स्मारक-चिह्न-थोटाओ, छत्री पगलां, बृज्ञ कुड, मूर्ति बगेरे चेपह (चिह्न) चेत-च'ळा चेल (चेल) चेल-बल छ्रगुण व (पङ्गुगक) छमणु छुट्रय (पष्टक) छड्ड छणपय । (क्षणपद) हिंसा-हिंशानु स्थान दृष्णपञ्ज ∫ छत्त (छत) छत-छती छिद्य (छिदक) छोड छी अ (क्षत) छीं क **सड** (न्तु) जतु-लाख ਕਲ (ਕਲ) ਕਲ-पाणी खाण (यान) यान-वाहन **जाणु (**ञानु) जानु-गोठग जिमिय (जेमित) जमेल

जीवण (जीवन) जीवन-जींदगी जुग (युग) घोंसर जुःझ । (युद्ध) युद्ध-लढाई जद जुम्म (युग्म) युग्म-जोडु जुग्ग रि जोवन-यौवन निछार (रहार) निहार-ल्लाट णयर णगर (नगर) नगर-शहेर नगर नयर णिवन १ (नीम) नेबु-निव्य छापरानु नेव तग्ग तन्तुक-तागरो-त्रागरो तण (तृण) तरणु-घास तच (ताम्र) तांतु तवोळ (ताम्यूह) तबोळ-नागरवेलनु पान ताण (त्राण) रक्षण-शरण-आशरो वालु (तःल) वाळनु तिगुणय (त्रिगुणक) त्रमणु तिउणय 🛭 तिमिर (तिमिर) तम्मर-अधारां तिलय (निलक्) टीउ वेंछ (तंछ) वेंछ

तब (इन्द) देव-वेट बाज (इस्ते) इन **बहुज** (रहन) देत-तहब-विच्छित्रय (निकार) वर्ष आने एकवं विवाध (निरम) स्थाप-बड़ि (वरि) दहाँ र्वतपबद्य (रस्तम्ल) (तस्य-मीक्स (गैरुक) गैके-केन दावन मेषु १ (वंड) निकार-दाम (रान) राज बाठ एवं पट-जन्मी पयरक्क (नरक्र) क्<del>यां -</del> षाबिद्य (सर्वया) बक्षार-पदा रक्षण करवार वासिय विष्य (दिन) दिन-दन-पगरक (अकरन) ५०<del>८न-</del> पनियं रियम nte वाद्विषय (विश्वक) वार्य पद्मोख (पद्मक) प्रोक्त की बेट्टा । एक प्रश्लेक (स्त) **१ए-१व्य** बीवस्ता । केरो वज पाध रेक दुरस (इ.स.) इ.स वजर (६ वर) वर्ष द्वतः द्वाः पूर 일본 (제) 등 पाद (क्रम्ब) प्रेल भाषा ( (क्तुन्) व्यक्त m <u>l</u>eg∫ धम्बपद्ध (जनवः) जन-पंज घडस अर्थि (चनमान) अध्यक्त केर्प प्रीक्षे कारण-बाह्य में स्थान जातर र्क करी व्यक्त समाग्र प्रकार वरिसोसिय हे (पीप्रेरिय) चीग्च (बीसः चीतः -यशिक्षातिम परकामा तरक सम्बद्ध धीश्यम वय प्रकार (प्रदाष) भाव क्रियर वच नघ⊸र ध सक्ष्म (नवः नैय चेशतं वर

To.

पल्लाण (पर्याण) पलाण पचहण (प्रवहण) बाहन-बहाण पंजर (पझर) पांजर पाणीय (पानीय) पाणी-पाणीअ ∫ पीवानु पाड छ रूत (पाटलीपुत्र) / पाटलिपुत्र-पटणा शहेर पायत्ताण (पादत्राण) पाद-त्राण-जोहा पाव (पाप) पाप पाचग (पानक) पाप पाचरणय (प्रचरणक) उपरण पास (पार्श्व) पासु-पढख पासत (दर्शक-पर्यक) द्रष्टा, सम ननारो-विचारक पि इद्ध (पिन्छ) पींछ पित्त (पित्त) पित्त पुरुद्ध (पुरुष्ठ) पूछडु-पृछ पुट्टय (पृष्ठक) पूछ पुष्फ पुष्म) पुष्प-फूल फल (फल) पळ फंदण (स्वन्दन) पादबु-फर-कतु-थोडु घोडु इलबु चम्हचेर (ब्रह्मचर्य) ब्रह्मचर्य-सदाचारवाळी वृत्त-

नदामां परायण रहेल ते

घयर (वदर) बोर-बेर

**धार ो**्द्वार<sup>)</sup> वार-वारणु द्रगर रि विश्वा (द्वितीय) वीजु विगुणय, विउणय (द्विगुणक) यमणु बिंदु (विन्दु) भींडु बिवय (विम्बक) विव-प्रति-विव-धीव बीअ (वीज) बी-बीज भय (भय) भय-भो भयव्या उलय (भयव्याकुलक) वेवाक्ळो भ**ायण (** (भाजन) भाङन-भाग ि माणु-पात्र भारहवास (भारतवर्ष) भारत-देश-हिन्दुस्तान भाल (भाल) भाल-क्पाळ-ललाट भोयण (भोजन) भोजन-जम्ण मच्चुमुद्ध (मृत्युमुख) मृत्युनु मुख -मोतनु मोद्ध मत्थय (मस्तक) माधु मयणफल १ (मदनफळ) मयणद्दल ∫ें मरण (नरण) मरण-मोत

मधीर (मब्दगीर) वद्यनोस्त्र ध्येयक प्रीण करे

22

बक्तव (क्ष्मक) सर्व

कवा (२४) का-गाउ कार्य

स्रपक्षार } (स्त्रूप) स्त्रूप-स्रप्रध्य } श्रीष्ठर-स्रका-विक्

खारका ( काम्प) व्यक्त

क्षोमप**र** {शेमप्र} शंगळचे शेमस**े श्र** 

क्षोहतंत्र (बोहतन्त्र) क्षेत्रंत्र

ब्होबर (ब्बेबर) व्येत

ब्राक्ट (पर) अन

क्रांडिक (क्षेत्रित) त्येही

रोमच (धेन्ड) स्तु-ऐन

बाइक (बाइक) संगर

सायण्य (

क्रप्य (दस्म) स्प्र दप्प (धैन) उप

भारत कारह मसाज (श्रवणा) मध्य

सहस्याप (महासव) वीही सव-योग्री वीव

महाविकाख्य (स्थानेयाक्रव) होत्र विकासन स्थित

নর (কর) নর

ग्रीराक्ष (स्टब्ब) शक्क मंस (मास) धास

माइहर (म्यक्ट्रा) शामक-माइहर मित्त (नित्र) वित्र

मिचराम ( शब्दकः ) शिक्द-निवक्त-महीचकी

मिद्रिस्त्रमयर (मिन्समध्य) **Paciermo** सद स्थः । स्थः

मोक्तिश्र (शैकिक) मोती रक एस ) एख-एव

रसः / रमसः रध-पाप राम -200 रयप (रक्त स्वत-क्य

रसाय्छ (स्टब्स्ट) स्वतङ

बारीय 12 पन राजवित-

स्तरभवेषानी राजधानी

शायकिक शामप्रह

बरब ( १क ) का-भारत

क्षाम्म (बस्ता) नच्य

क्षयक (पर्प) नरप-तुक श्रदाय ( रूपर ) रूपर देव बरिस (स्व) क्स का क्रिक्स (दाविज्यो क्लब-वैजर बाविक बाइक (गरिव)

कारि (करि) वरि-दानी

या जी ज

वित्त (वेत्र) नेतर-नेतरनी घेत्त ( सोटी-वेत विद्याप ) (विज्ञान) विज्ञान विण्णाण ( िषस (विष) विख, वख षीरिय (वीर्य) वीय-वळ-शक्ति धेर (वेर) वेर-वेर सगडय ( शकटक ) छक्डो-शक्ट सम्ब ( बला ) सत्य-साचु सत्तगुणय (सप्तगुणक) सातगणु सत्य (शस्त्र) शस्त्र-हणवानु हयीयार-तरवार वगेरे सत्य (शाम ) शास्त्र सिर्वे (सिंवेय) स्थळ सयढ ( शकर ) छक्डो-गाई -शकर सरण (शरण) शरण-आशरो

साय ) (सात ) शाता- सुख स्रात∫ सावज (सावदा) पापप्रकृति सावत्तक ( सापत्त्यक) सावत्तव सामु (य (श्रह्मारक) सासक, सासरानु घर सित्थ (सिषय) सीथ-अनाजनी 夜切 सिंग (शृङ्ग) शिगद्ध-शिगु सीय (शीत) शीत-राढ सील (शोळ) शील-सदाचार सीस (शेर्प) शोश-माथ्र सक्स (सीव्य) सुख सुत्त (स्त्र) स्त्र-स्तर, स्महत दुकु वाक्य सुवण्ण (सुवर्ण) सोनु सो ब ( (थ्रोत्रः थ्रोत्र-कान-सोत्त रामळगनु सामन कोरम (सौरम) सोडम हियय (हरय) हैयु हुअ (हुत) होम

## विशेषण

ष्मप्ताय (आख्यात) कहेलुं —कहेनु ष्मचेलय ) (अचेलक) ऐल्क-ष्मप्रथ ) कपडा विनानु

सञ्ज ( घल्य ) साल चल्य

अज्ञणा (अवतन) भाजनु⊸ अज्ञनण क्रिंग अज्ञ (अय) अर्य-देश-स्वामी अज्ञ (आर्य) आर्य मधीर (मध्यपीर) मध्यपेतपु कोयक शीनं अधे

FOR SUPE

取ヤ

घष्टाण ( स्त्वल ) मध्य महस्य (ऋलः) योशे सव-योगी वीच

महाविद्धास्त्र (अद्यक्तिका) धोर विकासन क्षेत्रेश सइ (स्त्रं)स्त्र

मेंगळ (शहक) सम्ब मंद्र (मांच) मांच माइहर (सर्व्यः) श्रीक-महर

मित्त (मित्र) नित्र मिचचण ( भिक्रक्न ) मिन्छन-मिल्ला-महीषधी मिद्रिस्थवयर (शिक्सभ्यर)

Distant मुद्र (सुक्र ) सुब मो कि म (भौकिष) गोर्ख

स्कार्थ ( काम ) शाम्य-काम १अ-५१५ धु**र** स्थेत TH ( TRH

स्थय ( १वन ) रवन-स्थ रसायसः (रक्तक) रत्तरक-

and रिक २०७४क ) निवासम्ब

भावेत राज्य राजीयर-

प्रस्केत्रमी शतकारी

क्षोप्त (क्षोद) क्षोप्त क्रांडिय (मेरित) मेरी

बच्च (स्त) स्प बरचा ( क्ला ) वल-वस्तर

बार्ख (ब्ला) नव

बारि (चरि) चरि-यणी

वक्ताप (क्वक) वर्ष

कक् (रूप) इन-नगर प्रदर्भ

शोगच (रोमक) इंड्रं-पेन

खान्नख (ब्यून्त ) संमर

कायण्य (

स्वयाम ) (स्वयं) व्ययः स्वयसम्बद्धाः । स्वयः-स्वयः-सिर्व

स्टाबन्स है (कालन) सनन

कोसपर {शेयक } शंतरप्रे शेवक } श्रम-

होइबंड (धेरका) थेर्पर

बच्य (सम्म) स्ते बच्च (रीज) हो

श्राच्य (गरन) गरन-स्थ श्चरम् (१वन) नक वैन

स्विद्धा ( वव ) करत

बाविस गास (गरिव)

वाचित्र (वसीत्र) वय**क-वै**वर

वित्त (वेश) नेतर-नेतरनी स्रोटी-चेत येच ि विद्याण (विज्ञान) विज्ञान चिक्ताव े बिस (विष ) दिख, वख धीरिय (बीर्य) बीय-बळ-হাড়ি धर (वेर) वेर-वेर सगडय ( शक्टक ) छक्हो-धावट सद्य ( सत्य ) सत्य-सानु सत्तगुणय (सप्तगुणक) सातगणु सत्य (शस्त्र) शस्त्र-हणवानु हबीयार-तरवार वगेरे सत्य (शाम्र) शाम्र सिर्घ । सिर्ध ( सक्यि ) स.यळ सयद ( शकर ) छवरो-गाई -शबर सरण (शरण) शरण-भाशरो खल्ल ( चल्य ) साल चल्य

साय ( सात ) शाता- मुख खात 🕽 सावज्ञ (सावद्य) पापप्रमृति सावत्तक । (सापत्यक) साधत्तव ( सावकं साम्राय (श्रृहारक) सास्र, सासरान घर सित्य ( सिषय ) सीय-अनाजनी व्या सिंग (शृह्न) शिगद्र-शिग्र सीय (शीत) शीत-टाढ सील (शोळ) शील-सदाचार सीस (शर्प) शीश-माथु सुक्स (सौहय) मुख स्त (स्त्र) एत्र-स्तर, स्प्रहर दुक्त वाक्य सुवण्ण (सुवर्ण) सोनु सो म १ (श्रीतः श्रीत-वान-सोत्त ें सांमळवानु साधन कोरम (सौरम) सोटम हियय (हदय) हेयु हुअ (हुत) होम

# विशेषण

ष्मप्ताय (आख्यात) कहेल -कहेनु ध्यचेलय ) (अनेलक) रेलक-ष्मप्ता विनान

सञ्ज्ञण (अवतन) भाजनु-सञ्जतण तजु सञ्ज (अय) धर्य-देश्य-स्वामी सञ्ज (भार्य) भार्य

सङ्घ (सहस् ) बाह्युं धारितव (जभक्त) मन्द्री काक्की म ) (च्चल्योव) केलां व्यतिक (अभित्रक) पर्दे-बाह्य (बाह्य) मध्येय **क्रोमं-माम्पेश** कामकासः । (अक्थक) नाम-कामण क्रा रहित्त-निर्वात **লভা**হন (জনবিদ্ধ) লাহি (बारत ) मार्चेड

व्यवादिय (अन्नाम) जनाव-कायस (बहर) शक्त व्हें भाग बडि छे-मनासी व्यरियाध (अर्लिक) अव सारिस (अन) ऋषेर परेष्ठं सम्बद्धी-- वर्षने कराण

बासत्त (बाबच) अत्वय धर्मियम (बासिन) वासिन -20 सपीर (धनीर) जनीर कविसद्ध (शिक्ट) एउं-वर्गांड चेरक निवास समझ सद्भुद्व (अथश्रुष) केयां बत्तम } (बत्तम) बत्तम प्रम संक्षा सर्वे योज

स्वरिष्ठः } ( क्वरिका) उपने —क्वरिका चवरिमाड रिश्वा प्रच कक्ष (क्षम) धरदा योग अरप्पादित्यः (स्टर्शने ) कापन

क्स्रो सर्ग (इस)

क्षयच्या क्राप्त्रो क्राप्त−करायम

कानाय) (क्त्य) क्रीय सायस्क

ब्याहारिक (अस्तान्ध अस कः,क्रीक (वागीन) ध्यन माहि

शद्य समाध ग्रेटा धाइक्षा ( अरब नगर न गरी

क्रम्य (अस्य ) अस⊢योड

सका हो है बद

⊶दरी साथम तीन क्या

काह्म (अका) अवव हमाह

किंच (कृत्य) कृत्य किलिट्स (फ्रिप्ट फ्रेशवालु क्रिप्ट किलिन (मलन) गील-भीन भीजाएख किलिस (बल्ह्स) क्लूस फुमल (कुशल) कुशळ-चतुर केरिन (कीरश) नेत्र कोसेय (कीशेय) कीशेय-रेशमी-वस्त स्तळपु (खटपु) खळु साफ करनार गढिय ( गृद्ध ) अतिशय छालचु गय (गत) गएल जब्र गामणि (प्रामणी) गामनी नेता **गिन्नाण** ( (ग्लान) ग्लान थएलु, गिळान ∫ गुप्त (गुप्त) गोपवेल-सुरक्षित-गुप्त गुरु (गुरु) गुरु-भारे मोटु गुल्झ (गुळ) छूप,ववा योग्य, নূর্ত্ত घट्ट ( पृष्ट ) घरेल, सुवाल करेल बाटेल घेटच्च (महीतब्य) महण करवा जेव चउन्य र (चतुर्य) चोव चत्रय ∫

खडरंस । (चतुरस्र) चोरस चडरस्म∫ चड (चण्ड) प्रचड-कोधी चःर (चार) सार-सन्दर छद्र (पष्ट) छट्छ जन्म (जन्य) जणवा योग्य ज्ञाय (जात) जाएलु, थएलु, जणञ्जू जिय (जित) जीवेलु-जीतव् जिइ दिय (जितेन्द्रिय) इन्द्रियो सपर जय मेळवनार जुगुच्छ (जुगुम ) जुगुमा करनार, घृणा कानार जुन्न (जीर्ण) जीण, जुनु, ज्ळी -जरी-गएळ जोइस १ (योजित) जोडेलु जो इस र टह (स्तन्ध) राढो, रण्डो, स्तब्ध, जड, यभी गएल ठिय (स्थित) स्थित-स्थान डज्झमाण (व्ह्यमान) वाझत्-बळत ( तृनीय) त्रोनु तस (तप्त) तपेट तयन्स (तपस्वन्) तपस्वी तंस ( ध्यस ) त्रासु-त्रिकोग विष्ण (तीर्ण) तरी गएल

44 विष⊈ ( प्रेथन ) धीलं~नचीवार चीर (गैर) गैर-गैरन्थ विम्मः । (दिम्मः ) स<del>्वयः -</del> तेत्र-लग्ध (सत्र) सप्त-याचे बार-सेय

नमधे

मानामा ध्रो

सरुप के रो⊸क्रेक

प्रगय-मध्य खेन

यदे तेच दुसम् ) दुसम् दुव्यम्

-मारेक

तिग्य (

तम्य (तक) तक रोध

बद्रान्थ (सान्य) देखाः। केन

बद्ध (१३) र्वार्ड देवेल-नेबल दसम (दवम) दवम

र्बंश ( दान्त ) क्षेत्रे एन्क्यने पर्या

विषयः । (क्रिटीयाट) केना

विवयं एक लाग लगे गोक

प्रमाधि (उपन्यः) श्रवंत्रो

चुप्परिय इप्तर्व ) सर्वेश्वानी

द्वरपुरवर (इन्तका) केंद्र

वृद्धि दुर्कर) दुवा crim (भारत) भारी प्रत्यक्री

माथल बटन शाने से द्वद्रशिक्तम (द्वरशिक्त) न

दिग्याठ (रीगंडुन्) गीन

व्यवस (१९४४) व्यस वर्षीयः १ (यगैत) वर्षी<del>तः</del>-

व्यवीव ( भाग (कात) वानीतं प्रक्रिस विवास (निवास) निवास बिद्वर (बिद्धर) बडोर

निक्य । (शब्द) मिन्द मीड्रे. निरहम (निर्वंड) निर्वंच-

सिरिय (विक्रेष्ठ) निविध-

परास्त (मार्च) मानेउ

पप्रविव (स्वर्पेड) म्बलैड

रक्षपेत्र स्थपतं

पचा (पारम) नक्ता-धेका-क्षेत्र एचछ (क्य) क्य-रहामी पहुण्डम् (अनुभव) व धन

विकास

अकारी

यस (प्रका) न्दोनु-व्योद्

क्यानेत

무명

वस्था (समा) जनस-परमा पुजाह (प्रजाह) प्रनाह, गांव

पमत्त (प्रमत्त) प्रमत्त-प्रमादी पर्वित (प्ररूपिन) प्ररूपेल, नणावेलु. प्रस्पव पंचम (पद्यम) पाचमु पंडिन ((पण्डित)पडित-मणेखो, पंडिम पिडयो पोनटपडित पंत (प्रान्त) अन्तनु, छेवटनु, वापरता वधेळ पिझाउय (प्रियायुष्क) भायु-घ्यने प्रिय समजनार पियामह (पितामह) वापनो वाप पिय (प्रिय) प्रिय—वहालु पिहिय ( पिहिन ) ढाकेलु पीण (पीन , पुष्ट पुष्ट (पुष्ट) पुष्ट पुष्ट ( पृष्ट ) पूजाएल पुण्म (पूर्म) पूग-मरेलो-संपत्तिवाळो पुण्य (पुण्य) पवित्र काम पुराक { पुराण } पुराणु, पुराक्षण { पुरातन } जुनु

पो 🕶 ( प्रोन ) परोग्यु-परोवेल

घटस (वाय) वहारन, वहा-

यद्व (वद्व) वद्व-वाघेरी-

घहु (वहु) वहु-ध्र

रनो देखाव

वधाएठ

विश्य ] विद्वा (द्वितीय) बीजु दु(य द्रक्त वुद्ध (बुद्ध) बोधवाळो-इनी **भ**न्व ( मब्य ) थवा योग्य-ठीक मिच (मृत्य) पळवा योग्य-मृत्य-नोकर भुच (भुक्त) भुक्त-भोगवेड्ड भोचन्त्र (भोचन्त्र) भोजन करवा जेवु, भोगववा जेवु मईय (मदीय) मारु मट्ट (म्प्ट) माजेल, शुद्ध **मड-मय** (मृत) मृत-मरेलु मणसि (मनस्विन्) वुद्धमान् मय (मत) मानेछ मानवु मत महग्च ( महार्ष) मोंब महिंद्य ( (महिंदिक) मोटी महिह्निय रे ऋदवाछ-धनाढ्य मायामह (मातमह) मानो वाप मिड (नृदु) मृदु-द्योगळ नरम मड मिलाण १ (स्लान) स्लान मिलान र धये उ कतमाएलु म्टान थ्व मिच (मुक) मुक-छुडु मुद्ध (मुघ) मुघ मृद ( नृह ) मृह-मोहन छो-लमण-अज्ञानी

विषद्व (धेरम) तीमं-अधेरार विम्म ( किया ) धीरून है क

पार-रीप

Ħ

घीर (गर)

लग्ध (नम्) नप

जबस (नवस) नव

लचीया (नदीन) व्यवीच ि

नाय (इति) वाणीनुं

चिच्छ (निचड) निध

नि**इ.र** (निच्छर) नक्षेर

मेक्स (

विषय (दिन्न) मिन पं

विरक्त (विरक्त) विरक्त-

निश्चिप (निश्चित) निर्देश-

राष्ट्र (राष्ट्र) राष्ट्र शंक. व्यवत

तिस्य (

महरून (प्रदूष्ण) वैकार जेन **१६** ( रह ) रीई देवेज-देवन दसम (दसम) दसम र्रत ( रास्त ) केने गुणाने वर्गी

के हे-माल **विग्या**क (गीर्या<u>य</u>म्) गीथ भारपश्चो

दिपञ्च (हिटीनास) मेनां विषया एक शास सने गीक भवत के वे⊸क्षेत्र

पुरर्गाचि ( हर्गन्म् ) दुर्गन्ते **after** 

षुप्परिय (हर्ग्स् ) लक्क्किश प्रगम-मधम चेत्र

बाराच कल को है

प्रसुद्ध (दुर्कन) हकन-क्रमन -सम्बेद

इदि (इकिंद्) इची धक्ति (चनेन्) मध-कराध्ये

प्रस्थावर (इन्ह्या) केंद्र अरुटिकास (अरुटिका) व

ध्ये तेव

वक्षय (प्रथम) प्रथम-परमम

धक्क (शस्त्र) श्वय-यंग्य-क्कड (क्य) क्य-रहामी पहरदम् (अनुरुष) व ना

पद्मस्य (अस्त्र) अस्त्रीह

स्थापेत स्थापं

विश्वद <u>−σ</u>à पुष्पद्व ( प्रनड ) प्रनड, राज पत्त (त्रच) कोन्य-प्रदेश

क्या है के धप्रविष (अप्रियः) म्बानेड-

क्यारी

कोमा

مرخ

पमत्त (प्रमत्त) प्रमत्त-प्रमार्टी 12% पर्वित (प्ररूपित) प्ररूपेलु, 300 जणावेछ, प्रस्मुतु पंचम (पद्यम) पाचमु पंडिन । (पण्डित)पडित-मणेखो, पिंड म 🕽 ेपडयो पोपरपिंडत पंत (प्रान्त) भन्तनु, छेवरनु, वापरता वधेळ पिअ।उय (प्रियायुष्क) भायु-घ्यने प्रिय समजनार पियामद्द (पितामह) बापनो वाप विय (प्रिय) प्रिय-बहालु " " " " विद्य ( पिहित ) ढाकेल सन्दर्भ पीण (पीन) पुष्ट मर्नि ॥ बुह (पुष्ट) पुष्ट मय 🍃 पुष्ट ( पृष्ठ ) पूछाएल महरू पुण्म (पूर्ण) पूण-भरेलो-मर्राह्य सपितवाळो महिद्दिल ( पुण्ण (पुण्य) पवित्र काम मायाण्ड् पुराण { पुराण } पुराण, पुराञ्जण { पुरातन } ज्नु मिड (इंट्र मिल्पा 🗸 पोम (प्रोत) परोग्यु-परोवेछ मिछा 🤊 🍃 षद्य (बाह्य ) बहारनु, बहा-रनो देखाव मिच (इ-यस (बच) वद-वाधेले-सुद्ध (३० वधाएल मूढ ( 🞅 घहु (महु) वहु-ध्र

44 मोत्तम्ब (मोक्म) गुक्त के बीयराम 🔪 (बीम्सन) 🚧 क्षीबराव ें राघ वंत्री वे श्च (स्व ) रच-शोज रावण्य (स्थ्यून) सम्बद्धन बीस्क्रिय (मेक्टि ग्रेगे-मेंबे रोत्तम्ब ( इरितम्ब ) रोद्र-दरम वाशास्त्र (शक्तम) बहेच 💐 स्वद्र (स्थन) नार सक्कप (मरका) सम्बन सप्त (बड़) ग्रह एसन् वाह साध (सब) छोड सद्गी (बहुद) ग्रंथ दसल सचेका (स्केरक) केंद्र-का इस्तंभ∫ राम कारायमं संख करर ) सांके ভব (যব) ৰক্ষিণ **द्विक्ट ( २४) वर्ष ग**ापकि खर्च ( बच ) नारच स्तरम ( एक्म ) मर्ख यस्य (र तुमर) शक्यक साम साम (सम) समान व तिनाक-सर्प चळशाचा ( रवशण ) वच्छ स्वयः ( वचन ) कान-वन्त्र बक्त (गण्य) क्वेश केम्प करूव सरस ( बरव ) बरव बाक्स (पन्य) वर्जना धोस्य द्राराय (चक्र ) वचर्-एक वक्क ( क्व ) योक्का योज्य शक्क (स्वक) एक्स वस (गम्भ) धीचाच (बस्कृत) बेरमरेल, छेरगर बासा बकर (स्वच्छा कर) श्रवचत क्षेत्रय (चन्द्र) चेक्नवटी करमार्थ हिंह कामार र्साश्च्य (नेश्न) धंसपेको-<del>परेको</del> विवाह (मिनहा मिनहा बिनास शंसक (कंपन) संस्कार्थ विषय सर्वे (सिंह्रण) स्थित विकास अर्थना समापक ललघ साड (सन्द्र) स्टब्र स्थरनाई किकिस समीको क्रिकेट सीव (बीव) चीव-स्ट अधीय-मोर सीसमूच (घोषमून) बीच-क्रिक्टिक विविध ) विविध भूत-सः श्व**तस्य** रस (ग्रुपि) ग्रुपि-प्रदेश Forst (New ) Seem

सुगंधि (सुगन्धिन्) सुगंधी वस्तु सुजह (सु+हान ) सहेलाई बी तजी शकाय वे सुत्त (सुप्त ) स्तेल सुत्त (सुप्त ) स्प्त—सारी जिप्त सुग्त (सुप्त ) स्प्त—सारी जिप्त सुगापित सुग्र (शुत) सामळेलु, सामळलु

सुद्धि (सुखिन्) सुखी

सुद्धम } (स्हम) स्य-सुद्धम नातु. सेट्ठ (श्रेष्ट) श्रेष्ट-उत्तम हृश्च (इत) ह्णेष्ट- ह्णेष्ट हृष्य (इत) हरेख्ड ह्रस्व हृत्व (हृत) होमेख्ड ह्वन करायेख हृद्धि (अधस्तन) हेट्छ

# संख्यावाचक शब्दो

छाद्र ( अष्टन् ) बाठ शहबत्तालिसा (अष्टचता-अडपाला (स्भित्) अडपाला छाट्टणवर ो अडण वर \( (अप्टनवति) भठाणु अट्टाणवर् 🕽 अदृत्तीसा । (अप्टरिशन्) षडतीसा ∫ भाडनीश सहसिंहि ( अष्टप है ) **छाड** दट्टि ∫ भडसठ अट्टसत्तरि ( अष्टम'तति ) अद्वद्धत्तरि∫ **म**ठ्यातेर सहारस 🚶 ( अष्टादरा ) अट्टारह ∫ भटार अट्टावन्ना ( अष्टम्बाशत् ) अड गन्ना अट्टूदण्यासा ) सहबीना ) (अष्टिकाति) अट्टावीसा अम्यानीश अडवीसा ) बहासीह (अष्टाशीति) अठ्याशी अयुत, अयुत्र (अयुत्र) दश हनार यसीइ (अशीति) वेशी रक गेसा ) (एक दिशति ) पगवीसा एकवेश पकवीसा) पगाग्ह। (एकादश) पथाग्ह नियार पथारत)

पग ) पगुणशीसा (एधेर्मक्र्य) (एक) एक क्षेत्रक देश रम ( पराष्ट्रपण्यासा (१९)सम् 100 चत्) भोपनपदा पगवनाकिसा) (एडवन-रकवर्षातमा (दिन्हा) यग्रजनीसा ( एक्टेब्विके) पञ्च बचास्त्रिता ( एकास्ट्रेस को प्रश्रीत रगपासा परावसि (१६) वर्ष पंतपंचा **भोजना** उ ( एकनवित ) ह्यजन्द धमाच र र र ইক্স थगूजसत्तरि (ए<del>धेन्हरू</del>वे) पकती सा **ब्रोक्ट्रेक्टर** हैर पक्रनीया (पद्मतियम्) पस्पासीइ (एधेन से वे) इक्तरी श पश्चिम धोरामाभद्री समन्त्रमेपी पाःधण्यासा को बाकोबी (भेरापेटि) 1 WILLIAM पकारणमासा शोहासीन PERMIT पंता बच्चा कोडि (को.टे ) मोड यगक्रदि **एक्स्डि** ) एक्स्ड बढ (च्द्रा) पर इगर्छ है बारकवर् ( बहुनरदि ) षपसन्तरि) थोजबर ि चेन्हा unrefr ( रस्यक्ति ) व्यक्तपीसा ) (वहस्मित्र) कोजीवर **इ**ज्ञानिति। प्रातिक रकदर्शा 🕽 कतार्थीक एकक्षिक एकक्षी चउदम) **श्वरंद ( (भद्ररय ) भी**र प्रत्यवस्थानिया के चोहरा च्याप्तिकाराज्यसम्बद्धाः
विकास
विकास चारह . बगुष्पमयह एक्टाननकी बेक्सी बडरासीर] (च्याप्रैते) बारासीर 🕽 प्राचसप एक्षेत्रका) वस्था

चउघीसा ) चोवीसा ( चतुर्विशति ) चोवीश चउसिंह ) चोर्साट्ट ( ( चतुष्पष्टि ) चोसठ चउचत्तालिसा। (चतुथता घोर्थालसा रिंशत् ) चोथाला चमालीश-चंडशला चुभ'ळीश चत्तारि सयाई ( चत्वारि शतानि ) चारसे चत्तालोसा (चत्वारिंशत्) चाळोश 🕽 (चतुष्पद्याशत् ) चउपण्गासा∫ कोसत्तरि ) चोहत्तरि ( चतुस्सप्तित ) घउसत्तरि **च्रमोतेर** चउद्दत्ति र छ ( पर् ) छ छचताहिसा । पर्चत्वा शत्) छायाला छण्णवद् (पणावति ) छन्त छत्तीसा (पर्दिमसत्) छत्रीश छप्पण्णा १ (पर्पयशत्) छपण्गासा ( छन्धीसा (पर्विशति) छब्बीश

छसत्तरि) (पर्सपति) छात्तरि∫ धं छोंतेर **छास**ट्टि (षट्षष्टि) छासठ छासीइ ( पडशीति ) छाशी णवणवद् ( नवनवति ) नवणवह 🕤 नव्वाणु ति (त्रि) त्रण तिबत्तालिसा | (त्रिचतारि-तेबालिसा शत्) **ते** आला तेंताळीश तिण्ण सयाइं ( त्रीणि शतानि ) त्रणस तिसत्तरि ৄ ( त्रिसपति ) तिष्दत्ति ∫ तॉतेर तिसय (विंशत) इणसो तीसा (त्रिंशत्) त्रीश तेणवर (त्रिनवति) त्राणु तेतीसा } तित्तीसा∫ े (त्रयिद्धशत्) तेरस। (त्रयोदश) तेर तेरह ∫ त्रेषण्णा ) (त्रिपचारात्) तिपण्णासा ( तेवीसा (त्रयोविंशति) वेवीश तेसङ्खि ( त्रिपष्टि ) त्रसठ

तेसिइ (ज्ल्बाति) शलो∸	पणकीसा (पर्यासवि) नाम्ब
म्प्रवी वस वस } (रवन्) एक	-नंबन्धेष यव्यसद्धि (प्रकारिक) प्रोडक
वदः) वसस्यकः) (वस्त्रकः)	पणसीह पञ्चाकोह } (स्व बोदि) पंत्रवी
रहरूपा र ज्ञान इसमहरूप } (वडनाथ)	प्रणावह पश्चाबह पश्चाबह
बद्दसदस्स । यस वसर	एक्समबर् । पर्यंत
夏(定) 🛊	पण्यासः } (प्राप्तः) पणर
पुरुपमासा} (ग्रिल्सकर्) मादण्या नतन	पणसन्तरि (पणकारि) पणस्तरि पशेरीर
हुवानस म रख (श्रेरक) गर मारद	पण्यासः (प्रधादः) पण्यासः प्रधासः (प्रधादः)
हुम्म्य } (क्रेस्ट ) वस्ते	वयुम } (म्ह्य) १५ वन
शेष (नरम्) व्य	पैचा (यव) प्रेच
नवा (नवि) मेत्र	क्षरीक्षा (द्यप्तिकर्) नग्रीब
नवासी इंग्यं सीते ) नेगती	बाजवर (दिन्छे) रह
पणवनाधिसा । (प्रवन	मानीमा (६ विंगते) ग <b>मेर</b>
पणपासः (लब्दि)	बास हु (दिवय) बाह्य
(sendy	माीप्र (अस्तरीकि) नावी
पणतीस्य (कार्तिस्त्) प्रशीव	विसम्बद्धि ) बायचरि ( (क्रवच्छि )
यकाणा है (यस सक्त्रे ६ चा(कण्या है पणक्त	विद्यार ) वेदिर वाचचरि

वेचचालिसा } (हिचलारि शत् ) वेबाला } वैताळीश दुचचालिसा ) घे सवारं (हे शते) वसो लक्त (छत) शख वीसा (विशति) वीश सद्धि (पष्टि) साठ सत्त (सप्तन्) सात सत्तचतालिसा । (सप्तचत्वा-रिंशत्) सगयाला स्डताळीश (सप्तनवति) सत्तणबद् ो सत्ताणवर । सत्ताण

सत्ततीसा (सप्तत्रिधत्)

सत्तरस \ (सप्तदश ) सत्तरह सचिर र (सप्तिति) श्रीतेर इत्तरि ∫ सत्तहर्द्धि (सप्तपष्टि) सडसठ सत्तरारे (सप्तसप्ति) सत्तहत्तरि सत्योतेर सत्तावन्ना (( सप्तपचारात् ) सत्तपण्णासा 🛭 सत्तावीसा (सप्तविशति) सत्यावीश सत्तासी (सप्ताशीति) सत्याशी सय (शत) सो सहरस (सहस्र) हजार सोळस्रो (पद्र+दश्च-पोडश) सोल्ड ( सोळ

#### अन्यय

साडत्रीश

स्रको } (अत ) भाषी-एयी स्रता } (अतीव) भतीव-स्रहेष १ (अतीव) भतीव-स्रतीय } विशेष स्रकट्टु (अस्त्रवा) नहीं करीने स्रगाओ (अप्रत ) आगल्यी स्रगो (अप्रे ) भाष-आगळ स्रज्ञत्यं १ (अष्यात्म) आमाने स्रज्यत्यं } स्रगु-अदरनु सत्यु (अस्तु) थाओ सण (नस्) निपेघ, विपरीत सणंतरं (अनन्तरम्) अतर विना, तुरत सण्णमण्णं (अन्योऽन्यम्) अन्योन्य-एक्जोजाने सण्णदा (अन्यया) अन्य समये सण्णदा (अन्यया) तेम नहि ते सत्य (अस्तम्)आयमयु-अदर्शन

काद्या (कडा) ध्यान ला पासकी सन्देश (अप्रेश) संध्य शन्धं (सम्बर्) ए ऋषी ससिक्कर्स (अभिश्वस्) रह (स) कमं-ना सनेसने-पार्वका इश्वरा (श्वरक) एम नवी-ममितो (भमितः) चारे गम्ह **धारको** mrama di सि । (श्रेन्द्र) श्रेन्द्र-च्ये-वामं (अवम्) वर्षे, विवेच पुरा सबर्रि } (बन्दि) कार चत्तरसुचे (क्लब) नमधे भवस्यं (जनस्यः) अनस्य-कटिंग ) (क्परे) करर धार<sup>ा</sup> (असक्त्) अनेचक्त उपरि । सह (भव) शय-दर्श-प्रदेश पर्भ (कत्) ए पराचा (एक्स) एक्स-महत्ता (सम्बद्धाः तीचे सदय । (अक्ट पर्यवद्यो (स्थन्त्यः) एक धार्था (वर्नाः स्का दर्श र्भेगो (मन्द्र नवर न्त्रन्य (भत्र) भद्रौ स्राम (सम्ब) ह -श्बीकार यक यक (काय) स्व काहण शहरक) वस्त्रकार य प्रधाने \*\* ) क्या (क्या) नवरे ₹#1 कार्ष (कार्य) करे GM Streit क्षार ) (कार्य) केन केचे नमा गिशुक्त ध्रवः

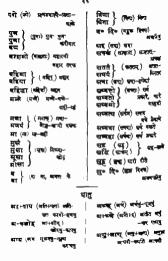
٩v

इस्से (१८४) करनी एकी सन्दर्भाक्षतंत्र

सरुवा } (क्का) वका

कहिं े (कुन्न) क्यां, कहीं कालओं (कालतः) काळे करीते-वखते किं (किम्) ग्रु, शा माटे कुत्तो (कुन) पयाची, कुओ ∫ शायी, कई वाजुशी **केविचरं** (कियिचरम्) केटला छांवा समय सुधी केवचिरेण (कियचिरेण) केटला लांचा समय सुधी **केवर्ल** (केवलम् ) केवळ, फक्त. मात्र प्तल्न (बल्ल) निश्चय स्तिप्प (क्षिप्रम्) खेप-जल्दी च } (च) अने चिरं (चिरम्) चिर-लांवा काळ सुघी ज्ञ**या** (यदा) ज्यारे जद्दा } (यमा) जेम जहासुतं (यथास्त्रम्) स्त्रमा -शासमा क्या प्रमाणे जर्हि (यत्र) ज्या, जहाँ

जं (यत्) जे-के जाव ( यावत् ) जो, ज्यां सुधी ज्ञा ि जेण (येन) जे तरफ तको, तत्तो (तत ) तेथी, त्यार पछी तहा } (तथा) वेम तहि । (तत्र) त्यां, तहीं तर्हि 🗍 ताव (तावत्) तो त्यासुधी नु(तु)तो तेण (तेन) वे तरफ दाणि (इदानीम्) हमणा दाणि इयाणि आजकाल इयार्षि दुहु (दुष्ठ) दुष्ट रीते भुवं (ध्रुवम्) ध्रुव-चोक्सस **न** (न) न नमो } (नम) नमस्कार णमो } णवर नर्यु-चेवळ णाणा (नाना) अनेक प्रकारन (नित्यम्) नित्य नो (नो) नहीं



अणु + तप् ( धनु+तप्य ) अनुताप करवो-पश्चात्ताप करवो धणु + भव् (अनु+भव) भनुभवयु-भोगवयु अणु+सासु (अनु।शास्) शिक्षण अ।पवु-समजाववु अण्ह (अस्ता) अशन करवु-जमञ्-खाञ् यप् अप्पू ( ओप्पू ∫ (अर्प) आपन्तु अब्भुत्त् (अवमृथ) अवोटवु-आमदवु-नहावु अभि+जाण् (धमिनजाना) अहिजाणचुं—ॲधाणचु—ओळखवु अभि+नि+क्खम् अभि-निष् +कम्) हमेशने माटे घेरथी नीक्ळव्-सन्यास हेवो अभि+प्पत्थ (शिभ+प्र+शर्थ) अभि•पत्थ ∫ पार्थना करवी अमराय् ) (धमराय) धम अमरा ) रनी पेठे रहेनु-पोतानी जातने अमर मानवी अरिद्द (अर्ह) पूजवु, योग्य थवु अञ्चिव् आलवु

अव+मन्न् (अप+मन्य) अप-मानव्-अपमान करव् अव+सीय (अव+सीद) अवसाद पामवो-ख्चत्र अहि+द्र (अधि+स्था-तिष्ठ) **अधिष्ठान** मेळवत्र-उपरी थवु यहि+लंख् ो ( अभि+लप ) अहि+लंघू े अभिलपवु-इच्छा करवी आ+गम् ( आ+गम् ) आववु आढव् ( आ+रम् ) आरमवुं--शरू कर्व आ+ढा (भा+ह) आदर करवो आ+ने (धा+नी) भाणवु-लाववु आ+घा (भा+एया) आएयान कर्यु-कहेन्र आ+भोस ( आ+भोग ) ध्यान-पूर्वक जोव आ+यय् (आ+दय) आदान करवुं-प्रहण करवु आ+रोव् (आ+रोप) आरोपवु था+लोट्ट (म+स्टर्य) भाळोरव् वा+सार् (आ+च-नार) आम तेम अफळाववु-आमतेम ल्इ जिन् **६**च्छ (इन्छ) इन्छबु

व+वकुष् (तर्मकृष्) धंचे कृत्य **昭+g (8代+和) 在初** ज+इति (कर्+की) स्वत्र्य ब+सन् (बर्प्सक्य्) वीक्ष् वय+चिद्र (४५+वित्र) वप्रदेश्य रहेनु-ऐनायां समर छोन डव+बी (३५+वी) यूरों **ड**ई **७४+वृं**स् (उप+व्छव) वेका-

र**ु-पने** बहने नकत्तु **डप+दिस्** (उप+दिष्ठ) उपदे **य**ण्ड. वालेख काची बर्वे (उप+१) क्ये <del>क्यु उद्य</del>े पंष् — बल् पश्च (एव) यथना करती.

स्पेषप् को+गास् (उद्+यर)णोक्डवं क्रोध्य अप) श<u>नी-अपर</u>्--

वदारचु-कोराज धो+स्वात्द् उत्+काव) व्यक्ति कर्तु

कल्य गल क्यम्-वर्षेष्-कार्य कार कार्य-प्रतिम होत करिमा रा नवन्ताना

किन् (धेन) क्येतुं-नेक कीक (चीर) चीरा धरशै— रातः वर्गे क्रम्बर (कुक) धोन करने क्रम् (इस् ) वर्ष

क्षा (क्षम) कर्म्य-महेत्

ক্তৰ (ছব) কুৱা कुष्प (क्रप्त) क्षेप:-बोर कुम्ह (इस) कर्ख क्षां (क्रम) चेन्द्रच्-सर्व

कृम (क्रुन) सह शह करा कोड (धेन) बोर करने-शरीत पद बच् (बर्) बन्दु-धोर्त्तु क्षम् (स्वरु) स्थान्त गर्-

सर क्ष चा (कर्) कर (बद्) चतु

बिज्य (विष) शीवपुं-

बेर पाचे ब्बिप्य (मिया) येत्<del>यं ने</del>गर **चेत्र**पु लियु (धिपु) केन्द्र-केन्द्र-

सुन्म् (धुभ्य) खोमवु-छो-मञ्ज-खळभळञ्ज-शोम धरो-गभराबु गच्छ (गच्छ) जबु पामवु गज्जू (गर्ज) गाजवु गद्भ (घट) घटवु गरिद्ध (गह) गरहबु-निद्बु गवेस् (गवेप) गवेपवु-शोधवु गंद्र (प्रन्थ) गटवु-गृथवु गाः (गा) गाउ गिज्झ् (गृष्य) गृद्ध यवु-**ल्लचा**व् मिला (म्ला) म्लान थवु-क्षीण यतु गेण्ड (गृहा) प्रहण करवु घट्ट (घट) घट्य, बनावयु घरिख् (घप) घमतु चट् (चट्) चट्य चय् (त्यज) तजबु चय् (शक्) शरवु चर् (चर) चरवु-चालवु चल् (चल) चारतु चव् (वच्) बहेबु चिइच्छ (चिहित्म) चिहित्सा क्रवी-टपचार क्रवी चिण् (चिनु) चणवु-एकरु क्खु

चिणा (चिनु) चणवुं-एकटु कर्वुं चित् (चिन्त) चितवबु चुक (च्युतक) चूकर्-भ्रष्ट थवु **चोप्प**ड़ चोपढवु छज्जू (सज) छाजवु, शोभवु छाय 🚶 ( छाद ) छातु-छाथ 🛭 दाकवु छिद् (छिनट्) छेदयु-इणयु, मारञ् छेच्छ् (छेत्स्य) छेदवु छोल्ल छोल्ल जग्मू (जागृ) जागवु जम्मा (जूम्म) वगासु खा<u>न</u>ु जम्म् (जन्मन्) जन्मवु जवू (जप्) जपयु-जाप करवो जहा (जहा) छोडवु-त्याग करवो जप् (जल्प) वहेबु जा (या) जानु जनु जागर् (जागर्) जागनु जाण् (जाना) जाणवु जाय् (जाय) जावु-जन्म यवो टलन ध्व जाय् (याच) जाचवु-याचना करवी-मागञ्ज जान् (याप) वीतावनु-यापन क्रव्

जिल्द (वि) विद्यू-सर ताप् (बन) <del>व्यक्त</del> बन्दे मेक्ष्मचे तिप्यू (तिर्) स्प**र्-पर्यु** जीड (जिड) कात्रम नुरिष् (र्स्त) लग्र क्ली− ब्यानकः न्तुं-गुरा प्राप्त (तुम्प) स्वयु-तुद कर्षु करर्ष र्मुत् (दुष) कोल्यु बोर्ड्-तुबर (ला) लग करचै तूर (लर) शय क्यो-अबाध्य समय बार्ग बुद् (बर) कर्तु शक्यत्वय वर्ष सोस् (शेष) सेव्यं सम् । केन् ) कम्यु মুদ্ (লুড়া প্ৰবাহ-শুনী क्रांत ( वीन) ज्योन करी-ज्ञाम∫ प्रकारचंत्रीतं ब्बन्यम् (स्व) राज्यन

झास् वस्तु क्षा स्था लिए ग्रेजुकशा रहेषु-वेक्रो रहेषु रसः दशः हत्तकु–तरहतुः बह गर बहनु-गतानु

झा भा भरतुष्यनकातु

क्रम्बर १८ वसपु-वा**सप्** णि स्वरक्ष निर्वापः।

निव पमयो mad-Sjad

Q'74 KIN

ন হয়ে

नार ।

~ान् -ाल व वारो-47 **474** 

धास् (पप) गोर∄-बरक् (स्थ) गार्च् लाहर कहा व लाह-मांगपु

धा (वर्ष) वर्ष-गेरर्

देश वर्ष-नदी-नदम्

ब्च्छ (तस्य) योई-वेचपु

विष्यू (केन्स) पुत रमग्र

धरिस् (५५) कार्-सन्द

विषय (बैच्च) चैन्त्रं

दीश् (कर्) वंपर

वेषच्य (१६) ध्वतु

बा (बा) वेंबुं

(नम्) नमवु नस्स् } नास् } (नस्य) नाश थवो नि÷फ्साऌ् ो (नि⊹क्षाल) नि+फ्सार् ∫ निखारबु–घोबु नि+द्धुण (निर्+धुना) खखे-रबु-दूर करबु नि+प्पज्जू (निर+पद्य) नीपनवु नि+मंत् (नि+मन्त्र) निमत्रण करवु, नोतरवु **निंद्** } (निन्द) निंदबु-निन्द् ∫ निन्दा करवी नी+हर् (निर्+सर्) नीहरवु-नीसरवु (नी) ल्इ जबु-दोरबु **प+क्याल्** (प्र+क्षाल) पस्नाळवु-धोवु प+सञ्मू ( प्र+गल्भ ) प्रगल्म थयु-वडाई मारवी पच्च+िपण् (प्रत्यर्पण - प्रति + धर्पण) पाछु सॉपबु पजर् (प्र + उत् + चर् -प्रोधर) क्हेबु प+दृव् (प्र+स्थाप) पाठनवु पड (पत्) पडवु

पडि+कुछ (प्रति+कुछ) प्रतिकूछ थवु-विपरीत थवु पडि+नी (प्रति + नी) पाडु देव-सामु देव-बदले देवु पडि+वज्जु (प्रति+पद्य) पामवु-स्वीकारवु पद्ध (पठ) पाठ करवो-पढवु प+णाम् (प्र+णाम) आप्यु-सेवामां रजु करबु प+न्नव् (प्रज्ञापय) जणावयु प+माय (प्र + माय ) प्रमाद करवो प+मुच्चू (प्र+मुच्य) प्रमुक्त थवु-तद्दन छूटी जबु प+यस्त्र् (प्र+सर्) फेंक्चु परि+आन्द्र (परि+वार )परिवृत करवु वींटवु परि+क्कम् (परि + कम्) परि-क्रमण करबु-परक्मबु -प्रदक्षिणा फरवी परि+घ्य (परि + त्यज) परि-त्याग करवो परिनेतप् (परिनतप्य)परि-ताप पानवो-दु खी यवु परि+देव् ।परि+देव) खेद करवी

बाग्र कर्णु-बोक्स् मर्ख पुर्व करते परि+ध्यय (की + अब्) की पुर्वाचाच (पुरुष्का) पुरुष्का प्रज्या केवी-भवनस्त्रिश

बाने बारे धोर कर्त्तु परि+हर (फर + हर) फारलं

परि+द्वा (प्रश्+क) फोलां प<del>ा वर्ष</del> (प्रश्नक) वर्ष<del> द्योतं</del> प्रभवस्त् (अभवत्) प्रवाद करते

परि+विज्या (परि+ मिर्+ मा)

प+द्वार (я+कर)कर्ण-सभाग करती पा(पापीत

पा+55वः ( ह + व्यव ) क्यर्व-

पास् } (वन) बोबु पस्स् पिज्ञा (पैन) गेव

पिष्ट (दि) केर<del>वु नारवु</del>

पित्रुण् (रिश्वनम) कावी कावी

पीम्द्र (पेट)पैक्यु-

**पुश्च** पुतः कुल<del>बु-परिश्</del>वास

पुरक्क पुष्क प्रका पुत्रज्ञ (पत्र) परवु—पृगम्

मम् (भग) नन्त्रे

पुष्टिम् (पूर्व) पूर<del>्व-इ</del>त्त्वं

,**ब्रो**स (प्र+क्रोफ) क्लो-

पेपक्क (त्रानीक) बीह्रं

बाह्य (शय) वांचर्य-वाधी

बोह (शेष) शेष को-वन्तुं

सम्बद्ध (संब) श्रेष्ट्र-

भक्त (का)महर्त<del>ु कर्तु नरवर</del>्तु

बीक्स (मी) मीनुं या (मृ) योक्स बोद्ध (तृ) बोच्छ

परस् (५७) प्र<del>वर्त पर गाना</del>

प्रम् (**१५**८) स्वर को-बोस्ते-

पुष्पण ʃ पूर्ण } (एव) एक्तु

ल-स्टब्स्

पुरा गोधार्थ

शस्त्र (शान्त्र) मन्त्र

मण् (२०) **भनक्-वोक्तु-वर्दर** 

भास् (माप) माखबु-भाषण करबु **भिंद्** (भिनद् ) मेदबु-कटका करवा मेच्छ (मेत्स्य) मेदवु-दूकडा करवा भोच्छ (मोध्य) भोजन करवु ~भोगवबु मज्जू (मद्य) मद करवी, माचव्, खुश थव् मन्न् (मन्य) भानव् मरिस् (मर्ग्र) विमासवु-विचार्व मरिस् (मर्ष) सहवु, क्षमा राखवी मिला (म्ला) म्लान यवु-करमाव् मुज्झ (मुह्य) मुझावु, मूढ थव्-मोह पामवो **मुण्** (मन् ) जाणवु मुंच् (मुघ) मूक्लु मेलव् (मेलय) मेळवन्नु, मेळ-वव एकमेक करव मोच्छ (मोस्य) मुकावु-छूटु य्व रक्क् (रक्ष) रक्षव राखव साचववु, रक्षण करव् रीयू (रीय, नीकळवु रुवू (रुद) रोबु रूस् रे (रुप्य) हसबु, रोप रुस्स् ∫ करवो

रोच्छ (रोत्स्य) रोवु स्त्रम् (स्त्रम्) लाभवु, मेळववु स्वयु (रूप) रुव, बोरुवु लह (लम) लेवु, मेळवबु **लिप्प** (लिप्य) लेपाव, खरहाव लिह (लिख) लखबु लुह (लुम्य) लोरनु-माळोरनु लुण् (लुना) लणवु-कापवु वक्ताण् (वि+भा+स्यान) विस्तारधी कहेलु, वखाण करवा **घग्गोलः** (वि+उद्+गार-व्युहार) वागोळव घच्च् (वज) फरता रहेवु घज्ज् (वर्ज) वर्जबु छोडबु वजार् (वि+उत्+चर-ग्युचर)कहेवं वह (वर्ध) वढव वणू (वन) वणवु भात पाहीने बुवण वर् (वृ) वरवु स्वीकारवु, वरदान छेन्न विरिस् (वर्ष्) वरसवु वलग्ग् (वि+लग्न) वळगवु—चहवु वस् (वस) वसवु-रहेव वह (वह्) वहेनु-वानु वंद् (वन्द) वादवु-नमवु वा (वा) वाञ्च

बाद (शार्) धनकुं-ननधनकुं बि+बिद् } (वि+विद्) वेरहे वि-स (मे+ध) वेक्न-वेदन

वि+वर (मि+पर) तैपाई-प्राप्त विश्वित (विश्वितः) कित्रा -विवोध जिल्लामं

विच्छास् (नि:सन) गीनवर्त-चित्रस (विच) विकास होत्

विकास (निष्ण) गाँगले बि+जस्स् (नि+नश्व) क्ल्बी बायु-मात्र वर्ग गणावनु

चि प्रयय (नि+क्रप्) शीतरक्ष बि+व्य+शब (वि+श्र)ब्ब्हा) क्षये करने या वस्त्र वि+राज रे वि+राव) निरान्त

वि+राज् र बिसीस निकोद नियाद शाली-बोच करको

बिक्क है निश्चन बगवपु ⊸म का कमनो विषय । सिंह नि∗दर तिसंच-चर**य** किया कर अधिन तीसर वस्त्र ग्रीगरप् क्षेत्रस्य इत्तर वेशम् अनुसमम् बेक (वेष्ट) गीरहे केस (वेप ) वेपूर्य कर्त पूर्व बोच्छ (सब) वहेर्च-बोक्च खमान्वर ( वय्न्या क्र बाजरन करहे

**छमा+रध् (कर्+का+रच्**) कार्य-स्मं क्रां समा । देख (चन् । न्या । रम्) सम रंग करने इन्हें

श्रदू (सार) सारव वर्ष स्तव (बर) इन्लं, सप रेचे दां+सू (स+ क्य) **व्ये**ड सं+जम् (६+वम) ६क्सं-क्ष्मा बरचे र्श्च+क्षम् (सं+अनक्ष) वसम्, कीन

सी विस्तु (बम् + दिस्र) राज्येली कारनो-एका कार्ड श्री+पश्रम् (च+पश्र) <del>वर्गानुं-</del> स्रोपस्य + 年 + 50 ) 東東22+10治

जान्तु) धारी रोते गर्मार स+बुज्जू (स+दुन्न) समन्त्रं

बर क्ख र्श-शहर (स्थ-पन) क्रेपल

सं+इहरू (श+स्मर) धनार्षु

सिज्ज (स्विद्य)सीजवु चीकणु थवु, स्वेद-परसेवावाळा यव सिज्झ (सिघ्य) सीझन्न-सिद्ध थन्न सिलाह्य (श्वाघ) सराह्य-वखाणवु सिद्यू (धिच्य ) धीवबु सिद्ध (स्पृह् ) स्पृहा करवी सिच् (सिच) सींचवु सुण् 🚶 ( घृणु ) सुणवु-सामळव् स्त्रमर (स्मर) स्मरण करव सुङ् । (पूद्) सुहवु करवो स्र्∫ ( ग्रुष्य ) शोपञ्ज-चुस् ो सुरस् सुकावु

**सेव्** (सेव) सेववु-आश्रय लेवो

सोच्छ ( श्रोष्य ) सामळवु सोद्द शोध ) शोधवु-सोवु, ग्रद करवु

सोद्द ( ग्रुभ ) सोहवु-शोभवु हण ( हन् ) हणबु-मारबु हरिस् ( हर्प ) हरखबु हस् ( हस ) हसबु हिंस् ( हिंस ) हिंसा करवी-हणबु

हा (हा) होण थनु-तजनु हो (भू) होनु थनु

# देश्य शब्दो [ नरजाति]

सिन स-आगोभो
सम्दाड-भघेडानु झाड
सिद्धः १ \_\_ईश्वर-मालिकसिद्धः १ \_\_ईश्वर-मालिकसिद्धः १ \_\_ईश्वर-मालिकसिद्धः १ \_\_ईश्वर-मालिकसिद्धः १ \_\_ईश्वर-मालिकसिद्धः १ \_\_औरसियो
सोद्यार-भोड जातनो मनुष्य
सोद्दिरस १ \_\_औरसियो

किंद्र-काकीही
कच्छर-कचरी
कडर्अ-कडीओ-घर चणनार
कडप्प-कडपटो-जत्यो
काहार-क+आ+हार-कहारपाणी भरनारो
कुळ्ल-कुशजा-अनाजना पोफा
कार्छ-छोयटा
कोर्थल-कोथळो

कोसिय-कोदिये कोरहुम-धेन्यु-विकोशे विवोशे कार्ट्रक-कारचे कोन्याम-बोक्कश्ले कोस-वोशे-कार्यो कोस-पेर कोकड्-मनेशलु

गष्ट क्य सास<del>्त्रीयानं काम करवा है</del> सिक्स } — क्षेत्रो स्टाइ <del>के स्ट</del>ाइ

संद-सरो सन्दर्भ-स्वरः संसद-सावद-स् इ साव स्थादन स्था-स्थाद सावस्त्रो साव-सर्ध-स्था सेहो

टुंट-इंग्रे डप्प } —को श्रेष श्रेष } —को श्रेष हैगर क्यो

दुध नयं-तोच्ये स्रोत-संग्रे पणी फलगानी

क्षेत्र

बोळ-कोळ-व्यंत्रनो कोळो व्यक्त-व्यक्त व्यक्त-वोरो प्रवृद्धा-प्रस्तव-प्रमो धरिषष्ट्र-वर्धर-केडी पंजर्थन-व्यक्तिव

विज्ञास-तर्वे वेडहस-कविये-शक्ते वेरापे वहस-वेड-वज्ञर क्या-वाप

क्य-गर बोक्स के क्षेत्रसे जुड़क के स्वाप्त कर्मिक सक्त नक्ष्म क्रिक्स समित्रार-व्यक्तिस्वर्थ विकार

मुप्स } -मोभ गीप्स } -पोभ रप्फ-एफ्से रक्ष-रांचे रो<del>ड-रोचे-फ्स</del> वह-स्थी

बंग्रीस } -वपने बंग्रीह }-वपने बहोक-वोजे-पर्वते वोज्या-वोजे

वीरक्षा स-गीन

# [ नारीजाति ]

**सथान्ति**-एलि-सकाळे वादळा थवा

अम्मा-मा-अम्मा अवालुया-अवालु-दातना पेढा उत्थला-उयलो उवी-पाकेला घउनी दुढी उत्तरिचिडि-ऊतरेड-वासणनी

उत्थह्नपत्थह्ना-कथलपाथल भोज्झरी-होजरी भोज्पा-ओप भोस्तिया-ओशरी भोसा-ओस-झाकळ कट्टारी-कटार कत्ता-पासा-जुगार रमवानी

कहोणी } -होणी फुहिणी } -होणी फुहिणी } -होणी खडकी-खडकी खड़ा-खाडो खणुसा-खणस-इच्छा खली-खोळ गडयडी-गडगडाटो (मेघनी) गड़ी-गडी गंडीरी-गंडेरी-शेरहीनो कातळी गाई-गय गायरी-गागर गोली-गेळी चावे ही-चपरी वगाहवी चिरिहिट्टी } -चणोठी चिणोट्टी चुच्छुंदरिया-छहुदर चोट्टी-चोटली ভ্ৰন্তী-ভাল छचडी-चामडी छासी-छाश छंडी -नानी केही-छोंडो-छोंड जाझी~झाडी जोवारी-जुवार-जार झही-वरसादनी झडी झेटी-झटीया-माथाना विखरा-

झोलिका-म्रोळी डाली-डाळ-माडनी डाळ ढंकणी-डाकणी ढंका-डिंक्नो

येला वाळ

णतथा }—नाय-यळदनी नाथ, नतथा / नाकनी नयही

णदरा } –नेरणी नहरी } जिदयी-गीर्षु, पद्मशु क्व योस्तिजमा गीयरण्ये रोजा-न्य-क्रम-दान दमरी राव यवक्यो-व्यक्त-चेडा द्वामीन यवक्यो-व्यक पद्मा-राव पद्मा-राव पद्मा-राव व्यक्या-पद

प्रकी-पूची

फम्यु-धन प्रैका } उपको प्रोका

अध्यती-रावरी विग्याह-वर्ध-वय्यव बोक्सी-नारी-समर्थ स्वाना-भ्य स्रावका भीवती मम्मी }-समी राका-राज-विर्वेश राजी-राज-कविनो **बहा-ए**व-एक्टो COLUMN STATE OF THE STATE OF TH विश्वकार्य-अभाग पारण सिंद-विश्ये सहेकी-ध्येष करनी हत्योशी-स्वेशे

#### ि नान्यकरबाकि ी

हारा मित्र मार्गिक व्यक्षित्र व्यक्तम् अस्य व्यक्तम् अस्य वेश्व - उड उस्सम - विकेष सामुद्ध - अभिष्य - अस्य - विकेष

वं शोक न्योबं इ.स.च्या कोडिय-धोरेतु कह न्या-यम पुह-चोरेत सुग-चोरेत रासक-क्या-यम

**प्रश**⊢रोग

चग्धर-षाघरी
चंग-चगु-सार
छिक्क-छीक
छिद्धर-पाणीन खाबोचियु
जेमणय-जमणु
छह-इर छ
टिक्क-टिकी-टीलु
तगा-तागडी
तुंद-पेट-दुद
पद्ध-पाधर
पद्धर-पाधर
परारण-पागरण-पाथरबा-ओडवार्गा साधन
पिंजिय-पींजेल्ल

पोच-पोचु

पोट्ट-पेट वरुथ-वरू-कलमनु वरू रंद्ध अ-रादवु रू अ-रू-कपास **ळकु ह**—लाकडु खाद्वण-लाणुं घद्दळ-वादळ **श्चंत**—बेंगण-वांगी विद्वाण-यहाणु-सवारनो संखलय-शंखल संपडिय-सांपडेल सिंदुरय-छिंदर-दोरडी सुंघिय-सुघेल सोछ-मांसना सोळा **हडू-**हाडकु **द्वञ्चित्र-हारेख-चारे**ख

#### वर्षमाग्यी माकृतन् साहिता लर्पमागमी प्रा**रुतर्नुं** साक्षिप मरिशाय निपुत्र **छे** तेमाँ तर्प ब्रान बाबार विधिनिवान-कर्मकोड, म्योदिव, गणित बाला क्येरिन कारा जनेक प्रयो के संहोपमां कहे तो प साहित्य करोडी क्रीकोमां रचाएल से तेमांनी नहीं बोद्यक प्रवोनो मामन्तिंस करक से व्यागम ग्रंपो अंग एको धनायका कुटक ध्रम बंबुडी का करि **जाकार**कीय क्रमध्य चंत्र वक्ति संबद्धतर्मग बीवकस्य सर्वप्रशासि क्ष्यानसंघ विजीवकरा निरपानकि समझाय संघ ध्याज जीतक स्व वरोरे पांच .. भगवती मध्या पालिकसम स्थाक्याम**क**ति केद पत्री क्रविमापित विजी प श्रात्यमेकयार्जप पयमा ब्रेम रक्ष **चपासक्यकार्थम** व्यवदार चतः घरच **अंतकृष्**क्यामंग रणस्य जानुस्माना जान अनुचरीपपातिक क्षेत्र महानिचीय सक्तपरिका पंजकरप (ब्यमाप्ज) संस्थारक THE PERSON NAMED IN तंबक्षेवारिक विपाकशंम बंद्रवेग्यक

र रानेका किन्छ

<del>वत्तराध्ययन</del>

वयुषोयद्वार

<del>d fa</del>

देवें वकाय

विविधा

वीरपाय

सहायत्या क्वाव

उपांग स्त्रो

जोवपातिक क्यांग

राजमसीय

जीवाजीया थि

आ उपरात आगमप्रथो ऊपरनी न्याख्याओ, निर्विक्ति, भाष्य, पूर्णि अने अवचूर्णि वगेरे साहित्य अर्धमागधी प्राकृतमा रचायेछं छे

#### वीजा ग्रंथो

पंचा स्तिकाय गोम्मटलार घरोरे तत्त्वज्ञानः घवला सम्मष्ट्रपयरण आचार धम्मसंगद्यणि महाधवला पंचाशक विशेषावश्यक महाबंध धगेरे षोडशक भाषारहस्य क्रमपयिद्ध पंचसत्र नवतत्त्व पंचसंग्रह प्रवचनसारोद्धार जीवविचार पंचवस्त प्रवचनसार **याचारविधि** प्राचीन कर्मग्रंथ कर्मशास्त्र गुरुतस्व-निर्णय त्तव्य सन्तरि वगेरे समयसार

#### १९०4५१०१४१ कमा-चरित्र-उपवेश

वपदेशमासा यरमात्यप्रकाश कुमारपास्कारिक कुवकपमासा जंबुस्वप्रीमसदिक प्रकाशकप्रवासिक प्रकाशकप्रवासिक

महाप्रवस्त्र रिक

कराये करियों

विज्ञवानंबकेवधिकरित्र

सत्तक्रमारव्ययि सीवावरित्र पडमवरिय वयापनकोरा क्यावर्षि तरंगकोसा समराह्यकहा कोवीस सीचकरोगी पक्षमा पुरा

#### करप-काम-बास्तु-च्योतिप-निमित्त-स्वम

स्पंधकति श्रंद्रमकति ज्योतिपक्षकविकार विकीसकाकाव

शंगविज्ञा

कने विद्यानना प्रेयी

सहाध्यप्यस्य
दीर्यक्य

सदाकर्तक्य

स्वर्णक्रम

बास्तुविवार स्वप्रविवार वगैरे